॥ ॐतत्सत् ॥

भावप्रकाशनिघण्टुः ।

श्री पं० गङ्गाविष्णुशास्त्रिवैद्यराजप्रणीत-

टिप्पणीसहितः ।

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

कल्याण-बम्बई.

संवत् १९९५, शके १८६०.

P.S. Sanskrit. 2231

मुद्रक और प्रकाशक -

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास.

मालिक-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, कल्याण-बम्बई.

सर्वाधिकार "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयन्त्रालयाध्यक्षाधीन है।

भूमिका।

कोटिशः धन्यवाद हैं, उस सर्व शक्तिमान् पूर्णब्रह्म अविनाशी श्रीकृष्णचन्द्र देवकीनंदनको कि जिनकी अतुल कृपासे भावप्रकाशनिघण्टु सटिप्पणी छपकर तय्यार होगया है। आज कल आयुर्वैदिक चिकित्साकी अल्पज्ञता तथा समयके प्रभावसे चिकित्साशास्त्रमें बडी २ कठिनाइयें प्राप्त होगई हैं, जिनका यदि पूर्ण-रूपसे वर्णन कियाजाय तो एक इतना ही पुस्तक और लिखा जासकता है। उन कठिनाइयोंमेंसे सबसे बडी और आयुर्वैदिकचिकित्सासे सर्वसाधारणको घृणाजनक कारणरूप कठिनाई एकमात्र शास्त्रोक्त औषधियोंका समझमें न आना और भ्रममें पडजाना है क्योंकि, हर एक औषधिका पहिले तो यथार्थरूपसे पहिचानना कठिन होगया है, दूसरा यह भिन्न २ स्थानोंमें भिन्न २ नामोंसे पुकारीजाती हैं. जिसस सर्वसाधारण तो क्या सामान्य वैद्य भी चकराजाते हैं। और कई वैद्य भी विहित औषधिके स्थानमें विपरीत औषधि वरत लेते हैं, जिससे लाभके स्थानमें परम हानि होती है और हानि होनेसे लोगोंका विश्वास उठता जाता है।इस त्रुटिको देख,चिरं-जीव पं०बखशीराम वैद्य मैनेजर आयुर्वैदिक औषधालय सूत्रमंडी लाहोरने प्रार्थना की;कि कोई ऐसा उपाय कृपा करके निकालें कि जिससे औषधियोंकाविज्ञान होजाय।

उक्त वैद्यजीकी प्रार्थनाको स्वीकार कर अतीव परिश्रमद्वारा इस पुस्तकमें प्रत्येक औषधिके भिन्न २ नाम, जो भिन्न २ देशोंमें पुकारे जाते हैं २५ वर्षके तजुरबेके अनंतर लिखे हैं, इस पुस्तकमें टिप्पणी रूपमें प्रत्येक पृष्ठके नीचे हर एक औष-धिके अंक देकर उसका हिन्दी नाम (जो पश्चिमोत्तर प्रदेशमें पुकाराजाता है,) पंजाबी नाम, (जो पंजाबप्रांतमें कहलाता है) फारसी नाम, (यूनानियोंने जो नाम नियत किया है) बङ्गाली नाम, (जो बंगालप्रान्तमें प्रसिद्ध है) लिखा है। और यथालाभ अंगरेजी नामभी लिख दिये हैं। और मूलमें भी यथाशक्ति न्यूनता पूर्ति की गई है। इसके अतिरिक्त एक परिशिष्टमें उन औषधियोंकी नामावाली दी है, जो निघण्टुके मूलमें नहीं आई। यह परिशिष्ट पहिले संस्कृत फिर भाषाके रूपमें है और फिर भाषानामोंका संस्कृतमें अनुवाद किया है हमारी सम्मतिसे निस्संदेह अब पूर्वोक्त त्रुटियोंको पूर्ण करनेके योग्य है।

इस पुस्तकके छापनेमें मेरे परम मित्र श्रीयुत विद्यारत्न पं० भानुदत्तजी बी० एम् परमोदार सर्वविद्या विभूषित पण्डितवर गवर्नमेण्टपेनशनर संस्कृताध्यापक एचीसन चीफस कालिज लाहौरने प्रूफ शोधन करनेमें सहायता प्रदान की है जिससे मैं उनका अतीव कृतज्ञ हूँ।

अन्तमें विद्वज्जन मंडलीकी सेवामें सविनय निवेदन है, कि इसके प्रचार, और विशेष करके आयुर्वैदिक विद्यार्थियोंको इसके पढनेका उद्योग दिलाकर ग्रन्थकर्त्ताके उत्साहको वर्धन करें।

आपका—

पं० गंगाविष्णु शास्त्री वैद्यराज.

प्रस्तावना.

अथर्ववेदमें देव ग्रहादिपूजन, प्रायश्चित्त, उपवास आदिके अनन्तर देहको आरोग्य रखनेके लिये चिकित्साका उपदेश किया है। द्रव्य, गुण, कर्मके विचार करनेसे आरोग्य लाभ होता है. किस द्रव्यमें क्या गुण है उसकी इतिकर्व्यता किस प्रकारसे है इतना जानलेना सभीको आवश्यक है। वात पित्त कफ अथवा इनके संयोगसे हुई प्रकृतियोंके अनुकूल पदार्थोंके सेवन करनेसे देहमें रोग नहीं होसकते, कदाचित् विरुद्ध पदार्थोंके सेवनसे रोग हो भी जावें तो सुचिकित्सासे शीघ्र नष्ट हो सकते हैं। यही सब विचार करके आयुर्वेदतत्त्वज्ञ भावमिश्रने अपने निर्मित भावप्रकाशमें नाना प्रकारके अन्न, शाक, फल, मूल, दही, दूध, शर्करा आदि नित्यके उपयोगी प्रायः सभी पदार्थोंके गुण अवगुण कहे हैं। उसी भावप्रकाशमेंसे संग्रहकर यह **भावप्रकाशनिघण्टु** बनाया गया है। यह ऐसा उत्तम निघण्टु बना है कि वैद्य तथा अन्य आयुर्वेदप्रेमी मनुष्योंने इसको अत्यन्त आदरसे पठन पाठन आदि कार्यमें ग्रहण किया है। इसके द्वारा देशवासियोंका जो उपकार हुआ है इसके लिये उक्त वैद्यराजके लोग अत्यन्त उपकृत और ऋणी हैं। ऐसे सर्व-प्रिय-सर्वमान्य निघण्टुका सर्वत्र सुलभ प्रचार हो इस इच्छासे हमने इसको अपने "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें मुद्रित की है आशा है कि आरोग्यको सबसे अधिक लाभ समझनेवाले नीतिज्ञ पुरुष तथा आयुर्वेदविद्याप्रेमी इसका संग्रह कर लाभ उठावेंगे।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालयाध्यक्ष,

बम्बई.

॥ श्रीः ॥

भावप्रकाशनिघण्टुस्थ औषधियोंकी अकारादिसूची ।

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
अकरकरा	९३	अमृतफल	१०२
अर्क दोनों	९३	अम्लिका	१०४
अर्कपुष्पी	७६	अरिष्ट	१९०
अखरोट	१०३	अरिष्टक	११०
अगस्तपुष्प	१९२	अनेकार्थ वर्ग	१९६
अगस्तशाक	८७	अम्लवेतस	१०४
अगुरु	३३	अर्कपुष्पी	७६
अग्निमंथ	४८	अर्जुन	१०८
अजमोदा	९	अलंबुषा	७६
अजवायन	९	अश्मभेद	२२
अतसी	१४३	अशोक	८९
अतिविषा	२९	अश्वत्थ	१०६
अतिबला	६१	अश्वत्थभेद	१०६
अदरक	६	अश्वगंधा	६६
अस्थिसंहारी	७०	अष्टवर्ग	१४
अनार	१००	असवरग	४४
अनार्तवम्	१६२	अंकोटवृक्ष	६१
अनन्तमूल	७२	अम्लतास	१७
अपराजिता दोनों	९८	अम्लतास पुष्प....	८९
अपामार्ग	६९	अंबकी गुठली	९०
अपामार्ग रक्त	७०	अंबुशिरीषिका	११३
अफीम	२७	अमरबेल	७४
अभ्रक	१२९	अंबाला	९०
अरहर	१४२		

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
आकाशवल्ली	.... ७४	एकांगी	.... ४१
आमला	.... ९	एरंड (शुक्ल-रक्त)	.... ९२
आम्रफल	.... ८९	एरका	.... ६३
आम्रावर्त-आम्रबीज-आम्रातक	....९०	एलावालुक	.... ४३
आलु	.... १९७	एलायक	.... ७२
आहारविशेष	.... १७०	ऐन्द्रवारुणी	.... ६८
इंगुदी	.... ११०	औद्भिदलवण	.... २९
इज्जल	.... ६१	औद्भिदजल	.... १६१
इटसिट सफेद, लाल,	.... ७१	कपर्दिका	.... १३०
इक्षु	.... १८९	ककडासिंगी	.... २१
इरिमेद	.... १०९	ककडी (तर)	.... १९३
इलायची दोनों....	.... ३७	ककोडेशाक	.... १९६
इंद्रयव	.... १८	कचनार	.... ९७
इन्द्रनील	.... १३३	कचूरमेंड	.... ४१
इंबली	.... १०४	कचूर हलदी	.... २३
उदुंबर	.... १०७	कटभी	.... ११३
उडद (मांह)....	.... १४०	कटसरैया	.... ८६
उद्भिद जल	.... १६४	कटहल	.... ९१
उपरत्न	.... १३४	कटाई	.... १०४
उपविष	.... १३६	कटुकी	.... १८
उपरस	.... १२४	कटुतुंबी	.... १९३
उभजिनी	.... २०	कटेरी	.... ९०
उशीर	.... ४०	कतकफल	.... १००
ऊँटनीका दूध	... १७१	कत्तृण	.... ६४
ऋद्धि	.... १६	कत्था	.... १०९
ऋषभक	.... १५	कदंबपुष्प	.... ८४

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
कदलीकंद	१९८	कंकोल	४३
कदलीपुष्प	"	कंगनी	१४४
कनेर दोनों	९९	कस्तूरीदाना	३२
कपिकच्छु	६०	कंटकारी	१६९
कपित्थ	९९	कंदशाक	१९७
कपीलु	९६	कंदूरी	१९६
कवाबे	१४	कंबीला	१७
कपूर	३१	काकजंघा	७३
कपूरकचरी	४१	काकडाशिंगी	२१
कमीला	१७	काकनासा	७३
कमलपुष्प	८१	काकमाची	"
कमलगट्टा	९८	काकोली	१६
करमशाक	१४९	कायफल	२१
कलिहारी	९४	कार्पास	९२
कमरख	१०४	कालशाक	१४८
करीर	११२	कालकूट विष	१३९
करेला	१९४	कालाजीरा	१०
करौंदा	९७	काली मृत्तिका	१३०
करंजुवा	९९	कालिंद	९३
कलाय	१४२	काश	६३
कलौंजी	१०	काशीफल	१९३
कसेरु	१९९	काष्ठेक्षु	१८६
कसौंदी	१९१	काश्मरी	४७
कसुंभबीज	१४९	कांसी	१२१
कस्तूरी	३१	कासीस	१३०
कंकुष्ठ	१३१	कांजी	१८९

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
कायफल	.... २१	कुन्दपुष्प	.... ८६
कांतलोह	.... ११९	कुंदुरु	.... ३६
किरायता	.... १८	कूटशाल्मली	.... ११२
किक्कर	.... ११०	कूपजल	.... १६९
किट्ट (मंडूर)	.... १२०	कूष्मांड	.... १५२
किंकरात	.... ८९	कृष्णसारिवा	.... ७२
किंब	.... १०३	केवडा	.... ८९
किशमिश	.... १०१	केउटीमोथा	.... ४४
कीटमारिका	.... ७४	केदार जल	.... १६६
कुआर गन्दल	.... ७१	केरुआकन्द	.... १५९
कुटकी	.... १८	केला	.... ९२
कुटज	.... ९८	कोदों	.... १४५
कूठ	.... २०	कोशाम्र	.... ९१
कुपीलु	.... ९६	कौड	.... १८
कुब्जक	.... ८४	कौडी	.... १३०
कुमारी	.... ७१	कौंचबीज	.... ६०
कुमुदबीज	.... ९९	खर्जूर	.... १०१
कुमुदिनी	.... ८२	खट्टियां जंभीरी	.... १०३
कुलत्थ	.... १४२	खटीगोरखटी	.... १२९
कुलिंजन	.... १३	खपरिया	.... ,,
कुशा	.... ६३	खरबूजा	.... ९३
कुष्ठ	.... २०	खस	.... ४०
कुसुम्भा	.... २२	खंड	.... १८८
कुसुंभबीज	.... १४९	खिरनी	.... ९८
ककुन्दर	.... ८०	खीरा	.... ९३
कुंकुम	.... ३८	खुरासानी वच	.... १२

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
खुरासानी जवायन	१०	गोधूम	१३९
खैर	१०९	गोभी	७९
खोया	१७२	गोमेद	१३३
गन्नेका रस	१८७	गोरोचन	३९
गजपिप्पली	८	गोदुग्ध	१७०
गाजर	१९८	गोरीसरों	१४३
गिलोय	४६	गोलीढ	११३
गिलोयशाक	"	गोक्षुर	९०
गवेधुक	१४९	गौरासार	३२
गण्डदूर्वा	६९	ग्रन्थिपर्ण	४२
गन्धक	१२४	घगरबेल	७८
गन्धकोकिला	४३	घीया	१९३
गन्धमार्जार	३२	घृत	१७८
गन्धविरोजा	३९	घोडीका दुग्ध	१७१
गाजर गम्भारी	४७	चकोतरा	१०३
गुग्गुल	३४	चक्रमर्द	२४
गुडहल	८७	चणकाम्लक	२९
गुड	१८७	चणे	१४२
गुलदुपहरिया	८६	चणेका शाक	१९१
गुलतुर्रा	८७	चतुर्जात	३८
गुलियां (मुंगा)	१३३	चतुर्थक	२०१
गुंजा (रतियां)	९९	चतुरूषण	८
गुंद्रा	६३	चतुराम्ल	१०९
गूलर	१०७	चवाहलदी	२३
गूमा	७७	चुंबक	१२९
गैरिक	१२९	चवक	८

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
चंचुशाक	.... १९०	चौलाई	.... १४८
चन्दन तीनों	.... ३२	चौहार निम्बू	.... १०३
चंद्रशूर	.... १२	छाछ	.... १७६
चंपा	.... ८४	छागी दुग्ध	.... १७०
चांगेरी	.... १४९	छुहारा	.... १०१
चांदी	.... ११६	छोटी मूली	.... १९७
चारदाना	.... १२	जलकुम्भी शैवाल	.... ८२
चिर्चिडा	.... १९३	जलदोष निवारण	.... १६६
चिंचु	.... १९०	जलपानविधि	.... १६७
चिटाजीरा	.... १०	जलपिप्पली	.... ७८
चिटीमिरच	.... ७	जलवर्ग	.... १६१
चिभड	.... ९२	जल वेतस	.... ६१
चिरायता	.... १८	जवांह	.... ६९
चिर्भटी दोनों	.... ९९	जस्त	.... ११८
चिरोंजी	.... ९७	जंडी	.... ११३
चित्रा	.... ९	जम्बीरी नीम्बू	.... १०३
चिल्लुक	.... ६०	जम्बूफल	.... १०२
चीनिया कपूर	.... ३१	जायफल	.... ३६
चीना	.... १४४	जावित्री	.... ,,
चील्ह वृक्ष	.... ६०	जिमीकन्द	.... १९७
चुक्र	.... ३०	जंगनी	.... ११०
चुक्रिका	.... १४९	जीवक	.... १९
चुम्बक	.... १२९	जीवन्ती	.... ९१
चोक	.... २१	जीवन्ती भेद	.... १६६
चोबचीनी	.... १३	जीवनीयगण	.... ९२
चोहेका पानी	.... १६६	जीयापोता	.... ११०

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
जूही	.... ८९	तुबरुफल	.... १४
जौ	.... १३९	तूत	.... १००
जौखार	.... २९	तूतिया (नीलाथोथा)	.... १२१
टंकारी	.... ६०	तेजपात	.... ३८
टिण्डे	.... १९६	तेंदू	.... ९९
तगर	.... ३३	तेजबल	.... २०
तज	.... ३७	तैलवर्ग	.... १८१
तडागजल	.... १६९	तोरी बडी। (कडवी)	.... १९३
तप्तजल	.... १६६	त्रिकटु	.... ७
तमाल	.... १११	त्र्यर्थक	.... १९९
तवाशीर	.... १४	त्रायमाण	.... ७३
तंडुलोदक	.... १६६	त्रिजात	.... ३८
ताडी	.... ९४	थुनेर	.... ४२
तारमाखी	.... १२१	थोम (रसोन)	.... २९
तालमखाना	.... ७०	थोहर	.... ५४
तालीसपत्र	.... ४३	दडौ	.... १४२
तांबा	.... ११६	दमनक	.... ८८
तांबूल	.... ४७	दशमूल	.... ५१
तिनिशवृक्ष	.... ११४	दद्रुघ्न	.... १९१
तिरीवी	.... ६६	दधिवर्ग	.... १७४
तिल	.... १४३	दाख	.... १०१
तिलका	.... ८६	दालचीनी	.... ३८
त्रिफला	.... ९	दारु हलदी	.... २३
तुणीवृक्ष	.... १११	दुग्धवर्ग	.... १६९
तुबरी	.... १४३	दुग्धिका	.... ७६
तुलसी	.... ८०	दुरालभा	.... ६९
तुषारजल	.... १६३		

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
दूध	१६९	नागदमनी	७९
दूर्वा	६४	नाग (सिक्का)	११८
देवदारु	३४	नागपुष्पी	७४
देवदाली	७८	नागबला	६१
दोधक	७६	नारंगी	९५
द्रव्यपरीक्षा	१९२	नारिकेल	९२
द्रोणपुष्पी	१५०	नारीदुग्ध	१७१
धतूरा	५९	निम्बू	१०४
धनियां	१०	निष्पाव	१४१
धव धन्वंग	११२	निर्झरजल	१६४
धान्यवर्ग	१३७	निम्ब	५६
धामन	११२	निसोत	६६
धाराजल	१६१	नीली	६८
धारोष्ण दुग्ध	१७१	नीलदूर्वा	६४
धावेके फूल	२२	नीलोफर	९९
नकछिकनी	७९	नीवार	१४५
नख	३९	नेत्रवाला	३५
नल	६३	परिभाषा	१०५
नदीका जल	१६४	परिशिष्ट	२०३
नरकचूर	४१	पटुशाक	१४९
नवीन धान्य	१४६	पटोल	१९३
नवनीत	१७७	पतंग	३३
नवपत्रादि	८१	पद्मक	३४
नलिका	४४	पद्मिनी	८१
नाकुली	१९	पन्ना	१३२
नागकेसर	३८	परूषक	९९
		पलांडु	५६

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
पर्पट	.... १९१	पुदीना	.... ४६
पर्पटी	.... ४४	पुष्कर मूल	.... २०
पित्तपापडेका शाक	.... १९१	पुष्पशाक	.... १९२
प्लक्ष	.... १०७	पुष्पसिता	.... १८८
पलाश	.... १११	पृश्निपर्णी	.... ४९
पाठा	.... ६६	पेठा	.... १९२
पंचाम्ल	.... १०९	पोई शाक	.... १४७
पंचकोल	.... ९	पोस्त	.... २७
पंचमूल	.... "	प्रदीपन	.... १३४
पंच वल्कल	.... १०७	प्रसारणी	.... ७२
पाढल	.... ४८	प्रतिनिधि	.... १९४
पातालगरुडी	.... ७९	प्रपौंडरीक	.... ४९
पारसपिप्पल	.... १०६	प्रशस्त जल	.... १६८
पारा	.... १२३	प्राचीनामलक	.... ९७
पालेवत	.... ९९	प्रियंगु	.... ४२
पाल्वलजल	.... १६९	फगवाडा	.... १०७
पारिभद्र	.... ९७	फटकडी	.... १२८
पालक शाक	.... १४८	फलशाक	.... १९२
पाषाणभेद	.... २२	फुल फिरङ्ग	.... ४२
पित्तल	.... १२२	फूलमखाना	.... ९८
पिण्डार	.... १९६	बकपुष्प	.... ८४
पिप्पली मूल	.... ८	बकायण	.... ९७
पिप्पली	.... ६	बकुल	.... ८४
पिण्डखर्जूर	.... १०१	बट वृक्ष	.... १०६
पीलु	.... १०३	बटपत्री	.... ७९
पुखराज	.... १३३	बडहल	.... ९१

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
बडीजामुन	.... ९६	बालया पिप्पल....	.... १०६
बैंगन	.... १५५	वृक्षाम्ल	.... १०५
बरना	.... ११३	वृद्धी	.... १६
बर्बरी	.... ८०	ब्रह्मपुत्र	.... १३५
बला	.... ६१	ब्रह्ममंडूकी	.... ७७
बहुवार	.... १००	ब्राह्मी	.... ,,
बह्वर्थ शब्द	.... २०२	ब्रीहिधान्य	.... १३८
बहेडा	.... ४	भटीउर	.... ४३
बदर	.... ९६	भल्लातक	.... २६
बत्सनाभ	.... १३४	भंग	.... ५७
बादाम	.... १०२	भंगरा तीनों	.... ७२
बन्दा	.... ७५	भार्ङ्गी	.... २१
बंधूक पुष्प	.... ८६	भाषा परिशिष्ट	.... २०७
बाथूशाक	.... १४७	भूमीसहा	.... ११४
बाणपुष्प	.... ८६	भूम्यामलकी	.... ७६
बालक	.... ४०	भूरिछरीला	.... ४०
बालछड	.... ४०	भूस्तृण	.... ६४
बालू	.... १२९	भेषजसंकेत	.... १९३
बाल	.... १३०	भेडीदुग्ध	.... १७०
बिजौरा	.... १०३	भैंसका दूध	.... ,,
बिल्वफल	.... ९५	भोजपत्र	.... १११
बिल्ववृक्ष	.... ४७	भोजनांते दुग्धपान	.... १७३
बीरण	.... ४०	भोयेभुरक (शंखपुष्पी)	.... ७६
बृद्धदारुक	.... ६८	भौमजल	.... १६३
बृहद्दन्ती	.... ६७	मखाना	.... ९८
बृहत्पंचमूल	.... ४९	मंजीठ	.... २२
बृहती	.... ,,		

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
मंडूर	१२०	मिष्टनिम्बू	१०३
मत्स्याक्षी	७९	मिष्टतुंबी	१९३
मधु	१८३	मिरच	७
मयनफल	१९	मिधरा	६८
मद्य	१९०	मिशरी	१८८
मुलहठी	१८	मुख्यसदृशप्रतिनिधि	१७
मधुवर्ग	१७३	मुद्गपर्णी	९१
मधूक	९९	मुण्डी दोनों	६९
मनशिल	१२८	मुस्तक	४०
मनिआरीनमक	२८	मुंगा	१३३
मयूरशिखा	८०	मुनक्का	१०१
मरुवक	८७	मुंज	६३
मल्लिका	८९	मुचकुंद	८६
मसूर	१४१	मुष्क दाना	३२
महानिंब	९६	मकुष्ठ	१४१
महाबला	६१	मुसली	६९
महाभरी वचा	१३	मुष्कबाला	३९
महामेदा	१९	मूंग	१४०
महाशिम्बी	१९६	मूर्वा	७३
महिषीदुग्ध	१७०	मूत्रवर्ग	१८०
माचिका	२०	मूलकनाल	१९८
माधवी	८९	मूली	१९०
मानकंद	१९८	मूसाकर्णी	८०
मार्कंडिका	७८	मृगी दुग्ध	१७०
मालकंगुनी	२०	मृणालशाक	१९०
माषपर्णी	९२	मेथी	११

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
मेदा	१५	रेत	१२९
मेढार्सिंगी	७४	रेणुका	४२
मैनफल	१९	रोहिणी	६०
मोईया	१०९	रोहिणी दोनों	"
मोचरस	११२	रोहेडा....	११०
मोती	१३३	लघुपंचमूल	५१
मोथा	४०	लताकस्तूरी	३२
यवनाल	१४५	लवंग	३७
यवानीशाक	१५०	लवली....	९७
यवासा	६९	लघ्वी दन्ती	६७
यूथिका	८३	लक्ष्मणा	६२
रक्तचन्दन	३२	लाख	२३
रक्त शालि धान्य	१३८	लाजवर्द	१२९
रक्त सरसों	१४४	लाल	१३३
रतालु	१५७	लाजवंती	७६
रवांह	१४१	लामज्जक	४३
रस	१२३	लिसोडा	१००
रत्न....	१३०	लोध	२५
रसौत	२४	लोनीशाक	१४९
राई	१४४	लोहा—लोहसार....	११९
राजमाष	१४१	वक	८४
राजाम्र	९१	वकुल	"
राव	१८७	वचा	१२
रात्रौ दधि निषेध	१७५	वनहलदी	२३
राल	३६	वर्षाजल	१६६
रास्ना	१९	वंग	११७

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
वटपत्री	७९	बृहल्लोनीशाक	१४९
वंदा	७६	वैदूर्य्य	१३३
वंश (वांस)	६२	व्रीहिधान्य	१३८
वंशपत्री	७९	शतपत्री	८३
वंशबीज	१४९	शतावरी	६९
वर्वरी	८८	शण	१४६
वाकुची	२४	शणपुष्पी	७३
वापीजल	१६९	शरपुंखा	६८
वाँझखाखसा	७८	शरबीज	१४९
वायविडंग	१३	शल्लकी	१०८
वाराही कंद	६९	शहत	१८३
वार्षिकी	८३	शहतूत	१००
वांसा	५९	शंख	१३०
वासन्ती	८३	शंखपुष्पी	७६
विष	१३४	शाखोट	११२
वेंत	६०	शाकवर्ग	१४७
वेल्लंतरा	७९	शाल भेद	१०८
विकर	१६६	शाल	९४
विकंकत	९८	शालिधान्य	१३७
विजयसार	१०९	शालपर्णी	४९
विडलवण	२८	शाल्मली	१११
विदारीकंद	६९	शितिवार	१९०
विहितजल	१६६	शिरीष	१०७
वीरण	४०	शिलाजीत	१२२
वृद्धि	१६	शिलारस	३६
वृक्षाम्ल	१०९	शिंगरफ	१२९

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
शिंशपा	.... १०८	संभालु	.... ९८
शीतलजल	.... १६७	(सांक) सांभरनमक	.... २८
शुक्ल कृष्ण सारिवा	.... ७२	सरोवरका जल	.... १६४
शृंगक विष	.... १३९	सारिवा	.... ७२
शैवाल	.... ८२	सिंघाडा	.... ९८
श्यामाक	.... १४४	सिप्पी	.... १३४
श्यामात्रिवृत्	.... ६७	सिता	.... १८८
श्रीवास	.... ३९	सिल्हक	.... ३६
श्वेतकंटकारी	.... ९०	सिन्दूर	.... १२२
श्वेत दूर्वा	.... ६४	सिंदूरी	.... ८७
षड्षण	.... ९	सिक्का	.... ११८
षष्टिका	.... १३८	सील	.... १४८
सक्तुक विष	.... १३४	सुदर्शना	.... ८०
सज्जीखार	.... २९	सुपारी	.... ९४
सप्तपर्ण	.... ११३	सुफेदजीरा	.... १०
सप्तोपधातु	.... १२०	सुरमा	.... १२८
समुद्रझाग	.... १४	सुनाली	.... ३९
समुद्रनमक	.... २८	सुलेमानी	.... १०२
सरना	.... ७१	सुवर्ण	.... ११९
सरल	.... ३३	सुवर्णमाक्षिक	.... १२०
सर्पाक्षी	.... ७९	सुहागा	.... २९
सर्षपशाक	.... १९२	सुहांजना	.... ५७
संयोग विरुद्ध	.... १९३	सुंठी	.... ९
संस्वेदज	.... १६	सेंधा नमक	.... २८
सहदेवी	.... ६१	स्पृक्का	.... ४४
संधान वर्ग	.... १८९	सेव	.... १०२

नाम औषधी.	पृष्ठ.	नाम औषधी.	पृष्ठ.
सेवती	.... ८४	हरड	.... २
सैरेयक	.... ८६	हलदी	.... २३
सेहुण्ड	.... १६१	हरीतकी	.... १
सौञ्चल नमक	.... २८	हस्तिनीदुग्ध	.... १७१
सोनामाखी	.... १२०	हंसपदी	.... ७४
सोये	.... ११	हाऊबेर	.... १३
सोमलता	.... ७४	हारिद्रविष	.... १३६
सौभांजनपुष्पशाक	.... १६७	हाली	.... १२
सौभांजन फल	.... १६७	हालाहल	.... १३६
सौराष्ट्रिकविष	.... १६०	हिलमोचिका	.... १५०
सौराष्ट्री	.... १३०	हिमजल	.... १३६
सौंफ	.... ११	हिंगु	.... १२
स्थलकमल	.... ८२	हिंगुपत्री	.... ७५
स्योनाक	.... ४८	हीरा	.... १३२
स्वभावसे हित अहित	.... १९२	हीराकसीस	.... १३०
स्वर्ण केतकी	.... ८५	हुलहुल	.... ७७
स्वर्ण जातिका....	.... ८३	ह्रीबेर	.... ३९
स्वर्णवल्ली	.... ६२	क्षारद्वयं, त्रयं च	.... ३०
हरताल	.... १२७	क्षाराष्टक	.... ३०
हरहरकी दाल	.... १४	क्षीरकाकोली	.... १६
हारिणीदुग्ध	.... १७०	क्षीरवृक्षपंचक	.... १०७
हस्तिकर्णी	.... १५८	क्षुद्रधान्य	.... १४४

इति अकारादिसूची।

॥ श्रीः ॥

भावप्रकाशनिघण्टुस्थवर्गोंकी सूची ।

वर्ग.	पृष्ठ.	वर्ग.	पृष्ठ.
हरीतक्यादिवर्ग....	१	दुग्धवर्ग	१६९
कर्पूरादिवर्ग	३१	दधिवर्ग	१७४
गुडूच्यादिवर्ग	४६	तक्रवर्ग	१७६
पुष्पवर्ग	८१	नवनीत वर्ग	१७७
फलवर्ग	८९	घृतवर्ग	१७८
वटादि वर्ग	१०६	मूत्रवर्ग	१८०
धातुवर्ग	११५	तैलवर्ग	१८१
धान्यवर्ग	१३७	मधुवर्ग	१८३
शाकवर्ग	१४७	इक्षुवर्ग	१८५
वारिवर्ग	१६१	संधानवर्ग	१८९
		द्रव्यपरीक्षा	१९२

इति वर्गसूची ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

भावप्रकाशनिघण्टुः ।

टिप्पणीसहितः ।

अथ प्रथमं हरीतक्या उत्पत्तिर्नाम लक्षणं गुणाश्च ।

दक्षं प्रजापतिं स्वस्थमश्विनौ वाक्यमूचतुः ।
कुतो हरीतकी जाता तस्यास्तु कति जातयः ॥ १ ॥
रसाः[1] कति समाख्याताः कति चोपरसाः[2] स्मृताः ।
नामानि कति चोक्तानि किंवा तासां च लक्षणम् ॥ २ ॥
के च वर्णा[3] गुणाः के च का च कुत्र प्रयुज्यते ।
केन द्रव्येण संयुक्ता कांश्च रोगान् व्यपोहति ॥ ३ ॥
प्रश्नमेतं यथा पृष्टं भगवन् वक्तुमर्हसि ।
अश्विनोर्वचनं श्रुत्वा दक्षो वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥

उत्पत्तिः ।

पपात बिन्दुर्मेदिन्यां शक्रस्य पिबतोऽमृतम् ।
ततो दिव्या[6] समुत्पन्ना सप्तजातिर्हरीतकी ॥ ५ ॥

नाम ।

हरीतक्यभया पथ्या कायस्था पूतनाऽमृता ।
हैमवत्यव्यथा चापि चेतकी श्रेयसी शिवा ॥
वयस्था विजया चापि जीवन्ती रोहिणीति च ॥ ६ ॥

भिषजामुपकाराय स्यान्निघण्टोः कृतोपरि ।
टिप्पणी वैद्यराजेन गंगापूर्वकविष्णुना ॥

१ रसाः–मुख्यरसाः तुवरादयः । २ उपरसाः–गौणरसाः कटूवादयः । ३ वर्णाः–पीतादयः "जीवन्ती स्वर्णवर्णिनी" इत्यादि । ४ लवणेन कफमित्यादि । ५ अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रामित्यादि । ६ दिव्या–हरीतकी । ७. देशभाषा–हरड. फारसी–हलेला जर्द । अङ्गरेजी–मिरोवेलैन्स. Myrobalans.

जातयः ।

विजया रोहिणी चैव पूतना चामृताऽभया ।
जीवन्ती चेतकी चेति पथ्यायाः सप्त जातयः ॥ ७ ॥

लक्षणम् ।

अलाबुवृत्ता विजया वृत्ता सा रोहिणी स्मृता ।
पूतनाऽस्थिमती सूक्ष्मा कथिता मांसलाऽमृता ॥ ८ ॥
पंचरेखाऽभया प्रोक्ता जीवन्ती स्वर्णवर्णिनी ।
त्रिरेखा चेतकी ज्ञेया सप्तानामियमाकृतिः ॥ ९ ॥

गुणाः ।

विजया सर्वरोगेषु रोहिणी व्रणरोपणी ।
प्रलेपे पूतना योज्या शोधनार्थेऽमृता हिता ॥ १० ॥
अक्षिरोगेऽभया शस्ता जीवन्ती सर्वरोगहृत् ।
चूर्णार्थे चेतकी शस्ता यथायुक्तं प्रयोजयेत् ॥ ११ ॥
चेतकी द्विविधा प्रोक्ता श्वेता कृष्णा च वर्णतः ।
षडङ्गुलायता श्वेता कृष्णा[1] त्वेकाङ्गुला स्मृता ॥ १२ ॥
काचिदास्वादमात्रेण काचिद् गन्धेन भेदयेत् ।
काचित्स्पर्शेन दृष्ट्याऽन्या चतुर्धा भेदयेच्छिवा ॥ १३ ॥
चेतकीपादपच्छायामुपसर्प्पन्ति ये नराः ।
भिद्यन्ते तत्क्षणादेव पशुपक्षिमृगादयः ॥ १४ ॥
चेतकी तु धृता हस्ते यावत्तिष्ठति देहिनः ।
तावद् भिद्येत वेगैस्तु प्रभावान्नात्र संशयः ॥ १५ ॥
नृपादिसुकुमाराणां कृशानां भेषजद्विषाम् ।
चेतकी परमा शस्ता हिता सुखविरेचनी ॥ १६ ॥
सप्तानामपि[2] जातीनां प्रधानं विजया स्मृता ।

---

१ कृष्णा जङ्ग हरड । २ उत्पत्तिस्थानम्-विंध्याद्रौ विजया हिमाचलभवा स्याच्चेतकी पूतना सिंधौ स्यादथ रोहिणी तु विजया जाता प्रतिष्ठानके +। चम्पायाममृताऽभया च जनिता देशे सुराष्ट्राह्वये जीवन्तीति हरीतकी निगदिता सप्तप्रभेदा बुधैः ॥ १ ॥ अम्ल-

+ प्रतिष्ठानपुरं विठूर, झांसी इति प्रसिद्धम् ।

सुखप्रयोगा सुलभा सर्वरोगेषु शस्यते ॥ १७ ॥
हरीतकी पञ्चरसाऽलवणा तुवरा परम् ।
रूक्षोष्णा दीपनी मेध्या स्वादुपाका रसायनी ॥ १८ ॥
चक्षुष्या लघुरायुष्या बृंहणी चानुलोमनी ।
श्वासकासप्रमेहार्शःकुष्ठशोथोदरक्रिमीन् ॥ १९ ॥
वैसर्प्यग्रहणीरोगविबन्धविषमज्वरान् ।
गुल्माध्मानव्रणच्छर्दिहिक्काकण्ठहृदामयान् ॥ २० ॥
कामलां शूलमानाहं प्लीहानं च यकृद्दरम् ।
अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं च मूत्राघातं च नाशयेत् ॥ २१ ॥
स्वादुतिक्तकषायत्वात्पित्तहत्कफहृत्तु सा ।
कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहाच्छिवा ॥ २२ ॥
पित्तकृत्कटुकाम्लत्वाद् वातकृन्न कथं शिवा ।
प्रभावादोषहन्तृत्वं सिद्धं यत्तत्प्रकाश्यते ॥ २३ ॥
हेतुभिः शिष्यबोधार्थं पूर्वं तु क्रियतेऽधुना[1] ।
कर्म्मान्यत्वं गुणैः साम्यं दृष्टमाश्रयभेदतः ॥ २४ ॥
यतस्ततो नेति चिंत्यं धात्रीलेकुचयोर्यथा[2] ।
पथ्याया मज्जनि स्वादुः स्नायौ[3]वम्लो व्यवस्थितः ॥ २५ ॥
वृन्ते[4] तिक्तस्त्वचि कटुरस्थिस्थस्तुवरो रसः ।
नवा स्निग्धा घना वृत्ता गुर्वी क्षिप्ता च याऽम्भसि ॥ २६ ॥

-भावाज्जयेद् वातं पित्तं मधुरतिक्तता । कफरूक्षकषायत्वात्त्रिदोषघ्नी ततोऽभया ॥ २ ॥-
हरीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी । कदाचित्कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी ॥ ३ ॥
हरस्य भवने जाता हरिता तु स्वभावतः । हरेत्तु सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी ॥ ४ ॥
हरीतक्याः स्मृतं बीजं चक्षुष्यं गुरु वातनुत् । पित्तनाशकरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥ ५ ॥

१ अधुना पूर्वं द्वित्रिपत्रेषु प्रभाववर्णनं कृतं क्रियते वर्तमानसमीपे वर्तमानवत् । २ लकुचं, बढहल बाढेऊ इति प्रसिद्धम् । ३ स्नायौ मध्यतन्तौ । ४ वृन्तं प्रसवबन्धनमित्यमरः ॥

निमज्जेत्सा सुप्रशस्ता कथिताऽतिगुणप्रदा ।
नवादिगुणयुक्तत्वं तथैवात्र द्विकर्षता ।
हरीतक्याः फले यत्र द्वयं तच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥ २७ ॥
चर्विता वर्द्धयत्यग्निं पेषिता मलशोधनी ।
स्विन्ना संग्राहिणी पथ्या भृष्टा प्रोक्ता त्रिदोषनुत् ॥ २८ ॥

उन्मीलिनी बुद्धिबलेन्द्रियाणां
निर्मूलिनी पित्तकफानिलानाम् ।
विस्रंसिनी मूत्रशकृन्मलानां
हरीतकी स्यात्सह भोजनेन ॥ २९ ॥

अन्नपानकृतान्दोषान्वातपित्तकफोद्भवान् ।
हरीतकी हरत्याशु भुक्तस्योपरि योजिता ॥ ३० ॥
लवणेन कफं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करा ।
घृतेन वातजान्रोगान्सर्वरोगान् गुडान्विता ॥ ३१ ॥
सिंधूत्थ * शर्कराशुंठीकणामधुगुडैः क्रमात् ।
वर्षादिष्वभया प्राश्या रसायनगुणैषिणा ॥ ३२ ॥

अध्वातिखिन्नो बलवर्जितश्च
रूक्षः कृशो लंघनकर्षितश्च ।
पित्ताधिको गर्भवती च नारी
विमुक्तरक्तस्त्वभयां न खादेत् ॥ ३३ ॥

१ विभीतकः ।

विभीतकस्त्रिलिङ्गः स्यादक्षः कर्षफलस्तथा ।
कलिद्रुमो भूतवासस्तथा कलियुगालयः ॥ ३४ ॥
विभीतकं स्वादुपाकं कषायं कफपित्तनुत् ।
उष्णवीर्य्यं हिमस्पर्शं भेदनं कासनाशनम् ॥ ३५ ॥

---

* सिंधूत्थं, सैंधवं लवणम् । वर्षादिषु षड्ऋतुषु हरीतकीप्रयोगः ।

१ देशभाषा-बहेडा । फारसी बलेले । अंग्रेजी मेरोंबेलन् बेलिरिक । Myrevallan Belliri Ri ।

रूक्षं नेत्रहितं केश्यं कृमिवैस्वर्य्यनाशनम् ।
विभीतमज्जा तृट्छर्दिकफवातहरी लघुः ॥ ३६ ॥
कषाया मदकृच्चाथ धात्रीमज्जापि तद्गुणा ।

१ आमलकी ।

वयस्याऽऽमलकी वृष्या जातीफलरसं शिवम् ॥ ३७ ॥
धात्रीफलं श्रीफलं च तथाऽमृतफलं स्मृतम् ।
त्रिष्वामलकमाख्यातं धात्री तिष्यफलाऽमृता ॥ ३८ ॥
हरीतकीसमं धात्रीफलं किन्तु विशेषतः ।
रक्तपित्तप्रमेहघ्नं परं वृष्यं रसायनम् ॥ ३९ ॥
हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्य्यशैत्यतः ।
कफं रूक्षकषायत्वात्फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित् ॥ ४० ॥
यस्य यस्य फलस्येह वीर्य्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्येव वीर्येण मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥ ४१ ॥

२ त्रिफला ।

पथ्याविभीतधात्रीणां फलैः स्यात्त्रिफला समैः ।
फलत्रिकं च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्तिता ॥ ४२ ॥
त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठहरा सरा ।
चक्षुष्या दीपनी रुच्या विषमज्वरनाशिनी ॥ ४३ ॥

३ शुण्ठी ।

शुंठी विश्वा च विश्वं च नागरं विश्वभेषजम् ।

---

१ देशभाषा आमला । फारसी अम्लिज । अंगरेजी ऐंबिलक मिरो बेलन् । Emblic Myrobalan ।, आमलस्य फलं शुष्कं तिक्तमम्लं कटु स्मृतम् । मधुरं तुवरं केश्यं भग्नसंधानकारकम् ॥ १ ॥ धातुवृद्धिकरं रोध्यं लेपनात्कांतिकारकम् । पित्तं कफं तृषां घर्मं मेदोरोगं विषं तथा । त्रिदोषं नाशयत्येव पूर्वाचार्य्यैर्निरूपितम् ॥ २ ॥ तन्मज्जा प्रदरच्छर्दिवातापित्तज्वरापहा । कषायमधुरा वृष्या श्वासकासनिबर्हणा ॥ ३ ॥ २ त्रिफला द्विविधा–लघ्वी, महती च । खजूर, फालसा, जिरिष्क, छोटी । पथ्या विभीतकं धात्री महती त्रिफला मता । स्वल्पा काश्मीरखर्जूरपरूषकफलैर्भवेत् ॥ ३ देशभाषा सुंठी । फारसी-जंजबील । अंगरेजी डाईजञ्जर Dyginger ।

ऊषणं कटुभद्रं च शृंगवेरं महौषधम् ॥ ४४ ॥
शुण्ठी रुच्याऽऽमवातघ्नी पाचनी कटुका लघुः ।
स्निग्धोष्णा मधुरा पाके कफवातविबंधनुत् ॥ ४५ ॥
वृष्या स्वर्य्या वमिश्वासशूलकासहृदामयान् ।
हन्ति श्लीपदशोफार्शआनाहोदरमारुतान् ॥ ४६ ॥
आग्नेयगुणभूयिष्ठं तोयांशं परिशोषयेत् ।
संगृह्णाति मलं तत्तु ग्राहि शुंठ्यादयो यथा ॥ ४७ ॥
विबंधभेदनी या तु सा कथं ग्राहिणी भवेत् ।
शक्तिर्विबंधभेदे स्याद् यतो न मलपातने ॥ ४८ ॥

१ आर्द्रकम् ।

आर्द्रकं शृंगवेरं स्यात्कटुभद्रं तथाऽऽर्द्रिका ।
आर्द्रिका भेदनी गुर्वी तीक्ष्णोष्णा दीपनी मता ॥ ४९ ॥
कटुका मधुरा पाके रूक्षा वातकफापहा ।
ये गुणाः कथिताः शुंठ्यां तेऽपि संत्यार्द्रकेऽखिलाः ॥५० ॥
भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रकभक्षणम् ।
अग्निसंदीपनं रुच्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ ५१ ॥
कुष्ठे पाण्ड्वामये कृच्छ्रे रक्तपित्ते व्रणे ज्वरे ।
दाहे निदाघशरदोर्नैव पूजितमार्द्रकम् ॥ ५२ ॥

२ पिप्पली ।

पिप्पली मागधी कृष्णा वैदेही चपला कणा ।
उपकुल्योषणा शौण्डी कोला स्यात्तीक्ष्णतंडुला ॥ ५३ ॥

---

१ देश भाषा-अदरक । फारसी जिंजिबिलिरतवा । अंगरेजी जिंजरुट् Gingerroot वातपित्तकफेभानां शरीरवनचारिणाम् । एक एव निहन्ताऽत्र लवणार्द्रककेसरी ॥ १ ॥ केव-देवीये-अंकुरं शृङ्गवेरस्य रक्तजिच्छ्लेष्मवातहृत् । अव्यक्तरसवीर्यत्वात्तत्परं तु कफापहम् ॥२॥ कांजिकार्द्रं सलवणं दीपनं पाचनं परम् । वातश्लेष्मविबन्धघ्नं विशेषादामवातनुत् ॥ ३ ॥ वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनं पाचनं परम् । लकुचस्य रसे क्षिप्तमार्द्रकं मुखशोधनम् ॥ ४ ॥
२ देशभाषा मध, फारसी पिप्पिलादराज, अंगरेजी-लांग पीप्पर Long Pepper ॥

पिप्पली दीपनी वृष्या स्वादुपाका रसायनी ।
अनुष्णा[1] कटुका स्निग्धा वातश्लेष्महरी लघुः ॥ ५४ ॥
पिप्पली रेचनी हन्ति श्वासकासोदरज्वरान् ।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान् ॥ ५५ ॥
आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा शीतला मधुरा गुरुः ।
पित्तप्रशमनी सा तु शुष्का पित्तप्रकोपनी ॥ ५६ ॥
पिप्पली मधुसंयुक्ता मेदःकफविनाशिनी ।
श्वासकासज्वरहरी वृष्या मेध्याऽग्निवर्द्धनी ॥ ५७ ॥
जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्ये च शस्यते गुडपिप्पली ।
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ ५८ ॥
द्विगुणः पिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्र भिषजां मतः ॥

२ मरिचम् ।

मरिचं वेल्लजं×कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।
मरिचं कटुकं तीक्ष्णं दीपनं कफवातजित् ॥ ५९ ॥
उष्णं पित्तकरं रूक्षं श्वासशूलकृमीन् हरेत् ।
तदार्द्रं मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु ॥ ६० ॥
किंचित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम्[3] ।

त्रिकटु ।

विश्वोपकुल्या मरिचं त्रयं त्रिकटु कथ्यते ॥ ६१ ॥
कटुत्रिकं तु त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषमुच्यते ।

–पिप्पली त्रिविधा । १ गजपिप्पली । २ जलपिप्पली । ३ पिप्पली च ॥ कटूष्णं लघु तच्छुष्कमवृष्यं कफवातजित् । नात्युष्णं नातिशीतं च वीर्य्यतो मरिचं सितम् ॥ १ ॥ गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यं च विशेषतः ॥

१ अनुष्णा–ईषदुष्णा । दे० भा० छोटी पीपल ।

२ दे० भा० काली मरिच । फा० पिल पिले अस्वद हलपिले गिर्द । इं०–ब्लाक् पेपर Black Pepper ॥ शोभांजनबीजं श्वेतमरिचं केचिद्वदन्ति । कटूष्णं श्वेतमरिचं विषघ्नं भूतनाशनम् । अवृष्यं दृष्टिरोगघ्नं युक्तं चैव रसायनम् ॥ १ ॥ राजनिघंटु ।
× वल्लिजमित्यपपाठः । ३ अपित्तलम्–ईषत्पित्तलम् । ईषदर्थे नञ् ।

त्र्यूषणं दीपनं हंति श्वासकासत्वगामयान् ॥ ६२ ॥
गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान् ।

१ पिप्पलीमूलम् ।

ग्रंथिकं पिप्पलीमूलमूषणं चटकाशिरः ॥ ६३ ॥
दीपनं पिप्पलीमूलं कटूष्णं पाचनं लघु ।
रूक्षं पित्तकरं भेदि कफवातोदरापहम् ॥ ६४ ॥
आनाहप्लीहगुल्मघ्नं कृमिश्वासकफापहम् ।

चतुरूषणम् ।

त्र्यूषणं सकणामूलं कथितं चतुरूषणम् ॥ ६५ ॥
व्योषस्यैव गुणाः प्रोक्ता अधिकाश्चतुरूषणे ।

२ चव्यम् ।

भवेच्चव्यं तु चविका कथिता सा तथोषणा ॥ ६६ ॥
कणामूलगुणं चव्यं विशेषाद्गुदजापहम् ।

३ गजपिप्पली ।

चविकायाः फलं प्राज्ञैः कथिता गजपिप्पली ॥ ६७ ॥
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वाशिरश्च सा ।
गजकृष्णा कटुर्वातश्लेष्महद्वह्निवर्धनी ॥ ६८ ॥
उष्णा निहन्त्यतीसारं श्वासकण्ठामयक्रिमीन् ।

---

१ दे० भा० पिपलामूल । फा० फिलफिल मोया । इं० पाइपररुट् Piper-Root ।

२ दे० भा० चवक । बंग० भा० चईगछ । चव्यपुष्पं गरश्वासकासक्षयविनाशनम् । (मदनपाल) तंत्रांतरे—चव्यं तु चविका चाथ बिंबीगुंजे तु कृष्णला । चविका कटु तिक्तोष्णा दीपनो पाचनी लघुः ॥ १ ॥ कफपित्तहरी चैव किंचिद्वातप्रकोपनी । अस्य शाकं श्लेष्मपित्तजित् । लैटन भा० राँक्स वर्धा पाइपर चव । Chavica Eyezrawha piper chava ।

३ दे० भा० गजपीपल, बडी पपिल । सैंहली, पिप्पली, वनपिप्पली, मराकिटपिप्पलीत्यादयः पृथग्गुणाः ॥ बं० भा० गजपिपुल । लै० भा० प्लेंटेगोएप्लक्सिको लिससिन्डाप्सन् जोफिसिनेलिम् । Pluntago amplexcaulis scanpans officinalis ॥

१ चित्रकः ।

चित्रकोऽनलनामा च पाठी व्यालस्तथोषणः ॥ ६९ ॥
चित्रकः कटुकः पाके वह्निकृत्पाचनो लघुः ।
रूक्षोष्णो ग्रहणीकुष्ठशोथार्शःकृमिकासनुत् ॥ ७० ॥
वातश्लेष्महरो ग्राही वातार्शःश्लेष्मपित्तहृत् ॥

पंचकोलम् ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ॥ ७१ ॥
पंचभिः कोलमात्रं यत्पंचकोलं तदुच्यते ।
पंचकोलं रसे पाके कटुकं रुचिकृन्मतम् ॥ ७२ ॥
तीक्ष्णोष्णं पाचनं श्रेष्ठं दीपनं कफवातनुत् ।
गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नं पित्तकोपनम् ॥ ७३ ॥

षडूषणम् ।

पंचकोलं समरिचं षडूषणमुदाहृतम् ।
पंचकोलगुणं तत्तु रूक्षमुष्णं विषापहम् ॥ ७४ ॥

२ यवानिका ।

यवानिकोग्रगन्धा च ब्रह्मदर्भाऽजमोदिका ।
सैवोक्ता दीप्यका दीप्या तथा स्याद्यवसाह्वया ॥ ७५ ॥
यवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः ।
दीपनी च तथा तिक्ता पित्तला शुक्रशूलहृत् ॥ ७६ ॥
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् ।

३ अजमोदा ।

अजमोदा खराश्वा च मायूरो दीप्यकस्तथा ॥ ७७ ॥

---

१ दे० भा० चित्रा । फा० बेखबरंदा । इं०–पलंबिगो कौरुलेऐसो । चित्रको द्विविधः कृष्णरक्तभेदात् । रक्तचित्रकनाम–कालो व्यालः कालमूलीति दीप्यो मार्जारोऽग्निर्दाहकः पावकश्च । चित्रांगोप्यारक्तचित्रो महाङ्गः स्याद्दुदाह्वश्चित्रकोऽन्यो गुणाढ्यः । तच्छाकं लघु संग्राहि कफपित्तविनाशनम् ॥ केवदेवीये ।

२ दे० भा० अजवाइन । फा०–नानुखा । इं० विशप्स वीडसीड Bishop's Weed Seed ॥ ३ दे० भा०'अजमोदा. अजवाइन वल्लजवाइन, फा० करपस, इं० सेलेरी सीड । Cslerey seed ॥

तथा ब्रह्मकुशा प्रोक्ता कारवी लोचमस्तका ।
अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत् ॥ ७८ ॥
उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्या बलकरी लघुः ।
नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्काबस्तिरुजो हरेत् ॥ ७९ ॥

१ पारसीकयवानी ।

पारसीकयवानी तु यवानीसदृशा गुणैः ।
विशेषात्पाचनी रुच्या ग्राहिणी मादिनी गुरुः ॥ ८० ॥

२ शुक्लजीरकं ३ कृष्णजीरकं ४ उपकुञ्ची च ।

जीरको जरणोऽजाजी कणा स्यादीर्घजीरकः ।
कृष्णजीरः सुगंधिश्च तथैवोद्गारशोधनः ॥ ८१ ॥
कालाजाजी तु सुषवी कालिका चोपकालिका ।
पृथ्वीका कारवी पृथ्वी पृथुः कृष्णोपकुंचिका ॥ ८२ ॥
उपकुंची च कुंची च बृहज्जीरकमित्यपि ।
जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपनं लघु ॥ ८३ ॥
संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।
ज्वरघ्नं पाचनं वृष्यं बल्यं रुच्यं कफापहम् ।
चक्षुष्यं पवनाध्मानगुल्मच्छर्द्यतिसारहृत् ॥ ८४ ॥

५ धान्यकम् ।

धान्यकं धानकं धान्यं धाना धानेयकं तथा ॥ ८५ ॥

---

१ पारसीका यवानी स्याच्चौहारो जंतुनाशनः । पारसी यवानी गंधाच्छारश्च खरपुष्पका । खुरासानी) यवानी यवानी तीव्रा तुरुष्का मदकारिणी । दीप्यः श्यामः कुबेराख्यो मादको मदकारकः । दे० भा० खुरासानी अजवाइन । फा० तुख्यइप्स । इं० आर्टिमिस्या मेरिटिमा, Artimisia mariteme । २ दे० भा० सुफेद जीरा । फा० जीरा । इं० कूटयमिन सीड Cummin Seed । ३ दे० भा० काला जीरा । फा० जीराश्याह । इं० ब्लाक् कारवेसीड Black Caravay Seed । ४ दे० भा० कलौंजी, मगरेला । फा० शोनिझ, श्याहदाने । इं० स्माल फेनल फ्लावर Small Fenei Flower कलौंजी तु बृहज्जीरकस्य जीरीनामकस्य भेद एव नतु पलांडुबीजानि । ५ दे० भा० धनियां, फा० तुख्मेकस्नीझई, कोरिऐंडिरसीड । Coriander Seed ।

कुनटी धेनुका छत्रा कुस्तुंबुरु वितुन्नकम् ।
धान्यकं तुवरं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु ॥ ८६ ॥
तिक्तं कटूष्णवीर्यं च दीपनं पाचनं स्मृतम् ।
ज्वरघ्नं रोचनं ग्राहि स्वादुपाकि त्रिदोषनुत् ॥ ८७ ॥
तृष्णादाहवमिश्वासकासामार्शःकृमिव्रणुत् ।
आर्द्रं तु तद्गुणं स्वादु विशेषात्पित्तनाशि तत् ॥ ८८ ॥

१ शतपुष्पा २ मिश्रेया ।

शतपुष्पा शताह्वा च मधुरा कारवी मिसिः ।
अतिलम्बी सितच्छत्रा संहितच्छत्रकापि च ॥ ८९ ॥
छत्रा शालेयशालीनौ मिश्रेया मधुरा मिसिः ।
शतपुष्पा लघुस्तीक्ष्णा पित्तकृद्दीपनी कटुः ॥ ९० ॥
उष्णा ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहत् ।
मिश्रेया तद्गुणा प्रोक्ता विशेषाद्योनिशूलनुत् ॥ ९१ ॥
अग्निमांद्यहरी हृद्या बद्धविट्कृमिशुक्रहत् ।
रूक्षोष्णा पाचनी कासवमिश्लेष्मानिलान् हरेत् ॥ ९२ ॥

३ मेथिका वनमेथिका ।

मेथिका मेथनी मेथी दीपनी बहुपत्रिका ।
बोधनी बहुबीजा च जातीगन्धफला तथा ॥ ९३ ॥
वल्लरी चन्द्रिका मन्था मिश्रपुष्पा च कैरवी ।
कुञ्चिका बहुपर्णी च पीतबीजा मुनिच्छदा ॥ ९४ ॥
मेथिका वातशमनी श्लेष्मघ्नी ज्वरनाशिनी ।
ततः स्वल्पगुणा वन्या वाजिनां सा तु पूजिता ॥ ९५ ॥

---

१ दे० भा० सौंफ । फा० बादियान । इं० फेनिल्सीड । Fenalseed ॥ सितामधुरिका चापि माधुरी तापसप्रिया । गंधाधिका घोषवती सुगंधा च तृषाहरा ॥ २ दे० भा० सोये, सोयेके बीज । फा० शुत-तुख्मेशुता । इं० डिलसीड Dillseed ॥ तज्जलं शीतलं रुच्यं कटु दीपनपाचनम् । मधुरं तृट्हृद्भाति पित्तदाहं च नाशयेत् ॥ ३ दे० भा० मथी । फा० तुख्ये शमपीत । इं० फेनरीक Fennyreekl ।

१ चन्द्रशूरम् ।

चंद्रिका चर्महंत्री च पशुमेहनकारकः ।
नंदनी कारवी भद्रा वासपुष्पा सुवासरा ॥ ९६ ॥
चंद्रशूरं हितं हिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ।
असृग्वातगदद्वेषि बलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ९७ ॥

२ चतुर्बीजम् ।

मेथिका चन्द्रशूरश्च कालजाजी यवानिका ।
एतच्चतुष्टयं युक्तं चतुर्बीजमिति स्मृतम् ॥ ९८ ॥
तच्चूर्णं भक्षितं नित्यं निहंति पवनामयम् ।
अजीर्णशूलमाध्मानं पार्श्वशूलं कटिव्यथाम् ॥ ९९ ॥

३ हिंगु ।

सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिंगु रामठम् ।
हिंगूष्णं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णं वातबलासहृत् ।
शूलगुल्मोदरानाहाक्रिमिघ्नं पित्तवर्धनम् ॥ १०० ॥

वचा ।

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०१ ॥
क्षुद्रपत्री च मंगल्या जटिलोग्रा च लोमशा ।
वचोग्रगंधा कटुका तिक्तोष्णा वांतिवह्निकृत् ॥ १०२ ॥
विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधनी ।
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान् हरेत् ॥ १०३ ॥

४ पारसीकवचा ।

पारसीकवचा शुक्ला प्रोक्ता हैमवतीति सा ।

---

१ दे० भा० हालीं, हालिम् । फा० हालम तुख्मतरातेजक । इं० कामन क्रेस, Common cress । २ दे० भा० चारदाना । फा० चारतुख्म । ३ दे० भा० हींग । फा० अंगुज्ञ देखते अगज्ञुखालीस । इं० आस्साफो टीड (हिंगुशोधनं-अंगारस्थे लोहपात्रे सघृते रामठं क्षिपेत् ॥ १ ॥ चालयेत् किंचिदारक्तवर्णं योगेषु योजयेत् ॥ २ ॥ नाडीहिंगु पलाशाख्या जन्तुका रामठी च सा । वंशपत्री च पिंडाह्वा सुवीर्य्या हिंगु नाडिका ॥ ३ ॥ ४ दे० भा० खुरासानी वच । फा० सोसन जर्द, अगरतुरकी । इं० स्वीट् फलारूट Sweet Floyroot ॥

हैमवत्युदिता तद्वद्वातं हन्ति विशेषतः ॥१०४॥

१ महाभरी-वचा ।

सुगन्धाप्युग्रगन्धा च विशेषात्कफकासनुत् ।
सुस्वरत्वकरी रुच्या हृत्कण्ठमुखशोधनी ॥ १०५ ॥

अपरा सुगंधा स्थूलग्रंथिः यस्या लोके महाभरीति नाम ।

स्थूलग्रंथिः सुगंधा स्यात्ततो हीनगुणा स्मृता ॥ १०६ ॥

२ द्वीपांतरवचा ।

द्वीपांतरवचा किंचित् तिक्तोष्णा वह्निदीप्तिकृत् ।
विबंधाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधनी ॥ १०७ ॥
वातव्याधीनपस्मारमुन्मादं तनुवेदनाम् ।
व्यपोहति विशेषेण फिरंगामयनाशिनी ॥ १०८ ॥

३ हपुषा ।

तन्मध्ये प्रथमफलं मत्स्यवद्विस्रगंधकम् ।
द्वितीयमश्वत्थफलसदृशं मत्स्यगंधि च ॥ १०९ ॥
हपुषा हबुषा विस्रा पराऽश्वत्थफला मता ।
मत्स्यगंधा प्लीहहंत्री विषघ्नी ध्वांक्षनाशिनी ॥ ११० ॥
हपुषा दीपनी तिक्ता मृदूष्णा तुवरा गुरुः ।
पित्तोदरसमीराशोंग्रहणीगुल्मशूलहृत् ॥
परात्येतद्गुणा प्रोक्ता रूपभेदो द्वयोरपि ॥ १११ ॥

विडंगम् ।

पुंसि क्लीबे विडङ्गः स्यात्कृमिघ्नो जन्तुनाशनः ।

---

१ दे० भा० कुलिंजन । फा० खिरंदासा । इं० ग्रेटगैलंगल Greatgalunga । २ दे० भा० चोबचीनी । फा० एवन । इं० चक्का । फिरंगदेशसंभूता चीनदेशेऽथ विश्रुता । नामतश्चोपचीनी स्यादश्वगंधसमा भवेत् ॥ १ ॥ अश्वगंधासमं पत्रमोषधिर्ग्रंथिसंयुता ॥ वर्णतः पाटला सा च दृढा च मधुरा रसे ॥ २ ॥ शिवनिघंटुः ॥ मद्यन्त्यजेत्तथा तैलं कांजिकं शाकमेव च । क्षारमम्लरसं चैव लवणं भोजनं तथा ॥ ३ ॥ ३ दे० भा० हाऊबेर । लै० भा० थेवेटिया नेरिफोलिया Thevetia Nerifolia ॥ ४ दे० भा० वायविडंग । फा० बरंग कावली । इ० बेब्रेंग Bubreng ॥ तुंबकः सौरभः सौरो-

तंडुलश्च तथा वेल्लममोघा चित्रतंडुलः ॥ ११२ ॥
विडङ्गं कटु तीक्ष्णोष्णं रूक्षं वह्निकरं लघु ।
शूलाध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातनिबन्धनुत् ॥ ११३ ॥

१ तुंबरुः ।

तुंबरुः सौरभः सौरो वनजः *सोऽणुजोऽन्धकः ।
तुंबरु कथितं तिक्तं कटु पाकेपि तत्कटु ॥ ११४ ॥
रूक्षोष्णं दीपनं तीक्ष्णं रुच्यं लघु विदाहि च ।
वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताकृमीन् ॥ ११५ ॥
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणि नाशयेत् ।

२ वंशरोचना ।

स्याद्वंशरोचना वांशी तुगाक्षीरी तुगाशुभा ॥ ११६ ॥
त्वक्क्षीरी वंशजा शुभ्रा वंशक्षीरी च वैष्णवी ।
वंशजा बृंहणी वृष्या बल्या स्वाद्वी च शीतला ॥ ११७ ॥
तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः ।
हरेत्कुष्ठं व्रणं पाण्डुं कषाया वातकृच्छ्रजित् ॥ ११८ ॥

३ समुद्रफेनः ।

समुद्रफेनः फेनश्च डिण्डीरोऽब्धिकफस्तथा ।
समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शीतलश्च सः ॥ ११९ ॥
कषायो विषपित्तघ्नः कर्णरुक्कफहल्लघुः ।

अष्टवर्गः ।

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्या ऋद्धिवृद्धिके ॥ १२० ॥

-वनजः सानुजोनितः । तक्षवर्णस्तीक्ष्णवर्णो वर्तुलश्च महामुनिः ॥ १ ॥ धन्वंतरिनिघंटौ ॥ १ दे० भा० कबाबे, नैपाली धानियां । * सानुज इत्यपि पाठः । २ दे० भा० तवाशीर, वंशलोचन । फा० तवाशीर। इ० थैसिलिस्यसंक क्रिशन Thesiliceons concretion । तवक्षीरं पयःक्षीरं यवजं गवयोद्भवमित्यादि (तवक्षीर नाम) दे० भा० तवाखीर, इ० आरा-रोट Arrowrot ॥ ३ दे० भा० समुद्रझाग । फा०-कफेदारिया । इं० कटल फीशबोन Cattlte fishboen ॥ (योगतरंगिणी)-कर्णस्रावरुजागूथहरः पाचनदीपनः ।-

अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः ।
अष्टवर्गो हिमः स्वादुर्बृंहणः शुक्रलो गुरुः ॥ १२१ ॥
भग्नसन्धानकृत्कामबलसंबलवर्द्धनः ।
वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयापहः ॥ १२२ ॥

जीवकर्षभयोरुत्पत्तिर्लक्षणं नाम गुणाः ।

जीवकर्षभकौ ज्ञेयौ हिमाद्रिशिखरोद्भवौ ।
रसोनकंदवत्कंदौ निस्सारौ सूक्ष्मपत्रकौ ॥ १२३ ॥
जीवकः कूर्चिकाकार ऋषभो वृषशृंगवत् ।
जीवको मधुरः शृंगी ह्रस्वांगः कूर्चशीर्षकः ॥ १२४ ॥
ऋषभो वृषभो धीरो विषाणीन्द्राक्ष इत्यपि ।
जीवकर्षभकौ बल्यौ शीतौ शुक्रकफप्रदौ ॥ १२५ ॥
मधुरौ पित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ।

मेदामहामेदयोः ।

महामेदाभिधः कंदो मोरङ्गादौ प्रजायते ॥ १२६ ॥
महामेदाऽवनौमेदा स्यादित्युक्तं मुनीश्वरैः ।
शुष्कार्द्रकनिभः कन्दो लताजातः सपांडुरः ॥ १२७ ॥
महामेदाभिधो ज्ञेयो मेदालक्षणमुच्यते ।
* शुक्लकन्दो नखच्छेद्यो मेदोधातुमिव स्रवेत् ॥ १२८ ॥
यः स मेदेति विज्ञेयो जिज्ञासातत्परैर्जनैः ।
स्वल्पपर्णी मणिच्छिद्रा मेदा मेदोभवाधरा ॥ १२९ ॥
महामेदा वसुच्छिद्रा त्रिदन्ती देवतामणिः ।
मेदायुगं गुरु स्वादु वृष्यं स्तन्यकफापहम् ॥ १३० ॥
बृंहणं शीतलं पित्तरक्तवातज्वरव्रणुत् ।

–अशुद्धः स करोत्यंगभङ्गं तस्माद्विशोधयेत् । समुद्रफेनः संपिष्टो निम्बुतोयेन शुध्यति । समुद्रफेनस्य समुद्रजलोपरि विद्यमानत्वात् समुद्रफेन इति संज्ञा । वस्तुतः मत्स्यास्थ्येव ॥

१ जीवको ह्रस्वविटपः कूर्चशीर्षश्च दक्षिणे । देशे संजायते कन्दो निस्सारः सूक्ष्मपत्रकः ॥

* शुष्केति पाठांतरम् ।

काकोल्योः ।

जायते क्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले ॥ १३१ ॥
यत्र स्यात्क्षीरकाकोली काकोली तत्र जायते ।
पीवरीसदृशः कन्दः + क्षीरं स्रवति गंधवान् ॥ १३२ ॥
सा प्रोक्ता क्षीरकाकोली काकोलीलिंगमुच्यते ।
यथा स्यात्क्षीरकाकोली काकोल्यपि तथा भवेत् ॥ १३३ ॥
एषा किंचिद्भवेत्कृष्णा भेदोऽयमुभयोरपि ।
काकोली वायसोली च वीरा कायस्थिका तथा ॥ १३४ ॥
सा शुक्ला क्षीरकाकोली वयःस्था क्षीरवल्लिका ।
कथिता क्षीरिणी धारी क्षीरशुक्ला पयस्विनी ॥ १३५ ॥
काकोलीयुगलं शीतं शुक्रलं मधुरं गुरु ।
बृंहणं वातदाहास्रपित्तशोथज्वरापहम् ॥ १३६ ॥

१ ऋद्धिवृद्ध्योः ।

ऋद्धिर्वृद्धिश्च कन्दौ द्वौ भवतः कोशयामले ।
श्वेतलोमान्वितौ कन्दौ लताजातौ सरन्ध्रकौ ॥ १३७ ॥
तावेव वृद्धिर्ऋद्धिश्च भेदमप्येतयोर्ब्रुवे ।
तूलग्रंथिसमा ऋद्धिर्वामावर्त्तफला च सा ॥ १३८ ॥
वृद्धिस्तु दक्षिणावर्त्तफला प्रोक्ता महर्षिभिः ।
ऋद्धियुग्मं सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ १३९ ॥
ऋद्धिर्बल्या त्रिदोषघ्नी शुक्रला मधुरा गुरुः ।
प्राणैश्वर्य्यकरी मूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी ॥ १४० ॥
वृद्धिर्गर्भप्रदा शीता बृंहणी मधुरा स्मृता ।
वृष्या पित्तास्रशमनी क्षतकासक्षयापहा ॥ १४१ ॥
राज्ञामप्यष्टवर्गस्तु यतोऽयमतिदुर्लभः ।
तस्मादस्य प्रतिनिधिं गृह्णीयात्तद्गुणं भिषक् ॥ १४२ ॥

+ स क्षीरप्रियगन्धवान् इति पाठांतरम् । १ कई आधुनिक वैद्य ऐसे कहते हैं कि जीवक, ऋषभकके अभावमें सुफेद सुरख ब्रैह्मन् मेदा महामेदाके अभावमें सालव शकाकल । क्षीर-काकोली काकोलीके अभावमें सुफेद सियाह मूसली । ऋद्धिवृद्धिके अभावमें उटंकन बीज, बीजबन्दको प्रतिनिधि कहते हैं ।

मुख्यसदृशः प्रतिनिधिः ।

मेदाजीवककाकोलीवृद्धिद्वन्द्वेऽपि चासति ।
वरीविदार्यश्वगन्धावाराहीश्च क्रमात्क्षिपेत् ॥ १४३ ॥
मेदामहामेदास्थाने शतावरीमूलम् ।
जीवकर्षभकस्थाने शतावरीमूलम् ॥ १४४ ॥
काकोलीक्षीरकाकोलीस्थाने अश्वगन्धामूलम् ।
ऋद्धिवृद्धिस्थाने वाराहीकन्दं गुणैस्तत्तुल्यं क्षिपेत् ॥ १४५ ॥

१ यष्टीमधु ।

यष्टीमधु तथा यष्टी मधुकं क्लीतकं तथा ।
अन्यत्क्लीतनकं तत्तु भवेत्तोयमधूलिका ॥ १४६ ॥
यष्टी हिमा गुरुः स्वाद्वी चक्षुष्या बलवर्णकृत् ।
स्निग्धा शुक्रला केश्या स्वर्य्या पित्तानिलास्रजित् ॥ १४७ ॥
व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा ।

२ कांपिल्लः ।

कांपिल्यः (ल्लः) कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रेचनोऽपि च ॥ १४८ ॥
कांपिल्यः कफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ।
हन्ति रेची कटूष्णश्च मेहानाहविषाश्मनुत् ॥ १४९ ॥

३ आरग्वधः ।

आरग्वधो राजवृक्षः शंपाकश्चतुरंगुलः ।
आरेवतो व्याधिघाती कृतमालः सुवर्णकः ॥ १५० ॥

---

१ दे० भा० मुलहठी । फा० बेख महक । लिक–अंरिसरूट । Liguorice Root । यष्टी द्विधा–जलजा स्थलजा ।, जलयष्टीगुणाः । जलयष्टी विषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा । २ दे० भा० कमीला । फा० कन्बिलाय । इ० केमिला रोटलीरा Kamila Rocttlera ॥ तच्छाकं शीतलं तिक्तं वातसंग्राहि दीपनम् । ३ दे० भा० अमलतास । पत्रपुष्पमज्ज-मूलानां गुणाः पृथगन्यत्र द्रष्टव्याः कर्णिकारोप्यस्यैव भेदः । इं० पुडिंगणईपटी पाजिङ्ग काश्याकाश्यापत्य । Puddiny Pipetree Puring] Cassia, Cassia Palpchassiaflstula.

कर्णिकारो दीर्घफलः स्वर्णाङ्गः स्वर्णभूषणः ।
आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलः स्रंसनो मृदुः ॥ १५१ ॥
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलनुत् ।
तत्फलं स्रंसनं रुच्यं कोष्ठपित्तकफापहम् ॥ १५२ ॥
ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ।

१ कट्वी ।

कट्वी तु कटुका तिक्ता कृष्णभेदा कटंभरा ॥ १५३ ॥
अशोका मत्स्यशकला चक्राङ्गी शकुलादनी ।
मत्स्यपित्ता काण्डरुहा रोहिणी कटुरोहिणी ॥ १५४ ॥
कटुका कटुका पाके तिक्ता रूक्षा हिमा लघुः ।
भेदनी दीपनी हृद्या कफपित्तज्वरापहा ॥ १५५ ॥
प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

२ किरातः ।

किरातिक्तः कैरातो कटुतिक्तः किरातकः ॥ १५६ ॥
काण्डतिक्तोऽनार्यतिक्तो भूनिम्बो रामसेनकः ।
किरातकोऽन्यो नैपालः सोऽर्द्धतिक्तो ज्वरान्तकः ॥ १५७॥
किरातः सारको रूक्षः शीतलस्तिक्तको लघुः ।
सन्निपातज्वरश्वासकफपित्तास्रदाहनुत् ॥ १५८ ॥
कासशोथतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ।

३ इन्द्रयवम् ।

उक्तं कुटजबीजं तु यवमिन्द्रयवं तथा ॥ १५९ ॥

---

१ दे० भा०-कौड, कुटंकी । फा० खर्बकेसियाह । इं० ब्लाक् हेल्लोबोर । Black Hellebore ॥ शुद्धिः-कटुकीमुष्णदुग्धेन प्रक्षाल्य ग्राह्येदपि । २ दे० भा० चिरायता । फा० नेनिहाद । इ० चिरेटा Chirata । नैपालगुणाः-नैपालः सन्निपातारिर्ज्वरंनिद्रापहस्तथा ॥ ३ दे० भा० इन्द्रजौ । फा० जवानकुञ्चिस्क । इं० ओबललिबडरोसवे । Ovallevaed Rosebay । कुटजस्य त्वचा तिक्ता सर्वातीसारनाशिनी ॥ श्वेतकुटजपुष्पगुणाः-पुष्पं तु वत्सकस्योक्तं तुवरं चाग्निदीपकम् । तिक्तं शीतं वातलं च लघु पित्तातिसारनुत् ॥

कलिङ्गं चापि कालिङ्गं तथा भद्रयवं स्मृतम् ।
इति क्लीबे अमरः प्राह ।
क्वचिदिन्द्रस्य नामैव भवेत्तदभिधायकम् ॥ १६० ॥
फलानीन्द्रयवास्तस्य तथा भद्रयवा अपि । इति धन्वंतरिः ।
इन्द्रयवं त्रिदोषघ्नं संग्राहि कटु शीतलम् ॥ १६१ ॥
ज्वरातीसाररक्तार्शःकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।
दीपनं गुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित् ॥ १६२ ॥

१ मदनः ।

मदनश्छर्दनः पिण्डी राठः पिण्डीतकस्तथा ।
करहाटो मरुवकः शल्यको विषपुष्पकः ॥ १६३ ॥
मदनो मधुरस्तिक्तो वीर्य्योष्णो लेखनो लघुः ।
वान्तिकृद्विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणान्तकः ॥ १६४ ॥
रूक्षः कुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः ।

२ रास्ना ।

रास्ना युक्तरसा रस्या सुवहा रसना रसा ॥ १६५ ॥
एलापर्णी च सुरसा सुगन्धा श्रेयसी तथा ।
रास्नाऽऽमपाचनी तिक्ता गुरूष्णा कफवातजित् ॥ १६६ ॥
शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ।
कासज्वरविषाशीतिवातकामयहिध्महृत् ॥ १६७ ॥

३ नाकुली ।

नाकुली सुरसा नागसुगन्धा गन्धनाकुली ।
नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी सर्पाक्षी विषनाशनी ॥ १६८ ॥

---

१ दे० भा० मैनफल । इं० बुशीगार्डिनीया Bushy Gardenia । कृष्णः श्वेतश्च मदनः शीतलो मधुरः स्मृतः । कटुस्तिक्तश्च तुवरो वांतिकृत्कफनाशनः । पक्वामाशय-शुद्धेश्च कारकः पित्तनाशकः । हृद्रोगनाशकश्चैव पूर्वस्मादुत्तमो गुणैः । २ दे० भा० रायसन । (जतर रहसन् झिजन) । फा० रासुन । रास्ना तु त्रिविधा प्रोक्ता मूलं पत्रं तृणं तथा । ज्ञेयौ मूलदलौ श्रेष्ठौ तृणरास्ना तु मध्यमा ॥ ३ दे० भा० नाई, हरकाई, चन्द्रा । फा० छोटा चांदा । नाकुली द्विधा नाकुली, सुगंधनाकुली ।

नाकुली तुवरा तिक्ता कटूकोष्णा विनाशयेत् ।
भोगिलूताबृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान् ॥ १६९ ॥

१ माचिका ।

माचिका प्रास्थिकाऽम्बष्ठा तथाऽम्बाऽम्बालिकाऽम्बिका ।
मयूरविदला केशी सहस्रा बालमूलिका ॥ १७० ॥
माचिकाऽम्ला रसे पाके कषाया शीतला लघुः ।
पक्वातीसारपित्तास्रकफकण्डूवामयापहा ॥ १७१ ॥

२ तेजवती ।

तेजस्विनी तेजवती तेजोह्वा तेजनी तथा ।
तेजस्विनी कफश्वासकासास्यामयवातहृत् ॥ १७२ ॥
पाचन्युष्णा कटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपनी ।

३ ज्योतिष्मती ।

ज्योतिष्मती स्यात्कटभी ज्योतिष्का कडुनीति च॥१७३॥
पारावतपदी पण्या लता प्रोक्ता ककुन्दनी ।
ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सरा कफसमीरजित् ॥ १७४ ॥
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ।

४ कुष्ठम् ।

कुष्ठं रोगाह्वयं वाप्यं परिभाव्यं तथोत्पलम् ॥ १७५ ॥
कुष्ठमुष्णं कटु स्वादु शुक्रलं तिक्तकं लघु ।
हन्ति वातास्रवीसर्पकासकुष्ठमरुत्कफान् ॥ १७६ ॥

५ पुष्करमूलम् ।

उक्तं पुष्करमूलं तु पौष्करं पुष्करं च तत् ।
पद्मपत्रं च काश्मीरं कुष्ठभेदमिमं जगुः ॥ १७७ ॥

---

१ पश्चिमदेशे मांई इति वृक्षविशेषः मोईया इति लोके । २ दे० भा० तेजबल इं० टूथएकट्री Toothache tree ॥ ३ दे० भा० उमाजिनी । मालकंगुनी द्विधा-ज्योतिष्मती, महाज्योतिष्मती । फा० काल । इं० स्टाँफट्री । Stafftree । ४ दे० भा० कुट ॥ ५ दे० भा० पोहकर मूल ॥

पौष्करं कटुकं तिक्तमुक्तं वातकफज्वरान्।
हन्ति कासारुचिश्वासान् विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ॥ १७८ ॥

१ हेमाह्वा।

कटुपर्णी हैमवती हेमक्षीरी हिमावती।
हेमाह्वा पीतदुग्धा च तन्मूलं चोकमुच्यते ॥ १७९ ॥
हेमाह्वा रेचनी तिक्ता भेदन्युत्क्लेशकारिणी।
कृमिकण्डुविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ १८० ॥

२ शृंगी।

शृंगी कर्कटशृंगी च स्यात्कुलीरविषाणिका।
अजशृंगी च वक्रा च कर्कटाख्या च कीर्तिता ॥ १८१ ॥
शृंगी कषाया तिक्तोष्णा कफवातक्षयज्वरान्।
श्वासोर्ध्ववाततृट्कासहिक्कारुचिवमीर्हरेत् ॥ १८२ ॥

३ कट्फलः।

कट्फलः सोमवल्कश्च कैटर्य्यः कुंभिकापि च।
श्रीपर्णिका कुमुदिका भद्रा भद्रवतीति च ॥ १८३ ॥
कट्फलस्तुवरस्तिक्तः कटुर्वातकफज्वरान्।
हन्ति श्वासप्रमेहार्शःकासकण्डूवामयारुचीः ॥ १८४ ॥

४ भार्ङ्गी।

भार्ङ्गी भृगुभवा पद्मा फञ्जी ब्राह्मणयष्टिका।
ब्राह्मण्यङ्गारवल्ली च खरशाकश्च हंजिका ॥ १८५ ॥
भार्ङ्गी रूक्षा कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी लघुः।
दीपनी तुवरा गुल्मरक्तजिन्नाशयेद्ध्रुवम् ॥ १८६ ॥
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान्।

---

१ दे० भा० चोक। इं० गंबोझाथिसल् Gamboge-thfstle ॥ तस्याः क्षीरं बिंदुमात्रं नेत्राक्षिप्तं घृतप्लुतम् ॥ शुक्लं च ह्यधिमांसं च नेत्रान्ध्यं चैव नाशयेत् ॥ २ दे० भा० काकडासिंगी ॥ ३ दे० भा० कायफल। फा० उदुलवर्क। ४ दे० भा० भार्ङ्गी। बभनेटी, ब्रह्मदण्डी। अस्याः पत्रगुणाः-पर्णमस्या ज्वरं हन्ति दाहं हिक्कां त्रिदोषकम् ॥

१ अश्मभेदः ।

पाषाणभेदकोऽश्मघ्नो गिरिभिद्भिन्नयोजनी ॥ १८७ ॥
अश्मभेदो हिमस्तिक्तः कषायो बस्तिशोधनः ।
भेदनो हन्ति दोषाशर्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः ॥ १८८ ॥
योनिरोगान्प्रमेहांश्च प्लीहशूलव्रणानि च ।

२ धातकी ।

धातकी धातुपुष्पी च वह्निज्वाला च सा स्मृता ॥ १८९ ॥
धातकी कटुका शीता मदकृत्तुवरा लघुः ।
तृष्णातीसारपित्तास्रविषक्रिमिविसर्पजित् ॥ १९० ॥

३ मंजिष्ठा ।

मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका ।
मण्डूकपर्णी मण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ॥ १९१ ॥
रसायन्यरुणा काला रक्ताङ्गी रक्तयष्टिका ।
मण्डीतकी च गण्डीरी मंजूषा वस्त्ररञ्जनी ॥ १९२ ॥
मञ्जिष्ठा मधुरा तिक्ता कषाया स्वरवर्णकृत् ।
गुरुरुष्णा विषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक् ॥ १९३ ॥
रक्तातीसारकुष्ठास्रवीसर्पव्रणमेहनुत् ।

४ कुसुंभम् ।

स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं वस्त्ररञ्जकमित्यपि ॥ १९४ ॥
कुसुम्भं वातलं कृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ।

---

१ दे० भा० पाषाणभेद । फा० गोशाद । इं० आईरिस्स्प । Irissp ॥ क्षुद्रपाषाणभेदश्च व्रणकृच्छ्राश्मरीहरः । २ दे० भा० धावेके फूल । इं० ग्रीसली आटो मेन्टोजा । ३ दे० भा० मंजीठ । फा० रुनास । इं० मेडररुट् । Madder root अस्याः शाकगुणाः- शाका स्यान्मधुरा लघ्वी स्निग्धा दीप्तिकरी मता । वातपित्तहरी चोक्ता ऋषिभिः सत्यवादिभिः । फलमपि यकृद्दोषहरम् । ४ दे० भा० कुसुम्भा । फा० पुलेमास्कर तुखूमकाशा । इं० आफिसिनल् कार्थेमस् Officinal carthamus । कुसुंभपुष्पं सुस्वादु त्रिदोषघ्नं च भेदकम् । रूक्षमुष्णं पित्तलं च केशरंजनकारकम् ॥ कफनाशकरं चैव लघु प्रोक्तं मनीषिभिः ॥

१ लाक्षा ।

लाक्षा पलंकषाऽलक्तो यावो वृक्षामयो जतुः ॥ १९५ ॥
लाक्षा वर्ण्या हिमा बल्या स्निग्धा च तुवरा लघुः ।
अनुष्णा कफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत् ॥ १९६ ॥
व्रणोरःक्षतवीसर्पकृमिकुष्ठगदापहा ।
अलक्तको गुणैस्तद्वद्विशेषाद् व्यङ्गनाशनः ॥ १९७ ॥

२ हरिद्रा ।

हरिद्रा कांचनी पीता निशाख्या वरवर्णिनी ।
कृमिघ्ना हलदी योषित्प्रिया हट्टविलासिनी ॥ १९८ ॥
हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा कफपित्तनुत् ।
वर्ण्या त्वग्दोषमेहास्रशोषपाण्डुव्रणापहा ॥ १९९ ॥

३ आम्रगन्धिहरिद्रा ।

दार्वी मेदा सुगन्धा च दार्वी दारुकदारु च ।
कर्पूरा पद्मपत्रा स्यात्सुरभी सुरनायका ॥ २०० ॥
आम्रगन्धिहरिद्रा या सा शीता वातला मता ।
पित्तहन्मधुरा तिक्ता सर्वकण्डूविनाशिनी ॥ २०१ ॥

४ अरण्यहरिद्रा ।

अरण्यहलदीकन्दः कुष्ठवातास्रनाशनः ।

५ दारुहरिद्रा ।

दार्वी दारुहरिद्रा च पर्जन्या पर्जनीति च ॥ २०२ ॥
कटंकटेरी पीता च भवेत्सैव पचम्पचा ।
सैव कालीयकः प्रोक्तस्तथा कालेयकोऽपि च ॥ २०३ ॥
पीतद्रुश्च हरिद्रुश्च पीतदारु कपीतकम् ।
दार्वी निशागुणा किन्तु नेत्रकर्ण्यस्यरोगनुत् ॥ २०४ ॥

---

१ दे० भा० लाख । फा० लाक । इं० शेललाक् Shell lac ।
२ दे० भा० हलदी । फा० जरद चोब । इं० टर्मेरिक् Turmeric ॥
३ दे० भा० चवां हलदी । अंबिया हलदी । इं० मेंगोजिंजर । Mango-jinger ॥ ४ दे० भा० वनहलदी । जंगली हलदी । ५ दे० भा० दारुहलदी । फा० जारचोब ।

१ रसांजनम् ।

दार्वीक्काथसमं क्षीरं पादं पक्त्वा यदा घनम् ।
तदा रसांजनं ख्यातं नेत्रयोः परमं हितम् ॥ २०५ ॥
रसांजनं तार्क्ष्यशैलं रसगर्भं च तार्क्ष्यजम् ।
रसांजनं कटु श्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ॥ २०६ ॥
उष्णं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषहृत् ।

२ वाकुची ।

अवल्गुजा वाकुची स्यात्सोमराजी सुपर्णिका ॥ २०७ ॥
शशिलेखा कृष्णफला सोमा पूतिफलीति च ।
सोमवल्ली कालमेषी कुष्ठघ्नी च प्रकीर्त्तिता ॥ २०८ ॥
वाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी ।
विष्टम्भहृद्धिमा रुच्या सरा श्लेष्मास्रपित्तनुत् ॥ २०९ ॥
रूक्षा हृद्या श्वासकुष्ठमेहज्वरकृमिप्रणुत् ।
तत्फलं पित्तलं कुष्ठकफानिलहरं कटु ॥ २१० ॥
केश्यं त्वच्यं वमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत् ।

३ चक्रमर्दः ।

चक्रमर्दः प्रपुन्नाटो दद्रुघ्नो मेषलोचनः ॥ २११ ॥
पद्माटः स्यादेडगजश्चक्री पुन्नाट इत्यपि ।
चक्रमर्दो लघुः स्वादू रूक्षः पित्तानिलापहः ॥ २१२ ॥
हृद्यो हिमः कफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन् हरेत् ।
हन्त्युष्णं तत्फलं कुष्ठकण्डुदद्रुविषानिलान् ॥ २१३ ॥

---

१ दे० भा० रसौंत । शोधनम्-तोयेऽत्युष्णे परिक्षिप्य द्रवीकुर्य्याद्रसाञ्जनम् । वाससा स्रावयित्वा च शोधितं भानुरश्मिना ॥ एवं विशोधितं तच्च सर्वकर्मसु योजयेत् । विशुद्धं नाशयेद् व्याधीन् नाविशुद्धं कदाचन ॥ इंडियन बर्बरी Extract of Indian Berbery ॥

२ दे० भा० बावची । श्वित्रारिर्वाकुचीभेदः । इं० एसक्यूलंटल्फाकुर्शिया ॥ Esculent flacourtia । ३ दे० भा० पवाड । फा० संजीस बोया । प० भा० रालों । इं० ओवललीव्ड केशिया । Ovalleaved cussia ॥

गुल्मकासकृमिश्वासनाशनं कटुकं स्मृतम् ॥

१ अतिविषा ।

विषा त्वतिविषा विश्वा शृङ्गी प्रतिविषाऽरुणा ॥ २१४ ॥
शुक्लकन्दा चोपविषा भङ्गुरा घुणवल्लभा ।
विषा सोष्णा कटुस्तिक्ता पाचनी दीपनी हरेत् ॥ २१५ ॥
कफपित्तातिसारामविषकासवमिक्रिमीन् ।

२ सावरलोध्रः । पटियालोध्रः ।

लोध्रस्तिल्लस्तिरीटश्च सावरो गालवस्तथा ॥ २१६ ॥
द्वितीयः पट्टिकालोध्रः क्रमुकः स्थूलवल्कलः ।
जीर्णपत्रो बृहत्पक्षः पट्टीलाक्षा प्रसादनः ॥ २१७ ॥
लोध्रो ग्राही लघुः शीतश्चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ।
कषायो रक्तपित्तासृग्ज्वरातीसारशोथहृत् ॥ २१८ ॥

३ रसोनः ।

लशुनस्तु रसोनः स्यादुग्रगन्धो महौषधम् ।
अरिष्टो म्लेच्छकन्दश्च यवनेष्टो रसोनकः ॥ २१९ ॥
यदाऽमृतं वैनतेयो जहार सुरसत्तमात् ।
तदा ततोऽपतद्बिन्दुः स रसोनोऽभवद्भुवि ॥ २२० ॥
पञ्चभिश्च रसैर्युक्तो रसेनाम्लेन वर्जितः ।
तस्माद्रसोन इत्युक्तो द्रव्याणां गुणवेदिभिः ॥ २२१ ॥
कटुकश्चापि मूलेषु तिक्तः पत्रेषु संस्थितः ।
नाले कषाय उद्दिष्टो नालाग्रे लवणः स्मृतः ॥ २२२ ॥
बीजे तु मधुरः प्रोक्तो रसस्तद्गुणवेदिभिः ।
रसोनो बृंहणो वृष्यः स्निग्धोष्णः पाचनः सरः ॥ २२३ ॥

---

१ दे० भा० अतीस । बं० भा० आतइच । अतिविषा त्रिधा ज्ञेया शुक्ला कृष्णा तथाऽरुणा । रसवीर्य्यविपाकेषु निर्विषैव गुणाधिका ॥

२ दे० भा० लोध, पठानीलोध । अरबी मुगाम । ३ दे० भा० थोम । मद्यं मांसं तथाऽम्लं च हितं लशुनसेविनाम् । व्यायाममातपं रोषमतिनीरं पयो गुडम् ॥ रसोनमश्नन् पुरुषस्त्यजेदेतन्निरंतरम् ॥

रसे पाके च कटुकस्तीक्ष्णो मधुरको मतः ।
बलवर्णकरो मेधाहितो नेत्र्यो रसायनः ॥ २२४ ॥
हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूलविबन्धगुल्मारुचिकासशोफान् ।
दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तुसमीरणश्वासकफांश्च हन्ति ॥२२५॥

१ पलांडुः ।

पलाण्डुर्यवनेष्टश्च दुर्गन्धो मुखदूषकः ।
पलाण्डुस्तु गुणैर्ज्ञेयो रसोनसदृशो बुधैः ॥ २२६ ॥
स्वादुः पाके रसेनोष्णः कफकृन्नातिपित्तलः ।
हरते केवलं वातं बलवीर्यकरो गुरुः ॥ २२७ ॥

२ भल्लातकम् ।

भल्लातकं त्रिषु प्रोक्तमरुष्कोऽरुष्करोऽग्निकः ।
तथैवाग्निमुखी भल्ली वीरवृक्षश्च शोफकृत् ॥ २२८ ॥
भल्लातकफलं पक्वं स्वादुपाकरसं लघु ।
कषायं पाचनं स्निग्धं तीक्ष्णोष्णं छेदि भेदनम् ॥ २२९ ॥
मेध्यं वह्निकरं हन्ति कफवातव्रणोदरम् ।
कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोथानाहज्वरक्रिमीन् ॥ २३० ॥
तन्मज्जा मधुरा वृष्या बृंहणी वातपित्तहा ।
वृन्तमारुष्करं स्वादु पित्तघ्नं केश्यमग्निकृत् ॥ २३१ ॥
भल्लातकः कषायोष्णः शुक्रलो मधुरो लघुः ।
वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीगदान् ॥ २३२ ॥
हन्ति गुल्मज्वरश्वित्रवह्निमान्द्यकृमिव्रणान् ।

---

१ गंधाकाररसैस्तुल्यो गृंजनस्तु पलांडुना । सूक्ष्मनालाग्रपत्रत्वाद्भिद्यतेऽसौ पलांडुतः ॥ स च स्वेदनभोजने च प्रयुक्तः कफवातजान्यर्शांसि हंति पित्तवतां नराणामपथ्यः ॥ २ दे० भा० भिलावे । नदीभल्लातकः वृषांकः । अस्य वृन्तगुणाः-भल्लातकवृन्तं मधुरम् ॥ फा० विलादुर । कषायं वातकोपनम् ॥ इं० मार्किंगनट् । Markihgnut ॥ भल्लातकशुद्धिः-भल्लातकानां पवनोद्धतानां वृन्ताच्च्युतानां च यदाढकं स्यात् । तच्चेष्टकाचूर्णकणैर्विघृष्य प्रक्षालयित्वा विसृजेत्प्रवाते ॥ शुष्कं पुनस्तद्विदलीकृतं च ततः पचेदप्सु चतुर्गुणासु । तत्पादशेषं परिपूतशीतं क्षीरेण तुल्येन पुनः पचेत्तु ॥

१ भंगा ।

भङ्गा गञ्जा मातुलानी मादनी विजया जया ॥ २३३ ॥
भङ्गा कफहरी तिक्ता ग्राहणी पाचनी लघुः ।
तीक्ष्णोष्णा पित्तला मोहमदवाग्वह्निवर्द्धनी ॥ २३४ ॥

२ खसतिलः ।

तिलभेदः खसतिलः खाखसश्चापि संस्मृतः ।
स्यात्खाखसफलोद्भूतं वल्कलं शीतलं लघु ॥ २३५ ॥
ग्राहि तिक्तं कषायं च वातकृत्कफकासहृत् ।
धातूनां शोषकं रूक्षं मदकृद्वाग्विवर्द्धनम् ॥ २३६ ॥
मुहुर्मोहकरं रुच्यं सेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ।

३ अहिफेनकम् ।

उक्तं खसफलं क्षीरमाफूकमहिफेनकम् ॥ २३७ ॥
आफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम् ।
तथा खसफलोद्भूतवल्कलप्रायमित्यपि ॥ २३८ ॥

४ खसबीजानि ।

उच्यन्ते खसबीजानि ते खाखसतिला अपि ।

---

१ दे० भा० भांग-सा चतुर्धा सितारक्तपीतनीलप्रसूनकैः । शक्राशनं तु विजया त्रैलोक्यविजया जया ॥ इति तंत्रांतरे । फा० किन्नाविष, वरकुलख्याल, शवनवंग । इं० इंडियनहेंप Indian Hemp । २ दे० भा० पोस्त । फा० कोकनार । इं० पोपिकाप्युलस Pop-py capules । ३ दे० भा० अफीम । फा० तिर्य्याकअफयून । इं० ओपियम् Opium । अहिफेनशुद्धिः योगतरङ्गिण्याम्-अहिफेनं शृङ्गवेररसैर्भाव्यं त्रिसप्तधा । शुद्ध्यत्युक्तेषु योगेषु योजयेत्तु विधानतः ॥ अहिफेनश्चतुर्धा १ जारणे-श्वेतवर्णः २ मारणे-कृष्णवर्णः ३ धारणे-पीतवर्णः ४ सारणे-चित्रवर्णः । विजयाबीजचूर्णस्य भक्षणं विधिना प्रिये । सर्वोपकारकं तत्तु सर्वरोगापहारकम् ॥ परिपक्वानि बीजानि वृक्षादानीय यत्नतः । छायायां पातयेद्रक्षेद्रक्षयेत्कर्षमात्रकम् ॥ कपिलापयसा सार्द्धं मासमात्रं वरानने । धातुवृद्धिर्भवेत्तस्य चांत्रवृद्धिर्विनश्यति ॥ मांसदार्ढ्यं वसादार्ढ्यं देहदार्ढ्यं भवेत् प्रिये । अग्निदीप्तिर्मनोदीप्तिः कामदीप्तिस्तथैव च ॥ प्रज्ञादीप्तिर्दृष्टिदीप्तिर्दीप्तीनां पंचकं भवेत् ॥

४ दे० भा० खसखस । फा० तुखमे कोकनार । इं० पोपीसिड्स Poppy seeds ।

खसबीजानि बल्यानि वृष्याणि सुगुरूणि च ॥ २३९ ॥
शमयन्ति कफं तानि जनयन्ति समीरणम् ।

१ सैन्धवम् ।

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं पाणिमन्थं च सिन्धुजम् ॥ २४० ॥
सैन्धवं लवणं स्वादु दीपनं पाचनं लघु ।
स्निग्धं रुच्यं हिमं वृष्यं सूक्ष्मं नेत्र्यं त्रिदोषहृत् ॥ २४१ ॥

२ गडाख्यम् ।

शाकम्भरीयं कथितं गडाख्यं रोमकं तथा ।
गडाख्यं लघु वातघ्नमत्युष्णं भेदि पित्तलम् ॥ २४२ ॥
तीक्ष्णोष्णं चापि सूक्ष्मं चाभिष्यन्दि कटुपाकि च ।

३ सामुद्रम् ।

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वाशिरं च तत् ॥ २४३ ॥
समुद्रजं सागरजं लवणोदधिसम्भवम् ।
सामुद्रं मधुरं पाके सतिक्तं मधुरं गुरु ॥ २४४ ॥
नात्युष्णं दीपनं भेदि सक्षारमविदाहि च ।
श्लेष्मलं वातनुत्तिक्तमरूक्षं नातिशीतलम् ॥ २४५ ॥

४ विडम् ।

विडं पाक्यं च कृतकं तथा द्राविडमासुरम् ॥ २४६ ॥
विडं सक्षारमूर्द्धाधःकफवातानुलोमनम् ।
(ऊर्ध्वं कफमधो वातं संचारयेदित्यर्थः ।)
दीपनं लघु तीक्ष्णोष्णं रूक्षं रुच्यं व्यवायि च ॥ २४७ ॥
विबन्धानाहविष्टम्भोदर्दगौरवशूलनुत् ।

५ सौवर्चलम् ।

सौवर्चलं स्याद्रुचकमन्थपाकं च धातुमत् ॥ २४८ ॥

---

१ दे० भा० सैंधानमक । फा० नमके संग । विलोरी—नमके सेंध । इं० काराइड आफ् सोथियं । Chloride of Sodium । २ दे० भा० सांक नमक । फा० मिलहे अवकीर । ३ दे० भा० समुद्र नमक । फा० नमक । इं० साल्ट् Salt । ४ दे० भा० मनिआरी नमक । काचलक्षणमन्यत्र दर्शनीयम् । रोमकं, द्रोणी अन्यत्र दर्शनीयम् । ५ दे० भा० सौंचल नमक । कालानमक । फा० नमक सिहाय । इं० अनक्या सोडिअ क्लोराईट Unadua Sodium Chloride ।

रुचकं राचनं भेदि दीपनं पाचनं परम् ।
सस्नेहं वातनुन्नातिपित्तलं विशदं लघु ॥ २४९ ॥

१ औद्भिदम् ।

औद्भिदं पांशुलवणं यज्जातं भूमितः स्वयम् ।
क्षारं गुरु कटु स्निग्धं शीतलं वातनाशनम् ॥ २५० ॥

चणकाम्लकम् ।

चणकाम्लकमत्युष्णं दीपनं दन्तहर्षणम् ।
लवणाम्लरसं रुच्यं शूलाजीर्णविबन्धनुत् ॥ २५१ ॥

२ यवक्षार–स्वर्जिका–सुवर्चिकाश्च ।

पाक्यः क्षारो यवक्षारो यावशूको यवाग्रजः ।
स्वर्जिकापि स्मृतः क्षारः कपोतः सुखवर्चका ॥ २५२ ॥
कथितः स्वर्जिकाभेदो विशेषज्ञैः सुवर्चिकः ।
निहन्ति शूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान् ॥ २५३ ॥
पाण्ड्वर्शोग्रहणीगुल्मानाहप्लीहहृदामयान् ।
स्वर्जिकाऽल्पगुणा तस्माद्विशेषाद्गुल्मशूलहृत् ॥ २५४ ॥
सुवर्चका स्वर्जिकावद्बोद्धव्या गुणतो जनैः ।

३ सौभाग्यम् ।

सौभाग्यं टङ्कणं क्षारं धातुद्रावकमुच्यते ॥ २५५ ॥

---

१ भूमिमुद्भिद्योत्पन्नस्य धारोदकस्य सूर्यरश्मिभिर्वा वह्निना क्वथनाद्यल्लवणं तदौद्भिदम् । पांशुलवणं पृथक् ।

दे० भा० औषर नमक । रेहगवांनोन । फा० बोरे अर्मनी । इं० कार्बोनेट ऑफ सोडा । Carbonate of Soda । नवसादरः । नवसादरकस्तीक्ष्णः सरो व्रणविदारणः । रसजारणकारी स्यादत्युष्णश्चैव गुल्मनुत् ॥ मलस्तम्भं चोदरं च प्लीहं शूलं च नाशयेत् ॥ अस्य शुद्धिः–नवसारो भवेच्छुष्कश्चूर्णतोदे विपाचितः । दोलायंत्रेण यत्नेन भिषग्भिर्योगसिद्धये ॥

२ दे० भा० सज्जी । फा० सज्जार कालिया । इं० कार्पोनिट ऑफ सोडा । Carponate of Soda ॥ ३ दे० भा० सुहागा । फा० तीगार । इं० वोराक्स वाबोरेट् ऑफ सोडा Borax Baborate of Soda.

टङ्कणं वह्निकृद्रूक्षं कफहृद् वातपित्तकृत् ।

क्षारद्वयं क्षारत्रयं च ।

स्वर्जिका यावशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम् ॥ २५६ ॥
टंकणेन युतं तत्तु क्षारत्रयमुदीरितम् ।
मिलितस्तूक्तगुणवद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥ २५७ ॥

क्षाराष्टकम् ।

पलाशवज्रिशिखरिचिंचार्कतिलनालजः ।
यवजः स्वर्जिका चेति क्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥ २५८ ॥
क्षारा एतेऽग्निना तुल्या गुल्मशूलहरा भृशम् ।

१ चुक्रम् ।

चुक्रं सहस्रवेधि स्याद्रसाम्लं शुक्तमित्यपि ॥ २५९ ॥
चुक्रमत्यम्लमुष्णं च दीपनं पाचनं परम् ।
शूलगुल्मविबन्धामवातश्लेष्महरं परम् ॥ २६० ॥
वमितृष्णास्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमांद्यहृत् ।

इति हरीतक्यादिवर्गः ॥

---

१ दे० भा० चूक । आदौ टंकणमादाय कांजिकाम्ले विनिक्षिपेत् । एकरात्रात्समुद्धृत्य रौद्रयन्त्रे विभावयेत् ॥ नरमूत्रगतं टंकं गवां मूत्रगतं तथा । दिनांते तत्समुद्धृत्य जम्बीराम्लगतं कुरु ॥ जम्बीराम्लात्समुद्धृत्य नारिकेलस्य पात्रके । मरीचं चूर्णसंयुक्तं क्षालयेच्छीतलाम्बुना ॥ एवं टंकणमादाय सर्वयोगेषु योजयेत् । टंकणं वह्नियोगेन स्फुटितं शुद्धतां भजेत् ॥ श्वेतटंकण-गुणाः-सुश्वेतं टंकणं स्निग्धं कटूष्णं कफवातनुत् । आमक्षयापहच्छ्वासविषकासमलापहम् ' ।

कर्पूरादिवर्गः।

१ कर्पूरः।

पुंसि क्लीबे च कर्पूरो हिमाह्वो हिमवालुकः।
घनसारश्चन्द्रसंज्ञो हिमनामापि स स्मृतः॥ १॥
कर्पूरः शीतलो वृष्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः।
सुराभिर्मधुरास्तिक्तः कफपित्तविषापहः॥ २॥
दाहतृष्णास्यवैरस्यमेदोदौर्गन्ध्यनाशनः।
कर्पूरो द्विविधः प्रोक्तः पक्वापक्वप्रभेदतः॥ ३॥
पक्वात्कर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्परम्।

२ चीनसंज्ञः।

चीनसंज्ञस्तु कर्पूरः कफक्षयकरः स्मृतः॥ ४॥
कुष्ठकंडूवमिहरस्तथा तिक्तरसश्च सः।

३ कस्तूरी।

मृगनाभिर्मृगमदः कथितस्तु सहस्रभित्॥ ५॥
कस्तूरिका च कस्तूरी वैधमुख्या च सा स्मृता।
कामरूपोद्भवा कृष्णा नैपाली नीलवर्णयुक्॥ ६॥
काश्मीरे कपिलच्छाया कस्तूरी त्रिविधा स्मृता।
कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा नैपाली मध्यमा भवेत्॥ ७॥
काश्मीरदेशसंभूता कस्तूरी ह्यधमा स्मृता।
कस्तूरिका कटुस्तिक्ता क्षारोष्णा शुक्रला गुरुः॥ ८॥
कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गन्ध्यदोषहत्।

---

१ कपूर भीमसेनी। मिसरी बीकानेरी १ तो० इलायची छोटी १ तो० कापूर १ तो० खरल १ पहर। शिरोमध्यं तलं चेति कर्पूरस्त्रिविधः स्मृतः। फा० काफूर। इं० केम्फर Camphor.। चीनिया कपूर आरती। ३ कस्तूरी। फा० मुष्क। इं० मस्क Musk। दुष्टपरीक्षा-करतलजलमध्ये स्थापनीया महाद्भिः पुनरपि तदवस्था चिंतनीया मुहूर्तम्। यदि भवति न रक्तं तज्जलं पीतवर्णं न भवति मृगनाभिः कृत्रिमोऽयं विकारः॥ कस्तूरीपंचभेदा अन्यत्र द्रष्टव्याः।

१ लताकस्तूरिका ।

लताकस्तूरिका तिक्ता स्वाद्वी वृष्या हिमा लघुः ॥ ९ ॥
चक्षुष्या छेदनी श्लेष्मतृष्णावस्त्यास्यरोगहृत् ।

२ गन्धमार्जारवीर्य्यम् ।

गन्धमार्जारवीर्य्यन्तु वीर्य्यकृत्कफवातहृत् ॥ १० ॥
कण्डूकुष्ठहरं नेत्र्यं सुगन्धं स्वेदगन्धनुत् ।

३ चन्दनम् ।

श्रीखण्डं चन्दनं न स्त्री भद्रश्रीस्तैलपर्णिका ॥ ११ ॥
गन्धसारो मलयजस्तथा चन्द्रद्युतिश्च सः ।
स्वादे तिक्तं कषे पीतं छेदे रक्तं तनौ सितम् ॥ १२ ॥
ग्रन्थिकोटरसंयुक्तं चन्दनं श्रेष्ठमुच्यते ।
चन्दनं शीतलं रूक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु ॥ १३ ॥
श्रमशोषविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहनुत् ।

४ हरिचन्दनम् ।

कलम्बकं तु कालीयं पीताभं हरिचन्दनम् ॥ १४ ॥
हरिप्रियं कालसारं तथा कालानुसार्य्यकम् ।
कालीयकं रक्तगुणं विशेषाद्व्यङ्गनाशनम् ॥ १५ ॥

५ रक्तचन्दनम् ।

रक्तचन्दनमाख्यातं रक्ताङ्गं क्षुद्रचन्दनम् ।
तिलपर्णी रक्तसारं तत्प्रवालफलं स्मृतम् ॥ १६ ॥
रक्तं शीतं गुरु स्वादु च्छार्दितृष्णास्रपित्तहृत् ।
तिक्तं नेत्रहितं वृष्यं ज्वरव्रणविषापहम् ॥ १७ ॥

---

१ परीक्षा-स्वादे तिक्ता पिंजरा केतकीनां गन्धं धत्ते लाघवं तोलकेन । याऽप्सु व्यस्ता नैव वैवर्ण्यमीयात् कस्तूरी सा राजभोग्या प्रशस्ता ॥ मुसकदाना । २ गौरासार, वेद, अंजीर । मुष्कबिलाई । खट्टाशी घोडा करंज । ३ सुपेद चन्दन-चन्दनं द्विविधमन्यत्र द्रष्टव्यम् । कैरातं शंबरं च । फा० सुपेद सन्दल । इं० सेंडलवुड Sandal-wood । ४ पीतचन्दन । ५ लालचन्दन । फा० सन्दले सुरख । इं० रेड सांडल बुड् Red Sandalwood ॥

१ पतंगम् ।

पतङ्गं रक्तसारं च सुरङ्गं रञ्जनं तथा ।
पटरंजकमाख्यातं पत्तूरं च कुचन्दनम् ॥ १८ ॥
पतङ्गं मधुरं शीतं पित्तश्लेष्मव्रणास्रनुत् ।
हरिचन्दनवद्ग्राह्यं विशेषाद्दाहनाशनम् ॥ १९ ॥
चन्दनानि तु सर्वाणि सदृशानि रसादिभिः ।
गन्धेन तु विशेषोऽस्ति पूर्वं श्रेष्ठतमं गुणैः ॥ २० ॥

२ अगुरु । कृष्णागुरु । अगुरुसत्त्वं च ।

अगुरु प्रवरं लोहं राजार्हं योगजं तथा ।
वंशिकं कृमिजं चापि कृमिजग्धमनार्य्यकम् ॥ २१ ॥
अगुरूष्णं कटु त्वच्यं तिक्तं तीक्ष्णं च पित्तलम् ।
लघु कर्णाक्षिरोगघ्नं शीतवातकफप्रणुत् ॥ २२ ॥
कृष्णं गुणाधिकं तत्तु लोहवद्वारि मज्जति ।
अगुरुप्रभवः स्नेहः कृष्णागुरुसमः स्मृतः ॥ २३ ॥

३ देवदारु ।

देवदारु स्मृतं दारु भद्रदार्विन्द्रदारु च ।
मस्तदारु द्रुकिलिमं किलिमं सुरभूरुहः ॥ २४ ॥
देवदारु लघु स्निग्धं तिक्तोष्णं कटुपाकि च ।
विबन्धाध्मानशोथामतन्द्राहिक्काज्वरास्रजित् ॥ २५ ॥
प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकण्डुसमीरनुत् ।

४ सरलः ।

सरलः पीतवृक्षः स्यात्तथा सुरभिदारुकः ॥ २६ ॥

---

१ वकम, फा० वकम् । इं० सेपन वुड् Sappan wood. बर्बरोत्थं वर्बरकं श्वेतवर्बरकं तथा । शीतं सुगन्धि पित्तारिः सुरभिश्चेति सप्तधा । वर्बरं शीतलं तिक्तं कफमारुतपित्तजित् । कुष्ठकंडुव्रणान् हन्ति विशेषाद्रक्तदोषजित् ॥ २ अगुरु । काला अगुर । अगुरसत । काष्ठागुरु । दाहागुरु । मंगलागुरु । इति भेदाः । इं० इगलवुड् Eagle wood. ३ देवदारु । फा०—दवदार । इं०पाइन् Pine. लै. सडीपोदर । स्निग्धदारु । काष्ठदारु चीडा । सुरद्रुमभेदाः । ४ धूप वृक्ष । इं० लाँग् लिंबु पाईन । Longlimb Pine.

सरलो मधुरस्तिक्तः कटुपाकरसो लघुः ।
स्निग्धोष्णः कर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरः स्मृतः॥ २७ ॥
कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः ।

१ तगरम् ।

कालानुसार्य्यं तगरं कुटिलं नहुषं नतम् ॥ २८ ॥
अपरं पिण्डतगरं दण्डहस्तं च बर्हिणम् ।
तगरद्वयमुष्णं स्यात् स्वादु स्निग्धं लघु स्मृतम् ॥ २९ ॥
विषापस्मारशूलाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ।

२ पद्मकम् ।

पद्मकं पद्मगन्धि स्यात्तथा पद्माह्वयं स्मृतम् ॥ ३० ॥
पद्मकं तुवरं तिक्तं शीतलं वातलं लघु ।
विसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तनुत् ॥ ३१ ॥
गर्भसंस्थापनं वृष्यं वमिव्रणतृषाप्रणुत् ।

३ गुग्गुलुः ।

गुग्गुलुर्दैवधूपश्च जटायुः कौशिकः पुरः ॥ ३२ ॥
कुम्भोलूखलकं क्लीबे महिषाक्षः पलंकषः ।
महिषाक्षो महानीलः कुमुदः पद्म इत्यपि ॥ ३३ ॥
हिरण्यः पञ्चमो ज्ञेयो गुग्गुलोः पञ्च जातयः ।
मृगाञ्जनसवर्णस्तु महिषाक्ष इति स्मृतः ॥ ३४ ॥
महानीलस्तु विज्ञेयः स्वनामसमलक्षणः ।

---

१ तगर । बं० तगर पादुका । अर० अशारुन । २ पद्मकाष्ठ । ३ गुग्गुले, गन्धराज गुग्गुलु, भूमिजगुग्गुल । फा० बोराजहुदान । इं० इण्डियन् डेलियम् । शुद्धिः-दुग्धेन त्रिफलाक्काथे दोलायन्त्रे विपाचितः । वाससा गालितो ग्राह्यः सर्वकर्मसु गुग्गुलुः ॥ अस्योत्पत्तिः-जायंते पुरपादपा मरुभुवि ग्रीष्मेऽर्कसंतापिताः शीततौ शिशिरेपि गुग्गुलरसं मुंचंति ते पंचधा । हेमाभं महिषाक्षितुल्यमपरं सत्पद्मरागोपमं भृङ्गाभं कुमुदद्युतिं च विधिना ग्राह्या परीक्षा ततः॥ परीक्षा-वह्नौ ज्वलंति तपने विलयं प्रयांति क्लिद्यन्ति कोष्णसलिले पयसः समानाः । ग्राह्याः शुभाः परिहरेच्चिरकालजातान्सक्षारवर्णसमपूयविगन्धवर्णान् ॥

कुमुदः कुमुदाभः स्यात पद्मो माणिक्यसन्निभः ॥ ३५ ॥
हिरण्याख्यस्तु हेमाभः पञ्चानां लिंगमीरितम् ।
महिषाक्षो महानीलो गजेन्द्राणां हितावुभौ ॥ ३६ ॥
हयानां कुमुदः पद्मः स्वस्त्यारोग्यकरौ परौ ।
विशेषेण मनुष्याणां कनकः परिकीर्त्तितः ॥ ३७ ॥
कदाचिन्महिषाक्षश्च मतः कैश्चिन्नृणामपि ।
गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तो वीर्य्योष्णः पित्तलः सरः ॥ ३८ ॥
कषायः कटुकः पाके कटू रूक्षो लघुः परः ।
भग्नसन्धानकृद्वृष्यः सूक्ष्मः स्वर्यो रसायनः ॥ ३९ ॥
दीपनः पिच्छिलो बल्यः कफवातव्रणापचीः ।
मेदोमेहाश्मवातांश्च क्लेदकुष्ठाममारुतान् ॥ ४० ॥
पिण्डिकाग्रंथिशोफार्शोगण्डमालाकृमीञ्जयेत् ।
माधुर्य्याच्छमयेद्वातं कषायत्वाच्च पित्तहा ॥ ४१ ॥
तिक्तत्वात्कफजित्तेन गुग्गुलुः सर्वदोषहा ।
स नवो बृंहणो वृष्यः पुराणस्त्वतिलेखनः ॥ ४२ ॥
स्निग्धः काञ्चनसंकाशः पक्वजम्बूफलोपमः ।
नूतनो गुग्गुलुः प्रोक्तः सुगंधिर्यस्तु पिच्छिलः ॥ ४३ ॥
शुष्को दुर्गंधकश्चैव त्यक्तप्रकृतिवर्णकः ।
पुराणः स तु विज्ञेयो गुग्गुलुर्वीर्य्यवर्जितः ॥ ४४ ॥
अम्लं तीक्ष्णमजीर्णं च व्यवायं भ्रममातपम् ।
मद्यं रोषं त्यजेत्सम्यग् गुणार्थी गुरुसेवकः ॥ ४५ ॥

१ श्रीवासः ।

श्रीवासः सरलस्रावः श्रीवेष्टो यक्षधूपकः ।
श्रीवासो मधुरस्तिक्तः स्निग्धोष्णस्तुवरः सरः ॥ ४६ ॥

---

१ गन्धविरोजा । फा० संदरुस–काईरुवा । बं० नवनीतखोटी । इं० गमओपल सण्डरेक । (सतविरोजा) Gomeopal Sandaryack । श्रीवाससारः कफनुन्मूत्रलो ज्वरसंहरः । शोफविस्लापनो लेपात्कृमिहृद्वेदनापहः ॥

पित्तलो वातमूर्द्धाक्षिस्वररोगक्षयापहः ।
रक्षोघ्नः स्वेददौर्गंध्ययूकाकण्डूव्रणप्रणुत् ॥ ४७ ॥

१ रालः ।

रालस्तु शालनिर्य्यासस्तथा सर्जरसः स्मृतः ।
देवधूपो यक्षधूपस्तथा सर्वरसश्च सः ॥ ४८ ॥
रालो हिमो गुरुस्तिक्तः कषायो ग्राहको हरेत् ।
दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविषादिकाः ॥ ४९ ॥
ग्रहभग्नास्थिदग्धामशूलातीसारनाशनः ।

२ कुंदुरुः ।

कुन्दुरुस्तु मुकुन्दः स्यात् सुगन्धः कुन्द इत्यपि ॥ ५० ॥
कुन्दुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यः कटुर्हरेत् ।
ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफानलान् ॥ ५१ ॥

३ सिह्लकः ।

सिह्लकस्तु तुरुष्कः स्याद्यतो यवनदेशजः ।
कपितैलं स चाख्यातं तथा च कपिनामकः ॥ ५२ ॥
सिह्लकः कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः शुक्रकान्तिकृत् ।
वृष्यः कण्ठ्यः स्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः ॥ ५३ ॥

४ जातीफलम् ।

जातीफलं जातिकोषं मालतीफलमित्यपि ।
जातीफलं रसे तिक्तं तिक्तोष्णं रोचनं लघु ॥ ५४ ॥
कटुकं दीपनं ग्राहि स्वर्य्यं श्लेष्मानिलापहम् ।

---

१ राल । फा० रालमगरेवी । इं० नारुसम् Vellow Risin । तैलं सर्जरसोद्भूतं विस्फोटव्रणनाशनम् । कुष्ठपामाकृमिहरं वातश्लेष्मामयापहम् ॥

२ गुन्दबरोजा । फा० रूमीखोटी मस्तकी । इं० ओलिबेनम् Olibanu । ३ मीआसाइला । फा० सिलारस । इं० लिक्विडएम्बर Liquid omber । ४ जायफल-जातीफलं सशब्दं च स्निग्धं गुरु च शस्यते । तैलं जातिफलोद्भूतं समुत्तेजनमग्निदम् ॥ जीर्णातिसारशमनमाध्मानाक्षेपशूलहृत् । आमवातहरं बल्यं दन्तवेष्टव्रणार्तिनुत् ॥ फा० जोभोबुव इं० नट्मेग Nutmeg ॥

निहन्ति मुखवैरस्यं मद्यदौर्गंध्यकृष्णताः ॥ ५५ ॥
कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहद्रुजः ।

१ जातिपत्री ।

जातीफलस्य त्वक् प्रोक्ता जातिपत्री भिषग्वरैः ॥ ५६ ॥
जातिपत्री लघुः स्वादुः कटूष्णा रुचिवर्णकृत् ।
कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा ॥ ५७ ॥

२ लवंगम् ।

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं श्रीप्रसूनकम् ।
लवङ्गं कटुकं तिक्तं लघु नेत्रहितं हिमम् ॥ ५८ ॥
दीपनं पाचनं रुच्यं कफपित्तास्रनाशनम् ।
तृष्णां छर्दिं तथाध्मानं शूलमाशु विनाशयेत् ॥ ५९ ॥
कासं श्वासं च हिक्कां च क्षयं क्षपयति ध्रुवम् ।

३ बहुला ।

एला स्थूला च बहुला पृथ्वीका त्रिपुटापि च ॥ ६० ॥
भद्रैला बृहदेला च चन्द्रबाला च निष्कुटिः ।
स्थूला च कटुका पाके रसे चानिलकृल्लघुः ॥ ६१ ॥
रूक्षोष्णा श्लेष्मपित्तासृक्कण्डूश्वासतृषापहा।
हल्लासविषबस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ॥ ६२ ॥

४ उपकुञ्चिका ।

सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी द्राविडी त्रुटिः ।
एला सूक्ष्मा कफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥ ६३ ॥
रसे तु कटुका शीता लघ्वी वातहरी मता।

५ त्वक् ।

त्वक्पत्रं च वराङ्गं स्याद् भृङ्गं चोचं तथोत्कटम् ॥ ६४ ॥

---

१ जावित्री । फा० बजवार । इं० मेस Mace.

२ लौंग । फा० मेहक् । इं० क्लोवझ Cloves. ३ इलायची बडी, फा० हैलंकलाँ । इं० लार्ज कोर्डामोम् Large Cardamom. देवपुष्पोद्भवं तैलमग्निकृद्वातनाशनम् । दन्तवेष्टकफार्त्तिघ्नं गर्भिण्या वमनापहम् ॥ ४ इलायची छोटी । फा० हैल हिल । इं० शिलिसर कार्डमोम् Sheleser Cardamom. ५ तज । इं० सिन्नामन्वार्क Cinnamon Bark.

त्वचं लघूष्णं कटुकं स्वादु तिक्तं च रूक्षकम् ।
पित्तलं कफवातघ्नं कण्ड्वामारुचिनाशनम् ॥ ६५ ॥
हृद्धस्तिरोगवातार्शःकृमिपीनसशुक्रहृत् ।

१ दारुसिता ।

त्वक् स्वाद्वी तु तनुत्वक् स्यात्तथा दारुसिता मता ॥६६॥
उक्ता दारुसिता स्वाद्वी तिक्ता चानिलपित्तहृत् ।
सुरभिः शुक्रला वर्ण्या मुखशोषतृषापहा ॥ ६७ ॥

२ तमालपत्रम् ।

पत्रं तमालपत्रं च तथा स्यात्पत्रनामकम् ।
पत्रकं मधुरं किञ्चित्तीक्ष्णोष्णं पिच्छिलं लघु ॥ ६८ ॥
निहन्ति कफवातार्शोहृल्लासारुचिपीनसान् ।

३ नागपुष्पः ।

नागपुष्पः स्मृतो नागः केसरो नागकेसरः ॥ ६९ ॥
चाम्पेयो नागकिञ्जल्कः कथितः काञ्चनाह्वयः ।
नागपुष्पं कषायोष्णं रूक्षं लघ्वामपाचनम् ॥ ७० ॥
खुडकण्डूतृषास्वेदच्छर्दिहृल्लासनाशनम् ।
दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ ७१ ॥

त्रिजातं चतुर्जातम् ।

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धि त्रिजातकम् ।
नागकेसरसंयुक्तं चतुर्जातकमुच्यते ॥ ७२ ॥
तद्द्वयं रोचनं रूक्षं तीक्ष्णोष्णं मुखगन्धहृत् ।
लघु पित्ताग्निकृद्वर्ण्यं कफवातविषापहम् ॥ ७३ ॥

४ कुंकुमम् ।

कुंकुमं घुसृणं रक्तं काश्मीरं पीतकं वरम् ।

---

१ देश० दालचीनी, फा० दारुचीनी । २ तेजपात । फा० सादरसु । इं० फोलियामालाबा थी Folia Malabathy । तैलम्-वह्निमांद्यानिलहराध्मानाक्षेपविनाशनम् । वांत्युत्क्लेशप्रशमनं संग्राहि दशनार्त्तिहृत् ॥ त्वाचं तैलं रजः-स्रावि तोये क्षिप्तं निमज्जति । ३ नागकेसर । बं० नागेश्वर । अर० नागरमुष्ककेसर । फा० लरकीमास । इं० सैफन Saffron । ४ तृणकुंकुम । ईरानी कुंकुम ।

सङ्कोचं पिशुनं धीरं बाह्लीकं शोणिताभिधम् ॥ ७४ ॥
काश्मीरदेशजे क्षेत्रे कुंकुमं यद्भवेद्धितम् ।
सूक्ष्मकेसरमारक्तं पद्मगन्धि तदुत्तमम् ॥ ७५ ॥
बाह्लीकदेशसञ्जातं कुंकुमं पाण्डुरं मतम् ।
केतकीगन्धयुक्तं तन्मध्यमं सूक्ष्मकेसरम् ॥ ७६ ॥
कुंकुमं पारसीके यन्मधुगन्धि तदीरितम् ।
ईषत्पाण्डुरवर्णं तत् ह्यधमं स्थूलकेसरम् ॥ ७७ ॥
कुंकुमं कटुकं स्निग्धं शिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
तिक्तं वमिहरं वर्ण्यं व्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ ७८ ॥

१ गोरोचना ।

गोरोचना तु माङ्गल्या बन्ध्या गौरी च रोचना ।
गोरोचना हिमा तिक्ता वश्या मङ्गलकान्तिदा ॥ ७९ ॥
विषालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रजित् ।

२ नखम् ।

नखं व्याघ्रनखं व्याघ्रायुधं तच्चक्रकारकम् ॥ ८० ॥
नखं स्वल्पं नखी प्रोक्ता हनुर्हट्टविलासिनी ।
नखद्वयं ग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठनुत् ॥ ८१ ॥
लघूष्णं शुक्रलं वर्ण्यं स्वादु व्रणविषापहम् ।
अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोः कटु ॥ ८२ ॥

३ ह्रीबेरम् ।

बालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ।

---

१ गोलोचना । फा० गायरोहन । इं० गोलस्टोन् बिजोर Gollstone Bijoor. २ नख, नखी । फा०नाखूनग्रर्प्या, ग्राहकसर । इं० शेल Shall. नखशुद्धिः–(चण्डी) खण्डा-गोमयतोयेन यदि वा तिन्तिडीजलैः । नखं संस्कारयेदेभिः भांडे तु मृन्मये तथा ॥ पुनरुद्धृत्य प्रक्षाल्य भर्जयित्वा निषेचयेत् । गुडपथ्यांबुना ह्येवं शुद्धयते नात्र संशयः ॥ पंचपल्लवतोयेन गन्धानां क्षालनं तथा । ३ (सुरनाली) खाव सुगन्धवाला । फा० असारुं मुष्कवाला नत्रवाला अस्य प्रतिनिधिः कसेरु जटा । इं० म्यूरिकेटस् Muricteus ॥

बालकम् ।

बालकं शीतलं रूक्षं लघु दीपनपाचनम् ॥ ८३ ॥
हल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित् ।

१ वीरणम् ।

स्याद्वीरणं वीरतरुर्वीरं च बहुमूलकम् ॥ ८४ ॥
वीरणं पाचनं शीतं स्तंभनं लघु तिक्तकम् ।
मधुरं ज्वरनुद्भ्रांतिमदाजित्कफपित्तहृत् ॥ ८५ ॥
तृष्णास्रविषवीसर्पकृच्छ्रदाहव्रणापहम् ।

२ उशीरम् ।

वीरणस्य तु मूलं स्यादुशीरं नलदं च तत् ॥ ८६ ॥
अमृणालं च सेव्यं च समगन्धकमित्यपि ।
उशीरं पाचनं शीतं स्तम्भनं लघु तिक्तकम् ॥ ८७ ॥
मधुरं ज्वरहृद्भ्रान्तिमदनुत्कफपित्तनुत् ।
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् ॥ ८८ ॥

३ जटामांसी ।

जटामांसी भूतजटा जटिला च तपस्विनी ।
मांसी तिक्ता कषाया च मेध्या कान्तिबलप्रदा ॥ ८९ ॥
स्वाद्वी हिमा त्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ।

४ शिलापुष्पम् ।

शैलेयं तु शिलापुष्पं वृद्धं कालानुसार्य्यकम् ॥ ९० ॥
शैलेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लघु ।
कण्डुकुष्ठाश्मरीदाहविषहल्लासरक्तजित् ॥ ९१ ॥

५ मुस्तकं (नागरमुस्तकम्) ।

मुस्तकं न स्त्रियां मुस्तं त्रिषु वारिदनामकम् ।

---

१ दे० भा० वीरन । २ खस । ब० वीरणमूल । अस्य प्रतिनिधिः कालाबाडा । ३ बालछड । बिल्लीलोटन । फा० सुंबुल । गन्धमांसी अभ्रमांसी । इं० स्पाइकनाड Spikenard.
४ दे०भा० भूरिछरीला, पत्थरका फूल । फा० दहाल ॥
५ मोथा । नागरमोथा । फा० शादकफी । भद्रमुस्तक । कैवर्त्तीमुस्तक वा मुस्तक ।-

कुरुविन्दोऽपरो भद्रमुस्तो नागरमुस्तकः ॥ ९२ ॥
मुस्तं हिमं कटु ग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम् ।
कषायकफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजन्तुजित् ॥ ९३ ॥
अनूपदेशे यज्जातं मुस्तकं तत् प्रशस्यते ।
तत्रापि मुनिभिः प्रोक्तं वरं नागरमुस्तकम् ॥ ९४ ॥

१ कर्चूरः ।

कर्चूरो वैधमुख्यश्च द्राविडः कालिपकः शटी ।
कर्चूरो दीपनो रुच्यः कटुकस्तिक्त एव च ॥ ९५ ॥
सुगन्धिः कटुपाकः स्यात्कुष्ठार्शोव्रणकासनुत् ।
उष्णो लघुर्हरेच्छ्वासगुल्मवातकफक्रिमीन् ॥ ९६ ॥

२ मुरा ।

मुरा गन्धकुटी दैत्या सुरभिश्शालपर्णिका ।
मुरा तिक्ता हिमा स्वाद्वी लघ्वी पित्तानिलामहा ॥ ९७ ॥
ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नी कुष्ठकासविनाशिनी ।

३ पलाशी ।

शठी पलाशी षड्ग्रन्था सुव्रता गन्धमूलिका ॥ ९८ ॥
गन्धारिका गन्धवपुर्वधूः पृथुपलाशिका ।
भवेद् गन्धपलाशी तु कषाया ग्राहिणी लघुः ॥ ९९ ॥
तिक्ता तीक्ष्णा च कटुकाऽनुष्णाऽऽस्यमलनाशिनी ।
शोथकासव्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा ॥ १०० ॥

–डोलेकी जड । तन्त्रान्तरे–जटामांसी जटी पेषी लोमशा जटिला मिसिः । मांसी तपस्विनी हिंस्रा मिषिका चक्रवर्त्तिनी ॥ 'अनुलेपनं ज्वरहृत् रूक्षतां चैव नाशयेत् । मुस्तकशुद्धिः–मुस्तकं तु मनाक् क्षुण्णं कांजिके त्रिदिनोषितम् । पंचपल्लवतोयेन स्विन्नमातपशोषितम् ॥ गुडांबुना सिच्यमानं भर्ज्जयेच्चूर्णयेत्ततः ॥ आजशोभांजनजलैर्भावयेचेति शुद्ध्यति ॥

१ नरकचूर । फा० ज़रंबाद, इं० लौंगझेडआरी । २ कचूरभेंड, एकाङ्गी । ३ कपूरकचरी । बं० आदा, गन्धशटी ॥

१ प्रियंगुः ।

प्रियंगुः फलिनी कांता लता च महिलाह्वया ।
गुन्द्रा गन्धफली श्यामा विष्वक्सेनाऽङ्गनाप्रिया ॥ १ ॥
प्रियंगुः शीतला तिक्ता तुवराऽनिलपित्तहृत् ।
रक्तातीसारदौर्गंध्यस्वेददाहज्वरापहा ॥ २ ॥
गुल्मतृड्विषमेहघ्नी तद्वद्गन्धप्रियंगुका ।
तत्फलं मधुरं रूक्षं कषायं शीतलं गुरु ॥ ३ ॥
विबन्धाध्मानबलकृत् संग्राहि कफपित्तजित् ।

२ रेणुका ।

रेणुका राजपुत्री च नन्दिनी कपिला द्विजा ॥ ४ ॥
भस्मगन्धा पाण्डुपुत्री स्मृता कौन्ती हरेणुका ।
रेणुका कटुका पाके तिक्ताऽनुष्णा कटुर्लघुः ॥ ५ ॥
पित्तला दीपनी मेध्या पाचनी गर्भपातिनी ।
बलासवातकृच्चैव तृट्कण्डुविषदाहनुत् ॥ ६ ॥

३ ग्रन्थिपर्णम् ।

ग्रन्थिपर्णं ग्रन्थिकं च काकपुच्छं च गुत्थकम् ।
नीलपुष्पं सुगन्धश्च कथितं तैलपर्णिकम् ॥ ७ ॥
ग्रन्थिपर्णं तिक्ततीक्ष्णं कटूष्णं दीपनं लघु ।
कफवातविषश्वासकंडुदौर्गंध्यनाशनम् ॥ ८ ॥

४ स्थौणेयकम् ।

स्थौणेयकं बर्हिबर्हं शुकबर्हं च कुक्कुरम् ।
शीर्णं रोम शुकं चापि शुकपुष्पं शुकच्छदम् ॥ ९ ॥
स्थौणेयकं कटु स्वादु तिक्तं स्निग्धं त्रिदोषनुत् ।
मेधाशुक्रकरं रुच्यं रक्षोऽश्रीज्वरजन्तुजित् ॥ १० ॥
हन्ति कुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गन्ध्यतिलकालकान् ।

---

१ फुल फिरङ्ग, गुलफिरङ्ग, बं० गन्धप्रियंगु हरिद्वारे, गून्दनी इसके अभावमें मेंहदी । २ बं० रेणुका इसके अभावमें संभालुबीज । ३ चौर नाम गन्धद्रव्य गाठिवन, गण्डीवल, टेकन । ४ ग्रन्थिपर्णभेद-थुनेर ।

१ निशाचरः ।

निशाचरो धनहरः कितवो गणहासकः ॥ ११ ॥
रोचकः शङ्कितश्चण्डो दुष्पत्रः क्षेमको रिपुः ।
रोचको मधुरास्तिक्तः कटुः पाके कटुर्लघुः ॥ १२ ॥
तीक्ष्णो हृद्यो हिमो हन्ति कुष्ठकण्डूकफानिलान् ।
रक्षोऽश्रीस्वेदमेदोस्रज्वरगन्धविषव्रणान् ॥ १३ ॥

२ तालीसपत्रम् ।

तालीसमुक्तं पत्राढ्यं धात्रीपत्रं च तत्स्मृतम् ।
तालीसं लघु तीक्ष्णोष्णं श्वासकासकफानिलान् ॥ १४ ॥
निहन्त्यरुचिगुल्मामवह्निमान्द्यक्षयामयान् ।

३ कक्कोलम् ।

कक्कोलं कोलकं प्रोक्तं तथा कोशफलं स्मृतम् ॥ १५ ॥
कक्कोलं लघु तीक्ष्णोष्णं तिक्तं हृद्यं रुचिप्रदम् ।
आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयान्ध्यहृत् ॥ १६ ॥

गन्धकोकिला गन्धमालती ।

स्निग्धोष्णा कफहृत्तिक्ता सुगन्धा गन्धकोकिला ।
गन्धकोकिलया तुल्या विज्ञेया गन्धमालती ॥ १७ ॥

४ लामज्जकम् ।

लामज्जकं सुनालं स्यादमृणालं लयं लघु ।
इष्टकापथकं सेव्यं नलदं चावदातकम् ॥ १८ ॥
लामज्जकं हिमं तिक्तं लघु दोषत्रयास्रजित् ।
त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत् ॥ १९ ॥

५ एलवालुकम् ।

एलवालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।

---

१ ग्रन्थिपर्ण भेद–भटीटर, भटोरा । २ तालीस पत्र । भूम्यामलकी । फा० . जरनवा । ३ कंकोल मिरच । बं० कांकला । फलकपूर । गद्गला । इं० क्यूबेब पेपर Cubeb Pepper ४ उशीरवत् पीतच्छवितृणविशेषः । बं० गन्धवेण । ५ एलवालुक । पक्वकपित्थफला । बं० एलवालुक ॥

ऐलवालुकमेलालु कपित्थं फलमीरितम् ॥ २० ॥
एल्वालु कटुकं पाके कषाये शीतलं लघु ।
हन्ति कण्डूव्रणच्छर्दितृट्कासारुचिहृद्रुजः ॥ २१ ॥
बलासविषपित्तास्रकुष्ठमूत्रगदक्रिमीन् ।

१ कुटन्नटम् ।

कुटन्नटं दासपुरं बालेयं परिपेलवम् ॥ २२ ॥
प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्त्तीमुस्तकानि च ।
मुस्तावत्पेलवपुटं शुक्राभं स्याद्वितुन्नकम् ॥ २३ ॥
वितुन्नकं हिमं तिक्तं कषायं कटु कान्तिदम् ।
कफपित्तास्रवीसर्पकुष्ठकण्डूविषप्रणुत् ॥ २४ ॥

२ स्पृक्का ।

स्पृक्काऽसृक् ब्राह्मणी देवी मरुन्माला लता लघुः ।
समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षालङ्कोऽपिकेत्यपि ॥ २५ ॥
स्पृक्का स्वाद्वी हिमा वृष्या तिक्ता निखिलदोषनुत् ।
कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहास्रज्वररक्तहृत् ॥ २६ ॥

३ पर्पटी ।

पर्पटी रंजना कृष्णा जतुका जननी जनी ।
जतुकृष्णाग्निसंस्पर्शा जतुकुच्चक्रवर्त्तिनी ॥ २७ ॥
पर्पटी तुवरा तिक्ता शिशिरा वर्णकृल्लघुः ।
विषव्रणहरी कण्डूकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ २८ ॥

४ नलिका ।

नलिका विद्रुमलता कपोतचरणा नटी ।
धमन्यञ्जनकेशी च निर्मथ्या सुषिरा नली ॥ २९ ॥

---

१ केवटी मोथा । गुडतज्जी । इयं तितन्नकवृक्षस्य त्वक् मस्ताकृतिः । २ असवरग, आसारक । बं० पिण्डिशाक । ३ चक्रवत् पद्मावती पापडी । ४ सुगन्धा, प्रवालाकृतिः । पंठारी ॥

नालिका शीतला लघ्वी चक्षुष्या कफपित्तहृत् ।
कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डुज्वरापहा ॥ ३० ॥

१ प्रपौण्डरीकम् ।

प्रपौण्डरीकं पौण्डर्य्यं चक्षुष्यं पौण्डरीयकम् ।
पौण्डर्य्यं मधुरं तिक्तं कषायं शुक्रलं हिमम् ॥ ३१ ॥
चक्षुष्यं मधुरं पाके वर्ण्यं पित्तकफप्रणुत् ।
व्यञ्जनो वान्तिहारी च रुचिश्यः शोकशोभनः ॥ ३२ ॥
व्यजनो वान्तिहारी च रोचनी शोकशोभना ।

२ पुदीनः ।

पुदीनस्तु गुरुः स्वादू रुच्यो हृद्यः सुखावहः ॥ ३३ ॥
अग्निमान्द्यविषूचिघ्नः संग्रहण्यतिसारहा ।
जीर्णज्वरकृमींश्चैव नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ ३४ ॥

इति कर्पूरादिवर्गः ।

---

१ पुण्डेरिआ । बं० पुण्डारिआ । अस्य प्रतिनिधिः स्थलकमलम् ॥

२ फा० नोअना । इं० टोलरेड मिंट Tallredmcnt । पुदीना प्राचीन नहीं है और किसी ग्रन्थमें नहीं देखा जाता ॥

गुडूच्यादिवर्गः ।

तत्रादौ गुडूच्या उत्पत्तिर्नाम गुणाश्च-

अथ लङ्केश्वरो मानी रावणो राक्षसाधिपः ।
रामपत्नीं वनात्सीतां जहार मदनातुरः ॥ १॥
ततस्तं बलवान् रामो रिपुं जायापहारिणम् ।
वृतो वानरसैन्येन जघान रणमूर्द्धनि ॥ २ ॥
हते तस्मिन् सुरारातौ रावणे बलगर्विते ।
देवराजः सहस्राक्षः परितुष्टो हि राघवे ॥ ३ ॥
तत्र ये वानराः केचिद् राक्षसैर्निहता रणे ।
तानिन्द्रो जीवयामास संसिच्यामृतवृष्टिभिः ॥ ४ ॥
ततो येषु प्रदेशेषु कपिगात्रात्परिच्युताः ।
पीयूषबिन्दवः पेतुस्तेभ्यो जाता गुडूचिका ॥ ५ ॥

१ गुडूची ।

गुडूची मधुपर्णी स्यादमृताऽमृतवल्लरी ।
छिन्ना छिन्नरुहा छिन्नोद्भवा वत्सादिनीति च ॥ ६॥
जीवंती तंत्रिका सोमा सोमवल्ली च कुण्डली ।
चक्रलक्षणिका धारा विशल्या च रसायनी ॥ ७ ॥
चन्द्रहासा वयस्या च मण्डली देवनिर्मिता ।
गुडूची कटुका तिक्ता स्वादुपाका रसायनी ॥ ८ ॥
संग्राहिणी कषायोष्णा लघ्वी बल्याऽग्निदीपनी ।

---

१ दे० भा० गिलोय । फा० गिलाई । इं० गुलांचा । गुडूचिसत्त्वं सुस्वादु पथ्यं लघु च दीपनम् । चक्षुष्यं धातुकृन्मेध्यं वयःस्थापनकारकम् ॥ मदनविनोदे-घृतेन वातं सगुडा विबन्धं पित्तं सिताढ्या मधुना कफं च । वातासमुग्रं स्वतैलमिश्रा शुंठ्याऽऽमवातं शमयेत् गुडूची ॥

दोषत्रयामतृड्दाहमेहकासांश्च पाण्डुताम् ॥ ९ ॥
कामलाकुष्ठवातास्रज्वराक्रिमिवमीर्हरेत् ।

१ ताम्बूलम् ।

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागिनी नागवल्लरी ॥ १० ॥
ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम् ।
वश्यं तिक्तं कटु क्षारं रक्तपित्तकरं लघु ॥ ११ ॥
बल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् ।

२ बिल्वः ।

बिल्वः शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ॥ १२ ॥
गन्धगर्भः शलाटुश्च कण्टकी च सदाफलः ।
श्रीफलस्तुवरस्तिक्तो ग्राही रूक्षोऽग्निपित्तकृत् ॥ १३ ॥
वातश्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः ।

३ गंभारी ।

गंभारी भद्रपर्णी च श्रीपर्णी मधुपर्णिका ॥ १४ ॥
काश्मरी काश्मरी हीरा काश्मर्य्यः पीतरोहिणी ।
कृष्णवृन्ता मधुरसा महाकुसुमकापि च ॥ १५ ॥

---

१ दे०भा०-पान, नागरबेल । फा० बर्ग तंबोल । इं० बिटल लीफ Betel Laef श्रीवाटी, अम्लवाटी, सातसीपर्ण, इत्यादि नाना भेदाः ॥ नागवल्लीफलं हृद्यं सुगन्धि कफवाताजित् । आयुरग्रे यशो मूले लक्ष्मीर्मध्ये व्यवस्थिता । तस्मादग्रं तथा मूलं मध्यं पर्णस्य वर्जयेत् ॥ तांबूलं न हितं दन्तदुर्बलेक्षणरोगिणाम् । विषमूर्च्छामदार्तानां क्षतिनां रक्तपित्तिनाम्॥ कुलंजनेम्-तांबूलवल्लीमूलं तु रूक्षोष्णं कफनाशनम् । तीक्ष्णं बल्यं च वातघ्नं पौष्टिकं दीपनं सरम् ॥ श्लेष्मघ्नं पित्तजनकं वृद्धानां चापि शस्यते ॥

२ दे० भा० बिल, वेल । इं० वेगालकिन्स । तत्पत्रं कफवातामशूलघ्नं ग्राहि रोचनम् । हन्याद्धि बिल्वजं पुष्पमतीसारं तृषां वमिम् ॥ बिल्वका सूखा गूदा-कफवातामशूलघ्नी ग्राहिणी बिल्वपेशिका ॥ ३ दे० भा० खंभारी, कुम्भेरन । घुमार । बं० भा० गांभार । अस्य फलं जिरिष्क० तत्पुष्पं-मधुरं शीतं तिक्तं संग्राहि वातलम् । कषायं मधुरं पाके पित्तास्रासृग्गदापहम् ॥ गंभारीमूलमत्युष्णमहितं मानुषेषु तत् ॥

काश्मरी तुवरा तिक्ता वीर्योष्णा मधुरा गुरुः ।
दीपनी पाचनी मेध्या भेदनी भ्रमशोथजित् ॥ १६ ॥
दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा ।
तत्फलं बृंहणं वृष्यं गुरु केश्यं रसायनम् ॥ १७ ॥
वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धनुत् ।
स्वादु पाके हिमं स्निग्धं तुवराम्लं विशुद्धिकृत् ॥ १८ ॥
हन्यादाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ।

१ पाटला ।

पाटली पाटला मोघा मधुदूती फलेरुहा ॥ १९ ॥
कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी काचस्थाल्यलिवल्लभा ।
ताम्रपुष्पी च कथिता परा स्यात्पाटला सिता ॥ २० ॥
मुष्ककी मोक्षकी घण्टा पाटालिः काष्ठपाटला ।
पाटला तुवरा तिक्ताऽनुष्णा दोषत्रयापहा ॥ २१ ॥
अरुचिश्वासशोथार्शश्छर्दिहिक्कातृषाहरी ।
पुष्पं कषायं मधुरं हिमं हृद्यं कफास्रनुत् ॥ २२ ॥
पित्तातीसारहृत्कण्ठ्यं फलं हिक्कास्रपित्तहृत् ।

२ अग्निमन्थः ।

अग्निमन्थो जया स स्यात् श्रीपर्णी गणकारिका ॥ २३ ॥
जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ।
अग्निमन्थः श्वयथुनुद्वीर्योष्णः कफवातहृत् ॥ २४ ॥
पाण्डुनुत् कटुकस्तिक्तस्तुवरो मधुरोऽग्निदः ।

३ स्योनाकः ।

स्योनाकः शोषणश्च स्यान्नटकट्वङ्गटुण्टुकाः ॥ २५ ॥

---

१ दे० भा० पाढल, बं० भा० घंटा पारुल । गौ० भा० पारुलगाछश्वेत, रक्त, भूमि- पाटला । क्षुद्रपाटला वल्लीपाटला । २ दे० भा० अगेथु गनियार । बं० भा० आगगंत । लघ्वग्निमंथस्य गुणाः प्रोक्ता वृद्धाग्निमंथवत् । विशेषाल्लेपने चोपनाहे शोफे च कीर्तिताः ॥ तेजोमंथगुणाः प्रोक्ताश्चाग्निमंथसमा बुधैः । विशेषाद्वातशोफे च प्रोक्तः पूर्वैश्च सूरिभिः ॥ ३ दे० भा० अरलु, टेंटु । युगलम् । बं० भा० सोनालु । स्योनाकयुगलं तिक्तं शीतलं च त्रिदोषजित् । पित्तश्लेष्मातिसारघ्नं सन्निपातज्वरापहम् ॥

मण्डूकपर्णपत्रोर्णशुकनाशकटुंनटाः ।
दीर्घवृन्तोऽरलुश्चापि पृथुशिम्बः कटम्भरः ॥ २६ ॥
स्योनाको दीपनः पाके कटुकस्तुवरो हिमः ।
ग्राही तिक्तोऽनिलश्लेष्मापित्तकासामनाशनः ॥ २७ ॥
टुण्टुकस्य फलं बालं रूक्षं वातकफापहम् ।
हृद्यं कषायं मधुरं रोचनं लघु दीपनम् ॥ २८ ॥
गुल्मार्शःकृमिहत्प्रौढं गुरु वातप्रकोपनम् ।

बृहत्पञ्चमूलम् ।

श्रीफलः सर्वतोभद्रा पाटलो गणिकारिका ।
स्योनाकः पञ्चभिश्चैतैः पञ्चमूलं महन्मतम् ॥ २९ ॥
पञ्चमूलं महत्तिक्तं कषायं कफवातनुत् ।
मधुरं श्वासकासघ्नमुष्णं लघ्वग्निदीपनम् ॥ ३० ॥

१ शालपर्णी ।

शालपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा ।
विदारिगन्धा दीर्घाघ्रिर्दीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥ ३१ ॥
शालपर्णी गुरुश्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित् ।
शोषदोषत्रयहरी बृंहण्युक्ता रसायनी ॥ ३२ ॥
तिक्ता विषहरी स्वादुः क्षतकासकृमिप्रणुत् ।

२ पृश्निपर्णी ।

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका ॥ ३३ ॥
क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ।
पृश्निपर्णी त्रिदोषघ्नी वृष्योष्णा मधुरा सरा ॥ ३४ ॥
हन्ति दाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमीः ।

३ बृहती ।

वार्ताकी क्षुद्रभण्टाकी महती बृहती कुली ॥ ३५ ॥

---

१ दे० भा० सरिवन, कवरी, नौली । बं० भा० शालपान । २ दे० भा० पिठौनी, कवरा । बं० भा० चाकुलिया । ३ दे० भा० बरहंटा, ममोली बडी । बं० व्याकुड । फा. उस्तरगार बाद जान जंगली । फलं–फलानि बृहतीनां च कटुतिक्तलघूनि च । कंडुकुष्ठकृमिघ्नानि कफ–

हिङ्गुली राष्ट्रिका सिंही महोटी दुःप्रधर्षणी ।
बृहती ग्राहिणी हृद्या पाचनी कफवातहृत् ॥ ३६ ॥
कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ।
उष्णा कुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमान्द्यजित् ॥ ३७ ॥

१ कण्टकारी ।

कण्टकारी तु दुःस्पर्शा क्षुद्रा व्याघ्री निदिग्धिका ।
कण्टारिका कण्टकिनी धावनी बृहती तथा ॥ ३८ ॥

उभे च बृहत्यौ । यत आह सुश्रुतः-

क्षुद्रायां क्षुद्रभण्टाक्यां बृहतीति निगद्यते ।
श्वेता क्षुद्रा चन्द्रहासा लक्ष्मणा क्षुद्रदूतिका ॥ ३९ ॥
गर्भदा चन्द्रभा चन्द्री चन्द्रपुष्पा प्रियङ्करी ।
कण्टकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः ॥ ४० ॥
रूक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान् ।
निहन्ति पीनसं पार्श्वपीडाकृमिहृदामयान् ॥ ४१ ॥
तयोः फलं कटु रसे पाके च कटुकं भवेत् ।
शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताग्निकृल्लघु ॥ ४२ ॥
हन्यात्कफमरुत्कण्डूकासमेदःकृमिज्वरान् ।
तद्वत्प्रोक्ता सिता क्षुद्रा विशेषाद्गर्भकारिणी ॥ ४३ ॥

२ गोक्षुरः ।

गोक्षुरः क्षुरकोऽपि स्यात् त्रिकण्टः स्वादुकण्टकः ।

-वातहराणि च ॥ श्वेता बृहतिका रुच्या कफवातविनाशिनी । अञ्जनान्नेत्ररोगघ्नी गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत् ॥

१ दे० भा० ममोली, कटेरी । बं० भा० कण्टकारी । प० भा० मोकडी ॥ कटु पाक फलं तस्या रसे च कटुकं भवेत् । शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताग्निकृल्लघु ॥ लक्ष्मणा कटुका चोष्णा चक्षुष्या चाग्निदीपनी । गर्भस्थापनकर्त्री च पारदस्य नियामिका ॥ रुचिकृत्कफवातानां नाशिनी परमा मता । शेषाश्चास्या गुणाः प्रोक्ताः फलस्यापि च पूर्ववत् ॥

२ दे० भा० भखडा, गोखरु । बं० गोखरी । फा० तुखमें खारखस्क । क्षुद्रबृहत् । बीजं-

गोकण्टको भक्षटङ्को वनशृङ्गाट इत्यपि ॥ ४४ ॥
पलङ्कषाऽश्वदंष्ट्रा च तथा स्यादिक्षुगन्धिकः ।
गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृद्वास्तिशोधनः ॥ ४५ ॥
मधुरो दीपनो वृष्यः पुष्टिदश्चाश्मरीहरः ।
प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥ ४६ ॥

लघुपञ्चमूलम् ।

शालपर्णी पृश्निपर्णी वार्ताकी कण्टकारिका ।
गोक्षुरः पञ्चभिश्चैतैः कनिष्ठं पञ्चमूलकम् ॥ ४७ ॥
पञ्चमूलं लघु स्वादु बल्यं पित्तानिलापहम् ।
नात्युष्णं बृंहणं ग्राहि ज्वरश्वासाश्मरीप्रणुत् ॥ ४८ ॥

दशमूलम् ।

उभाभ्यां पञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।
दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः ॥ ४९ ॥
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ।

१ जीवन्ती ।

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ॥ ५० ॥
माङ्गल्यनामधेया च शाकश्रेष्ठा पयस्विनी ।
जीवन्ती शीतला स्वादुः स्निग्धा दोषत्रयापहा ॥ ५१ ॥
रसायनी बलकरी चक्षुष्या ग्राहिणी लघुः ।

२ मुद्गपर्णी ।

मुद्गपर्णी काकपर्णी शूर्पपर्ण्यलिपिका सहा ॥ ५२ ॥

—बीजं गोक्षुरकं शीतं मूत्रलं शोथवारणम् । वृष्यमायुष्करं शुक्रमेहनुत्कृच्छ्रनाशनम् ॥ क्षारः—क्षारस्तु गोक्षुराणां च मधुरः शीतलो मतः । स्रोतोविशोधनश्चैव वातघ्नो वृष्य एव च ॥ शाकः—तिक्तं गोक्षुरकं शाकं वृष्यं स्रोतोविशोधनम् ॥

१ दे० भा० डोडी । बं० भा० जीवई । इं० शाशा प्रेरला । बृहती क्षुद्रा तिक्तजीवन्ती स्वर्णजीवन्ती । अर्कवत् मधुरपुष्पा व्रततिः हिरणवेला स्वर्णवर्णपत्रमूलनालादिका । २ दे० भा० मुङ्गबन । बं० भा० मुगानि ॥

काकमुद्गा च सा प्रोक्ता तथा मार्जारगन्धिका ।
मुद्गपर्णी हिमा रूक्षा तिक्ता स्वाद्वी च शुक्रला ॥ ५३ ॥
चक्षुष्या क्षतशोथघ्नी ग्राहणी ज्वरदाहनुत् ।
दोषत्रयहरी लघ्वी ग्रहण्यर्शोतिसारजित् ॥ ५४ ॥

१ माषपर्णी ।

माषपर्णी सूर्यपर्णी काम्बोजी हयपुच्छिका ।
पाण्डुलोमशपर्णी च कृष्णवृन्ता महासहा ॥ ५५ ॥
माषपर्णी हिमा तिक्ता रूक्षा शुक्रबलासकृत् ।
मधुरा ग्राहिणी शोथवातपित्तज्वरास्रजित् ॥ ५६ ॥

जीवनीयगणः ।

अष्टवर्गः सयष्टीको जीवन्ती मुद्गपर्णिका ।
माषपर्णी गणोऽयं तु जीवनीय इति स्मृतः ॥ ५७ ॥
जीवनो मधुरश्चापि नाम्ना स परिकीर्तितः ।
जीवनीयगणः प्रोक्तः शुक्रकृद् बृंहणो हिमः ॥ ५८ ॥
गुरुर्गर्भप्रदः स्तन्यकफकृत्पित्तरक्तहृत् ।
तृष्णां शोषं ज्वरं दाहं रक्तपित्तं व्यपोहति ॥ ५९ ॥

२ शुक्लरक्तैरण्डौ ।

शुक्ल एरण्ड आमण्डश्चित्रो गन्धर्वहस्तकः ।
पञ्चाङ्गुलो वर्धमानो दीर्घदण्डो व्यडम्बकः ॥ ६० ॥
रक्तोऽपरो रुबूकः स्यादुरुबूको रुबुस्तथा ।
व्याघ्रपुच्छश्च वातारिश्चञ्चुरुत्तानपत्रकः ॥ ६१ ॥
एरण्डयुग्मं मधुरमुष्णं गुरु विनाशयेत् ।

---

१ दे० भा० जंगली मांह, माष । बं० भा० षमाणी । २ दे० भा० हंडोला अरण्ड । फा० बेदंजीर, तुखमे बेदंजीर । इ० कास्टर ओइल प्लांट कास्टरसीड Casteroil Plant Casterseed. एरंडतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्धनम् । वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम् ॥ रक्तोऽपरो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्रकरो रुबुः । त्रिबीजश्च रुबूकश्च चारुहत्तानपत्रकः ॥ तंत्रांतरम् ॥

शूलशोथकटीबस्तिशिरःपीडोदरज्वरान् ॥ ६२ ॥
वक्षश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ।
एरण्डपत्रं वातघ्नं कफक्रिमिविनाशनम् ॥ ६३ ॥
मूत्रकृच्छ्रहरं चापि पित्तरक्तप्रकोपनम् ।
वातार्यग्रदलं गुल्मवस्तिशूलहरं परम् ॥ ६४ ॥
कफवातकृमीन् हन्ति वृद्धिं सप्तविधामपि ।
एरण्डफलमत्युष्णं गुल्मशूलानिलापहम् ॥ ६५ ॥
यकृत्प्लीहोदरार्शोघ्नं कटुकं दीपनं परम् ।
तद्वन्मज्जा च विड्भेदी वातश्लेष्मोदरापहा ॥ ६६ ॥

१ आकारकरभः ।

आकारकरभश्चैव कल्लकोऽथ ह्यकल्लकः ।
अकल्लकोष्णो वीर्य्येण बलकृत्कटुको मतः ॥ ६७ ॥
प्रतिश्यायं च शोथं च वातं चैव विनाशयेत् ।

२ शुक्लरक्तार्कौ ।

श्वेतार्को गणरूपः स्यान्मदरो वसुकोऽपि च ॥ ६८ ॥
श्वेतपुष्पः सदापुष्पः स बालार्कः प्रतापसः ।
रक्तोऽपरोऽर्कनामा स्यादर्कपर्णो विकीरणः ॥ ६९ ॥
रक्तपुष्पः शुक्लफलस्तथा स्फोटः प्रकीर्तितः ।
अर्कद्वयं सरं वातकुष्ठकण्डुविषव्रणान् ॥ ७० ॥
निहन्ति प्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरशकृत्क्रिमीन् ।
अलर्ककुसुमं वृष्यं लघु दीपनपाचनम् ॥ ७१ ॥
अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवारणम् ॥ ७२ ॥
रक्तार्कपुष्पं मधुरं सतिक्तं कुष्ठक्रिमिघ्नं कफनाशनं च ।
अर्शोविषं हन्ति च रक्तपित्तं संग्राहि गुल्मे श्वयथौ हितं तत् ॥

---

१ दे० भा० अकरकरा । बं० भा० अकोरकोश । इं० पेलेटरूट । २ दे० भा० लाल आक, सुफेद आक, मंदार । फा० खुर्क, दूध । बं भा० आकंद । इं० जाईगोंटिकूस्वोलोवर्ट । Giguntic sivallowart ॥

क्षीरमर्कस्य तिक्तोष्णं स्निग्धं सलवणं लघु ।
कुष्ठगुल्मोदरहरं श्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ ७४ ॥

सेहुण्डः ।

सेहुण्डः सिंहतुण्डः स्याद्वज्री वज्रद्रुमोऽपि च ।
सुधा समन्तदुग्धा च स्नुक् स्त्रियां स्यात्स्नुही गुडा॥७५॥
सेहुण्डो रेचनस्तीक्ष्णो दीपनः कटुको गुरुः ।
शूलामाष्ठीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान् ॥ ७६ ॥
उन्मादमेहकुष्ठार्शःशोथमेदोऽश्मपाण्डुताः ।
व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषं हरेत् ॥ ७७ ॥
उष्णवीर्य्यं स्नुहीक्षीरं स्निग्धं च कटुकं लघु ।
गुल्मिनां कुष्ठिनां चापि तथैवोदररोगिणाम् ॥ ७८ ॥
हितमेतद्विरेकार्थे ये चान्ये दीर्घरोगिणः ।

१ सेहुण्डभेदः शातला ।

शातला सप्तला सारविमला विदला च सा ॥ ७९ ॥
तथा निगदिता भूरिफेना कर्मकषेत्यपि ।
शातला कटुका पाके वातला शीतला लघुः ॥ ८० ॥
तिक्ता शोथकफानाहपित्तोदावर्तरक्तजित् ।

२ कलिहारी ।

कलिहारी तु हलिनी लाङ्गली शुक्लपुष्प्यपि ॥ ८१ ॥
विशल्याऽग्निशिखाऽनन्ता वह्निवक्त्रा च गर्भनुत् ।
कलिहारी सरा कुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित् ॥ ८२ ॥
सक्षारा श्लेष्मजित्तिक्ता कटुका तुवरापि च ।

---

१ दे० भा० सेहुण्ड, थोहर । फा० लादनाम । इ० मिल्कसहेजप्रिक्ली पीयर Milks hedge Priekly Pear ॥ २ दे० भा० कलिहारी, कलेसर । बं० भा० विषलांगला, ईशलांगला । प० भा० मराडी, महासती । अस्याः कन्दं वत्सनाभविषम् । इं० बुल्फसवेन Walfsbane । तंत्रांतरे-कलिकारो लांगलिकी दीप्ता च गर्भघातिनी । अग्निजिह्वा वह्निशिखा वह्निवक्त्रा च लांगली ॥ वृद्धयोगतरंगिण्याम्-लांगली शुद्धिमायाति दिनं गोमूत्रसंस्थिता ।

तीक्ष्णोष्णा कृमिहल्लघ्वी पित्तला गर्भपातिनी ॥ ८३ ॥

१ श्वेतरक्तकरवीरौ ।

करवीरः श्वेतपुष्पः शतकुम्भोऽश्वमारकः ।
द्वितीयो रक्तपुष्पश्च चण्डान्तो लगुडस्तथा ॥ ८४ ॥
करवीरद्वयं तिक्तं कषायं कटुकं च तत् ।
व्रणलाघवकृन्नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहम् ॥ ८५ ॥
वीर्योष्णं कृमिकण्डुघ्नं भक्षितं विषवन्मतम् ।

२ धत्तूरः ।

धत्तूरधूर्तधुस्तूरा उन्मत्तः कनकाह्वयः ॥ ८६ ॥
देवताकितवस्तूरी महामोही शिवप्रियः ।
मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलपुत्रकः ॥ ८७ ॥
धत्तूरो मदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।
कषायो मधुरस्तिक्तो यूकालिक्षाविनाशनः ॥ ८८ ॥
उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः ।

३ वासकः ।

वासको वासिका वासा भिषङ्माता च सिंहिका ॥ ८९ ॥
सिंहास्यो वाजिदन्तः स्यादाटरूषक इत्यपि ।
अटरूषो वृषनामा सिंहपर्णश्च स स्मृतः ॥ ९० ॥
वासको वातकृत्स्वर्यः कफपित्तास्रनाशनः ।
तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुः शीतस्तृडर्तिहृत् ॥ ९१ ॥

---

१ दे० भा० कनेर । बं० भा० करवीर । फा० खरजेहरा । सफेद कनेर, लाल, पीली नीली । इं० स्वीटसेंटेड, औलियंडर । Sweet scented oleander । २ दे० भा० धत्तूरा । सित, नील, कृष्ण । बं० भा० धुतूरा । लोहितपीतपुष्पः । इं० थोर्न एप्पल स्ट्रामोनियं । Thorna apple stramonium । कृष्णधत्तूरकः सिद्धः कनकः सचिवः शिवः । कृष्णपुष्पे विषारातिः क्रूधूर्तश्च कीर्तितः । (वृद्धयोगतरंगिणी) धत्तूरबीजं गोमूत्रे चतुर्धा प्रोषितं पुनः । कंडितं निस्तुषं कृत्वा योगेषु विनियोजयेत् ॥ ३ दे० भा० बांसा । पं० भा० विहकड, बिसूटी । इं० वाकस ।

श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ।

१ पर्पटः ।

पर्पटो वरतिक्तश्च स्मृतः पर्पटकश्च सः ॥ ९२ ॥
कथितः पांशुपर्यायस्तथा कवचनामकः ।
पर्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ॥ ९३ ॥
संग्राही शीतलस्तिक्तो दाहनुद्व्रातलो लघुः ।

२ निंबः ।

निम्बः स्यात्पिचुमर्दश्च पिचुमन्दश्च तिक्तकः ॥ ९४ ॥
अरिष्टः पारिभद्रश्च हिंगुनिर्यास इत्यपि ।
निम्बः शीतो लघुर्ग्राही कटुपाकोऽग्निवातनुत् ॥ ९५ ॥
अह्रद्यः श्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत् ।
व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहल्लासमेहनुत् ॥ ९६ ॥
निम्बपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत् ।
वातलं कटुपाकं च सर्वारोचककुष्ठनुत् ॥ ९७ ॥
नैम्बं फलं रसे तिक्तं पाके तु कटु भेदनम् ।
स्निग्धं लघूष्णं कुष्ठघ्नं गुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥ ९८ ॥

३ महानिंबः ।

महानिम्बः स्मृतो द्रेको रम्यको विषमुष्टिकः ।
केशामुष्टिर्निम्बकश्च कार्मुको जीव इत्यपि ॥ ९९ ॥
महानिम्बो हिमो रूक्षस्तिक्तो ग्राही कषायकः ।
कफपित्तभ्रमच्छर्दिकुष्ठहल्लासरक्तजित् ॥ १०० ॥

---

१ दे० भा० पापडा, दवन । बं० भा० खेतपापडा ॥ फा० शाहतरा । इं० जस्टिसयाप्रोकरवेन्स । justicia Procumbans । २ दे० भा० निम, नीम, बं० भा० निमगाच्छ । फा० नेनव । इं० निंब ट्री Nimbtree । निंबतैलं तु कुष्ठघ्नं तिक्तं कृमिहरं परम् । तंत्रांतरे-कैटर्योऽन्यो महानिंबो रामणो रमणस्तथा । गिरिनिम्बो महारिष्टः शुक्लसारोऽलकाह्वयः ॥ इं० सजंदकरखीकुनाह । दे० भा० मीठानीम । बं० भा० घोडानिम विशेष ।

३ दे० भा० ध्रेक, बं० भा० बोडानिम महानिम । फा० आजाद दरखत ।

प्रमेहश्वासगुल्मार्शोमूषिकाविषनाशनः ।

१ पारिभद्रः ।

पारिभद्रो निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ॥ १०१ ॥
पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेदःकृमिप्रणुत् ।
तत्पुष्पं पित्तरोगघ्नं कर्णव्याधिविनाशनम् ॥ १०२ ॥

२ काञ्चनारः, कोविदारश्च ।

काञ्चनारः काञ्चनको गण्डारिः शोणपुष्पकः ।
कोविदारश्चमरिकः कुद्दालो युगपत्रकः ॥ १०३ ॥
कुण्डली ताम्रपुष्पश्चाश्मन्तकः स्वल्पकेसरी ।
काञ्चनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तहृत् ॥ १०४ ॥
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहा ।
कोविदारोऽपि तद्वत्स्यात्तयोः पुष्पं लघु स्मृतम् ॥ १०५ ॥
रूक्षं संग्राहि पित्तास्रप्रदरक्षयकासनुत् ।

३ श्याम-श्वेत-रक्त-शिग्रुः ।

शिग्रुः शोभाञ्जनस्तीक्ष्णगन्धकाऽक्षीवमोचकाः ॥ १०६ ॥
तद्बीजं श्वेतमरिचं मधुशिग्रुस्तु लोहितः ।
शिग्रुः सरः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो मधुरो लघुः ॥ १०७ ॥
दीपनो रोचनो रूक्षः क्षारस्तिक्तो विदाहकृत् ।
संग्राही शुक्रलो हृद्यः पित्तरक्तप्रकोपनः ॥ १०८ ॥
चक्षुष्यः कफवातघ्नो विद्रधिश्वयथुक्रिमीन् ।
मेदोपचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणान् हरेत् ॥ १०९ ॥
श्वेतः प्रोक्तगुणो ज्ञेयो विशेषाद्दीपनः सरः ।

---

१ दे० भा० बकायनट्रेक । बं० भा० पालते मांदार । द्रा० भा० पंजीर । २ दे० भा० कचनार, कुलाड । बं० भा० कांचन । ३ दे० भा० सुहांजना । बं० भा० सजिनेहना । इं० होर्सरेडीश ट्री Horse Rudishtree. पीतस्तु कांचनो ग्राही दीपनो व्रणरोपणः । तुवरो मूत्रकृच्छ्रस्य कफवायोर्विनाशनः ॥ कांचन्युक्ता शीर्षरुजं त्रिदोषं च विनाशयेत् । स्तन्यस्य वर्द्धनकरी कथिता सूक्ष्मदर्शिभिः ।

प्लीहानं विद्रधिं हन्ति व्रणघ्नः पित्तरक्तकृत् ॥ ११० ॥
मधुशिग्रुः प्रोक्तगुणो विशेषादीपनः सरः ।
शिग्रुवल्कलपत्राणां स्वरसः परमार्तिहृत् ॥ १११ ॥
चक्षुष्यं शिग्रुजं बीजं तीक्ष्णोष्णं विषनाशनम् ।
अवृष्यं कफवातघ्नं तन्नस्येन शिरोर्तिहृत् ॥ ११२ ॥

१ श्वेत-नीलपुष्पा अपराजिता ।

आस्फोता गिरिकर्णी स्यात् विष्णुक्रान्ताऽपराजिता ।
अपराजिते कटू मेध्ये शीते कण्ठ्ये सुदाष्टिदे ॥ ११३ ॥
कुष्ठमूत्रत्रिदोषामशोथव्रणविषापहे ।
कषाये कटुके पाके तिक्ते च स्मृतिबुद्धिदे ॥ ११४ ॥

२ सिन्दुवारः ।

सिन्दुवारः श्वेतपुष्पः सिन्दुकः सिन्दुवारकः ।
नीलपुष्पी तु निर्गुण्डी शेफाली सुवहा च सा ॥ ११५ ॥
सिन्दुकः स्मृतिदस्तिक्तः कषायः कटुको लघुः ।
केश्यो नेत्रहितो हन्ति शूलशोथाममारुतान् ॥ ११६ ॥
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मव्रणान्नीला हि तद्विधा ।
सिन्दुवारदलं जन्तुवातश्लेष्महरं लघु ॥ ११७ ॥

३ कुटजः ।

कुटजः कुटिजः कौटो वत्सको गिरिमल्लिका ।
कालिङ्गश्चक्रशाखी च मल्लिकापुष्प इत्यपि ॥ ११८ ॥
इन्द्रयवफलः प्रोक्तो वृष्यकः पाण्डुरद्रुमः ।
कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो हिमः ॥ ११९ ॥
अर्शोतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठजित् ।

---

१ दे० भा० सुफेदनीलकोयल । बं० भा० अपराजिता । इं० मजीरयुतरार्हिदी । २ दे० भा० संभालू, मेउडी, मंडूआ, माल्का । बं० भा० निशिंदा । फा० परंगुष्टतुखमेप झंगुष्ट भिस वान कर्तरीबन्या । इं० फाईवलीवडचेष्टट्री Five leaved Shasitree. तन्त्रांतरे-इन्द्राणिकेन्द्रसुरसा निर्गुण्डी सिन्धुवारकः ।

३ दे० भा० कुडासक, बं० भा० कुराचे । इं ओवल्लिब्रूरोझवे, Ovallea-xed rose bay ॥

१ करञ्जो ह्रस्वकरञ्जः ।

करञ्जो नक्तमालश्च करजश्चिराबिल्वकः ॥ १२० ॥
घृतपूर्णः करञ्जोऽन्यः प्रकीर्यः पूतिकोऽपि च ।
स चोक्तः पूतिकारञ्जः सोमवल्कश्च स स्मृतः ॥ १२१ ॥
करञ्जः कटुकस्तीक्ष्णो वीर्योष्णो योनिदोषहृत् ।
कुष्ठोदावर्तगुल्मार्शोव्रणक्रिमिकफापहा ॥ १२२ ॥
तत्पत्रं कफवातार्शःकृमिशोथहरं परम् ।
भेदनं कटुकं पाके वीर्योष्णं पित्तलं लघु ॥ १२३ ॥
तत्फलं कफवातघ्नं मेहार्शःकृमिकुष्ठाजित् ।
घृतपूर्णकरञ्जोऽपि करञ्जसदृशो गुणैः ॥ १२४ ॥

तृतीयः करञ्जः ।

उदकीर्यस्तृतीयोऽन्यः षड्ग्रन्थो हस्तिवारुणी ।
कर्कटी वायसी चापि करञ्जा करभाञ्जिका ॥ १२५ ॥
करञ्जी स्तम्भनी तिक्ता तुवरा कटुपाकिनी ।
वीर्योष्णा वमिपित्तार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित् ॥ १२६ ॥

२ श्वेतरक्तगुञ्जे ।

श्वेता गुञ्जोच्चटा प्रोक्ता कृष्णला चापि सा स्मृता ।
रक्ता सा काकचिञ्ची स्यात्काकणन्ती च रक्तिका ॥१२७॥
काकादनी काकपीलुः सा स्मृताऽङ्गारवल्लरी ।
गुञ्जाद्वयं तु केश्यं स्याद् वातपित्तज्वरापहम् ॥ १२८ ॥
मुखशोषभ्रमश्वासतृष्णामदविनाशिनी ।

---

१ दे० भा० करंजुआ । बं० भा० डहरकरंज । इं० स्मूथलीव्ड पोन गेमिया । Smooth leaved Pongomia, फा० इब्रलीस रवाय, ई० वोडनढकट, Banducnut. करंजतैलं तीक्ष्णोष्णं कृमिहृद्रक्तपित्तकृत् । नयनामयवातार्तिकुष्ठकंडुव्रणप्रणुत् । वातनुत् पित्तकृत्किंचिल्लेपनाच्चर्मदोषनुत् ॥

२ दे० भा० रती सुफेद, वा लाल चर्मटी, घुंघची । बं० भा० कुच्च । श्वेत गुञ्जा, तृणज्योतिः । फा० चश्मेखरूस । इं० वीड्ट्री Beadtree वृद्धयोगतरंगिण्यां–गुंजा च कांजिकस्विन्ना प्रहरं शुद्धयति ध्रुवम् ॥

नेत्रामयहरं वृष्यं बल्यं कण्डुव्रणापहम् ॥ १२९ ॥
कृमीन्द्रलुप्तकुष्ठानि रक्तबद्धबलापि च ।

१ कपिकच्छूः ।

कपिकच्छूरात्मगुप्ता रिष्यप्रोक्ता च मर्कटी ॥ १३० ॥
अजहा कण्डुराध्यण्डा दुःस्पर्शा प्रावृषायणी ।
लाङ्गूली शूकशिम्बी च सैव प्रोक्ता महर्षिभिः ॥ १३१ ॥
कपिकच्छूर्भृशं वृष्या मधुरा बृंहणी गुरुः ।
तिक्ता वातहरी बल्या कफपित्तास्रनाशिनी ॥ १३२ ॥
तद्बीजं वातशमनं स्मृतं वाजीकरं परम् ।

२ रोहिणी ।

मांसरोहिण्यतिविषा वृत्ता चर्मकषा कृशा ॥ १३३ ॥
प्रहारवल्ली विकसा वीरवत्यपि कथ्यते ।
स्यान्मांसरोहिणी वृष्या सरा दोषत्रयापहा ॥ १३४ ॥

चिल्लकः ।

चिल्लको वातनिर्हारी श्लेष्मघ्नो धातुपुष्टिकृत् ।
आग्नेयो विषवद्यस्य फलं मत्स्यनिषूदनम् ॥ १३५ ॥

टंकारी ।

टङ्कारी वातजित्तिक्ता श्लेष्मघ्नी दीपनी लघुः ।
शोथोदरव्यथाहन्त्री हिता पीठविसर्पिणाम् ॥ १३६ ॥

३ वेतसः ।

वेतसो नम्रकः प्रोक्तो वानीरो वंजुलस्तथा ।
अभ्रपुष्पश्च विदलो रथः शीतश्च कीर्तितः ॥ १३७ ॥

---

१ दे०भा० कौंचबीज, कौञ्छ किवांच, बृहती लघ्वी । बं० भा० आलकुशी । इं० कौहेज् । Cowhage ॥ २ दे०भा० रोहिणी, दो प्रकार, इं० रेडवुडट्री । Redwoodtree. यह वृक्ष जङ्गलमें अधिक होता है । पत्ते खिरेंटेके सदृश सात सात, फल अत्यन्त सूक्ष्म । ३ दे० भा० वेंत, बं० भा० वयसा, फा० बेत । इं० केन् Cane. जलवेतस, गजनू, पंजाबी-स्थलवेतस ।

वेतसः शीतलो दाहशोथार्शोयोनिरुक्प्रणुत् ।
हन्ति वीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥ १३८ ॥

जलवेतसः ।

नकुञ्चकः परीव्याधो नादेयो जलवेतसः ।
जलजो वेतसः शीतः संग्राही वातकोपनः ॥ १३९ ॥

इज्जलः ।

इज्जलो हिज्जलश्चापि निचुलश्चाम्बुजस्तथा ।
जलवेतसवद्वेद्यो हिज्जलोऽयं विषापहा ॥ १४० ॥

१ अङ्कोटः ।

अङ्कोटो दीर्घकीलः स्यादङ्कोलश्च निकोचकः ।
अङ्कोटकः कटुस्तीक्ष्णः स्निग्धोष्णस्तुवरो लघुः ॥ १४१ ॥
रेचनः कृमिशूलामशोफग्रहविषापहा ।
विसर्पकफपित्तास्रमूषिकाहिविषापहा ॥ १४२ ॥
तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेष्मघ्नं बृंहणं गुरु ।
बल्यं विरेचनं वातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ १४३ ॥

२ बला, महाबला, अतिबला, नागबला ।

बला वाटयालिका वाट्या सैव वाट्यालकापि च ।
महाबला पीतपुष्पा सहदेवी च सा स्मृता ॥ १४४ ॥
ततोऽन्याऽतिबला रिष्यप्रोक्ता कङ्कतिका सहा ।
गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वा गवेधुका ॥ १४५ ॥

---

१ दे० भा० ढेरा, ठेरा । बं० भा० आंकड । इं० ठोलीबडसल्युरिटीस । यह वृक्ष वनमें अधिक होता है । पत्ता एक अंगुल चौडा ५ वा ६ अंगुल लम्बा कच्चा फल नीला, पक्का लाल । २ दे० भा० खरैटी । बं० भा० वेडेला । प० भा० द्रडिआ इं० हार्टलीबडसिडा Heart leaved side । महाबला–सहदेई । अतिबला–कंघी, इं० इंडियनमेलो Indian Malow। नागबला–गंगेरन, बं० भा० गोरखा चाकुले । गांगेरुकीफलं रूक्षं कषायं स्वादु वातलम् । लेखनं स्तम्भनं शीतं विबंधाध्मानकृद्गुरु ॥ बला मूलत्वचश्चूर्णं सक्षीरं च सशर्करम् । मूत्रातिसारं हरति दृष्टमेतन्न संशयः ॥

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत् ।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥ १४६ ॥

लक्ष्मणा ।

पुत्रकाकाररक्तालपबिन्दुभिर्लाञ्छिता सदा ।
लक्ष्मणा पुत्रजननी बस्तगन्धाकृतिर्भवेत् ॥ १४७ ॥
कथिता पुत्रदा वश्या लक्ष्मणा मुनिपुङ्गवैः ।

१ स्वर्णवल्ली ।

स्वर्णवल्ली रक्तफला काकायुः काकवल्लरी ॥ १४८ ॥
स्वर्णवल्ली शिरःपीडां त्रिदोषं हन्ति दुग्धदा ।

२ कार्पासी ।

कार्पासी तुण्डकेशी च समुद्रान्ता च कथ्यते ॥ १४९ ॥
कार्पासको लघुः कोष्णो मधुरो वातनाशनः ।
तत्पलाशं समीरघ्नं रक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम् ॥ १५० ॥
तत्कर्णपिडकानादपूयास्रावविनाशनम् ।
तद्बीजं स्तन्यदं वृष्यं स्निग्धं कफकरं गुरु ॥ १५१ ॥

३ वंशः ।

वंशस्त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ।
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥ १५२ ॥
वंशः सरो हिमः स्वादुः कषायो वस्तिशोधनः ।
छेदनः कफपित्तघ्नः कुष्ठास्रव्रणशोथजित् ॥ १५३ ॥
तत्करीरः कटुः पाके रसे रूक्षो गुरुः सरः ।
कषायः कफकृत्स्वादुर्विदाही वातपित्तलः ॥ १५४ ॥
तद्यवास्तु सरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
वातपित्तकरा उष्णा बद्धमूत्राः कफापहाः ॥ १५५ ॥

---

१ स्वर्णवल्ली–सोनली जीवन्ती भेद । २ दे० भा० कपास, रुई । बं० भा० कार्पास । फा० कुतन, पुबेदाना । इं० काटन् Cotton. ३ दे० भा० बांस, सरंध्रवांस । बं० भा० बांश फा० कसब । इं० बेंबूकेन Bamboocane ।

१ नलः ।

नलः पोटगलः शून्यमध्यश्च धमनस्तथा ।
नलस्तु मधुरस्तिक्तः कषायः कफरक्तजित् ॥ १५६ ॥

२ मुञ्जः ।

भद्रमुञ्जः शरो बाणस्तेजनश्चेक्षुमण्डनः ।
मुञ्जो मुञ्जातको बाणः स्थूलदर्भः सुमेखलः ॥ १५७ ॥
मुञ्जद्वयं तु मधुरं तुवरं शिशिरं तथा ।
दाहतृष्णाविसर्पास्रमूत्रकृच्छ्राक्षिरोगहृत् ॥ १५८ ॥
दोषत्रयहरं वृष्यं मेखलासूपयुज्यते ।

३ कासः ।

कासः कासेक्षुरुद्दिष्टः स स्यादिक्षुरकस्तथा ॥ १५९ ॥
इक्ष्वालिकेक्षुगन्धा च तथा पोटगलः स्मृतः ।
कासः स्यान्मधुरस्तिक्तः स्वादुपाको हिमः सरः ॥ १६० ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मदाहास्रक्षयपित्ताक्षिरोगजित् ।

४ गुन्द्रः ।

गुन्द्रः पटेरको गुत्थः शृङ्गवेराभमूलकः ॥ १६१ ॥
गुन्द्रः कषायो मधुरः शिशिरः पित्तरक्तजित् ।
स्तन्यः शुक्रजोमूत्रशोधनो मूत्रकृच्छ्रहृत् ॥ १६२ ॥

एरका ।

एरका गुन्द्रमूला च शिवगुन्द्रा शरीति च ।
एरका शिशिरा वृष्या चक्षुष्या वातकोपिनी ॥ १६३ ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ॥

५ कुशः ।

कुशो दर्भस्तथा बर्हिः सूच्यग्रो यज्ञभूषणः ॥ १६४ ॥

---

१ दे० भा० नरसल, नल, महानल, देवनल । बं० भा० नल । इं० इंडियन टोबेको Indian tobacco ॥ २ दे० भा० मुञ्ज, सरकण्डा । बं० भा० सरपत । ३ दे० भा० काही, कास । बं० भा० केशघास । ४ दे० भा० डिम, एरका—गोंसपटेर । इं० एलिफेण्टग्रास Elephant grass. ५ दे० भा० दाभ, डाभ, कुशा ॥ बं० भा० कुश ॥

ततोऽन्यो दीर्घपत्रः स्यात्क्षुरपत्रस्तथैव च ।
दर्भद्वयं त्रिदोषघ्नं मधुरं तुवरं हिमम् ॥ १६५ ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक्प्रदरास्रजित् ।

१ कत्तृणम् ।

कत्तृणं रोहिषं देवजग्धं सौगन्धिकं तथा ॥ १६६ ॥
भूतीकं ध्याम पौरं च श्यामकं धूपगन्धिकम् ।
रोहिषं तुवरं तिक्तं कटुपाकं व्यपोहति ॥ १६७ ॥
हृत्कण्डुव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान् ।

२ भूतृणम् ।

भूतीकं गुह्यबीजं च सुगन्धं गोमयप्रियम् ॥ १६८ ॥
भूतृणं तु भवेच्छत्रा मालातृणकमित्यपि ।
भूतृणं कटुकं तिक्तं तीक्ष्णोष्णं रेचनं लघु ॥ १६९ ॥
विदाहि दीपनं रूक्षमनेत्र्यं मुखशोधनम् ।
अवृष्यं बहुविट्कं च पित्तरक्तप्रदूषणम् ॥ १७० ॥

३ नीलदूर्वा ।

नीलदूर्वा रुहाऽनन्ता भार्गवी शतपर्विका ।
शष्पा सहस्रवीर्य्या च शतवल्ली च कीर्तिता ॥ १७१ ॥
नीलदूर्वा हिमा तिक्ता मधुरा तुवरा हरेत् ।
कफपित्तास्रवीसर्पतृष्णादाहत्वगामयान् ॥ १७२ ॥

श्वेतदूर्वा ।

दूर्वा शुक्ला तु गोलोमी शतवीर्य्या च कथ्यते ।
श्वेतदूर्वा कषाया स्यात्स्वाद्वी व्रण्या च दीपनी ॥ १७३ ॥
तिक्ता हिमा विसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहहृत् ।

---

१ दे० भा० खवीघास, अं० अजस्वर, मिरचियागन्ध, रोहिष, दीर्घ रोहिष । बं० भा० रामकर्पूर । फा० खबालमानून । २ दे० भा० खुम्भ ढाल सांपकी छत्री । ३ दे० भा० दूब दुब नीलदूब, सुफेददूब । बं० भा० गेंटेदूर्वा इं० क्रीपिंग साईनोडन् ।

* गण्डदूर्वा ।

गण्डदूर्वा तु गण्डीरी मत्स्याक्षी शकुलादनी ॥ १७४ ॥
गण्डदूर्वा हिमा लोहद्रावणी ग्राहिणी लघुः ।
तिक्ता कषाया मधुरा वातकृत्कटुपाकिनी ॥ १७५ ॥
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा ।

१ विदारीकन्द । २ वाराहीकन्द ।

वाराहीकन्द एवान्यश्चर्मकारालुको मतः ॥ १७६ ॥
अनूपे स भवेद्देशे वाराह इव लोमवान् ।
विदारी स्वादुकन्दा च सा तु क्रोष्ट्री सिता मता ॥ १७७ ॥
इक्षुगन्धा क्षीरवल्ली क्षीरशुक्ला पयस्विनी ।
वाराही वरदा वृष्टिर्वदरेत्यभिधीयते ॥ १७८ ॥
विदारी मधुरा स्निग्धा बृंहणी स्तन्यशुक्रदा ।
शीता स्वर्य्या मूत्रला च जीवनी बलवर्णदा ॥ १७९ ॥
गुरुः पित्तास्रपवनदाहान् हन्ति रसायनी ।

३ मुशली ।

तालमूली तु विद्वद्भिर्मुशली परिकीर्तिता ॥ १८० ॥
मुशली मधुरा वृष्या वीर्योष्णा बृंहणी गुरुः ।
तिक्ता रसायनी हन्ति गुदजान्यनिलं तथा ॥ १८१ ॥

४ शतावरी ।

शतावरी बहुसुता भीरुरिन्दीवरी वरी ।
नारायणी शतपदी शतवीर्या च पीवरी ॥ १८२ ॥
महाशतावरी चान्या शतमूल्यूर्द्धकण्टिका ।

---

* गण्डदूर्वा–पंजाबमें प्रसिद्ध है । १ दे० भा० विलैयाकन्द । पं० भा० सियाली ॥ बं० भा० भूईकुमडा । २ दे० भा० चमार, आलू । पं० भा० कित्था । पश्चिम भा० गेठी । ३ दे० भा० मुसलीसुफेद, स्याहमुसली । बं० भा० तालमूली । ४ दे० भा० सहसपाओं । बं० भा० शतमूली । फा० गुर्जदस्ती । इं० रेसिमोसस । क्रोष्ट्रिका तु रसे स्वाद्वी पाकेऽपि मधुरैव सा । पित्तघ्नी शीतवीर्या च वातश्लेष्मकरी गुरुः । वाराही तु रसे स्वाद्वी तिक्ता पाके पुनः कटुः । शुक्रायुःस्वरवर्णाग्निबलपित्तविवर्द्धिनी । कफकुष्ठमरुन्मेहकृमिहृच्च रसायनी ॥

सहस्रवीर्या हेतुश्च रिष्यप्रोक्ता महोदरी ॥ १८३ ॥
शतावरी गुरुः शीता तिक्ता स्वाद्वी रसायनी ।
मेधाग्निपुष्टिदा स्निग्धा नेत्र्या गुल्मातिसारजित् ॥ १८४ ॥
शुक्रस्तन्यकरी बल्या वातपित्तास्रशोथजित् ।
महाशतावरी मेध्या हृद्या वृष्या रसायनी ॥ १८५ ॥
शीतवीर्या निहन्त्यर्शोग्रहणीनयनामयान् ।

अंकुरः ।

तदङ्कुरस्त्रिदोषघ्नो लघुरर्शःक्षयापहा ॥ १८६ ॥

१ अश्वगन्धा ।

गन्धान्ता वाजिनामादिरश्वगन्धा हयाह्वया ।
वाराहकर्णी बलदा वरदा कुष्ठगन्धिनी ॥ १८७ ॥
अश्वगन्धाऽनिलश्लेष्माश्वित्रशोथक्षयापहा ।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णाऽतिशुक्रला ॥ १८८ ॥

२ पाठा ।

पाठाऽम्बष्ठाऽम्बष्ठकी च प्राचीना पापचेलिका ।
एकाष्ठीला रसा प्रोक्ता पाठिका वरतिक्तिका ॥ १८९ ॥
पाठोष्णा कटुका तीक्ष्णा वातश्लेष्महरी लघुः ।
हन्ति शूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ॥ १९० ॥
दाहकण्डुविषश्वासकृमिगुल्मगरव्रणान् ।

३ श्वेता निशोथा ।

श्वेता त्रिवृत् त्रिभण्डी स्यात् त्रिवृता त्रिपुटापि च ॥१९१॥

---

१ दे० भा० असगन्ध । बं० भा० अश्वगन्धा । फा० मेहमनूवररी । इं०-विन्टर-चेरी Winter cherry. अश्वगन्धापत्रलेपो ग्रन्थिगंडापचीर्हरेत् । २ दे० भा० घोड बी । पं० भा० बटांडु । बं० भा० अकनादि, निमुक । इं पराख्ट् । फा० दनुज अकवरी । पलाहजडी, जलजमनी लघ्वी बृहती । ३ दे० भा० निसोत, पनिलर, त्रिवृत् श्याम, श्वेत, रक्त । बं० भा० तेड़डी । फा० निसोथ । इं० टरबीथरुट Turbith root.

सर्वानुभूतिः सरलो निशोथो रेचनीति च ।
श्वेता त्रिवृद्रेचनी स्यात् स्वादुरुष्णा समीरहृत् ॥ १९२ ॥
रूक्षा पित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा ।

श्यामात्रिवृत् ।

त्रिवृच्छ्यामाऽर्द्धचन्द्रा च पालिन्दी च सुषेणिका ॥१९३॥
श्यामा त्रिवृत्ततो हीनगुणा तीव्रविरेचनी ।
मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ॥ १९४ ॥

१ लघ्वी दन्ती ।

लघ्वी दन्ती विशल्या च स्यादुदुम्बरपर्ण्यपि ।
तथैरण्डफला शीघ्रा श्येनघण्टा घुणप्रिया ॥ १९५ ॥
वाराहाङ्घ्री च कथिता निकुम्भश्च मुकूलकः ।

२ बृहद्दंती ।

द्रवन्ती शम्बरी चित्रा प्रत्यक्पर्ण्यांखुपर्ण्यपि ॥ १९६ ॥
चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी सुतश्रेणी तथा वृषा ।
दन्तीद्वयं सरं पाके रसे च कटु दीपनम् ॥ १९७ ॥
गुदाङ्कुराश्मशूलार्शःकण्डुकुष्ठविदाहनुत् ।
तीक्ष्णोष्णं हन्ति पित्तास्रकफशोथोदराक्रिमीन् ॥ १९८ ॥

लघुदन्तीफलम् ।

क्षुद्रदन्तीफलं तु स्यान्मधुरं रसपाकयोः ।
शीतलं सृष्टविण्मूत्रं गरशोथकफापहम् ॥ १९९ ॥

३ बृहद्दन्तीफलम् ।

जयपालो दन्तिबीजं विख्यातं तिन्तणीफलम् ।
जयपालो गुरुः स्निग्धो रेची पित्तकफापहा ॥ २०० ॥

---

१ दे० भा० दंदनदाना, तिरिफल । बं० भा० दन्ती गाछ । फा० दन्द । इं० क्रोटन्सीडस Crotan seeds. । २ दे० भा० मुगलाई अंड । फा० शकारहुजुव । इं० दी फिझिकनट The physicnat. ३ दे० भा० जमाल गोटा, जप्पोलोटा, बं० भा० जैपाल । फा० तुखमेबेपंजारिखताई । इं० पार्जिंगक्रोटन् Parging Croton.

१ ऐन्द्रवारुणी ।

ऐन्द्रीन्द्रवारुणी चित्रा गवाक्षी च गवादनी ।
वारुणी च परा शुक्ला सा विशाला महाफला ॥ २०१ ॥
श्वेतपुष्पा मृगाक्षी च मृगैर्वारुर्मृगादनी ।
गवादनीद्वयं तिक्तं पाके कटु सरं लघु ॥ २०२ ॥
वीर्य्योष्णं कामलापित्तकफप्लीहोदरापहम् ।
श्वासकासापहं कुष्ठगुल्मग्रन्थिव्रणप्रणुत् ॥ २०३ ॥
प्रमेहमूढगर्भामगण्डामयविषापहम् ।

२ नीली ।

नीली तु नीलिनी तूली कालादोला च नीलिका ॥ २०४ ॥
रञ्जनी श्रीफली तुत्था ग्रामीणा मधुपर्णिका ।
क्लीतिका कालकेशी च नीलपुष्पा च सा स्मृता ॥ २०५ ॥
नीलिनी रेचनी तिक्ता केश्या मोहभ्रमापहा ।
उष्णा हन्त्युदरप्लीहवातरक्तकफानिलान् ॥ २०६ ॥
आमवातमुदावर्तं मदं च विषमुद्धतम् ।

३ शरपुंखा ।

शरपुङ्खा प्लीहशत्रुर्नीलवृक्षाकृतिश्च सा ॥ २०७ ॥
शरपुङ्खो यकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहा ।
तिक्तः कषायः कासास्रश्वासज्वरहरो लघुः ॥ २०८ ॥

४ वृद्धदारकः ।

वृद्धदारक आवेगी छागान्त्री रिष्यगन्धिका ।

---

१ दे० भा० तुम्मा, फरफेन्दु, बृहती, लघ्वी । बं० भा० कुन्दुरुकी । फा० खुर्या जातलख, इं० कोलोसिंथ, Colocitnh शुद्धिः-स्विन्नं गोमयतोये वा दुग्धे वा जयपालकम् । खर्परे मृदुवृष्टं तन्निस्नेहं शुद्धिमृच्छति ॥ २ दे० भा० नील, नीलबुन्हा, बृहती, लघ्वी, कालादाना । बं० भा० नीलगुछी । इं० इंडिगो Indigo । ३ दे० भा० झाणा, झोजरु । बं० भा० वननील, इं० परपलटेप्रोझिया Pur Pletephrosia श्वेतशरपुखा, सितसायका, सितपुंखा, श्वेतपुंखा, शुभ्रपुंखा, कण्ठपुंखा । ४ दे० भा० मिधरा । श्वेत कृष्ण, बं० भा० वितारक ॥

वृद्धदारः कषायोष्णः कटुस्तिक्तो रसायनः ॥ २०९ ॥
वृष्यो वातामवातार्शःशोथमेहकफप्रणुत् ।
शुक्रायुर्बलमेधाग्निस्वरकान्तिकरः सरः ॥ २१० ॥

१ यवासा, २ दुरालभा ।

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।
दुरालभा दुरालम्भा समुद्रान्ता च रोदनी ॥ २११ ॥
गान्धारी कच्छुराऽनन्ता कषाया दुर्लभा ग्रहा ।
यासः स्वादुः सरस्तिक्तस्तुवरः शीतलो लघुः ॥ २१२ ॥
कफमेदोमदभ्रान्तिपित्तास्रकुष्ठकासजित् ।
तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरः स्मृतः ॥ २१३ ॥
यावसस्य गुणैस्तुल्या बुधैरुक्ता दुरालभा ।

३ मुण्डी ।

मुण्डी भिक्षुरपि प्रोक्ता श्रावणी च तपोधना ॥ २१४ ॥
श्रवणाह्वा मुण्डितिका तथा श्रवणशीर्षिका ।
महाश्रावणिका त्वन्या सा स्मृता भूकदम्बिका ॥ २१५ ॥
कदम्बपुष्पिका च स्याद्व्यथाऽतितपस्विनी ।
मुण्डी तिक्ता कटुः पाके वीर्य्योष्णा मधुरा लघुः ॥ २१६ ॥
मेध्या गण्डापचीकुष्ठकृमियोन्यर्तिपाण्डुनुत् ।
श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्तिहृत् ॥ २१७ ॥
महामुण्डी च तुल्या हि गुणैरुक्ता महर्षिभिः ।

४ अपामार्गः ।

अपामार्गस्तु शिखरी ह्यधःशल्यो मयूरकः ॥ २१८ ॥
मर्कटी दुर्ग्रहा चापि किणही खरमञ्जरी ॥ २१९ ॥

---

१ दे० भा० जवांह । जवांसा । बं० भा० यवासा । फा० फराक्युशन । २ दे० भा० धमांह । रक्तपुष्प होता है । बं० भा० दुरालभा । फ० वादावर्द । ३ दे० भा० मुण्डी, गोरखमुण्डी । बं० भा० मुण्डीरी, थुलकुडी । ४ दे० भा० अपुठकण्डा, लटजीरा । ओंगा । बं० भा० आपाण्डग । फा० खारवासगोता । इं० रफ्चेफट्री । तन्त्रान्तरे—मयूरचूलिका चेति नततंडुलकश्च सः ॥

अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनस्तिक्तकः कटुः ।
पाचनो नावनश्छर्दिकफमेदोनिलापहा ॥ २२० ॥
निहन्ति हृद्रुजाध्मानकण्डुशूलोदरापचीः ।

१ रक्तापामार्गः ।

रक्तोऽन्यो वशिरो वृन्तफलो धामार्गवोऽपि च ॥ २२१ ॥
प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी कथिता कपिपिप्पला ।
अपामार्गोऽरुणो वातविष्टम्भी कफहाद्भिमः ॥ २२२ ॥
रूक्षः पूर्वगुणैर्न्यूनः कथितो गुणवेदिभिः ।
अपामार्गफलं स्वादु रसे पाके च दुर्जरम् ॥ २२३ ॥
विष्टम्भि वातलं रूक्षं रक्तपित्तप्रसादनम् ।

२ कोकिलाक्षः ।

कोकिलाक्षस्तु काकेक्षुरिक्षुरः क्षुरिकः क्षुरः ॥ २२४ ॥
भिक्षुः काण्डेक्षुरप्युक्त इक्षुगन्धेक्षुबालिका ।
क्षुरकः शीतलो वृष्यः स्वाद्वम्लः पिच्छिलस्तथा ॥ २२५ ॥
तिक्तो वातामशोथाश्मतृष्णादृष्ट्यनिलास्रजित् ।

३ अस्थिसंहारी ।

ग्रन्थिमानस्थिसंहारी वज्राङ्गी चास्थिशृंखला ॥ २२६ ॥
अस्थिसंहारिकः प्रोक्तो वातश्लेष्महरोऽस्थियुक् ।
उष्णः सरः कृमिघ्नश्च दुर्नामा चाक्षिरोगहृत् ॥ २२७ ॥
रूक्षः स्वादुर्लघुर्वृष्यः पाचनः पित्तलः स्मृतः ।
भिषग्वरैर्यथानाम फलञ्चापि प्रकीर्तितम् ॥ २२८ ॥

काण्डं त्वग्विरहितमस्थिशृङ्खलाया
माषार्द्रं द्विदलमकञ्चुकं तदर्द्धम् ।

---

१ दे० भा० लाल पुठकण्डा । लाल चिरचिटा । बं० भा० राङ्गाआपाङ्ग । २ दे० भा० तालमखाना । कैलया । वृद्ध । ह्रस्वा । बं० भा० कुलेकाण्टा ।

इं० लांगलिवुवालेंरिया Longiliwowarleiria । ३ दे०भा० हाडजोड । कुर्डाही बं० भा० हाडभांगा ॥

संपिष्टं तदनु ततस्तिलस्य तैले
सम्पक्वं वटकमतीव वातहारि ॥ २२९ ॥

१ महाजालनी।

महाजालनिका चर्मरङ्गः स्यान्नीलपुष्पिका।
आवर्तकी तिंदुकिनी विभाण्डी रक्तपुष्पिका ॥ २३० ॥
महाजालनिका तिक्ता रेचनी कफपित्तजित् ॥
हन्ति दाहोदरानाहशोफकुष्ठकफज्वरान् ॥ २३१ ॥

२ कुमारी।

कुमारी गृहकन्या च कन्या घृतकुमारिका।
कुमारी भेदनी शीता तिक्ता नेत्र्या रसायनी ॥ २३२ ॥
मधुरा बृंहणी बल्या वृष्या वातविषप्रणुत्।
गुल्मप्लीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरी भवेत् ॥ २३३ ॥
ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटपीतरक्तत्वगामयान्।

३ श्वेतपुनर्नवा।

पुनर्नवा श्वेतमूला शोथघ्नी दीर्घपत्रिका ॥ २३४ ॥
कटुः कषायानुरसा पाण्डुघ्नी दीपनी सरा।
शोफानिलगरश्लेष्महरी व्रण्योदरप्रणुत् ॥ २३५ ॥

रक्तपुनर्नवा।

पुनर्नवाऽपरा रक्ता रक्तपुष्पा शिवाटिका।
शोथघ्नी क्षुद्रवर्षाभूर्वृषकेतुः कठिल्लिका ॥ २३६ ॥
पुनर्नवाऽरुणा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः।
वातला ग्राहिणी श्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी ॥ २३७ ॥

---

१ दे० भा० सरना, सरनामक्की। बं० भा० सोनामुखी। इं टिनेवेलीसिना। २ दे० भा० कुआरगन्दल, ग्वारपाठा। बं० भा० घृतकुमारी। फा० दरखतेसिन्न। इं० बार्बेडोज् आलोझ। Bardaboes aloes. ३ दे० भा० इटसिट, विसखपरा, श्वेत, रक्त, नील। बं० भा० गादापुण्या। इं० स्प्रेडिङ्ग हागोबड् Spreading Hond॥

१ एलायकः ।

एलायकः कृष्णबालः कुमारी सारतोद्भवः ।

२ प्रसारिणी ।

प्रसारिणी राजबला भद्रपर्णी प्रतानिनी ॥ २३८ ॥
सरणी सारणी भद्रबला चापि कटंभरा ।
प्रसारणी गुरुर्वृष्या बलसन्धानकृत्सरा ॥ २३९ ॥
वीर्य्योष्णा वातहृत्तिक्ता वातरक्तकफापहा ।

३ कृष्णसारिवा ।

कृष्णा तु सारिवा श्यामा गोपी गोपवधूश्च सा ॥ २४० ॥
धवला सारिवा गोपी गोपकन्या च शारदी ।
स्फोटा श्यामा गोपवल्ली लता स्फोता च चंदना ॥ २४१ ॥

४ सारिवा ।

सारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ।
अग्निमान्द्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम् ॥ २४२ ॥
दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ।

५ भृङ्गराजः ।

भृङ्गराजो भृङ्गरजो मार्कवो भृंग एव च ॥ २४३ ॥
भृङ्गारकः केशराजो भृङ्गारः केशरञ्जनः ।
भृङ्गारः कटुकस्तिक्तो रूक्षोष्णः कफवातनुत् ॥ २४४ ॥
केश्यस्त्वच्यः कृमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत् ।
दन्त्यो रसायनो बल्यः कुष्ठनेत्रशिरोर्तिनुत् ॥ २४५ ॥

---

१ दे० भा० एलुआ । फा० मुसवी । इं० सैकोटर्नआलाइ । Secotrnealoes. २ दे भा० खींप, परसन, मरहटी–चांदवेल । बं० गंधवादुलिया । तन्त्रान्तरे–कल्याणी हेमपत्री च रेचनी स्वर्णपात्रिका । ३ हेमेडिसरुट जासुन खुम्ब । फा० भा० टेरनी । ४ दे० भा० सांई, कंरिप्याससांऊ । बं० भा०– अनन्तमूल, इं० इंडियन सारिसापरिला । Indian sarsaparilla. अस्य जटा-'सालसापरेला' इत्यपि जम्बुवत्पत्रा दुग्धगर्भा व्रतातिः ॥

५ दे० भा० भंगरा श्वेत, पीत, कृष्ण । बं० भा० भीमराज । फा० जर्मदर, इं०–ट्रेलिङ्ग इक्लिपटा Traling Eclipta ॥

१ शणपुष्पी।

शणपुष्पी स्मृता घण्टारवा शणसमाकृतिः।
शणपुष्पी कटुस्तिक्ता वामनी कफपित्तजित् ॥ २४६ ॥

२ त्रायमाणा।

बलभद्रा त्रायमाणा त्रायन्ती गिरिसानुजा।
त्रायन्ती तुवरा तिक्ता सरा पित्तकफापहा ॥ २४७ ॥
ज्वरहृद्रोगगुल्मार्शोभ्रमशूलविषप्रणुत्।

३ मूर्वा।

मूर्वा मधुरसा देवी मोरटा[1]तेजनी स्रुवा ॥ २४८ ॥
मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि।
मूर्वा सरा गुरुः स्वादुस्तिक्ता पित्तास्रमेहनुत् ॥ २४९ ॥
त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डूकुष्ठज्वरापहा।

४ काकमाची।

काकमाची ध्वांक्षमाची काकाह्वा चैव वायसी ॥ २५० ॥
काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा।
तिक्ता रसायनी शोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ॥ २५१ ॥
कटुर्नेत्रहिता हिक्काछर्दिहृद्रोगनाशनी।

५ काकनासा।

काकनासा तु काकाङ्घ्री काकतुण्डफला च सा ॥ २५२ ॥
काकनासा कषायोष्णा कटुका रसपाकयोः।
कफघ्नी वामनी तिक्ता शोथार्शःश्वित्रकुष्ठहृत् ॥ २५३ ॥

६ काकजंघा।

काकजंघा नदीकान्ता काकतिक्ता सुलोमशा।

---

१ दे० भा० झनझनिया, वुन शण, छोटीशण, श्वेतशण। बं० भा० झनझने। फा० लादनां इं० फलाकसूहेंप। hlax Pemp २ दे० भा० देवबला, बं० भा० बहुला, फा० असूप्रक। ३ दे० भा० चूरनहार, मोड़, बं० भा० मुर्गा। ४ दे० भा० कैंचमैंच, मकोय। फा० रोवातरीखा। इं० नाइट् सेड (त्रायमाण) बं० बलाडुमुर। सिलहट आदिग्राम हिमालयप्रान्तमें असफाकनाम इसके फूलोंसे वस्त्र रंजन किये जाते हैं। ५ दे० भा० कौआठोडी। बं० भा० केडपाटंटी। ६ दे० भा० मेंसी। बं० भा० कांटा गुडका डली।

पारावतपदी दासी काका चापि प्रकीर्तिता ॥ २५४ ॥
काकजङ्घा हिमा तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ।
निहन्ति ज्वरकुष्ठास्रक्रिमिकण्डुविषप्रणुत् ॥ २५५ ॥

नागपुष्पी ।

नागपुष्पी श्वेतपुष्पा नागरी रामदूतिका ।
नागरी रोचनी तिक्ता तीक्ष्णोष्णा कफपित्तनुत् ॥ २५६ ॥
विनिहन्ति विषं शूलं योनिदोषवामिक्रिमीन् ।

१ मेषशृङ्गी ।

मेषशृङ्गी विषाणी स्यान्मेषवल्ल्यजशृङ्गिका ॥ २५७ ॥
मेषशृङ्गी रसे तिक्ता वातला श्वासकासहृत् ।
रूक्षा पाके कटुस्तिक्ता व्रणश्लेष्माक्षिशूलनुत् ॥ २५८ ॥
मेषशृङ्गीफलं तिक्तं कुष्ठमेहकफप्रणुत् ।
दीपनं स्रंसनं कासकृमिव्रणविषापहम् ॥ २५९ ॥

२ हंसपदी ।

हंसपादी हंसपदी कीटमाता त्रिपादिका ।
हंसपादी गुरुः शीता हन्ति रक्तविषव्रणान् ॥ २६० ॥
विसर्पदाहातीसारलूताभूतादिरोगनुत् ।

३ सोमलता ।

सोमवल्ला सोमलता सोमक्षीरी द्विजप्रिया ॥ २६१ ॥
सोमवल्ली त्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्ता रसायनी ।

४ आकाशवल्ली ।

आकाशवल्ली तु बुधैः कथिताऽमरवल्लरी ॥ २६२ ॥
खवल्ली ग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाऽक्ष्यामयापहा ।
तुवराऽग्निकरी हृद्या पित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥ २६३ ॥

---

१ दे० भा० मेढाशिंही, काकडाशिंगी । बं० भा० छागलवेंटे । फा० किस्त, इं स्कुट्री । २ दे० भा० कीटमारिका, बं० भा० गोपालेलता । फा० परस्याउशान । इं० मेडनहेर । ३ दे० भा० सोमलता । बं० भा० सोमलता । ४ दे० भा० निराधार, आकाशवेल । बं० भा० आलोकलता ॥

१ पातालगरुडी ।

छिलहिण्डो महामूलः पातालगरुडाह्वयः ।
छिलहिण्डेः परं वृष्यः कफघ्नः पवनापहा ॥ २६४ ॥

२ वन्दा ।

वन्दा वृक्षादनी वृक्षभक्ष्या वृक्षरुहापि च ।
वन्दाकः स्याद्धिमस्तिक्तः कषायो मधुरो रसे ॥ २६५ ॥
माङ्गल्यः कफवातास्रक्षोव्रणविषापहा ।

३ वटपत्री ।

वटपत्री तु कथिता मोहनी रेवती बुधैः ॥ २६६ ॥
वटपत्री कषायोष्णा योनिमूत्रगदापहा ।

४ हिंगुपत्री ।

हिङ्गुपत्री तु कवरी पृथ्वीका पृथुका पुथुः ॥ २६७ ॥
हिङ्गुपत्री भवेद्रुच्या तीक्ष्णोष्णा पाचनी कटुः ।
हृद्वस्तिरुग्विबन्धार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥ २६८ ॥

वंशपत्री ।

वंशपत्री वेणुपत्री पिङ्गा हिङ्गुशिवाटिका ।
हिङ्गुपत्रीगुणा विज्ञैर्वंशपत्रीव कीर्तिता ॥ २६९ ॥

५ मत्स्याक्षी ।

मत्स्याक्षी बाह्लिकी मत्स्यगन्धा मत्स्यादनीति च ।
मत्स्याक्षी ग्राहिणी शीता कुष्ठपित्तकफास्रजित् ॥ २७० ॥
लघुस्तिक्ता कषाया च स्वाद्वी कटुविपाकिनी ।

६ सर्पाक्षी ।

सर्पाक्षी स्यात्तु गण्डाली तथा नाडीकलायका ॥ २७१ ॥
सर्पाक्षी कटुका तिक्ता सोष्णा कृमिनिकृन्तनी ।
वृश्चिकोन्दुरुसर्पाणां विषघ्नी व्रणरोपणी ॥ २७२ ॥

---

१ दे० भा० छिरेटा । पं० भा० तरड । वं० भा० शिलिंदा । २ दे० भा०–वांदा । वं० भा० मांदडा । ३ दे० भा० वटपत्री । वं० भा० वडपाथरकुचि इं० लेकपिडियम् । ४ मरहटी––बाफली । ५ दे० भा० मछेली, गोरखापान, गोरतंबोल, तरकला साग । बं० भा० शालंचवाशमठ । ६ मरहटी––गिन्नी, जैजैवन्ती, खनेडरीवेल सहचरी ॥

१ शंखपुष्पी ।

शङ्खपुष्पी तु शंखाह्वा माङ्गल्यकुसुमापि च ।
शङ्खपुष्पी सरा मेध्या वृष्या मानसरोगहृत् ॥ २७३ ॥
रसायनी कषायोष्णा स्मृतिकान्तिबलाग्निदा ।
दोषापस्मारभूतादिकुष्ठक्रिमिविषप्रणुत् ॥ २७४ ॥

२ अर्कपुष्पी ।

अर्कपुष्पी क्रूरकर्मा पयस्या जलकामुका ।
अर्कपुष्पी कृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारजित ॥ २७५ ॥

३ लज्जालुः ।

लज्जालुर्हि शमीपत्रा समङ्गा जलकर्णिका ।
रक्तपादी नमस्कारी नाम्ना खदिरकेत्यपि ॥ २७६ ॥
लज्जालुः शीतला तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान्विनाशयेत् ॥ २७७ ॥

तद्भेदः-अलम्बुषा ।

अलम्बुषा खरत्वक् च तथा मेदोगला स्मृता ।
अलम्बुषा लघुः स्वादुः कृमिपित्तकफापहा ॥ २७८ ॥

४ दुग्धिका ।

दुग्धिका स्वादुपर्णी स्यात्क्षीरावी क्षीरिवी तथा ।
दुग्धिकोष्णा गुरू रूक्षा वातला गर्भकारिणी ॥ २७९ ॥
स्वादुक्षीरी कटुस्तिक्ता सृष्टमूत्रा मलापहा ।
स्वादुर्विष्टंभनी वृष्या कफकोष्ठकृमिप्रणुत् ॥ २८० ॥

५ भूम्यामलकी ।

भूम्यामलकिका प्रोक्ता शिवा तामलकीति च ।

---

१ दे० भा० शंखाहुली, कौडिपाली, भोयभुड़क । वं० भा० ज्ञानकुनी । दुपरियाफूल, सुफेदफूल । २ दे० भा० अन्धाहुली । ३ दे० भा० लाजवंती, छुईमुई वं० भा० लाजुक, लज्जालु विपरीतलज्जालु अलंबुषा । ४ दे० भा० दूधी दोधक । तन्त्रांतरे-नागार्जुनी पयोवर्षा योगिनी लघुदुग्धिका । वं० भा० दुदूले फा० निशाशत । ५ दे० भा०पाताल आंवला । वं० भा० भूई आमला ॥

बहुपत्रा बहुफला बहुवीर्य्या जटापि च ॥ २८१ ॥
भूधात्री वातकृत्तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ।
पिपासाकासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा ॥ २८२ ॥

१ ब्राह्मी ।

ब्राह्मी कपोतवङ्का च सोमवल्ली सरस्वती ।

२ ब्रह्ममण्डूकी ।

मण्डूकपर्णी माण्डूकी त्वाष्ट्री दिव्या महौषधी ॥ २८३ ॥
ब्राह्मी हिमा सरा तिक्ता लघुर्मेध्या च शीतला ।
कषाया मधुरा स्वादुपाका पुष्पा रसायनी ॥ २८४ ॥
स्वर्य्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित् ।
विषशोथज्वरहरी तद्वन्मण्डूकपर्णिका ॥ २८५ ॥

३ द्रोणपुष्पी ।

द्रोणा च द्रोणपुष्पी च फलपुष्पा च कीर्तिता ।
द्रोणपुष्पी गुरुः स्वादू रूक्षोष्णा वातपित्तकृत् ॥ २८६ ॥
सतीक्ष्णा लवणा स्वादुपाका कटूवी च भेदनी ।
कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् ॥ २८७ ॥

४ सुवर्चला ।

सुवर्चला सूर्य्यभक्ता वरदा बदरापि च ।
सूर्य्यावर्ता रविप्रीता परा ब्रह्मसुवर्चला ॥ २८८ ॥
सुवर्चला हिमा रूक्षा स्वादुपाका सरा गुरुः ।
अपित्तला कटुः क्षारा विष्टम्भकफवातजित् ॥ २८९ ॥
अन्या तिक्ता कषायोष्णा सरा रूक्षा लघुः कटुः ।
निहन्ति कफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥ २९० ॥

---

१ दे० भा० ब्रह्मी । अस्या भेदः ब्रह्ममण्डूकी । बं० भा० थुलकुडि । फा० जनरव । इं० इंडियन् पेनीवर्ट । २ पं० भा० मीण्डकी । ३ दे० भा० गुमामल्लडोडा । बं० भा० घलघसे । पत्रम्–द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रूक्षं गुरु च पित्तकृत् । भेदनं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु । ४ दे० भा० हुलहुल । बं० भा० वशनलते । फा० गुले आफताव परस्त । इं० संप्लावर । Sumplawar.

विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपाण्डुताः ।

१ वन्ध्याकर्कोटकी ।

वन्ध्याकर्कोटकी देवी कन्या योगेश्वरीति च ॥ २९१ ॥
नागारिर्नागदमनी विषकण्टकिनी तथा ।
वन्ध्या कर्कोटकी लघ्वी कफनुद्व्रणशोधनी ॥ २९२ ॥
सर्पदर्पहरी तीक्ष्णा विसर्पविषहारिणी ।

२ मार्कण्डिका ।

मार्कण्डिका भूमिचरी मार्कण्डी मृदुरेचनी ॥ २९३ ॥
मार्कण्डिका कुष्ठहरी ऊर्ध्वाधःकायशोधनी ।
विषदुर्गन्धकासघ्नी गुल्मोदरविनाशनी ॥ २९४ ॥

३ देवदाली ।

देवदाली तु वेणी स्यात्कर्कोटी च गरागरी ।
देवताडो वृत्तकोषस्तथा जीमूत इत्यपि ॥ २९५ ॥
पीताऽपरा खरस्पर्शा विषघ्नी गरनाशनी ।
देवदाली रसे तिक्ता कफार्शःशोफपाण्डुताः ॥ २९६ ॥
नाशयेद्वामनी तिक्ता क्षयहिक्काकृमिज्वरान् ।
देवदालीफलं तिक्तं कृमिश्लेष्मविनाशनम् ॥ २९७ ॥
स्रंसनं गुल्मशूलघ्नमर्शोघ्नं वाताजित्परम् ।

४ जलपिप्पली ।

जलपिप्पल्यभिहिता शारदी शकुलादनी ॥ २९८ ॥
मत्स्यादनी मत्स्यगन्धा लाङ्गलीत्यपि कीर्तिता ।

---

१ दे० भा० वांझ खाखसा । अकलकौडा । बं० भा० तित्कांकडी । कन्दः-- वन्ध्याकर्कोटकीकन्दो हन्ति श्लेष्मविषद्वयम् । २ दे० भा० बहुगुणी, भुईखाखसा । बं० खा० कांकरोलभेद । इं० आलेक्झांडियन् । ३ दे० भा० सौनैया । घघरवेल, वंदालडोडा । ३ भेद । बं० भा० देयाताडा । इं० ब्रिस्टालल्युफा । देवदाली- कषायेन शौचमाचरतां नृणाम् । किंवा तद्धूमसेकाद्भिः कुतः स्युर्गुदजांकुराः । ४ दे० भा० जल पीपलें, बुक्कन । बं० भा० पनसिगा । फा० पनसिगा । इं० परपललिप्या ॥

जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शुक्रला लघुः ॥ २९९ ॥
संग्राहिणी हिमा रूक्षा रक्तदाहव्रणापहा ।
कटुपाकरसा रुच्या कषाया वह्निवर्द्धनी ॥ ३०० ॥

१ गोजिह्वा ।

गोजिह्वा गोजिका गोजी दार्विका खरपर्णिनी ।
गोजिह्वा वातला शीता ग्राहिणी कफपित्तनुत् ॥ ३०१ ॥
हृद्या प्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरी लघुः ।
कोमला तुवरा तिक्ता स्वादुपाकरसा स्मृता ॥ ३०२ ॥

२ नागदमनी ।

विज्ञेया नागदमनी बलामोटा विषापहा ।
नागपुष्पी नागपत्री महायोगेश्वरीति च ॥ ३०३ ॥
बलामोटा कटुस्तिक्ता लघुः पित्तकफापहा ।
मूत्रकृच्छ्रव्रणान् रक्षो नाशयेज्जालगर्दभम् ॥ ३०४ ॥
सर्वग्रहप्रशमनी विशेषाविषनाशनी ।
जयं सर्वत्र कुरुते धनदा सुमतिप्रदा ॥ ३०५ ॥

वेल्लन्तरी ।

वेल्लन्तरो जगति वीरतरुः प्रसिद्धः
श्वेतासितारुणविलोहितनीलपुष्पः ।
स्याज्जातितुल्यकुसुमः शमिसूक्ष्मपत्रः
स्यात्कण्टकी सजलदेशज एष वृक्षः ॥ ३०६ ॥
वेल्लन्तरो रसे पाके तिक्तस्तृष्णाकफापहा ।
मूत्राघाताश्मजिद् ग्राही योनिमूत्रानिलार्तिजित् ॥ ३०७ ॥

छिक्कनी ।

छिक्कनी क्षवकृत्तीक्ष्णा छिक्किका घ्राणदुःखदा ॥ ३०८ ॥

---

१ दे० भा० गाजुबान, गोभी । बं० भा० दाडियाशाक । फा० कमलमरुभी । २ दे० भा० नागदौन । बं० भा० नाग्रदना । (विजलदेशज इत्यपि पाठः ।) ३ दे० भा० नकछिकनी । ब० भा० हांचुटी । फा० वरेगाउजवां ॥

छिक्कनी कटुका रुच्या तीक्ष्णोष्णा वह्निपित्तकृत् ।
वातरक्तहरी कुष्ठकृमिवातकफापहा ॥ ३०९ ॥

१ वर्वरी ।

वर्वरी कवरी तुङ्गी खरपुष्पाऽजगन्धिका ।
वर्वरी तु लघू रुच्या हृद्या च कफवातहृत् ॥ ३१० ॥

२ ककुन्दरः ।

ककुन्दरस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः ।
ककुन्दरः कटुस्तिक्तो ज्वररक्तकफापहा ॥ ३११ ॥
तन्मूलमार्द्रं निक्षिप्तं वदने मुखशोषहृत् ।

३ सुदर्शना ।

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राह्वा मधुपर्णिका ॥ ३१२ ॥
सुदर्शना स्वादुरुष्णा कफशोफास्रवातजित् ।

४ आखुकर्णी ।

आखुकर्णी त्वाखुकर्णपर्णिका भूदरीभवा ॥ ३१३ ॥
आखुकर्णी कटुस्तिक्ता कषाया शीतला लघुः ।
विपाके कटुका मूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥ ३१४ ॥

मयूरशिखा ।

मयूराह्वशिखा प्रोक्ता सहस्राङ्घ्रिर्मधुच्छदा ।
नीलकण्ठशिखा लघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥ ३१५ ॥

इति गुडूच्यादिवर्गः ॥

---

१ वबूई–तुलसी । देशांतरभाषा । निर्गंधबावरी । कान फोड़ी इसका बीज तुखमरेंहा । २ दे० भा० कुकुरौंदा । बं० भा० ककुरशोंका । फा० कर्माकिसस । कुकूडछिड़ी । कूकरभंगरा । ३ दे० भा० सुदर्शन । वं० भा० सुदर्शनगुलञ्च । पद्मगुलञ्च । ४ दे० भा० मूसाकर्न्नी, बृहती, लघ्वी च । वं० भा० इंदुरकानी । फा० गोरोमुखसतर । ५ दे० भा० मोरवेल । लालमुर्गा, मोरशिखा । वं० भा० मयूरशिखा । फा० ससनाने, असलान ॥

पुष्पवर्गः ।

तत्रादौ कमलस्य नामानि गुणाश्च ।

वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ।
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ॥ १ ॥
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ।
बिसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ॥ २ ॥
कमलं शीतलं वर्ण्यं मधुरं कफपित्तजित् ।
तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥ ३ ॥
विशेषतः सितं पद्मं पुण्डरीकमिति स्मृतम् ।
रक्तं कोकनदं ज्ञेयं नीलमिन्दीवरं स्मृतम् ॥ ४ ॥
धवलं कमलं शीतं मधुरं कफपित्तजित् ।
तस्मादल्पगुणं किंचिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥ ५-६ ॥

पद्मिनी ।

मूलनालदलोत्फुल्लफलैः समुदिता पुनः ।
पद्मिनी प्रोच्यते प्राज्ञैर्बिसिन्यादिश्च सा स्मृता ॥ ७ ॥
पद्मिनी शीतला गुर्वी मधुरा लवणा च सा ।
पित्तासृक्कफनुत्क्षुद्रा वातविष्टम्भकारिणी ॥ ८ ॥

नवपत्रादि ।

संवर्तिका नवदलं बीजकोशोऽब्जकर्णिका ।
किञ्जल्कः केसरः प्रोक्तो मकरन्दो रसः स्मृतः ॥ ९ ॥
पद्मनालं मृणालं स्यात् तथा बिसमिति स्मृतम् ।

---

१ वं० भा० नीलशुन्दि । फा० नीलोफर । इं० लोटस । Lotus. कमलगट्टा-पद्मबीजं तु पद्माक्षं कलोपं पद्मकर्कटी । २ आदिशब्दात् नलिनी कमलिनीत्यादिः ॥ ३ अरविन्दहृतः शीतो मकरन्दोऽतिवृंहणः । त्रिदोषशमनः सर्वनेत्रामयनिषूदनः॥पद्मादिकन्दः शालूकं करहाटश्च कथ्यते । मृणालमूलं भिस्साडं लाजलूकं च कथ्यते ॥ दे० भा० भसींडा । वं० भा० पद्मेरगेंड ४ दे० भा० कमलकी डण्डी । सूक्ष्ममृणालमूलं । वं० भा० स्थूलाबिस । (राजनिघंटु) शालूकं कटु विष्टंभि रूक्षं रुच्यं कफापहम् । कषायं कासपित्तघ्नं तृष्णा-दाहनिवारणम् ॥

संवर्तिका हिमा तिक्ता कषाया दाहतृट्प्रणुत् ॥ १० ॥
मूत्रकृच्छ्रगदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी ।
पद्मस्य कर्णिका तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ॥ ११ ॥
मुखवैशद्यकृल्लघ्वी तृष्णासृक्कफापित्ततुत् ।
किंजल्कः शीतलो वृष्यः कषायो ग्राहकोऽपि सः ॥ १२ ॥
कफपित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित् ।
मृणालं शीतलं वृष्यं पित्तदाहास्रजिद्गुरु ॥ १३ ॥
दुर्जरं स्वादुपाकं च स्तन्यानिलकफप्रदम् ।
संग्राहि मधुरं रूक्षं शालूकमपि तद्गुणम् ॥ १४ ॥

स्थलकमलिनी ।

पद्मचारिण्यतिचराऽव्यथा पद्मा च शारदी ।
पद्माऽनुष्णा कटुस्तिक्ता कषाया कफवातजित् ॥ १५ ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मशूलघ्नी श्वासकासविषापहा ।

१ कुमुदम् ।

श्वेतं कुवलयं प्रोक्तं कुमुदं कैरवन्तथा ॥ १६ ॥
कुमुदं पिच्छिलं स्निग्धं मधुरं ह्लादि शीतलम् ।

२ कुमुदिनी ।

कुमुद्वती कैरविका तथा कुमुदिनीति च ॥ १७ ॥
सा तु मूलादिसर्वाङ्गैर्युक्ता समुदिता बुधैः ।
पाद्मिन्या ये गुणाः प्रोक्ताः कुमुदिन्यामपि स्मृताः ॥ १८ ॥

जलकुम्भी शैवालम् ।

वारिपर्णी कुम्भिका स्याच्छैवालं शैवलं च तत् ।
वारिपर्णी हिमा तिक्ता लघ्वी स्वाद्वी सरा कटुः ॥ १९ ॥
दोषत्रयहरी रूक्षा शोणितज्वरशोषकृत् ।

---

१ दे० भा० सुफेदकमल । २ दे० भा० भभूल कोईबाबबूला । भवेत्कुमुद्वतीबीजं स्वादु रूक्षं हिमं गुरु । वं० भा० श्वेतशुन्दी ॥

शैवालं तुवरं तिक्तं मधुरं शीतलं लघु ॥ २० ॥
स्निग्धं दाहतृषापित्तरक्तज्वरहरं परम् ।

१ शतपत्री ।

शतपत्री तरुण्युक्ता कर्णिका चारुकेसरा ॥ २१ ॥
महाकुमारी गन्धाढ्या लाक्षापुष्पाऽतिमञ्जुला ।
शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी शुक्रला लघुः ॥ २२ ॥
दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्या तिक्ता कटूवी च पाचनी ।

२ वासन्ती ।

नैपाली कथिता तज्ज्ञैः सप्तला नवमालिका ॥ २३ ॥
वासन्ती शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयास्रजित् ।

३ वार्षिकी ।

श्रीपदी षट्पदानन्दा वार्षिकी मुक्तबन्धना ॥ २४ ॥
वार्षिकी शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नी तत्तैलं तद्गुणं स्मृतम् ॥ २५ ॥

४ स्वर्णजातिका ।

जातिर्जाती च सुमना मालती राजपुत्रिका ।
चेतिका हृद्यगन्धा च सा पीता स्वर्णजातिका ॥ २६ ॥
जातीयुगं तिक्तमुष्णं तुवरं लघु दोषजित् ।
शिरोऽक्षिमुखदन्तार्तिविषकुष्ठव्रणास्रजित् ॥ २७ ॥

५ यूथिका ।

यूथिका गणिकाऽम्बष्ठा सा पीता हेमपुष्पिका ।
यूथीयुगं हिमं तिक्तं कटुपाकरसं लघु ॥ २८ ॥
मधुरं तुवरं हृद्यं पित्तघ्नं कफवातलम् ।
व्रणास्रमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम् ॥ २९ ॥

---

१ दे० भा० गुलाब । मौसमी गुलाब । वं० भा० सेवती । फा० गुलेसुर्ख । इं० केवेजरोज । २ दे० भा० नेवारी । वं० नेओयार । ३ दे० भा० मोतिया । खेल । वं० भा० वेलफुलगांछ । ४ दे० भा० जाई, पीली जाई । चम्बेली । वं० भा० चामिनी । इं स्पेनिश आस्सीन् ॥ ५ वं० भा० जूही स्वर्णजूही ॥

१ चाम्पेयः ।

चाम्पेयश्चम्पकः प्रोक्तो हेमपुष्पश्च स स्मृतः ।
एतस्य कलिका गन्धफलीति कथिता बुधैः ॥ ३० ॥
चम्पकः कटुकस्तिक्तः कषायो मधुरो हिमः ।
विषाक्रिमिहरः कृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित् ॥ ३१ ॥

२ बकुलः ।

बकुलो मधुगन्धश्च सिंहकेसरकस्तथा ।
बकुलस्तुवरोऽनुष्णः कटुपाकरसो गुरुः ॥ ३२ ॥
कफपित्तविषाश्वित्राक्रिमिदन्तगदापहा ।

३ वकः ।

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो वको वसुः ॥ ३३ ॥
वकोऽनुष्णः कटुस्तिक्तः कफपित्तविषापहा ।
योनिदोषतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥ ३४ ॥

४ कदम्बः ।

कदम्बः प्रियको नीपो वृत्तपुष्पो हलिप्रियः ।
कदम्बो मधुरः शीतः कषायो लवणो गुरुः ॥ ३५ ॥
सरोऽवष्टम्भकृद्रूक्षः कफस्तन्यानिलप्रदः ।

५ कुब्जकः ।

कुब्जको भद्रतरुणी बृहत्पुष्पोऽतिकेसरः ॥ ३६ ॥
महासहा कण्टकाढ्या नीलाऽलिकुलसङ्कुला ।
कुब्जकः सुरभिः स्वादुः कषायानुरसः सरः ॥ ३७ ॥
त्रिदोषशमनो वृष्यः शीतहर्ता च स स्मृतः ।

---

१ दे० भा० तम्पा । बं० भा० चांपा । सुफेद-नीली चम्पा सुलतान चम्पा । इसके फूलके बीजको नागकेशर कहते हैं । भूमिचम्पा ।

२ दे० भा० मौलसरी । बं० भा० बकुलगाछ । इं० सुरीनाममेडलर । ३ दे० भा० बडी मौलसरी । इं० सुरीममामेडलर । ४ दे० भा० कदम्ब । बं० कदम गाछ । कदम्ब । धारा कदम्ब । भूमि कदम्ब । राजकदम्ब । पुष्पगुणः--पुष्पं कषायं मधुरं शीतं पित्तकफास्रजित् । फलम्--तत्फलं मधुरं स्निग्धं कषायं विशदं हिमम् । कफपित्तहरं दन्त्यं विबन्धाध्मानवातकृत् ॥ ५ दे० भा० सेवती गुलाब । सदा गुलाब ॥

१ मल्लिका ।

मल्लिका मदयन्ती च शीतभीरुश्च भूपदा ॥ ३८ ॥
मल्लिकोष्णा लघुर्वृष्या तिक्ता च कटुका हरेत् ।
वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान् ॥ ३९ ॥

२ माधवी ।

माधवी स्यात्तु वासन्ती पुण्ड्रको मण्डकोऽपि च ।
अतिमुक्तश्चाविमुक्तः कामुको भ्रमरोत्सवः ॥ ४० ॥
माधवी मधुरा शीता लघ्वी दोषत्रयापहा ।

३ केतकी । स्वर्णकेतकी ।

केतकः सूचिकापुष्पो जम्बूकः ऋकचच्छदः ॥ ४१ ॥
सुवर्णकेतकी त्वन्या लघुपुष्पा सुगन्धिनी ।
केतकः कटुकः स्वादुर्लघुस्तिक्तः कफापहः ॥ ४२ ॥
उष्णस्तिक्तरसो ज्ञेयश्चक्षुष्या हेमकेतकी ।

४ किङ्किरातः ।

किङ्किरातो हेमगौरः पीतकः पीतभद्रकः ॥ ४३ ॥
किंकिरातो हिमस्तिक्तः कषायश्च हरेदसौ ।
कफपित्तपिपासास्रदाहशोषवमिक्रिमीन् ॥ ४४ ॥

५ कर्णिकारः ।

कर्णिकारः कटुस्तिक्तस्तुवरः शोधनो लघुः ॥ ४५ ॥
रञ्जनः सुखदः शोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ।

अशोकः ।

अशोको हेमपुष्पश्च वञ्जुलस्ताम्रपल्लवः ॥ ४६ ॥
कङ्केलिः पिण्डपुष्पश्च गन्धपुष्पो नटस्तथा ।
अशोकः शीतलस्तिक्तो ग्राही वर्ण्यः कषायकः ॥ ४७ ॥

---

१ दे० भा० मोतियाभेद । मल्लिकासम्भवं पुष्पं तिक्तं जयति मारुतम् । २ दे० भा० माधवी । बं० भा० माधवीलता । इं० क्लिसर्डहिपटेज । ३ दे० भा० केउडा । बं० भा० केयागाछ । फा० करज । केतकी वातला वृष्या तन्द्रानिद्राकरी मता । ४ दे० भा० किकरभेद । बं० भा० देवबावूला । फा० मधिलान । ५ दे० भा० अमलतास ।

दोषापचीतृषादाहकृमिशोथविषास्रजित् ।

१ बाणपुष्पः ।

अम्लातोऽम्लादनः प्रोक्तस्तथाऽम्लातक इत्यपि ॥ ४८ ॥
कुरण्टको बाणपुष्पः सरावोक्ता महासहा ।
अम्लादनः कषायोष्णः स्निग्धः स्वादुश्च तिक्तकः ॥ ४९ ॥

२ सैरेयकः ।

सैरेयकः श्वेतपुष्पः सैरेया कटिसारिका ।
सहचारः सहचरः स च भिन्द्यापि कथ्यते ॥ ५० ॥
कुरण्टकोऽत्र पीतः स्याद्रक्तः कुरबकः स्मृतः ।
नीलो बाणो द्वयोरुक्तो दासी चार्तगलश्च सः ॥ ५१ ॥
सैरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः ।
तिक्तोष्णो मधुरो दन्त्यः सुस्निग्धः केशरञ्जनः ॥ ५२ ॥

कुन्दम् ।

कुन्दं तु कथितं माद्यं सदापुष्पं च तत्स्मृतम् ।
कुन्दं शीतं लघु श्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तहृत् ॥ ५३ ॥

मुचुकुन्दः ।

मुचुकुन्दः क्षत्रवृक्षश्चित्रकः प्रतिविष्णुकः ।
मुचुकुन्दः शिरःपिडापित्तास्रविषनाशनः ॥ ५४ ॥

तिलकः ।

तिलकः क्षुरकः श्रीमान् पुरुषश्छत्रपुष्पकः ।
तिलकः कटुकः पाके रसे चोष्णो रसायनः ॥ ५५ ॥
कफकुष्ठकृमीन् वस्तिमुखदन्तगदान् हरेत् ।

बन्धूकः ।

बन्धूको[1] बन्धुजीवश्च रक्तो माध्याह्निको मतः ॥ ५६ ॥

---

१ रक्ताम्लानो रक्तपुष्पो रामालिङ्गनकामुकः । रांगप्रसवकश्चैव सुभगः शोणझिंटिका॥ २ दे० भा० पीला बांसा । बं० भा० झांटि । कुलझांटि । पीतझांटि । नीलझांटि । लांलझांटि । ३तिलके वृक्षका फूल तिलोंके समान होता है, उसमें गन्ध आती है, फल पीपलके समान मधुर होता है । ४ दे० भा० गुलदुपहरिया । गेजुनिआ । मंचनिआ । बं० भा० बांधुलि-फुलेर गाछ ॥

बन्धूकः कफकृद् ग्राही वातपित्तहरो लघुः ।

१ ओण्ड्रपुष्पम् ।

ओण्ड्रपुष्पं जपा चाथ त्रिसन्ध्या साऽरुणा मता ॥ ५७ ॥
जपा संग्राहिणी केश्या त्रिसन्ध्या कफवातहृत् ।

२ सिंदूरी ।

सिन्दूरी रक्तबीजा च रक्तपुष्पा सुकोमला ॥ ५८ ॥
सिन्दूरी विषपित्तास्रतृष्णावान्तिहरी हिमा ।

३ अगस्त्यः ।

अगस्त्याह्वो वङ्गसेनो मुनिपुष्पो मुनिद्रुमः ॥ ५९ ॥
अगस्त्यः पित्तकफाजिच्चातुर्थिकहरो हिमः ।
रूक्षो वातकरास्तिक्तः प्रतिश्यायनिवारणः ॥ ६० ॥

४ तुलसी शुक्ला कृष्णा च ।

तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमञ्जरी ।
अपेतराक्षसी गौरी शूलघ्नी देवदुन्दुभिः ॥ ६१ ॥
तुलसी कटुका तिक्ता ह्युष्णा दाहपित्तकृत् ।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥ ६२ ॥
शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणैस्तुल्या प्रकीर्तिता ।

५ मरुबकः ।

मारुतको मरुबको मरुन्मरुरपि स्मृतः ॥ ६३ ॥
फणी फणिज्जकश्चापि प्रस्थपुष्पः समीरणः ।
मरुदग्निप्रदो ह्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः ॥ ६४ ॥
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् ।
कटुपाकरसो रुच्यस्तिक्तो रूक्षः सुगन्धिकः ॥ ६५ ॥

---

१ दे० भा० गुडहल, गुलतुररा, ओडहुल । बं० भा० जवाफुलेर गाछ । इं० शुफलावर । २ दे० भा० लटकण, जाफर । इं० आरनाटो Arnato । ३ दे० भा० हथिपा, हदगा । बं० भा० वक । इं० लार्जफ्लावर्डएगेटी । ४ दे० भा० तुलसी । फा० रोहान् । इं० ह्वाईट बेझिल । ५ दे० भा० मरुआ । बं० भा० मरुपा । फा० मर्जगुम् । इं० स्वीट मार्जोरन् Sweet Marjorn.

१ दमनकः ।

उक्तो दमनको दान्तो मुनिपुत्रस्तपोधनः ।
गन्धोत्कटो ब्रह्मजटो विनीतः कुलपुत्रकः ॥ ६६ ॥
दमनस्तुवरस्तिक्तो हृद्यो वृष्यः सुगन्धिकः ।
ग्रहणीविषकुष्ठास्रक्लेदकण्डूत्रिदोषजित् ॥ ६७ ॥

२ वर्वरी ।

वर्वरी कवरी तुङ्गी खरपुष्पाऽजगन्धिका ।
पर्णासस्तत्र कृष्णे तु कठिल्लककुठेरकौ ॥ ६८ ॥
तत्र शुक्लोऽर्जकः[3] प्रोक्तो वटपत्रस्ततोऽपरः ।
वर्वरीत्रितयं रूक्षं शीतं कटु विदाहि च ॥ ६९ ॥
तीक्ष्णं रुचिकरं हृद्यं दीपनं लघुपाकि च ।
पित्तलं कफवातास्रकण्डुक्रिमिविषापहम् ॥ ७० ॥

इति पुष्पवर्गः ।

---

१ दे० भा० दौना । बं० भा० दवना । वनदमनक, अग्निदमनक । इं० वर्मबुड । २ दे० भा० वनतुलसी । इसके बीजको तुखमरेह कहते हैं । बं० भा० बाबुइतुलसी । फा० पलंग-मुष्क । ३ अर्जकः क्षुद्रतुलसी श्वेतः कृष्णः ॥

फलवर्गः ।

१ तत्रादावाम्रस्य नाम गुणाः ।

आम्रश्चूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ।
कामाङ्गो मधुदूतश्च माकन्दः पिकवल्लभः ॥ १ ॥
आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत् ।
असृग्दरहरं शीतं रुचिकृद् ग्राहि वातलम् ॥ २ ॥
आम्रं बालं कषायाम्लं रुच्यं मारुतपित्तकृत् ।
तरुणं तु तदत्यम्लं रूक्षं दोषत्रयास्रकृत् ॥ ३ ॥
आंम्रमामं त्वचाहीनमातपेऽतिविशोषितम् ।
अम्लं स्वादु कषायं स्याद्भेदनं कफवातजित् ॥ ४ ॥
पक्वं तु मधुरं वृष्यं स्निग्धं बलसुखप्रदम् ।
गुरु वातहरं हृद्यं वर्ण्यं शीतमपित्तलम् ॥ ५ ॥
कषायानुरसं वह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् ।
तदेव वृक्षसंपक्वं गुरु वातहरं परम् ॥ ६ ॥
मधुराम्लरसं किंचिद्भवेत्तत्पित्तनाशनम् ।
आम्रं कृत्रिमपक्वं चेत्तद्भवेत्पित्तनाशनम् ॥ ७ ॥
रसस्याम्लस्य हानेस्तु माधुर्य्याच्च विशेषतः ।
चूषितं तत्परं रुच्यं बल्यं वीर्य्यकरं लघु ॥ ८ ॥
शीतलं शीघ्रपाकि स्याद्वातपित्तहरं सरम् ।
तद्रसो[3] गालितो बल्यो गुरुर्वातहरः सरः ॥ ९ ॥
अहृद्यस्तर्पणोऽतीव बृंहणः कफवर्द्धनः ।
तस्य खंण्डं[4] गुरु परं रोचनं चिरपाकि च ॥ १० ॥

---

१ दे० भा० आम । फा० आंबा, इं० मेंगोट्री Mango tree. । २ दे० भा० अमचूरा । ३ दे० भा० अम्बरस । स यै दुग्धेन संयुक्तः कान्तिदः स्वादुदः स्मृतः । वृष्यश्चान्ये गुणाश्चोक्ता रसेन सदृशः स्मृतः ॥ उत्तमानि फलानि--दाडिमामलकं द्राक्षा खर्ज्जूरं सपरूषकम् । राजादनं मातुलुंगं फलवर्गे प्रशस्यते ॥ ४ मुरब्बा ॥

मधुरं बृंहणं बल्यं शीतलं वातनाशनम् ।
वातपित्तहरं रुच्यं बृंहणं बलवर्द्धनम् ॥ ११ ॥
वृष्यं वर्णकरं स्वादु दुग्धाम्रं गुरु शीतलम् ॥ १२ ॥
मन्दानलत्वं विषमज्वरं च
रक्तामयं बद्धगुदोदरं च ।
आम्रातियोगो नयनामयं च
करोति तस्मादति तानि नाद्यात् ॥ १३ ॥
एतदम्लाम्रविषयं मधुराम्रपरं नतु ।
मधुरस्य परं नेत्रहितत्वाद्या गुणा यतः ॥ १४ ॥
शुंठ्यंभसोऽनुपानं स्यादाम्राणामतिभक्षणे ।
जीरकं वा प्रयोक्तव्यं सह सौवर्चलेन च ॥ १५ ॥

१ अथाम्रावर्तस्य लक्षणं गुणाश्च ।

पक्वस्य सहकारस्य पटे विस्तारितो रसः ।
घर्मशुष्को मुहुर्दत्तं आम्रावर्त इति स्मृतः ॥ १६ ॥
आम्रावर्तस्तृषाछर्दिवातापित्तहरः सरः ।
रुच्यः सूर्य्यांशुभिः पाकाल्लघुश्च स हि कीर्तितः ॥ १७ ॥

आम्रबीजम् ।

आम्रबीजं कषायं स्याच्छर्द्यतीसारनाशनम् ।
ईषदम्लं च मधुरं तथा हृदयदाहनुत् ॥ १८ ॥

नवपल्लवम् ।

आम्रस्य पल्लवं रुच्यं कफपित्तविनाशनम् ।

२ आम्रातम् ।

आम्रातकः पीतनश्च मर्कटाम्रः कपीतनः ॥ १९ ॥
आम्रातमम्लं वातघ्नं गुरूष्णं रुचिकृत्सरम् ।

---

१ दे० भा० आंवट । आम्रतैल । आम्रतैलं तु तुवरं स्वादु रूक्षं च तिक्तकम् । सुगन्धि मुखरोगस्य नाशनं कफवातनुत् ॥ २ दे० भा० अमरा अम्बडा । बं० भा० आमडा । इं० स्योन्डि आसमिनट् । मज्जा--स्वादुपाकोऽग्निबलकृत्स्निग्धः पित्तानिलापहः ॥

पक्कं तु तुवरं स्वादु रसे पाके हिमं स्मृतम् ॥ २० ॥
तर्पणं श्लेष्मलं स्निग्धं वृष्यं विष्टम्भि बृंहणम् ।
गुरु बल्यं मरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥ २१ ॥

राजाम्रम् ।

राजाम्रष्टङ्क आम्रातः कामाह्वो राजपुत्रकः ।
राजाम्रं तुवरं स्वादु विशदं शीतलं गुरु ॥ २२ ॥
ग्राहि रूक्षं विबन्धाध्मवातकृत्कफपित्तनुत् ।

१ कोशाम्रम् ।

कोशाम्र उक्तः क्षुद्राम्रः कृमिवृक्षः सुकोशकः ॥ २३ ॥
कोशाम्रः कुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ।
तत्फलं ग्राहि वातघ्नमम्लोष्णं गुरु पित्तलम् ॥ २४ ॥
पक्कं तु दीपनं रुच्यं लघूष्णं कफवातनुत् ।

२ पनसः ।

पनसः कण्टकिफलः पनसोऽतिबृहत्फलः ॥ २५ ॥
पनसं शीतलं पक्कं स्निग्धं पित्तानिलापहम् ।
तर्पणं बृंहणं स्वादु मांसलं श्लेष्मलं भृशम् ॥ २६ ॥
बल्यं शुक्रप्रदं हन्ति रक्तपित्तक्षतव्रणान् ।
आमं तदेव विष्टम्भि वातलं तुवरं गुरु ॥ २७ ॥
दाहहृन्मधुरं बल्यं कफमेदोविवर्द्धनम् ।

३ लकुचम् ।

लकुचः क्षुद्रपनसो लिकुचो डहुरित्यपि ॥ २८ ॥
आमं लकुचमुष्णं च गुरु विष्टम्भकृत्तथा ।
मधुरं च तथाऽम्लं च दोषत्रितयरक्तकृत् ॥ २९ ॥

---

१ दे० भा० कोशाम । बं० भा० केओडा । जलपाई । २ दे० भा० कटहल, कटहड । ० भा० कांटाला । पनसबीज–पनसोद्भूतबीजानि वृष्याणि मधुराणि च । गुरूणि बद्धविट्कानि सृष्टमूत्राणिं संवदेत् ॥ मज्जा पनसजा वृष्या वातपित्तकफापहा । विशेषात्पनसं बर्ज्यं गुल्मिभिर्मंदवह्निभिः ॥ ३ दे० भा० बडहल । ब० भा० डेओ, मादार । प० भा० ढऊ ॥

शुक्राग्निनाशनं वापि नेत्रयोरहितं स्मृतम् ।
सुपक्वं तत्तु मधुरमम्लं चानिलपित्तहृत् ॥ ३० ॥
कफवह्निकरं रुच्यं वृष्यं विष्टम्भकं च तत् ।

१ मोचाफलम् ।

कदली वारणबुसा रम्भा मोचांशुमत्फला ॥ ३१ ॥
मोचाफलं स्वादु शीतं विष्टम्भि कफनुद् गुरु ।
स्निग्धं पित्तास्रतृड्दाहक्षतक्षयसमीरजित् ॥ ३२ ॥
पक्वं स्वादु हिमं पाके स्वादु वृष्यं च बृंहणम् ।
क्षुत्तृष्णानेत्रगदहृन्मेहघ्नं रुचिमांसकृत् ॥ ३३ ॥
माणिक्यमर्त्यामृतचम्पकाद्या
भेदाः कदल्या बहवोऽपि सन्ति ।
उक्ता गुणास्तेष्वधिका भवन्ति
निर्दोषता स्याल्लघुता च तेषाम् ॥ ३४ ॥

२ चिर्भटम् ।

चिर्भटं धेनुदुग्धं च तथा गोरक्षकर्कटी ।
चिर्भटं मधुरं रूक्षं गुरु पित्तकफापहम् ॥ ३५ ॥
अनुष्णं ग्राहि विष्टम्भि बालं चानिलकोपनम् ।
कफपित्तकरं स्यन्दि पक्वं तूष्णं च पित्तलम् ॥ ३६ ॥

३ नारिकेलम् ।

नारिकेलो दृढफलो लाङ्गली कूर्चशीर्षकः ।
तुङ्गः कन्धफलश्चोच्चस्तृणराजः सदाफलः ॥ ३७ ॥

---

१ दे० भा० केला । बं० भा० कला । फा० मावजू बोझ । इं० प्लेटेन Plontain.
२ दे० भा० चिब्भड, कचरी सेन्ध, फूट, गोरखककडी । बं भा० काकुड, मोमुक फुटी । इं० पुविसेंटक्योंकम्बर । चिर्भटपुष्पम्-पुष्पं च चिर्भटं चैव दोषत्रयकरं स्मृतम् । अपक्वं जीर्णकफकृत्पक्वं किंचिद्विशिष्यते ॥ ३ दे० भा० नारियल, नरेल । बं० भा० नारकोल । फा० जोज । हिन्दी-नारियल । इं० कोकोनट् पाल्म । Coconut Palm. मृगाक्षीगुणाः--मृगाक्षी कटुका तिक्ता पाकेऽम्ला वातनाशिनी । पित्तकृत्पीनसहरा दीपनी रुचिकृत्परा ॥

नारिकेलफलं शीतं दुर्जरं वस्तिशोधनम् ।
विष्टम्भि बृंहणं बल्यं वातपित्तास्रदाहनुत् ॥ ३८ ॥
विशेषतः कोमलनारिकेलं निहन्ति पित्तज्वरपित्तदोषान् ।
तदेव जीर्णं गुरु पित्तकारि विदाहि विष्टम्भि मतं भिषग्भिः ३९
तस्याम्भः शीतलं हृद्यं दीपनं शुक्रलं लघु ।
पिपासापित्तजित्स्वादु वस्तिशुद्धिकरं परम् ॥ ४० ॥
नारिकेलस्य तालस्य खर्जूरस्य शिरांसि च ।
कषायस्निग्धमधुरबृंहणानि गुरूणि च ॥ ४१ ॥

२ कालिन्दम् ।

कालिन्दं कृष्णबीजं स्यात्कालिङ्गश्च सुवर्तुलम् ।
कलिन्दं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रहच्छीतलं गुरु ॥ ४२ ॥
पक्वन्तु सोष्णं सक्षारं पित्तलं कफवातजित् ।

३ दशांगुलम् ।

दशाङ्गुलं तु खर्बूजं कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥ ४३ ॥
खर्बूजं मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु ।
स्निग्धं स्वादुतरं शीतं वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥ ४४ ॥
तेषु यच्चाम्लमधुरं सक्षारं च रसाद्भवेत् ।
रक्तपित्तकरं तत्तु मूत्रकृच्छ्रहरं परम् ॥ ४५ ॥

४ त्रपुसम् ।

त्रपुसं कण्टकिफलं सुधावासः सुशीतलम् ।
त्रपुसं लघु शीतं च नवं तृट्क्रमदाहजित् ॥ ४६ ॥
स्वादु पित्तापहं शीतं तिक्तं कृच्छ्रहरं परम् ।

---

१ शिरांसि—वृन्तानि । नारिकेलपुष्पम्—नारिकेलस्य पुष्पं तु शीतं रक्तातिसारहृत् । रक्तपित्तप्रमेहं च सोमरोगं च नाशयेत् । मलस्तम्भकरं चापि प्रोक्तं पूर्वमनीषिभिः ॥ २ दे० भा० तरबूज । वं० भा० तरबूजा । चेलना । फा० हदवाना । इं० वाटरमेलन् । Water melon । ३ दे० भा० खरबूजा । वं भा० खरमुजा, खरबुजा । फा० खरबुजा । इं० मेलन् Melon । ४ दे० भा० खीरा, बं० भा० शंशा । फा० शियारखुर्द । इं० कुकंबर Kukomper. ।

तत्पक्वमम्लमुष्णं स्यात्पित्तलं कफवातनुत् ॥ ४७ ॥
तद्बीजं मूत्रलं शीतं रूक्षं पित्तास्रकृच्छ्रजित् ।

१ क्रमुकम् ।

घोण्टा पूगी च पूगश्च गुवाकः क्रमुकस्य तु ॥ ४८ ॥
फलं पूगीफलं प्रोक्तमुद्वेगं च तदीरितम् ।
पूगं गुरु हिमं रूक्षं कषायं कफपित्तजित् ॥ ४९ ॥
मेहनं दीपनं रुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ।
आर्द्रं तद्गुर्वभिष्यंदि वह्निदृष्टिहरं स्मृतम् ॥ ५० ॥
स्विन्नं दोषत्रयच्छेदि दृढमध्यं तदुत्तमम् ।

२ तालम् ।

तालस्तु लेखपत्रः स्यात्तृणराजो महोन्नतः ॥ ५१ ॥
पक्वन्तालफलं पित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ।
दुर्जरं बहुमूत्रं च तन्द्राभिष्यन्दशुक्रदम् ॥ ५२ ॥
तालमज्जा तु तरुणः किंचिन्मदकरो लघुः ।
श्लेष्मलो वातपित्तघ्नः सस्नेहो मधुरः सरः ॥ ५३ ॥

ताडी ।

तालजं तरुणं तोयमतीव मदकृन्मतम् ।
अम्लीभूतं यदा तु स्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ॥ ५४ ॥

३ शालफलम् ।

शालं फलं रूक्षशीतं मधुरं स्तंभनं गुरु ।
कषायं लेखनं स्तन्यवाताध्मानविबन्धकृत् ॥ ५५ ॥
पित्तदाहतृषाकासक्षतक्षयविषास्रनुत् ।

---

१ दे० भा० सुपारी । बं० भा० शुपारी, फा० पोपिल । इं० बिटल नट्पाम-Bitelnut palm । पूगवृक्षस्य निर्यासो मेहनः शीतलो गुरुः । पाके चोष्णः पित्तलश्च कटुश्चाम्लः प्रकीर्तितः ॥ वातनाशकरश्चैव मुनिभिः परिकीर्तितः । २ दे० भा० ताड, तद्भेद हिंताल । बं० भा० श्रीताल, हिंताल । फा० तालु । इं० पामीपाम-Palmy Palm. ३ दे० भा० साल, सखया । बं० भा० शालगाछ, लताशाल । इं० सालट्री Saltree.

१ बिल्वः ।

बिल्वः शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ॥ ५६ ॥
बालं बिल्वफलं बिल्वकर्कटी बिल्वपेशिका ।
ग्राहणी कफवातामशूलघ्नी बिल्वपेशिका ॥ ५७ ॥
बालं बिल्वफलं ग्राहि दीपनं पाचनं कटु ।
कषायोष्णं लघु स्निग्धं तिक्तं वातकफापहम् ॥ ५८ ॥
पक्वं गुरु त्रिदोषं स्यादुर्जरं पूतिमारुतम् ।
विदाहि विष्टंभकरं मधुरं वह्निमांद्यकृत् ॥ ५९ ॥

२ कपित्थम् ।

कपित्थस्तु दधित्थः स्यात्तथा पुष्पफलः स्मृतः ।
कपिप्रियो दधिफलस्तथा दन्तशठोऽपि च ॥ ६० ॥
कपित्थमामं संग्राहि कषायं लेखनं लघु ।
पक्वं गुरु तृषाहिक्काशमनं वातपित्तजित् ॥ ६१ ॥
स्वाद्वम्लं तुवरं कण्ठशोधनं ग्राहि दुर्जरम् ।

३ नारङ्गम् ।

नारङ्गो नागरङ्गः स्यात्त्वक्सुगन्धो मुखप्रियः ॥ ६२ ॥
नारङ्गं मधुराम्लं स्याद्रोचनं वातनाशनम् ।
अपरं त्वम्लमत्युष्णं दुर्जरं वातहत्सरम् ॥ ६३ ॥

४ तिंदुकम् ।

तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारकः ।
स्यादामं तिन्दुकं ग्राहि वातलं शीतलं लघु ॥ ६४ ॥
पक्वं पित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नं मधुरं गुरु ।

---

१ दे० भा० बिल, (Bill) बं० भा० बेल, बिल्व । इं० बेगालंकिन्स । Begalam kinc । तत्पत्रं कफवातामशूलघ्नं ग्राहि रोचनम् । निहन्याद्बिल्वजं पुष्पमतीसारं तृषां वमिम् ॥ २ दे० भा० कैथ । बं० भा० कपेद्राछ । इं० वुडण्यल । एडिफण्टयल । ३ दे० भा० नारङ्गी । बं० भा० नारङ्गालेबु । फा० नारज । इं० औरेंज Orange । ४ तेंदु । बं०फा० गाव तेंद । दे० भा० अनुबस । इं० एबनी Ebony ॥

१ कुपीलुः ।

तिन्दुकः कथितो यस्तु जलजो दीर्घपत्रकः ॥ ६५ ॥
कुपीलुः कुलकः काकतिंदुकः कालपीलुकः ।
काकेन्दुर्विषतिन्दुश्च तथा मर्कटतिन्दुकः ॥ ६६ ॥
कुपीलु शीतलं तिक्तं वातलं मदकृल्लघु ।
पादन्यथाहरं ग्राहि कफपित्तविनाशनम् ॥ ६७ ॥

२ फलेन्द्रः ।

फलेन्द्रः कथिता नन्दी राजजम्बूर्महाफला ।
तथा सुरभिपत्रा च महाजम्बूरपि स्मृता ॥ ६८ ॥
राजजम्बूफलं स्वादु विष्टम्भि गुरु रोचनम् ।
क्षुद्रजम्बूः सूक्ष्मपत्रो नादेयी जलजम्बुकः ॥ ६९ ॥
जम्बूः संग्राहणी रूक्षा कफपित्तास्रदाहजित् ।

३ बदरम् ।

पुंसि स्त्रियां च कर्कन्धूर्बदरी कोलमित्यपि ॥ ७० ॥
फेनिलं कुवलं घोण्टा सौवीरं बदरं महत् ।
अजाप्रियः कुहाकोलिर्विषमो भयकण्टकः ॥ ७१ ॥

बदरविशेषाणां लक्षणं गुणाश्च ।

पच्यमानन्तु मधुरं सौवीरं बदरं महत् ।
सौवीरं बदरं शीतं भेदनं गुरु शुक्रलम् ॥ ७२ ॥
बृंहणं पित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवारणम् ।
सौवीरं लघु सम्पक्वं मधुरं कोलमुच्यते ॥ ७३ ॥

---

१ दे० भा० काकतेंदु । अस्य फलं कुचला इति लोके । वं० भा० माकडा गाछ । दे० भा० कुचले । बं० भा० कुचले । फा० इफाराकी । इं० पाईचन नट ॥ कुचलाशुद्धिः-रसरत्नप्रदीपे-त्रिदिनं कांजिके क्षिप्तः शुद्धः स्याद्विषतिंदुकः । वृद्धयोगतरंगिण्याम्-किञ्चिदाज्येन भृष्टो वै विषमुष्टिर्विशुध्यति ॥ २ दे० भा० बडी जामुन, छोटी जामुन । बं० भा० जामगाछ । इं० भा० जम्बूट्री । Jambotree. ३ दे० भा० बेर बडा, छोटा । कर्कधु, कोकनबैर, झाडी बेर । वं० भा० क्षुलगाछ । फा० कुनार, सोबीरं--उनाब । इं० जुजब, Joiab.

कोलं तु बदरं प्राहि रुच्यमुष्णं च वातलम् ।
कफपित्तकरं चापि गुरु सारकमीरितम् ॥ ७४ ॥
कर्कन्धुः क्षुद्रबदरं कथितं पूर्वसूरिभिः ।
अम्लं स्यात्क्षुद्रबदरं कषायं मधुरं मनाक् ॥ ७५ ॥
स्निग्धं गुरु च तिक्तं च वातपित्तापहं स्मृतम् ।
शुष्कं भेद्यग्निकृत्सर्वं लघु तृष्णाक्लमास्रजित् ॥ ७६ ॥

१ प्राचीनामलकम् ।

प्राचीनामलकं लोके पानीयामलकं स्मृतम् ।
प्राचीनामलकं दोषत्रयजिज्ज्वरघाति च ॥ ७७ ॥

२ लवली ।

सुगन्धमूला लवली पाण्डुकोमलवल्कला ।
लवलीफलमश्मार्शःकफपित्तहरं गुरु ॥ ७८ ॥
विशदं रोचनं रूक्षं स्वाद्वम्लं तुवरं रसे ।

३ करमर्दः करमर्दिका ।

करमर्दः सुषेणः स्यात्कृष्णपाकफलस्तथा ॥ ७९ ॥
तस्माल्लघुफला या तु सा ज्ञेया करमर्दिका ।
करमर्दद्वयं त्वाममम्लं गुरु तृषापहम् ॥ ८० ॥
उष्णं रुचिकरं प्रोक्तं रक्तपित्तकफप्रदम् ।
तत्पक्वं मधुरं रुच्यं लघु पित्तसमीरजित् ॥ ८१ ॥

४ प्रियालम् ।

प्रियालस्तु खरस्कन्धश्चारो बहुलवल्कलः ।

---

१ दे० भा० पानी आमला । बं० भा० पानी अम्बराला । इं० फ्ला कुर्र्याकाटा प्राव्टा । २ दे० भा० हरफारेवडी । बं० भा० नोपड,नोपाल। बदरीफलमज्जा-बदरीफलमज्जा तु तुवरा मधुरा मता । शुक्रदा बलदा वृष्या कासश्वासतृषापहा । वातघ्नी छर्दिदाहघ्नी पित्तहा मुनिभिर्मता ॥ पत्रगुणाः—बदरस्य पत्रलेपो ज्वरदाहविनाशनः । त्वचा विस्फोटशमनी बीजं नेत्रामयापहम् । ३ दे० भा० करोंदा, करोंदी । बं० भा० करमुचा । पं० भा० गरना, गरनी, इं० जास्मिन् फ्लाबर्डकेरिसा । ४ दे० भा० चिरौंजी, चिरोली । बं० भा० पियाला । फा० बुकलेखाजा ।

राजादनं तापसेष्टः सन्नकद्रुर्धनुःपटः ॥ ८२ ॥
चारस्तु पित्तकासघ्नस्तत्फलं मधुरं गुरु ।
स्निग्धं सरं मरुत्पित्तदाहज्वरतृषापहम् ॥ ८३ ॥
प्रियालमज्जा मधुरा वृष्या पित्तानलापहा ।
हृद्योऽतिदुर्जरः स्निग्धो विष्टम्भी चामवर्द्धनः ॥ ८४ ॥

१ राजादनः ।

राजादनः फलाध्यक्षो राजन्या क्षीरिकापि च ।
क्षीरिकायाः फलं वृष्यं बल्यं स्निग्धं हिमं गुरु ॥ ८५ ॥
तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् ।

२ विकंकतम् ।

विकंकतः स्नुवावृक्षो ग्रन्थिलः स्वादुकण्टकः ॥ ८६ ॥
स एव यज्ञवृक्षश्च कण्टकी व्याघ्रपादपि ।
विकंकतफलं पक्वं मधुरं सर्वदोषजित् ॥ ८७ ॥

३ पद्मबीजम् ।

पद्मबीजं तु पद्माक्षं गालोड्यं पद्मकर्कटी ।
पद्मबीजं हिमं स्वादु कषायं तिक्तकं गुरु ॥ ८८ ॥
विष्टम्भि वृष्यं रूक्षं च गर्भस्थापनकं परम् ।
कफवातहरं बल्यं ग्राहि पित्तास्रदाहनुत् ॥ ८९ ॥

४ मखान्नम् ।

मखान्नं पद्मबीजाभं पानीयफलमित्यपि ।
मखान्नं पद्मबीजस्य गुणैस्तुल्यं विनिर्दिशेत् ॥ ९० ॥

५ शृङ्गाटकम् ।

शृङ्गाटकं जलफलं त्रिकोणफलमित्यपि ।
शृङ्गाटकं हिमं स्वादु गुरु वृष्यं कषायकम् ॥ ९१ ॥
ग्राहि शुक्रानिलश्लेष्मप्रदं दाहास्रपित्तनुत् ।

---

१ दे० भा० खिरनी, खिन्नी । बं० भा० रांजणी । इं० ओवटयुस् लीव्डमाईमुसौप्स । २ दे० भा० कुकोया, कंटाई बंज, किंकिणी । बं० भा० वंइचगाछ । ३ दे० भा० कमलगटा, पद्मबीज । बं० भा० पद्मबीचि । ४ दे० भा० मखाना । फूल मखाना । बं० भा० मखाना । ५ दे० भा० सिंघाडा । बं० भा० पाणिफल । फा० सुरंजान । इं० वाटर केलट्राप । Water Kealtarp.

१ कुमुदबीजम् ।

उक्तं कुमुदबीजं तु बुधैः कैरविणीफलम् ॥ ९२ ॥
भवेत्कुमुद्वतीबीजं स्वादु रूक्षं हिमं गुरु ।

२ मधूकं, जलमधूकम् ।

मधूको गुडपुष्पः स्यान्मधुपुष्पो मधुस्रवः ॥ ९३ ॥
वानप्रस्थो मधुष्ठीलो जलजोऽत्र मधूलकः ।
मधूकपुष्पं मधुरं शीतलं गुरु बृंहणम् ॥ ९४ ॥
बलशुक्रकरं प्रोक्तं वातपित्तविनाशनम् ।
फलं शीतं गुरु स्वादु शुक्रलं वातपित्तनुत् ॥ ९५ ॥
अह्द्यं हन्ति तृष्णास्रदाहश्वासक्षतक्षयान् ।

पालेवतम् ।

पालेवतांसतं पुष्पैस्तिन्दुकाभं फलं मतम् ॥ ९६ ॥
अन्यन्माणवकं ज्ञेयं महापालेवतं तथा ।
स्वाद्वम्लं शीतमुष्णं च द्विधा पालेवतं गुरु ॥ ९७ ॥
यत् स्वादु मधुरं शीतं यदम्लं च तदुष्णकम् ।
(उभयमपि गुरु इति हेमाद्रिः) ।

३ परूषकम् ।

परूषकं परुषकमल्पास्थि च परापरम् ॥ ९८ ॥
परूषकं कषायाम्लमामं पित्तकरं लघु ।
तत्पक्वं मधुरं पाके शीतं विष्टम्भि बृंहणम् ॥ ९९ ॥
हृद्यं तु पित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरजित् ।

---

१ नीलोफर । २ दे० भा० महुआ, जलमहुआ । बं० भा० मौल मोया । फा० चकां । इं० इलूपाट्री Eloyap tree । ३ दे० भा० फालसा । बं० भा० फलसा । फा० पालसा । इ० एश्याटिक ग्रेविया । मधूकस्य तैलम्-मधूकतैलं मधुरं पिच्छिलं तुवरं मतम् । कफपित्तज्वरं चैव दाहपित्तं च नाशयेत् । अस्य त्वचा–परूष(क) त्वक् प्रमेहघ्नी योनिमेढ्रप्रदाहनुत् । मूत्रदोषप्रशमनी शीतापित्तानिलापहा ॥

१ तूतम् ।

तूदस्तूतं च यूपश्च क्रमुको ब्रह्मदारु च ॥ १०० ॥
तूतं पक्कं गुरु स्वादु हिमं पित्तानिलापहम् ।
तदेवामं गुरु सरमम्लोष्णं रक्तपित्तकृत् ॥ १०१ ॥

२ दाडिमम् ।

दाडिमः करको दन्तबीजो लोहितपुष्पकः ।
तत्फलं त्रिविधं स्वादु स्वाद्वम्लं केवलाम्लकम् ॥ १०२ ॥
तत्तु स्वादु त्रिदोषघ्नं तृड्दाहज्वरनाशनम् ।
हृत्कण्ठमुखरोगघ्नं तर्पणं शुक्रलं लघु ॥ १०३ ॥
कषायानुरसं ग्राहि स्निग्धं मेधाबलावहम् ।
स्वाद्वम्लं दीपनं रुच्यं किञ्चित्पित्तकरं लघु ॥ १०४ ॥
अम्लं तु पित्तजनकमामवातकफापहम् ।

३ बहुवारः ।

बहुवारस्तु शीतः स्यादुदालो बहुवारकः ॥ १०५ ॥
शेलुः श्लेष्मातकश्चापि पिच्छिलो भूतवृक्षकः ।
बहुवारो विषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ १०६ ॥
मधुरस्तुवरस्तिक्तः केश्यश्च कफपित्तहृत् ।
फलमामं तु विष्टम्भि रूक्षं पित्तकफास्रजित् ॥ १०७ ॥
तत्पक्कं मधुरं स्निग्धं श्लेष्मलं शीतलं गुरु ।

४ कतकम् ।

पयःप्रसादि कतकं कतकं तत्फलं च तत् ॥ १०८ ॥

---

१ दे० भा० शहतूत । बं० भा० तूत, पलाशपिपुल । फा० शहतूत, तुत तुर्श । इं० मल-बेरिज Mulberies. । २ दे० भा० अनार । बं० भा० डालिम । फा० अनार तुरिश, अनारशीरी । इं० पोंग्रानेट Pomgra nut. । अस्य पुष्पम्--तत्पुष्पं च पुनर्ज्ञेयं नासास्रग्गतिनावनात् । दाडिमत्वक् कृमिघ्ना च ग्राहिरक्तातिसारहा । ३ दे० भा० लिसूडा, लिसोडा । बं० भा० बहुपार, चालतागछ । फा० सिपिस्तान । इं० नेरो लिव्ड सेपिस्टन । Narrow leaved sepistun. । ४ दे० भा० निर्मली । बं० भा० निर्मलफल । इं० आनट्विच क्लिअर्स वाटर Ant which clears water-

कतकस्य फलं नेत्र्यं जलनिर्मलताकरम् ।
वातश्लेष्महरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ १०९ ॥

१ द्राक्षा ।

द्राक्षा स्वादुफला प्रोक्ता तथा मधुरसापि च ।
मृद्वीका हारहूरा च गोस्तनी चापि कीर्तिता ॥ ११० ॥
द्राक्षा पक्वा सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः ।
स्वादुपाकरसा स्वर्य्या तुवरा सृष्टमूत्रविट् ॥ १११ ॥
कोष्ठमारुतहृद् वृष्या कफपुष्टिरुचिप्रदा ।
हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवातवातास्रकामलाः ॥ ११२ ॥
कृच्छ्रास्रपित्तसम्मोहदाहशोषमदात्ययान् ।
आमा स्वल्पगुरुर्गुर्वी सैवाम्ला रक्तपित्तकृत् ॥ ११३ ॥
वृष्या स्याद् गोस्तनी द्राक्षा गुर्वी च कफपित्तनुत् ।
अबीजाऽन्या स्वल्पतरा गोस्तनीसदृशा गुणैः ॥ ११४ ॥
द्राक्षा पर्वतजा लघ्वी साऽम्ला श्लेष्माम्लपित्तकृत् ।
द्राक्षा पर्वतजा यादृक् तादृशी करमर्दिका ॥ ११५ ॥

२ क्षुद्रखर्जूरं, पिण्डखर्जूरं च ।

भूमिखर्जूरिका स्वाद्वी दुरारोहा मृदुच्छदा ।
तथा स्कन्धफला काककर्कटी स्वादुमस्तका ॥ ११६ ॥
पिण्डखर्जूरिका त्वन्या सा देशे पश्चिमे भवेत् ।
खर्जूरी गोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता ॥ ११७ ॥
जायते पश्चिमे देशे सा छोहारेति कीर्तिता ।
खर्जूरीत्रितयं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥ ११८ ॥
स्निग्धं रुचिकरं हृद्यं क्षतक्षयहरं गुरु ।
तर्पणं रक्तपित्तघ्नं पुष्टिविष्टम्भशुक्रदम् ॥ ११९ ॥

---

१ दे० भा० दाख, किसमिस, मुनक्का । बं०भा० किसमिस, बं० मनेका । फा० अंगूर, मुनक्का । इं० ग्रेपरोंझिस Grape roisins. । २ दे० भा० खजूर, पिण्डखजूर, छुहारे । बं० भा० खेजूर, पिंडखेजूर, छोहारे । फा० तमरहुतक । इं० डेट् पाम Date Palm. खजूरी ताडी–खर्जूरितरुतोयमित्यादि ॥

कोष्ठमारुतहृद्बल्यं वांतिवातकफापहम् ।
ज्वरातिसारक्षुत्तृष्णाकासश्वासनिवारकम् ॥ १२० ॥
मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूतगदान्त्यकृत् ।
महतीभ्यां गुणैरल्पा स्वल्पा खर्जूरिका स्मृता ॥ १२१ ॥
खर्जूरितरुतोयं तु मदपित्तकरं भवेत् ।
वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनं बलशुक्रकृत् ॥ १२२ ॥

पिण्डखर्जूरभेदः । सुलेमानी ।

सुलेमानी तु मृदुला दलहीनफला च सा ।
सुलेमानी श्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तहृत् ॥ १२३ ॥

१ वातादः ।

वातादो वातवैरी स्यान्नेत्रोपमफलस्तथा ।
वातादः उष्णः सुस्निग्धो वातघ्नः शुक्रकृद्गुरुः ॥ १२४ ॥
वातादमज्जा मधुरो वृष्यः पित्तानिलापहः ।
स्निग्धोष्णः कफकृन्नेष्टो रक्तपित्तविकारिणाम् ॥ १२५ ॥

२ सेवम् ।

मुष्टिप्रमाणं बदरं सेवं शिम्बितिकाफलम् ।
सेवं समीरपित्तघ्नं बृंहणं कफकृद् गुरु ॥ १२६ ॥
रसे पाके च मधुरं शिशिरं रुचिशुक्रकृत् ।

३ अमृतफलम् ।

अमृतफलं लघु वृष्यं सुस्वादु त्रीन् हरेद्दोषान् ॥ १२७ ॥
देशेषु मुद्गलानां बहुलं तल्लभ्यते लोकैः ।

---

१ दे० भा० बादाम कडवे, बादाम मीठे । बं० भा० वादाम । फा० बादाम, शीरीं बादाम तलख । इं० स्वीट अल्मण्ड Sweet almond, बातादतैलं मृदु रेचनं स्याद्वाजीकरं मूर्द्धगदं प्रहन्यात् । पित्तानिलघ्नं लघु दाहनाशि लावण्यदं मेहकरं सुशीतम् ॥ इति आत्रेयसंहिता । २ दे० भा० सेब । बं० सेउ । फा० सेब । इं० एपल Apple. । ३ दे० भा० नासपाती, नाख । गर्भदोषहरं स्त्रीणां मृतवत्सत्वनाशनम् । गर्भस्रावं गर्भपातं नाशयेन्नियतं त्विदम् ॥

१ पीलुः।

पीलुर्गुडफलः स्रंसी तथा शीतफलोऽपि च॥ १२८॥
पीलु श्लेष्मसमीरघ्नं पित्तलं भेदि गुल्मनुत्।
स्वादु तिक्तं च यत्पीलु तन्नात्युष्णं त्रिदोषहृत्॥ १२९॥

२ अक्षोटः।

पीलुः शैलभवोऽक्षोटः कन्दरालश्च कीर्तितः।
अक्षोटकोऽपि वातादसदृशः कफपित्तकृत्॥ १३०॥

३ बीजपूरम्।

बीजपूरो मातुलुंगो रुचकः फलपूरकः।
बीजपूरफलं स्वादु रसेऽम्लं दीपनं लघु॥ १३१॥
रक्तपित्तहरं कण्ठजिह्वाहृदयशोधनम्।
श्वासकासारुचिहरं हृद्यं तृष्णाहरं स्मृतम्॥ १३२॥

४ बीजपूरभेदः।

बीजपूरोऽपरः प्रोक्तो मधुरो मधुकर्कटी।
मधुकर्कटिका स्वाद्वी रोचनी शीतला गुरुः॥ १३३॥
रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा।

५ जम्बीरद्वयम्।

स्याज्जम्बीरो दन्तशठो जम्भजम्भीरजम्भलाः॥ १३४॥
जम्बीरमुष्णं गुर्वम्लं वातश्लेष्मविबन्धनुत्।
शूलकासकफोत्क्लेशच्छर्दितृष्णामदोषजित्॥ १३५॥

---

१ दे० भा० पीलु, बडी पीलु। बं० पीलुगाछ। फा० दर्खते मिस्वाक। इं० मस्टर्डट्री आफ स्क्रीपचर Mustardtree of scripture.। २ दे० भा० अखरोट। बं० भा० आकोट। फा० चार्तगज। इं० बालनट Walnut.। ३ दे०भा० किंबे, बिजौरानींबू। बं० भा० टावालेबु, तुरंज इं० साईट्रस Sitres.। ४ दे० भा० चकोतरा। ५ दे० भा० खट्टा खट्टी जम्भीरी। बं० भा० कागजी लेबु, जामीरीलेबु। फा० लिमुने तुर्श, लिमुने शीरी। इं० लेमन्स Lemons.। निम्बुकं क्रिमिसमूहनाशनं तीक्ष्णमम्लमुदरग्रहापहम्। वातपित्तकफशूलिने हितं कष्टनष्टरुचिरोचनं परम्॥ त्रिदोषवह्निक्षयवायुरोगनिपीडितानां विषविह्वलानाम्। मलग्रहे बद्धगुदे प्रदेयं विसूचिकायां मुनयो वदन्ति॥

आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमांद्यकृमीन्हरेत् ।
स्वल्पजम्बीरिका तद्वत्तृष्णाछर्दिनिवारणी ॥ १३६ ॥

निम्बूकम् ।

निम्बूः स्त्री निम्बुकं क्लीबे निम्पाकमपि कीर्तितम् ।
निम्बूकमम्लं वातघ्नं दीपनं पाचनं लघु ॥ १३७ ॥

मिष्टनिम्बूकम् ।

मिष्टनिम्बूफलं स्वादु गुरु मारुतपित्तनुत् ।
गलरोगविषध्वंसि कफोत्क्लेशि च रक्तहृत् ॥ १३८ ॥
शोषारुचितृषाच्छर्दिहरं बल्यं च बृंहणम् ।

१ कर्मरंगम् ।

कर्मरङ्गं हिमं ग्राहि स्वाद्वम्लं कफवातहृत् ॥ १३९ ॥

२ अम्लिका ।

अम्लिका चुक्रिकाऽम्ली च चुक्रा दन्तशठापि च ।
अम्ला च चिंचिका चिञ्चा तिन्तिडीका च तिन्तिडी॥४०॥
अम्लिकाऽम्ला गुरुर्वातहरी पित्तकफास्रकृत् ।
पक्का तु दीपनी रूक्षा सरोष्णा कफवातनुत् ॥ १४१ ॥

३ अम्लवेतसम् ।

स्यादम्लवेतसं चुक्रं शतवेधि सहस्रवित् ।
अम्लवेतसमत्यम्लं भेदनं लघु दीपनम् ॥ १४२ ॥
हृद्रोगशूलगुल्मघ्नं पित्तलं लोमहर्षणम् ।
रूक्षं विण्मूत्रदोषघ्नं प्लीहोदावर्तनाशनम् ॥ १४३ ॥
हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत् ।

---

१ दे० भा० कमरख । बं०भा० कामरांगा । इं० करम्बोला Carmbola. । २ दे०भा० इम्बली । बं० भा० तेंतुल । इं० टेमरिंडट्री Tamarind tree. । ३ दे० भा० अम्लवेत । बं० भा० थैकड । पं० भा० गलगल । फा० तुर्षक । इं० कामन्सोरेल Coman sorail. चिञ्चापुष्पं तु तुवरं स्वाद्वम्लं च रुचिप्रदम् । विशदं चाग्निजनकं लघु वातकफापहम् ॥ प्रमेहघ्नं समुद्दिष्टं पर्णं शोथहरं मतम् । चिंचाक्षारश्चाग्निमांद्यशूलनाशकरो मतः ॥

कफवातामयध्वंसि छागमांसद्रवत्वकृत् ॥ १४४ ॥
चणकाम्लगुणं ज्ञेयं लोहसूचीद्रवत्वकृत् ।

१ वृक्षाम्लम् ।

वृक्षाम्लं तिन्तिडीकं च चुक्रं स्यादम्लवृक्षकम् ॥ १४५ ॥
वृक्षाम्लमाममम्लोष्णं वातघ्नं कफपित्तलम् ।
पक्वं तु गुरु संग्राहि कटुकं तुवरं लघु ॥ १४६ ॥
अम्लोष्णं रोचनं रूक्षं दीपनं कफवातहृत् ।

चतुरम्लम्, पञ्चाम्लम् ।

अम्लवेतसवृक्षाम्लबृहज्जम्बीरनिम्बुकैः ॥ १४७ ॥
चतुरम्लं हि पञ्चाम्लं बीजपूरयुतैर्भवेत् ।

परिभाषा ।

फलेषु परिपक्वं यद्गुणवत्तदुदाहृतम् ॥ १४८ ॥
बिल्वादन्यत्र विज्ञेयमामं तद्धि गुणाधिकम् ।
फलेषु सरसं यत्स्याद्गुणवत्तदुदाहृतम् ॥ १४९ ॥
द्राक्षाबिल्वशिवादीनां फलं शुष्कं गुणाधिकम् ।
फलतुल्यगुणं सर्वं मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥ १५० ॥
फलं हिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ।
अकालजं कुभूमीजं पाकातीतं न भक्षयेत् ॥ १५१ ॥

इति फलवर्गः ॥

---

१ दे० भा० समाकदाना, डांसरा । बं० भा० महादा । अम्लकुटा, इं० कोकंबटरट्री Cocm batar tree.

वटादिवर्गः ।

१ तत्रादौ वटस्य नामानि गुणाश्च ।

वटो रक्तफलः शुङ्गी न्यग्रोधः स्कन्धजो ध्रुवः ।
क्षीरी वैश्रवणावासो बहुपादो वनस्पतिः ॥ १ ॥
वटः शीतो गुरुर्ग्राही कफपित्तव्रणापहः ।
वर्ण्यो विसर्पदाहघ्नः कषायो योनिदोषहृत् ॥ २ ॥

२ अश्वत्थः ।

बोधिद्रुः पिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रो गजाशनः ।
पिप्पलो दुर्जरः शीतः पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ॥ ३ ॥
गुरुस्तुवरको रूक्षो वर्ण्यो योनिविशोधनः ।

३ पिप्पलभेदः ।

पारिषोऽन्यः पलाशश्च फलीशश्च कमण्डलुः ॥ ४ ॥
गर्दभाण्डः कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः ।
पारिषो दुर्जरः स्निग्धः कृमिशुक्रकफप्रदः ॥ ५ ॥
फलेऽम्लो मधुरो मूले कषायः स्वादुमज्जकः ।

४ अश्वत्थभेदः ।

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः ॥ ६ ॥
स्थालीवृक्षः क्षीरितरुः क्षीरी च स्याद्वनस्पतिः ।
नन्दीवृक्षो लघुः स्वादुस्तिक्तस्तुवर उष्णकः ॥ ७ ॥
कटुपाकरसो ग्राही विषपित्तकफास्रजित् ।

---

१ देशभाषा-बोडह । बड । बं० भा० बट । फारसी-बडवाई । इं० बनयन्ट्री Banian tree । २ दे० भा० पीपल । पिपल, बं० भा० अश्वत्थ । फा० दरखतलरजां । इं० प्लोली-वडफिग्ट्री । Plolaved phigtree. । ३ दे० भा० पारिस पिपल । बं० भा० गज-शुण्डी । फा० यलासबेत्य । इं०-हिइस्कत् । ४ वेलिया पिप्पल ।

१ उदुम्बरः।

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ॥ ८ ॥
उदुम्बरो हिमो रूक्षो गुरुः पित्तकफास्रजित्।
मधुरस्तुवरो वर्ण्यो व्रणशोधनरोपणः ॥ ९ ॥

२ मलयूः।

काकोदुम्बारिका फल्गुर्मलयूर्जघनेफला।
मलयूः स्तम्भकृत्तिक्ता शीतला तुवरा जयेत् ॥ १० ॥
कफपित्तव्रणश्वित्रपाण्ड्वर्शःकुष्ठकामलाः।

३ प्लक्षः।

प्लक्षो जटी पर्करी च कर्पटी च स्त्रियामपि ॥ ११ ॥
प्लक्षः कषायः शिशिरो व्रणयोनिगदापहः।
दाहपित्तकफास्रघ्नः शोथहा रक्तपित्तहृत् ॥ १२ ॥

४ शिरीषः।

शिरीषो भण्डिलो भण्डी भण्डीरश्च कपीतनः।
शुकपुष्पः शुकतरुर्मृदुपुष्पः शुकप्रियः ॥ १३ ॥
शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरो लघुः।
दोषशोषविसर्पघ्नः कासव्रणविषापहः ॥ १४ ॥

क्षीरिवृक्षाः, पञ्चवल्कलाः।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारिषप्लक्षपादपाः।
पंचैते क्षीरिणो वृक्षास्तेषां त्वक् पञ्चवल्कलम् ॥ १५ ॥
केचित्तु पारिषस्थाने शिरीषं वेतसं परे।
क्षीरिवृक्षा हिमा वर्ण्या योनिरोगव्रणापहाः ॥ १६ ॥
रूक्षाः कषाया मेदोघ्ना विसर्पामयनाशनाः।
शोथपित्तकफास्रघ्नाः स्तन्या भग्नास्थियोजकाः ॥ १७ ॥
त्वक्पञ्चकं हिमं ग्राहि व्रणशोथविसर्पजित्।

---

१ दे० भा० गूलर। बं० भा० यज्ञडुमुर। फा० अंजीरे आदम। नद्युदुम्बरिकागुणैः किञ्चित् न्यूना। इं० किगट्री Kigtree ॥ २ दे० भा० फगवाडा। कठूमर। बं० भा० काकडूमर। फा० अंजीरे दस्ती। इं० किगट्री Kigtree. ३ दे० भा० पिलखन। बं० भा० पाकुडगाछ। ४ दे० भा० शिरीह। सिरस। बं० भा० शिरीषगाछ। फा० दरखतेजकरिया।

तेषां पत्रं हिमं ग्राहि कफवातास्रनुल्लघु ॥ १८ ॥
विष्टम्भाध्मानजित्तिक्तं कषायं लघु लेखनम् ।

१ शालः ।

शालस्तु सर्जकार्ष्यार्श्वकर्णकाः सस्यसम्बरः ॥ १९ ॥
अश्वकर्णः कषायः स्याद् व्रणस्वेदकफाक्रिमीन् ।
ब्रध्नविद्रधिबाधिर्य्ययोनिकर्णगदान्हरेत् ॥ २० ॥

शालभेदः ।

सर्जकोऽन्योऽजकर्णः स्याच्छालो मरिचपत्रकः ।
अजकर्णः कटुस्तिक्तः कषायोष्णो व्यपोहति ॥ २१ ॥
कफपाण्डुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान् ।

२ शल्लकी ।

शल्लकी गजभक्षा च सुवहा सुरभी रसा ।
महेरुणा कुन्दुरुकी वल्लकी च बहुस्रवा ॥ २२ ॥
शल्लकी तुवरा शीता पित्तश्लेष्मातिसारजित् ।
रक्तपित्तव्रणहरी पुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ २३ ॥

३ शिंशिपा ।

शिंशिपा पिच्छिला श्यामा कृष्णसारा च सा गुरुः ।
कपिला सैव मुनिभिर्भस्मगर्भेति कीर्तिता ॥ २४ ॥
शिंशिपा कटुका तिक्ता कषाया शोथहारिणी ।
उष्णवीर्य्या हरेन्मेदःकुष्ठश्वित्रवमिक्रिमीन् ॥ २५ ॥
बस्तिरुग्व्रणदाहास्रबलासान् गर्भपातिनी ।

४ ककुभः ।

ककुभोऽर्जुननामा स्यान्नदीसर्जश्च कीर्तितः ॥ २६ ॥

---

१ दे० भा० शाल । सखुआ । सांखु । बं० भा० शालगाछ । लताशील । इं० सालट्री Sal tree ॥ २ दे० भा० सलइं, सक्की, सिल्लक, सालें । बं० भा० शलई । प० भा० मैदासक्क । ३ दे० भा० टाहली । सीसम । श्वेता, कपिला, कृष्णा । बं० भा० शिशु-गाच्छे । इं० ब्लाकवुडसट्री । Blaek wcedes tree ॥ ४ दे० भा० कौ । कौह । बं० भा० अर्जुन गाछ ।

इन्द्रद्रुर्वीरवृक्षश्च वीरश्च धवलः स्मृतः ।
ककुभः शीतलो ह्यः क्षतक्षयविषास्रजित् ॥ २७ ॥
मेदोमेहव्रणान् हन्ति तुवरः कफपित्तहृत् ।

१ असनः ।

बीजकः पीतसारश्च पीतशालक इत्यपि ॥ २८ ॥
बन्धूकपुष्पः प्रियकः सर्जकश्चासनः स्मृतः ।
बीजकः कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगदक्रिमीन् ॥ २९ ॥
हन्ति श्लेष्मास्रपित्तं च त्वच्यः केश्यो रसायनः ।

२ खदिरः ।

खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दन्तधावनः ॥ ३० ॥
कण्टकी बालपत्रश्च बहुशल्यश्च यज्ञियः ।
खदिरः शीतलो दन्त्यः कण्डुकासारुचिप्रणुत् ॥ ३१ ॥
तिक्तः कषायो मेदोघ्नः कृमिमेहज्वरव्रणान् ।
श्वित्रशोथामपित्तास्रपांडुकुष्ठकफान् हरेत् ॥ ३२ ॥

३ श्वेतखदिरः ।

खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कदरः सोमवल्कलः ।
खदिरो विशदो वर्ण्यो मुखरोगकफास्रजित् ॥ ३३ ॥

४ इरिमेदः ।

इरिमेदो बिट्खदिरः कालस्कन्धोऽरिमेदकः ।
इरिमेदः कषायोष्णो मुखदन्तगदास्रजित् ॥ ३४ ॥
हन्ति कण्डूविषश्लेष्मक्रिमिकुष्ठविषव्रणान् ।

---

१ दे० भा० विजयसार । बं० भा० पियाशाल । पं० भा० अलसन । फा० कमकरस् । इं०-इंडियन्किन्सट्री Indian kinstree । असनस्य तु पुष्पाणि विपाके मधुराणि च । तिक्तानि पाचनीयानि वातलानि भवन्ति हि ॥ २ दे० भा० खैर । श्वेत, रक्त, बं० भा० खैर गाछ । ३ दे० भा० कत्था । बं० भा० खैर । फा० कात । इं० केटेच्य Catech । ४ दे० भा० दुर्गंधि खैर । बं० भा० विट् खैर । इं० सपंजट्री Sapanj tree खैर गोंदः-निर्यासस्तस्य मधुरो वल्यः शुक्रविवर्द्धनः । खदिरसारः-खदिरः खदिरोद्भूतस्तत्सारो रंगदः स्मृतः । सारस्तु विशदो व्रण्यो मुखरोगकफास्रजित् ॥

१ रोहीतकः ।

रोहीतको रोहितको रोही दाडिमपुष्पकः ॥ ३५ ॥
रोहीतकः प्लीहघाती रुच्यो रक्तप्रसादनः ।

२ किङ्किरातः ।

बबूलः किंकिरातः स्यात्किंकराटः सपीतकः ॥ ३६ ॥
स एव कथितस्तज्ज्ञैराभाषट्पदमोदनी ।
बबूलः कफनुद्ग्राही कुष्ठाक्रिमिविषापहः ॥ ३७ ॥

३ अरिष्टकः ।

अरिष्टकस्तु माङ्गल्यः कृष्णवर्णोऽर्थसाधनः ।
रक्तबीजः पीतफेनः फेनिलो गर्भपातनः ॥ ३८ ॥
अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नो ग्रहजिद्गर्भपातनः ।

४ पुत्रजीवः ।

पुत्रजीवो गर्भकरोयष्टी पुष्पोऽर्थसाधकः ॥ ३९ ॥
पुत्रजीवो गुरुर्वृष्यो गर्भदः श्लेष्मवातहृत् ।
सृष्टमूत्रमलो रूक्षो हिमः स्वादुः पटुः कटुः ॥ ४० ॥

५ इंगुदः ।

इङ्गुदोऽङ्गारवृक्षश्च तिक्तकस्तापसद्रुमः ।
इङ्गुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन् ॥ ४१ ॥
हन्त्युष्णः श्वित्रशूलघ्नस्तिक्तकः कटुपाकवान् ।

६ जिंगिनी ।

जिङ्गिनी झिङ्गिणी झिङ्गी सनिर्य्यासा प्रमोदिनी ॥ ४२ ॥

---

१ दे० भा० रुहेडा । श्वेत, रक्त । बं० भा० रोडा । कडार । २ दे० भा०-किकर । बं०भा० बबूल गाछ । फा० मुगिलां । इं० एकसियाट्री Ecasiatree. ३ दे०भा०रेठा । बं० भा० रिठे गाछ । फा० फिंदक् हिन्दी । इं०सौमबेरी सोपनट्री । Sombari sopan tree । अस्य निर्यासः-बबूलस्य तु निर्यासो ग्राही पित्तानिलापहा । रक्तातिसारपित्तास्रमेह-प्रदरनाशनः । भग्नसंधानकः शीतः शोणितस्रुतिवारणः ॥ ४ दे० भा० जियापोता । ५ दे० भा० इंगोट । इं० डेलील Daleil । ६ दे० भा० काली सिंबल । निर्यासवती-मोदिनी जातनिर्यासो नस्याद्वातव्यथापहः । तत्पुष्पं वातलं ग्राहि पित्तासृक्प्रदरापहम् ॥ फलं रसायनं केश्यं बृंहणं शुक्रलं गुरु । मूत्रक्षयहरं तृष्णारक्तमूत्रविबन्धकृत् ॥ इंगुद्याः फलमज्जको जलयुतो लेपान्मुखे कांतिदः ।

जिङ्गिनी मधुरा सोष्णा कषाया योनिशोधनी।
कटुका व्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः ॥ ४३ ॥

१ तमालः।

तमालः शालवद्वेद्यो दाहविस्फोटहृत्पुनः।

तूणी।

तूणी तुन्नक आपीनस्तुणिकः कच्छपस्तथा ॥ ४४ ॥
कुठेरकः कान्तलको नन्दिवृक्षश्च नन्दकः।
तूणी रक्तः कटुः पाके कषायो मधुरो लघुः ॥ ४५ ॥
तिक्तो ग्राही हिमो वृष्यो व्रणकुष्ठास्रपित्तजित्।

२ भूर्जपत्रः।

भूर्जपत्रः स्मृतो भूर्जश्चर्मी बहुलवल्कलः ॥ ४६ ॥
भूर्जो भूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित्।
कषायो राक्षसघ्नश्च मेदोविषहरः परः ॥ ४७ ॥

३ पलाशः।

पलाशः किंशुकः पर्णो याज्ञिको रक्तपुष्पकः।
क्षारश्रेष्ठो वातहरो ब्रह्मवृक्षः समिद्वरः ॥ ४८ ॥
पलाशो दीपनो वृष्यः सरोष्णो व्रणगुल्मजित्।
कषायः कटुकस्तिक्तः स्निग्धो गुदजरोगजित् ॥ ४९ ॥
भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शःकृमीन् हरेत्।

शाल्मली।

शाल्मलिस्तु भवेन्मोचा पिच्छिला पूरणीति च ॥ ५० ॥
रक्तपुष्पा स्थिरायुश्च कण्टकाढ्या च तूलिनी।
शाल्मलिः शीतला स्वाद्वी रसे पाके रसायनी ॥ ५१ ॥
श्लेष्मला पित्तवातास्रहारिणी रक्तपित्तजित्।

---

१ दे० भा० तमाल। २ दे० भा० भोजपत्र, भूर्जपत्र। बं० भा० भूजि पत्र। इं० जेकेमोटी Jakemoti। ३ दे० भा० छिछरा। ढाक। टेसू केसू। बं० भा० पलाशगाछ। इं० डोडनीब्रांचव्युटिपा। पलाशमूलस्वरसो नेत्रच्छायान्धपुष्पजित्। तद्बीजं कृमिविध्वांसि कांडो रासायने हितः ॥ पलाशभवनिर्य्यासो ग्राही च क्षपयेद् ध्रुवम्। ग्रहणीं मुखजान् कासान् जयेत्स्वेदातिनिर्गमम् ॥

१ मोचरसः ।

निर्यासः शाल्मलेः पिच्छाशाल्मलिर्वेष्टकाऽपि च ॥ ५२ ॥
मोचास्रावो मोचरसो मोचानिर्य्यास इत्यपि ।
मोचास्रावो हिमो ग्राही स्निग्धो वृष्यः कषायकः ॥ ५३ ॥
प्रवाहिकातीसारामकफपित्तास्रदाहनुत् ।

२ कूटशाल्मलिः ।

कुत्सिता शाल्मलिः प्रोक्ता रोचना कूटशाल्मलिः ॥ ५४ ॥
कूटशाल्मलिका तिक्ता कटुका कफवातनुत् ।
भेद्युष्णा प्लीहजठरयकृद्गुल्मविषापहा ॥ ५५ ॥
भूतानाहविबन्धास्रमेदःशूलकफापहा ।

३ धवः ।

धवो धटो नन्दितरुः स्थिरो गौरो धुरन्धरः ॥ ५६ ॥
धवः शीतः प्रमेहार्शःपाण्डुपित्तकफापहः ।
मधुरस्तुवरस्तस्य फलं च मधुरं मनाक् ॥ ५७ ॥

४ धन्वङ्गः ।

धन्वङ्गस्तु धनुर्वृक्षो गोत्रवृक्षस्तु तेजनः ।
धन्वङ्गः कफपित्तास्रकासहृत्तुवरो लघुः ॥ ५८ ॥
बृंहणो बलकृद्वृक्षः सन्धिकृद् व्रणरोपणः ।

५ करीरः ।

करीरः क्रकरोऽपत्रो ग्रन्थिलो मरुभूरुहः ॥ ५९ ॥
करीरः कटुकस्तिक्तः स्वेद्युष्णो भेदनः स्मृतः ।
दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ ६० ॥

६ शाखोटः ।

शाखोटः पीतफलको भूतावासः खरच्छदः ।

---

१ दे० भा० सेमरका गूंद । बं० भा० शिमुलेर आटा । इं० सिल्ककाटनट्री Silk-cotton tree २ दे० भा० कौडी सिवल । ३ दे० भा० धौं । कहुवा । बं० भा० धाउ-यागाछ । ४ धामन । ५ दे० भा० करीर । कचडा । टींट । बं० भा० करीर । फा० कबार । इं० केपर kapen । मूलं कटु कषायञ्च पित्तकृद्दीपनं परम् । इसके फलको डैले कहते हैं । ६ दे० भा० दैह्या । सहोडा । बं० भा० शेओडा ।

शाखोटो रक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित् ॥ ६१ ॥

१ वरुणः ।

वरुणो वरणः सेतुस्तिक्तशाकः कुमारकः ।
कषायो मधुरस्तिक्तः कटुको रूक्षको लघुः ॥ ६२ ॥

२ कटभी ।

कटभी स्वादुपुष्पा च मधुरेणुः कटम्भरा ।
कटभी तु प्रमेहार्शोनाडीव्रणविषक्रिमीन् ॥ ६३ ॥
अत्युष्णा कफकुष्ठघ्नी कटू रूक्षा च कीर्तिता ।
तत्फलं तुवरं ज्ञेयं विशेषात्कफशुक्रहृत् ॥ ६४ ॥

३ गोलीढः ।

मोक्षस्तु मोक्षकोऽपि स्याद्गोलीढो गोलिहस्तथा ।
क्षारश्रेष्ठः क्षारवृक्षो द्विविधः श्वेतकृष्णकः ॥ ६५ ॥
मोक्षकः कटुकास्तिक्तो ग्राह्युष्णः कफवातहृत् ।
विषमेदोगुल्मकण्डूवस्तिरुक्कृमिशुक्रनुत् ॥ ६६ ॥

४ अंबुशिरीषिका ।

शिरीषिका डिंडिणिका दुर्बलांबुशिरीषिका ।
त्रिदोषविषकुष्ठार्शोहरी वारिशिरीषिका ॥ ६७ ॥

५ शमी ।

शमी सक्तुफला तुंगा केशहंत्री फला शिवा ।
माङ्गल्या च तथा लक्ष्मीः शमीरा सालिपका स्मृता॥६८॥
शमी तिक्ता कटुः शीता कषाया रेचनी लघुः ।
कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःक्रिमिजित्स्मृता ॥ ६९ ॥

६ सप्तपर्णः ।

सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।

---

१ दे० भ० बरना । वं० भा वरुक्षा गाछ । २ दे० भा० कांटीवाला सिरस । श्वेत । श्याम । इं० केरिसट्री Cares tree । ३ दे० भा० घण्टापाटलि । बं० भा० घंटा पारुक । पं० भा० पाडल । ४ दे० भा० डिढाना । डिढैना । ५ दे० भा० जण्डी । जण्ड । वं० भा० शांई । इं० स्पंजट्री । Spanj tree । ६ दे०भा० सतौना । सातपुडा । बं० भा० छांतिम गाछ ।

सप्तपर्णो व्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजंतुजित् ॥ ७० ॥
दीपनः श्वासगुल्मघ्नः स्निग्धोष्णस्तुवरः सरः ।

१ तिनिशः ।

तिनिशः स्यंदनो नेमी रथद्रुर्वंजुलस्तथा ॥ ७१ ॥
तिनिशः श्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित् ।
तुवरः श्वित्रदाहघ्नो व्रणपांडुक्रिमिप्रणुत् ॥ ७२ ॥

२ भूमिसहा ।

भूमिसहा द्वारदा तु शरद्भानुः खरच्छदः ।
भूमिसहस्तु शिशिरो रक्तपित्तप्रसादनः ॥ ७३ ॥

इति वटादिवर्गः ।

---

१ दे० भा० तिनासबा , तिरिछा । बं० भा० तिनाश । सासना । २ दे० भा० भूई सह-देई । उलखउ । औखड ।

धातुवर्गः ।

तत्र धातूनां लक्षणानि गुणाश्च ।

स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं च वङ्गं यसदमेव च ।
सीसं लोहं च सप्तैते धातवो गिरिसंभवाः ॥ १ ॥
वलीपलितखालित्यं काश्र्याऽबल्यजरामयान् ।
निवार्य्य देहं दधति नृणां तद्धातवो मताः ॥ २ ॥

१ सुवर्णोत्पत्तिनामलक्षणगुणाः ।

पुरा निजाश्रमस्थानां सप्तर्षीणां[२] जितात्मनाम् ।
पत्नीर्विलोक्य लावण्यलक्ष्मीसंपन्नयौवनाः ॥ ३ ॥
कंदर्पदर्पविध्वस्तचेतसो जातवेदसः ।
पतितं यद्धरापृष्ठे रेतस्तद्धेमतामगात् ॥ ४ ॥
स्वर्णं सुवर्णं कनकं[१] हिरण्यं हेम हाटकम् ।
तपनीयं च गांगेयं कलधौतं च कांचनम् ॥ ५ ॥
चामीकरं शातकुम्भं भर्म कार्तस्वरं च तत् ।
जांबूनदं जातरूपं महारजतमित्यपि ॥ ६ ॥
रुक्मं लोहवरं चाग्निबीजं चांपेयकर्बुरम् ।
अष्टापदं च रसजं तैजसं चापि कीर्तितम् ॥ ७ ॥
प्राकृतं सहजं वह्निसंभूतं खनिसंभवम् ।
रसेंद्रवेधसंजातं स्वर्णं पंचविधं स्मृतम् ॥ ८ ॥
दाहे रक्तं सितं छेदे निकषे कुंकुमप्रभम् ।
तारशुल्बोज्झितं स्निग्धं कोमलं गुरु हेम सत् ॥ ९ ॥

---

१ दे० भा० सोना । बं० भा० सोना । फा० तिला । इं० गोल्ड Gold. कनकं सेवये-न्नित्यं जरामृत्युविनाशनम् । कायाग्निपुष्टिजननं वाजीकरणमुत्तमम् ॥ आयुष्यं बलमारोग्यं वज्रे स्वर्णे रसे स्थितम् ॥ २ मरीचिरंगिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः । वसिष्ठश्चेति सप्तैते ऋषयः सप्त कीर्तिताः ॥

तच्छ्वेतं कठिनं रूक्षं विवर्णं समलं दलम्[1] ।
दाहे छेदे सितं श्वेतं कषे त्याज्यं लघु स्फुटम्[2] ॥ १० ॥
सुवर्णं शीतलं वृष्यं बल्यं गुरु रसायनम् ।
स्वादु तिक्तं च तुवरं पाके तु स्वादु पिच्छिलम् ॥ ११ ॥
पवित्रं बृंहणं नेत्र्यं मेधास्मृतिमतिप्रदम् ।
हृद्यमायुष्करं कांतिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् ॥ १२ ॥
विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ॥ १३ ॥
बलं सवीर्य्यं हरते नराणां रोगव्रजान् पोषयतीह काये ।
असौख्यकार्य्येव सदा सुवर्णमशुद्धमेतन्मरणं च कुर्य्यात् १४
असम्यङ्मारितं स्वर्णं बलं वीर्य्यं च नाशयेत् ।
करोति रोगान् मृत्युं च तद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥ १५ ॥

२ रजतम् ।

त्रिपुरस्य वधार्थाय निर्निमेषैर्विलोचनैः ।
निरीक्षयामास शिवः क्रोधेन परिपूरितः ।
अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात् ॥ १६ ॥
ततो रुद्रः समभवद्वैश्वानर इव ज्वलन् ।
द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिंदुस्तु वामकात् ॥ १७ ॥
तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तं कर्मसु योजयेत् ।
रजतं त्रिविधं प्रोक्तं सहजं खनिजकृत्रिमे ॥ १८ ॥
कृत्रिमं च भवेत्तद्धि वङ्गादिरसयोगतः ।
रूप्यं तु रजतं तारं चन्द्रकांति सितप्रभम् ॥ १९ ॥
वसूत्तमं च कुप्यं च खर्जूरं रंगबीजकम् ।
गुरु स्निग्धं मृदु श्वेतं दाहे छेदे घनक्षमम् ॥ २० ॥
वर्णाढ्यं चन्द्रवत्स्वच्छं रूप्यं नवगुणं शुभम् ।

---

१ दलं, जोरत इति । २ यद्धनाहतं स्फुटति । सितया हंति दाहाद्यं वातपित्तं फलत्रिकात् ।
त्रिसुगन्ध्या प्रमेहादित्रजं तद् हंत्यसंशयम् ॥ ३ दे०भा० चांदी । वं० भा० रूपा । फा०नुकरा ई० सिल्वर Silver.

कठिनं कृत्रिमं रूक्षं रक्तं पीतदलं लघु ॥ २१ ॥
दाहच्छेदघनैर्नष्टं रूप्यं दुष्टं प्रकीर्तितम् ।
रूप्यं तिक्तं कषायाम्लं स्वादुपाकरसं सरम् ॥ २२ ॥
वयसः स्थापनं स्निग्धं लेखनं वातपित्तजित् ।
प्रमेहादिकरोगांश्च नाशयत्यचिराद्ध्रुवम् ॥ २३ ॥
तारं शरीरस्य करोति तापं विड्बन्धनं यच्छति शुक्रनाशम् ॥
वीर्य्यं बलं हंति तनोस्तु पुष्टिं महागदान्पोषयति ह्यशुद्धम् २४

१ ताम्रम् ।

शुक्रं यत्कार्तिकेयस्य पतितं धरणीतले ।
तस्मात्ताम्रं समुत्पन्नमिदमाहुः पुराविदः ॥ २५ ॥
ताम्रमौदुंबरं शुल्बमुदुम्बरमपि स्मृतम् ।
रविप्रियं म्लेच्छमुखं सूर्यपर्यायनामकम् ॥ २६ ॥
जपाकुसुमसंकाशं स्निग्धं मृदु घनक्षमम् ।
लोहं नागोज्झितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ॥ २७ ॥
कृष्णं रूक्षमतिस्तब्धं श्वेतं चापि घनासहम् ।
लोहनागयुतं चेति शुल्बं दुष्टं प्रकीर्तितम् ॥ २८ ॥
ताम्रं कषायं मधुरं च तिक्तमम्लं च पाके कटु सारकं च ।
पित्तापहं श्लेष्महरं च शीतं तद्रोपणं स्याल्लघु लेखनं च २९
पांडूदरार्शोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् ।
शोथं कृमिं शूलमपाकरोति प्राहुः परे बृंहणमल्पमेतत् ३०
न विषं विषमित्याहुस्ताम्रं तु विषमुच्यते ।
एको दोषो विषे ताम्रे त्वष्टौ दोषाः प्रकीर्तिताः ॥ ३१ ॥
दाहः स्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छा क्लेदो रेको वमिर्भ्रमः ।

२ वंगम् ।

रंगं वंगं त्रपु प्रोक्तं तथा पिच्चटमित्यपि ॥ ३२ ॥

---

१ दे० भा० तांबा । बं०भा० तामा । फा० मिस । इं०कापर Copper. । २ दे० भा० कली, कलई रांग । बं० भा० रांग, बंग । फा० अरजीज । इं० टीन् । Tin.

खुरकं मिश्रकं चापि द्विविधं वंगमुच्यते ।
उत्तमं खुरकं तत्र मिश्रकं त्ववरं मतम् ॥ ३३ ॥
रंगं लघु सरं रूक्षमुष्णं मेहकफक्रिमीन् ।
निहन्ति पाण्डुं सश्वासं चक्षुष्यं पित्तलं मनाक् ॥ ३४ ॥
सिंहो यथा हस्तिगणं निहन्ति तथैव वङ्गोऽखिलमेहवर्गम् ।
देहस्य सौख्यं प्रबलेन्द्रियत्वं नरस्य पुष्टिं विदधाति नूनम् ३५

१ यसदम् ।

यसदं रङ्गसदृशं रीतिहेतुश्च तन्मतम् ।
यसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् ॥ ३६ ॥
चक्षुष्यं परमं मेहान्पाण्डुं श्वासं च नाशयेत् ।

२ सीसकम् ।

दृष्ट्वा भोगिसुतां रम्यां वासुकिस्तु मुमोच यत् ॥ ३७ ॥
वीर्य्यं जातस्ततो नागः सर्वरोगापहो नृणाम् ।
सीसं ब्रध्नं च वप्रं च योगेष्टं नागनामकम् ।
सीसं वङ्गगुणं ज्ञेयं विशेषान्मेहनाशनम् ॥ ३८ ॥
नागस्तु नागशततुल्यबलं ददाति
व्याधिं विनाशयति जीवनमातनोति ।
वह्निं प्रदीपयति कामबलं करोति
मृत्युं च नाशयति संततसेवितस्सः ॥ ३९ ॥
पाकेन हीनौ किल वङ्गनागौ
कुष्ठानि गुल्मांश्च तथाऽतिकष्टान् ।
पाण्डुप्रमेहानलसादशोथ-
भगंदरादीन् कुरुतः प्रभुक्तौ ॥ ४० ॥

---

१ दे० भा० जिस्त, जसद । बं० भा० दस्ता । फा० रुरातुतिया । इं० जिंक् । Zinc
२ दे० भा० सिक्का सीसा । बं० भा० सीसे । फा० सुर्व । इं० लेड । lead. नागः; भुजङ्गः, इत्यादि ।

१ लोहम् ।

पुरा लोमिनदैत्यानां निहतानां सुरैर्युधि ।
उत्पन्नानि शरीरेभ्यो लोहानि विविधानि च ॥ ४१ ॥
लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।
गुरुता दृढतोत्क्लेदकश्मलं दाहकारिता ॥ ४२ ॥
अश्मदोषः सुदुर्गन्धो दोषाः सप्तायसस्य तु ।
लोहं तिक्तं सरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ ४३ ॥
रूक्षं वयस्थं चक्षुष्यं लेखनं वातलं जयेत् ।
कफपित्तं गरं शूलं शोथार्शःप्लीहपाण्डुताः ।
मेदोमेहकृमीन्कुष्ठं तत्किट्टं तद्वदेव हि ॥ ४४ ॥
खंडत्वकुष्ठामयमृत्युदं भवेद् हृद्रोगशूलौ कुरुतेऽश्मरीं च ।
नानारुजानां च तथा प्रकोपं करोति हल्लासमशुद्धलोहम् ४५
जीवहारि मदकारि चायसं चेदशुद्धिमदसंस्कृतं ध्रुवम् ।
पाटवं न तनुते शरीरके दारुणं हृदि रुजां च यच्छति ४६
कूष्माण्डं तिलतैलं च माषान्नं राजिकां तथा ।
मद्यमम्लरसं चापि त्यजेल्लोहस्य सेवकः ॥ ४७ ॥

लोहसारम् ।

क्षमाभृच्छिखराकाराण्यङ्गान्यम्लेन लेपिते ।
लोहे स्युर्यत्र सूक्ष्माणि तत्सारमभिधीयते ॥ ४८ ॥
लोहं साराह्वयं हन्याद् ग्रहणीमातिसारकम् ।
अर्द्धं सर्वाङ्गजं वातं शूलं च परिणामजम् ॥ ४९ ॥
छर्दिं च पीनसं पित्तं श्वासं कासं व्यपोहति ॥ ५० ॥

कान्तलोहम् ।

पात्रे यस्मिन् प्रसरति जले तैलबिन्दुर्निषिक्तो

---

१ दे० भा० लोहा, फोलाद, इस्पात । बं० भा० लौह, तिगा, इसपात, काला लोह । फा० आहन्, फोलाद, संगे आहन् । इं० आयरन् Iron गुञ्जामेकां समारभ्य यावत्स्युर्नव रक्तिकाः । तावल्लोहं समश्नीयाद्यथादोषबलं नरः ॥

विद्धं गन्धं त्यजति च निजं रूषितं निम्बकल्कैः ।
तप्तं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमिं
कृष्णाङ्गः स्यात्सजलचणकः कान्तलोहं तदुक्तम् ॥ ५१ ॥
गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातं भगन्दरम् ।
कामलाशोथकुष्ठानि क्षयं कान्तमयो हरेत् ॥ ५२ ॥
प्लीहानमम्लपित्तं च यकृच्चापि शिरोरुजम् ।
सर्वान् रोगान्विजयते कान्तलोहं न संशयः ॥ ५३ ॥
बलं वीर्य्यं वपुःपुष्टिं कुरुतेऽग्निं विवर्द्धयेत् ॥ ५४ ॥

१ मण्डूरम् ।

ध्मायमानस्य लोहस्य मलं मण्डूरमुच्यते ।
लोहसिंहानिका किट्टी सिंहानं च निगद्यते ॥ ५५ ॥
यल्लोहं यद्गुणं प्रोक्तं तत्किट्टमपि तद्गुणम् ।

२ सप्तोपधातवः ।

सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम् ॥ ५६ ॥
तुत्थं कांस्यं च रीतिश्च सिन्दूरश्च शिलाजतु ।
उपधातुषु सर्वेषु तत्तद्धातुगुणा अपि ॥ ५७ ॥
सन्ति किं तेषु ते गौणास्तत्तदंशाल्पभावतः ।

३ स्वर्णमाक्षिकम् ।

स्वच्छं माक्षिकमाख्यातं तापीजं मधुमाक्षिकम् ॥ ५८ ॥
ताप्यं माक्षिकधातुश्च मधुधातुश्च स स्मृतः ।
किञ्चित्सुवर्णसाहित्यात् स्वर्णमाक्षिकमीरितम् ॥ ५९ ॥
उपधातुः सुवर्णस्य किञ्चित्स्वर्णगुणान्वितः ।
तथा च काञ्चनाभावे दीयते स्वर्णमाक्षिकम् ॥ ६० ॥
किन्तु तस्यानुकल्पत्वात् किञ्चिदूनगुणं ततः ।
न केवलं स्वर्णगुणो वर्तते स्वर्णमाक्षिके ॥ ६१ ॥

---

१ शतोर्ध्वमुत्तमं किट्टं मध्यं चाशीतिवार्षिकम् । अधमं षष्टिवर्षीयं ततो हीनं विषोपमम् ॥ २ गौणा धातवः ॥ ३ दे० भा० सोनामाखी । बं० भा० स्वर्णमाक्षिक । इं० आयनवाई राईटीस ॥

द्रव्यान्तरस्य संसर्गात्संत्यन्येऽपि गुणा यतः ।
सुवर्णमाक्षिकं स्वादु तिक्तं वृष्यं रसायनम् ॥ ६२ ॥
चक्षुष्यं वस्तिरुक्कुष्ठपाण्डुमेहविषोदरान् ।
अर्शः शोथं विषं कण्डूं त्रिदोषमपि नाशयेत् ॥ ६३ ॥
मन्दानलत्वं बलहानिमुग्रां विष्टम्भतां नेत्रगदान्सकुष्ठान् ।
तथैव मालां व्रणपूर्विकां च करोति तापीजमशुद्धमेतत् ६४

१ तारमाक्षिकम् ।

तारमाक्षिकमन्यत्तु तद्भवेद्रजतोपमम् ।
किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥ ६५ ॥
अनुकल्पतया तस्य ततो हीनगुणं स्मृतम् ।
न केवलं रूप्यगुणा वर्तन्ते तारमाक्षिके ॥ ६६ ॥
द्रव्यान्तरस्य संसर्गात्संत्यन्येऽपि गुणा यतः ॥ पूर्ववत् ॥

२ तुत्थम् ।

तुत्थं वितुन्नकं चापि शिखिग्रीवं मयूरकम् ॥ ६७ ॥
तुत्थं ताम्रोपधातुर्हि किंच ताम्रेण तद्भवेत् ।
किंचित्ताम्रगुणं तस्माद्वक्ष्यमाणगुणं च तत् ॥ ६८ ॥
तुत्थकं कटुकं क्षारं कषायं वामकं लघु ।
लेखनं भेदनं शीतं चक्षुष्यं कफपित्तहृत् ॥ ६९ ॥
विषाश्मकुष्ठकंडूघ्नं खर्परं चापि तद्गुणम् ।

३ कांस्यम् ।

ताम्रत्रपुजमाख्यातं कांस्यं घोषं च कांसकम् ॥ ७० ॥
उपधातुर्भवेत्कांस्यं द्वयोस्तरणिरङ्गयोः ।
कांस्यस्य तु गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसदृशा जनैः ॥ ७१ ॥
संयोगजप्रभावेण तस्यान्येऽपि गुणाः स्मृताः ।
गुरु नेत्रहितं रूक्षं कफपित्तहरं परम् ॥ ७२ ॥

---

१ दे० भा० रूपामाखी । २ दे० भा० नीलाथोथा, तूतिया । बं० भा० तुतिया । फा० तूदिया । इं० आलपोढ ऑफकापर । वमने मंडले दद्रौ विषे चैव प्रशस्यते । ३ दे० भा० कांसी । बं० भा० कांसा । फा० रोइन । इं० बेलमेटल Bial matal.

१ पित्तलम् ।

पित्तलं त्वारकूटं स्यादारो रीतिश्च कथ्यते ॥ ७३ ॥
राजरीतिर्ब्रह्मरीतिः कपिला पिंगलापि च ।
रीतिरप्युपधातुः स्यात्ताम्रस्य यसदस्य च ॥ ७४ ॥
पित्तलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसदृशा जनैः ।
संयोगजप्रभावेण तस्यान्येऽपि गुणाः स्मृताः ॥ ७५ ॥
रीतिकायुगलं रूक्षं तिक्तं च लवणं रसे ।
शोधनं पाण्डुरोगघ्नं कृमिघ्नं नातिलेखनम् ॥ ७६ ॥

२ सिंदूरम् ।

सिंदूरं रक्तरेणुश्च नागगर्भं च सीसकम् ।
सीसोपधातुः सिन्दूरं गुणैस्तत्सीसवन्मतम् ॥ ७७ ॥
सिंदूरमुष्णवीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् ।
भग्नसन्धानजननं व्रणशोधनरोपणम् ॥ ७८ ॥

३ शिलाजतु ।

निदाघे घर्मसंतप्ता धातुसारं धराधराः ।
निर्यासवत्प्रमुञ्चन्ति तच्छिलाजतु कीर्तितम् ॥ ७९ ॥
सौवर्णं राजतं ताम्रमायसं तच्चतुर्विधम् ।
शिलाजत्वद्रिजतु च शैलनिर्यास इत्यपि ॥ ८० ॥
गैरेयमश्मजं चापि गिरिजं शैलधातुजम् ।
शिलाजं कटुतिक्तोष्णं कटुपाकं रसायनम् ॥ ८१ ॥
छेदि योगवहं हन्ति कफमेदोऽश्मशर्कराः ।
मूत्रकृच्छ्रं क्षयं श्वासं वातार्शांसि च पाण्डुताम् ॥ ८२ ॥

---

१ दे० भा० पित्तल । बं० भा० कांचापित्तल । फा० विरंज । इं० ब्रास Brass. २ दे० भा० सिन्दूर । बं० भा० सिन्दुर । फा० सिरिनज़् । ३ दे० भा० शिलाजीत । बं० भा० शिलाजतु । इं० आलसफेट जुइसपिच । Aspholt Jew's pitch परीक्षा—गोमूत्रगंधवत्कृष्णं स्निग्धं मृदु तथा गुरु । पित्तं कषायं शीतं च सर्वश्रेष्ठं तदायसम् ॥ विन्ध्याद्रौ बहुलं तत्तु तत्र लोहं यतोऽधिकम् । तच्छोधनमृते व्यर्थमनेकमलमेलनात् ॥

अपस्मारं तथोन्मादं शोथकुष्ठोदरक्रिमीन् ।
सौवर्णं तु जपापुष्पवर्णं भवति तद्रसात् ॥ ८३ ॥
मधुरं कटु तिक्तं च शीतलं कटुपाकि च ।
ताम्रं मयूरकण्ठाभं तीक्ष्णमुष्णं च जायते ॥ ८४ ॥
लौहं जटायुपक्षाभं तिक्तकं लवणं भवेत् ।
विपाके कटुकं शीतं सर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥ ८५ ॥

रसः ।

रसायनार्थिभिर्लोके पारदो रस्यते यतः ।
ततो रस इति प्रोक्तः स च धातुरपि स्मृतः ॥ ८६ ॥

१ पारदम् ।

शिवाङ्गात्प्रच्युतं रेतः पतितं धरणीतले ।
तद्देहसारजातत्वाच्छुक्रमच्छमभूच्च तत् ॥ ८७ ॥
क्षेत्रभेदेन विज्ञेयं शिववीर्य्यं चतुर्विधम् ।
श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तु भवेत् क्रमात् ॥ ८८ ॥
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च खलु जातितः ।
श्वेतं शस्तं रुजां नाशे रक्तं किल रसायने ॥ ८९ ॥
धातुवेधे तु तत्पीतं खे गतौ कृष्णमेव च ।
पारदो रसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारसः ॥ ९० ॥
चपलः शिववीर्य्यश्च रसः सूतः शिवाह्वयः ।
पारदः षड्रसः स्निग्धस्त्रिदोषघ्नो रसायनः ॥ ९१ ॥
योगवाही महावृष्यः सदा दृष्टिबलप्रदः ।
सर्वामयहरः प्रोक्तो विशेषात्सर्वकुष्ठनुत् ॥ ९२ ॥
स्वस्थो रसो भवेद्ब्रह्मा बद्धो ज्ञेयो जनार्दनः ।

---

१ दे० भा० पारा। बं० भा० पारा। फा० सीमाब । इं० मर्क्युर Marqure पारदपथ्यानि—हितं मुद्गान्नदुग्धाज्यशाल्यन्नानि सदा ततः । शाके पुनर्नवा देवि मेघनादं सवास्तुकम् ॥ सैन्धवं नागरं मुस्ता मूलकानि च भक्षयेत् । आत्मज्ञानं कथा, पूजा शिवस्य च विशेषतः ॥ एतांस्तु समयान्भद्रे न लंघेद्रसभक्षकः ॥

रञ्जितः क्रामितश्चापि साक्षाद्देवो महेश्वरः ॥ ९३ ॥
मूर्च्छितो हरति रुजं बन्धनमनुभूय खे गतिं कुरुते ।
अजरीकरोति हि मृतः कोऽन्यः करुणाकरः सूतात्॥ ९४॥
असाध्यो यो भवेद्रोगो यस्य नास्ति चिकित्सितम् ।
रसेन्द्रो हन्ति तं रोगं नरकुञ्जरवाजिनाम् ॥ ९५ ॥

मलं विषं वह्निगिरित्वचापलं नैसर्गिकं दोषमुशन्ति पारदे ।
उपाधिजौ द्वौ त्रपुनागयोगजौ दोषौ रसेन्द्रे कथितौ मुनीश्वरैः॥

मलेन मूर्च्छा मरणं विषेण
दाहोऽग्निना कष्टतरः शरीरे ।
देहस्य जाड्यं गिरिणा सदा स्यात्
चाञ्चल्यतो वीर्यहतिश्च पुंसाम् ॥ ९७ ॥
वङ्गेन कुष्ठं भुजगेन गण्डो
भवेत्ततोऽसौ परिशोधनीयः ॥ ९८ ॥

वह्निर्विषं मलं चेति मुख्या दोषास्त्रयो रसे ।
एते कुर्वन्ति सन्तापं मृतिं मूर्च्छां नृणां क्रमात् ॥ ९९ ॥
अन्येऽपि कथिता दोषा भिषग्भिः पारदे यदि ।
तथाप्येते त्रयो दोषा हरणीया विशेषतः ॥ १०० ॥

संस्कारहीनं खलु सूतराजं यस्सेवते तस्य करोति बाधाम् ।
देहस्य नाशं विदधाति नूनं कुष्ठांश्च रोगाञ्जनयेन्नराणाम्॥१०१

१ उपरसाः ।

गन्धो हिङ्गुलमभ्रतालकशिलाः स्रोतोञ्जनं टङ्कणं
राजावर्तकचुम्बकौ स्फुटिकया शङ्खः खटीगैरिकम् ।
कासीसं रसकं कपर्दसिकताबोलाश्च कङ्कुष्ठकं ।
सौराष्ट्री च मता अमी उपरसाः सूतस्य किञ्चिद्गुणैः॥ १०२॥

२ गन्धकम् ।

श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडन्त्या रजसाप्लुतम् ।

---

१ उपरसा गौणरसाः । २ दे० भा० गन्धक । बं० भा० गन्धक । इं० सल्फ्योरिक ।

दुकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ ॥ १०३ ॥
प्रसृतं यद्रजस्तस्माद्गन्धकः समभूत्तदा ।
गन्धको गन्धिकश्चापि गन्धपाषाण इत्यपि ॥ १०४ ॥
सौगन्धिकश्च कथितो वालिर्बलवसापि च ।
चतुर्धा गन्धकः प्रोक्तो रक्तः पीतः सितोऽसितः ॥ १०५ ॥
रक्तो हेमक्रियासूक्तः पीतश्चैव रसायने ।
व्रणादिलेपने श्वेतः कृष्णः श्रेष्ठः सुदुर्लभः ॥ १०६ ॥
गन्धकः कटुकास्तिक्तो वीर्योष्णस्तुवरः सरः ।
पित्तलः कटुकः पाके कण्डूवीसर्पजन्तुजित् ॥ १०७ ॥
हन्ति कुष्ठक्षयप्लीहकफवातान् रसायनः ॥ १०८ ॥
अशोधितो गन्धक एष कुष्ठं करोति तापं विषमं शरीरे ।
सौख्यञ्च रूपञ्च बलं तथौजः शुक्रं निहन्त्येव करोति चामम् ॥

१ हिंगुलम् ।

हिंगुलं दरदं म्लेच्छमिङ्गुलं पूर्णपारदम् ।
मक्षिरङ्गं सुरङ्गं च नाम्ना कर्मारबन्धनम् ॥
दरदस्त्रिविधः प्रोक्तश्चर्मारः शुकतुण्डकः ॥ ११० ॥
हंसपादस्तृतीयः स्याद् गुणवानुत्तरोत्तरम् ।
चर्मारः शुक्लवर्णः स्यात्स पीतः शुकतुण्डकः ॥ १११ ॥
जपाकुसुमसङ्काशो हंसपादो महोत्तमः ।
तिक्तं कषायं कटु हिङ्गुलं स्यान्नेत्रामयघ्नं कफपित्तहारि ।
हल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्च प्लीहामवातौ च गरं निहन्ति १२

दे० भा० शिंगरफ । बं० भा० हिंगुल । फा० सिंग्रफ० । इं० सल्फेरेट ओफक्युरी । हिंगुल-निर्माणम्-अशुद्धपारदं भागं चतुर्भागं तु गंधकम् । उभौ क्षिप्त्वा लोहपात्रे क्षणं मृद्वग्निना पचेत् ॥ कृत्वाथ खंडशस्तत्र काचकूप्यां निरुध्य च । वस्त्रमृत्तिकया सम्यक्काचकूपीं प्रलेपयेत् ॥ सर्वतोऽगुलमानेन[1] छायाशुष्कं तु कारयेत् । वालुकायंत्रगर्भे तु दिनं मृद्वग्निना पचेत् ॥ क्रमवृद्ध्याग्निना पश्चात्पचेद्दिवसपंचकम् । सप्ताहे तु समुद्धृत्य हिंगुलः स्यान्मनोहरः ॥

ऊर्द्धपातनयुक्त्या तु डमरूयन्त्रपाचितम् ।
हिङ्गुलं तस्य सूतं तु शुद्धमेव न शोधयेत् ॥ ११३ ॥

१ अभ्रकम् ।

पुरा वधाय वृत्रस्य वाज्रिणा वज्रमुद्धृतम् ।
विस्फुलिङ्गास्ततस्तस्माद्गगने परिसर्पिताः ॥ ११४ ॥
ते निपेतुर्घनध्वानाः शिखरेषु महीभृताम् ।
तेभ्य एव समुत्पन्नं तत्तद्गिरिषु चाभ्रकम् ॥ ११५ ॥
तद्वज्रं वज्रपातत्वादभ्रमभ्रवोद्भवात् ।
गगनात्स्खलितं यस्माद्गगनं च ततो मतम् ॥ ११६ ॥
विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्तस्माच्चतुर्विधः ।
क्रमेणैव सितं रक्तं पीतं कृष्णं च वर्णतः ॥ ११७ ॥
प्रशस्यते सितं तारे रक्तं तत्तु रसायने ।
पीतं हेमनि कृष्णं तु गदेषु द्युतयेऽपि च ॥ ११८ ॥
पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रं चेति चतुर्विधम् ।
मुञ्चत्यग्नौ विनिक्षिप्तं पिनाकं दलसञ्चयम् ॥ ११९ ॥
अज्ञानाद्भक्षणं तस्य महाकुष्ठप्रदायकम् ।
दर्दुरं त्वग्निनिक्षिप्तं कुरुते दर्दुरध्वनिम् ॥ १२० ॥
गोलकान् बहुशः कृत्वा स स्यान्मृत्युप्रदायकः ।
नागं तु नागवद्ध्वनौ फूत्कारं परिमुञ्चति ॥ १२१ ॥
तद्भक्षितमवश्यं तु विदधाति भगन्दरम् ।
वज्रन्तु वज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौ विकृतिं व्रजेत् ॥ १२२ ॥
सर्वाभ्रेषु वरं वज्रं व्याधिवार्द्धक्यमृत्युहृत् ।
अभ्रमुत्तरशैलोत्थं बहुलत्वं गुणाधिकम् ॥ १२३ ॥
दक्षिणाद्रिभवं स्वल्पसत्त्वमल्पगुणप्रदम् ॥ १२४ ॥
अभ्रं कषायं मधुरं सुशीतमायुःकरं धातुविवर्द्धनं च ।

---

१ दे० भा० अबरख अभ्रख । बं० भा० अभ्र । फा० सितारा जमीन । इं० टाल्क तिलमर । Talk glmmer. ॥

हन्यात्त्रिदोषं व्रणमेहकुष्ठं प्लीहोदरं ग्रंथिविषाक्रिमींश्च॥ १२५॥
रोगान् हंति द्रढयति वपुर्वीर्य्यवृद्धिं विधत्ते
तारुण्याढ्यं रमयति शतं योषितां नित्यमेव ।
दीर्घायुष्काञ्जनयति सुतान् विक्रमैः सिंहतुल्या-
न्मृत्योर्भीतिं हरति सततं सेव्यमानं मृताभ्रम् ॥ १२६ ॥
पीडां विधत्ते विविधां नराणां कुष्ठं क्षयं पांडुगदं च शोथम्।
हृत्पार्श्वपीडां च करोत्यशुद्धमभ्रं त्वसिद्धं गुरुतापदं स्यात्॥

१ हरितालम् ।

हरितालं तु तालं स्यादालं तालकमित्यपि ।
हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राख्यं पिण्डसंज्ञकम् ॥ १२८ ॥
तयोराद्यं गुणैः श्रेष्ठं ततो हीनगुणं परम् ।
स्वर्णवर्णं गुरु स्निग्धं सपत्रं चाभ्रपत्रवत् ॥ १२९ ॥
पत्राख्यं तालकं विंद्याद् गुणाढ्यं तद्रसायनम् ।
निष्पत्रं पिण्डसदृशं स्वल्पसत्त्वं तथा गुरु ॥ १३० ॥
स्त्रीपुष्पहारकं स्वल्पगुणं तत्पिण्डतालकम् ।
हरितालं कटु स्निग्धं कषायोष्णं हरेद्विषम् ॥
कण्डूकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् ॥ १३१ ॥
हरति च हरितालं चारुतां देहजातां
सृजति च बहुतापानङ्गसङ्कोचपीडाम् ।
वितरति कफवातौ कुष्ठरोगं विदध्या-
दिदमाशितमशुद्धं मारितं चाप्यसम्यक् ॥ १३२ ॥

---

१ दे० भा० हरताल । वं० भा० हरिताल । हतेल । शोधितं हरितालं तु कांतिवीर्यविवर्द्धनम् । कुष्ठादिकफरोगघ्नं जरामृत्युहरं परम् ॥ अशीतिवातान्कफपित्तरोगान् कुष्ठानि मेहांश्च गुदामयांश्च । निहंति गुञ्जार्द्धमितं तु तालं षड्वल्लखंडेन समं प्रयुक्तम् ॥ पिंजरं पित्तलं तालं मनोज्ञं हरितालकम् । छत्रांगकांचनरसं गोदन्तं नटमण्डनम् ॥ तालकस्यैव भेदोऽस्ति मनागेव तदन्तरम् । तालकं चातिपीतं स्याद्वेदरक्ता मनःशिला ॥ हरितालोऽष्टधा प्रोक्तो गोदन्तः सर्वतोऽधिकः । तदभावे तु पत्राख्यो वयसः स्थापनः परः ॥ हरितालं हरेर्वीर्यं लक्ष्मीवीर्यं मनःशिला । पारदं शिववीर्यं स्याद्गन्धकं पार्वतीरजः ॥

१ मनःशिला ।

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्व नागजिह्विका ।
नैपाली कुनटी गोला शिला दिव्यौषधिः स्मृता ॥ १३३ ॥
मनःशिला गुरुर्वर्ण्या सरोष्णा लेखना कटुः ।
तिक्ता स्निग्धा विषश्वासकासभूतकफास्रनुत् ॥ १३४ ॥
मनःशिला मंदबलं करोति जन्तुं ध्रुवं शोधनमन्तरेण ।
मलानुबन्धं किल मूत्ररोधं सशर्करं कृच्छ्रगदं च कुर्यात् ३५

२ अंजनं सौवीरम् ।

अञ्जनं यामुनं चापि कापोताञ्जनमित्यपि ।
तत्तु स्रोतोंजनं कृष्णं सौवीरं श्वेतमीरितम् ॥ १३६ ॥
वल्मीकशिखराकारं भिन्नमंजनसन्निभम् ।
घृष्टं तु गैरिकाकारमेतत्स्रोतोञ्जनं स्मृतम् ॥ १३७ ॥
स्रोतोञ्जनसमं ज्ञेयं सौवीरं तत्तु पाण्डुरम् ।
स्रोतोंजनं स्मृतं स्वादु चक्षुष्यं कफपित्तनुत् ॥ १३८ ॥
कषायं लेखनं स्निग्धं ग्राहि च्छर्दिविषापहम् ।
सिध्मक्षयास्रहच्छीतं सेवनीयं सदा बुधैः ॥ १३९ ॥
स्रोतोंजनगुणाः सर्वे सौवीरेऽपि मता बुधैः ।
किंतु द्वयोरंजनयोः श्रेष्ठं स्रोतोंजनं स्मृतम् ॥ १४० ॥

३ टंकणम् ।

टङ्कणोऽग्निकरो रूक्षः कफघ्नो वातपित्तकृत् ।

४ स्फुटिका ।

स्फुटी च स्फुटिका प्रोक्ता श्वेता च शुभरङ्गदा ॥ १४१ ॥
दृढरङ्गा रंगदृढा दृढा रंगापि कथ्यते ।
स्फुटिका तु कषायोष्णा वातपित्तकफव्रणान् ॥ १४२ ॥
निहन्ति श्वित्रवीसर्पान् योनिसंकोचकारिणी ।

---

१ दे० भा० मनशिल, मैनशिल । बं०भा० मनछाल । २ दे० भा० सुरमा, सुफेदसुरमा । बं० भा० श्वेतसुरमा, नीलासुरमा । फा० सुरमा, अस्फहानी । इं० सल्फूरेट आफ आंटीमनी । Salffurat of antimony ३ दे० भा० सुहागा अयमुपरसत्वात् पुनरुक्तः । ४ दे० भा० टकडी । लाल, सफेद । बं० भा० फटकिरी ।

१ राजावर्तः ।

राजावर्तः कटुस्तिक्तः शिशिरः पित्तनाशनः ॥ १४३ ॥
राजावर्तः प्रमेहघ्नश्छर्दिहिक्कानिवारणः ।

२ चुम्बकः ।

चुम्बकः कांतपाषाणोऽयस्कांतो लोहकर्षकः ॥ १४४ ॥
चुम्बको लेखनः शीतो मेदोविषगरापहः ।

३ गैरिकम् ।

गैरिकं रक्तधातुश्च गैरेयं गिरिजं तथा ॥ १४५ ॥
स्वर्णगैरिकमन्यत्तु ततो रक्ततरं हि तत् ।
गैरिकद्वितयं स्निग्धं मधुरं तुवरं हिमम् ॥ १४६ ॥
चक्षुष्यं दाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ।

४ खटी गौरखटी ।

खटिका कठिनी चापि लेखनी च निगद्यते ॥ १४७ ॥
खटिका दाहजिच्छीता मधुरा विषशोथजित् ।
लेपादेते गुणाः प्रोक्ता भक्षिता मृत्तिकासमा ॥ १४८ ॥
खटी गौरखटी द्वे च गुणैस्तुल्ये प्रकीर्तिते ।

५ वालुका ।

वालुका सिकता प्रोक्ता शर्करा रेतजाऽपि च ॥ १४९ ॥
वालुका लेखनी शीता व्रणोरःक्षतनाशिनी ।

६ खर्परम् ।

खर्परं तुत्थकं तुत्थादन्यत्तद्रसकं स्मृतम् ॥ १५० ॥
ये गुणास्तुत्थके प्रोक्तास्ते गुणा रसके स्मृताः ॥

---

१ दे० भा० लाजवर्द । पाषाण । २ दे० भाषा चुम्बक पत्थर । ३ दे० भाषा गेरी, स्वर्ण-गेरी । बं० भाषा गिरी माटो, फा० गिलेसुर्खमिश्री । इं० ओकररेलंबरस्टोन । Ocarrail amder stone. ४ दे० भाषा खडाकटी, खडी, गौरखडी, बं० भाषा खडिमाटी, चाखडी । फा० गिले सुफेद गिले खलया । इं० पाइप क्ले । Piap clay. ५ दे० भाषा-रेत, बं० भाषा-वाली । फा०-रेग । इं० सैंड, Sand. ६ दे० भाषा खपरिला । बं भा०-खापर । फा० सङ्गवसरी, इं० ब्लाकजाक Black sok.

१ कासीसम् ।

कासीसं धातुकासीसं पांशुकासीसमित्यपि ॥ १५१ ॥
तदेव किंचित्पीतं तु पुष्पकासीसमुच्यते ।
कासीसमम्लमुष्णं च तिक्तं च तुवरं तथा ॥ १५२ ॥
वातश्लेष्महरं केश्यं नेत्रकण्डूविषप्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनं परिकीर्तितम् ॥ १५३ ॥

२ सौराष्ट्री ।

सौराष्ट्री तुवरी काली मृत्तालकसुराष्ट्रजे ।
आढकी चापि सा ख्याता मृत्स्ना च सुरमृत्तिका॥१५४॥
स्फुटिकाया गुणाः सर्वे सौराष्ट्र्या अपि कीर्तिताः ।

कृष्णमृत्तिका ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मदाहनुत् ॥ १५५ ॥

३ कपर्दकम् ।

कपर्दको वराटश्च कपर्दी च वराटिका ।
कपर्दिका हिमा नेत्रहिता स्फोटक्षयापहा ॥ १५६ ॥
कर्णस्रावाग्निमांद्यघ्नी पित्तास्रकफनाशिनी ।

४ शंखम् ।

शङ्खः समुद्रजः कम्बुः सुनादः पावनध्वनिः ॥ १५७ ॥
शंखो नेत्र्यो हिमः शीतो लघुः पित्तकफास्रजित् ।

५ बोलम् ।

बोलं गन्धरसं प्राणपिण्डगोपरसाः स्मृताः ॥ १५८ ॥
बोलं रक्तहरं शीतं मेध्यं दीपनपाचनम् ।

---

१ दे० भा० कसीस, पुष्पकसीस । बं० भा० धातुकासीस । पुष्पकासीस । फा० जाकेसुब्ज । इं० सल्फेट ऑफ आयर्न Salfet of iron । भस्मबन्मृत्तिकाम्लं च कासीसन्धातुरित्यपि । तदेव किंचित्पीतं तु पुष्पकासीसमुच्यते । २ दे० भा० सोरटामाटी । बं० भाषा सौराष्ट्रदेशीयसुगन्धिमृत्तिका । ३ दे० भा० कौडी । बं० भा० कडी । इं० कवरीझ Coλe rijh. सार्द्धनिष्कप्रमाणासौ श्रेष्ठा योगेषु योजयेत् । निष्कप्रमाणा मध्या सा हीना पादोननिष्कका ॥ ४ दे०भा० शंख । बं०भा० शंख शाख । इं० कौंच Koncq. ५ दे० भा०हीराबोल । बीजाबोल । बं भा० मधुरस इं० मिही । Mihi.

मधुरं कटु तिक्तं च दाहस्वेदत्रिदोषजित् ॥ १५९ ॥
ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

१ कंकुष्ठम् ।

तत्रैकं नलकाख्यं स्यात्तदन्यद्रेणुकं स्मृतम् ॥ १६० ॥
हिमवत्पादशिखरे[2] कङ्कुष्ठमुपजायते ।
तत्रैकं रक्तकालं स्यादन्यद्धेमप्रभं स्मृतम् ॥ १६१ ॥
पीतप्रभं गुरु स्निग्धं श्रेष्ठं कङ्कुष्ठमादिशेत् ।
श्यामं रक्तं लघु त्यक्तसत्त्वं नेष्टं हरेणुकम् ॥ १६२ ॥
कङ्कुष्ठं रेचनं तिक्तं कटूष्णं वर्णकारकम् ॥ १६३ ॥
कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ।

रत्ननिरुक्तिः ।

धनार्थिनो जनाः सर्वे रमन्तेऽस्मिन्नतीव यत् ॥ १६४ ॥
ततो रत्नमिति प्रोक्तं शब्दशास्त्रविशारदैः ।

रत्ननाम ।

रत्नं क्लीबे मणिः पुंसि स्त्रियामपि निगद्यते ॥ १६५ ॥
तत्तु पाषाणभेदोऽस्ति मुक्तादि च तदुच्यते ।
अमरः रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥१६६॥
रत्नं[3] गारुत्मतं पुष्परागो माणिक्यमेव च ।
इन्द्रनीलश्च गोमेदं तथा वैदूर्य्यमित्यपि ॥ १६७ ॥
मौक्तिकं विद्रुमश्चेति रत्नान्युक्तानि वै नव ।

विष्णुधर्मोत्तरेऽपि–

मुक्ताफलं हीरकश्च वैदूर्यं पद्मरागकम् ॥ १६८ ॥
पुष्पराजं च गोमेदं नीलं गारुत्मतं तथा ।
प्रवालयुक्तान्येतानि महारत्नानि वै नव ॥ १६९ ॥

---

१ दे० भा० मुरदासंग । पा० भा० मुरदासंग । २ हिमवतः प्रत्यन्तपर्वतानां शिखरे ॥ ३ दे० भा० रत्नम्–वज्रं–हीरा । गारुत्मतम्–पन्ना, हारेन्मणिः–पद्मरागः । लाल । पुष्पराजः–पुखराज । माणिक्यम्–चूनी । इन्द्रनीलम्–नीलम् । गोमेदः–पीतरत्नम् । वैदूर्यम्–केतुग्रहवल्लभम् । रेणुकं नलकाख्यं च पाठान्तरम् ।

१ हीरकम् ।

हीरकः पुंसि वज्रोऽस्त्री चन्द्रो मणिवरश्च सः ॥
स तु श्वेतः स्मृतो विप्रो लोहितः क्षत्रियः स्मृतः ॥ १७० ॥
पीतो वैश्योऽसितः शूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्च सः ।
रसायने मतो विप्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ १७१ ॥
क्षत्रियो व्याधिविध्वंसी जरामृत्युहरः स्मृतः ।
वैश्यो धनप्रदः प्रोक्तस्तथा देहस्य दार्ढ्यकृत् ॥ १७२ ॥
शूद्रो नाशयति व्याधीन् वयःस्तम्भं करोति च ।
पुंस्त्रीनपुंसकानीह लक्षणीयानि लक्षणैः ॥ १७३ ॥
सुवृत्ताः फलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ता बृहत्तराः ।
पुरुषास्ते समाख्याता रेखाबिन्दुविवर्जिताः ॥ १७४ ॥
रेखाबिन्दुसमायुक्ताः षडस्रास्ते स्त्रियः स्मृताः ।
त्रिकोणाश्च सुदीर्घास्ते विज्ञेयाश्च नपुंसकाः ॥ १७५ ॥
तेषु स्युः पुरुषाः श्रेष्ठा रसबन्धनकारिणः ।
स्त्रियः कुर्वन्ति कामस्य कान्तिं स्त्रीणां सुखप्रदाः ॥१७६॥
नपुंसकास्त्ववीर्याः स्युरकामाः सत्त्ववर्जिताः ।
स्त्रियः स्त्रीभ्यः प्रदातव्याः क्लीबं क्लीबे प्रयोजयेत् ॥१७७॥
सर्वेभ्यः सर्वदा देयाः पुरुषा वीर्यवर्द्धनाः ।
अशुद्धं कुरुते वज्रं कुष्ठं पार्श्वव्यथां तथा ॥ १७८ ॥
पाण्डुतां पङ्गुलत्वं च तस्मात्संशोध्य मारयेत् ।
आयुःपुष्टिं बलं वीर्यं वर्णं सौख्यं करोति च ॥ १७९ ॥
सेवितं सर्वरोगघ्नं मृतं वज्रं न संशयः ।

२ हरितम् ।

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ॥ १८० ॥

---

१ दे० भा० हीरा । बं भा० हिरे । फा० इल्माश । इं० डाएमण्ड ॥ Diamond वज्रम्-वज्रं समीरकफपित्तगदांश्च हन्याद्वज्रोपमं च कुरुते वपुरुत्तमाश्रि । शोथक्षयभ्रमभगन्दर-मेहमेदःपाण्डूदरश्वयथुहारि च षड्रसाढ्यम् ॥ २ दे भा० पन्ना बं० पन्ना, । फा० जुमुर्रद । इं० इमरांलड् ।

१ माणिक्यम्।

माणिक्यं पद्मरागः स्यात् शोणरत्नं च लोहितम्।

२ पुष्परागः।

पुष्परागो मञ्जुमणिः स्याद्वाचस्पतिवल्लभः॥ १८१॥

३ इन्द्रनीलं, ४ गोमेदः।

नीलं तथेन्द्रनीलं च गोमेदः पीतरत्नकम्।

५ वैदूर्य्यम्।

वैदूर्यं दूरजं रत्नं स्यात्केतुग्रहवल्लभम्॥ १८२॥

६ मौक्तिकम्।

मौक्तिकं शौक्तिकं मुक्ता तथा मुक्ताफलं च तत्।
शुक्तिः शङ्खो गजः क्रोडः फणिर्मत्स्यश्च दर्दुरः॥ १८३॥
वेणुरेते समाख्यातास्तज्ज्ञैर्मौक्तिकयोनयः।
मौक्तिकं शीतलं वृष्यं चक्षुष्यं बलपुष्टिदम्॥ १८४॥

७ प्रवालः।

पुंसि क्लीबे प्रवालः स्यात्पुमानेव तु विद्रुमः।
रत्नानि भक्षितानि स्युर्मधुराणि सराणि च॥ १८५॥
चक्षुष्याणि च शीतानि विषघ्नानि धृतानि च।
माङ्गल्यानि मनोज्ञानि ग्रहदोषहराणि च॥ १८६॥

किं रत्नं कस्य ग्रहस्य प्रीतिकरमित्युक्तं रत्नमालायाम्–

माणिक्यं तरणेः सुजातममलं मुक्ताफलं शीतगो-

---

१ दे० भा० लाल। बं० भाषा माणिक। इं० रुबी Robbi। २ दे० भा० पुखराज। बं० भा० पुष्पराग। इं० टोपाज Tolals ३ दे० भा० नीलम। बं० भा० नलिमणि। इं० सेफायर Safiar ४ दे० भा० गोमेद। बं० भा० औनिक्स। ५ दे० भा० लहसुनिया। बं० भा० वैदूर्य्य। इं० फेटसआई। ६ दे०भा० मोती। बं० भा० मुक्ता। फा० मखारिद। इं० पर्ल Pearl विद्रुमं सर्वदोषघ्नं दीपनं रुचिपुष्टिदम्। क्षयपाण्डुज्वरश्वासकासमेदोगदाञ्जयेत्॥ श्वेतं स्निग्धमतीव बन्धुरतरं स्यात्पारसीकोद्भवं रूक्षं काञ्चनवर्णसङ्करयुतं स्याद्बार्बरं मौक्तिकम्॥ शोणं तूर्मजसम्भवं विदुरतिस्निग्धं तथा देशजं चातुर्वर्ण्ययुतं सुलक्षणमिति श्लक्ष्णं कविश्री-करम्॥ ७ दे० भा० मूङ्गा, गुलियां। बं० भा० मुङ्गा। फा० मिरजान्, इं० रेड कोरल् Red coral

माहेयस्य तु विद्रुमो निगदितः सौम्यस्य गारुत्मतम् ।
देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्य्यस्य वज्रं शने-
र्नीलं निर्मलमन्ययोर्निगदिते गोमेदवैदूर्यके ॥ १८७ ॥

१ उपरत्नानि ।

उपरत्नानि काचेश्च[2] कर्पूराश्मा[3] कपर्दिका[4] ।
मुक्ता[5] शुक्तिस्तथा शंख इत्यादीनि बहून्यपि ॥ १८८ ॥

उपरत्नत्वादिमौ कपर्दशंखौ पुनरुक्तौ ।

गुणा यथैव रत्नानामुपरत्नेषु ते तथा ।
किन्तु किंचित्ततो हीना विशेषोऽयमुदाहृतः ॥ १८९ ॥

विषम् ।

विषं तु गरलं क्ष्वेडस्तस्य भेदानुदाहरे ।
वत्सनाभः सहारिद्रः शक्तुकश्च प्रदीपनः ॥ १९० ॥
सौराष्ट्रिकः शृङ्गिकश्च कालकूटस्तथैव च ।
हालाहलो ब्रह्मपुत्रो विषभेदा अमी नव ॥ १९१ ॥

५ वत्सनाभः ।

सिन्धुवारसदृक्पत्रो वत्सनाभ्याकृतिस्तथा ।
यत्पार्श्वे न तरोर्वृद्धिर्वत्सनाभः स भाषितः ॥ १९२ ॥
हारिद्रः-हरिद्रातुल्यमूलो यो हारिद्रः स उदाहृतः ।
शक्तुकः-यद्ग्रन्थिः शक्तुकेनेव पूर्णमध्यः स शक्तुकः॥१९३॥

प्रदीपनः ।

वर्णतो लोहितो यः स्यादीप्तिमान् दहनप्रभः ।

---

१ उपरत्नानि गौणरत्नानि । २ दे० भा० काँच । बं० भा० काच । फा०आबगीना । इं०-ग्लास Glass काचा तु सारका लघ्वी व्रणनेत्रहितावहा । लेखनी शूलहृत्प्रोक्ता वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ ३ दे० भा० रत्नकपूर । कपूरनिआ । ४ दे० भा० मोतीवाली सीपी । बं०भा० शामुक झिनुक । इं० ओईसूलरशेल । मेदजलसीपी । मुक्ताशुक्तिः कटुः स्निग्धा श्वासह्रद्रोगनाशिनी । शूलप्रसमनी रुच्या मधुरा दीपनी परा ॥ ५ दे० भा० बचनाग, मीठा तेलिया । बं० भा० काटविष । फा० जहर । इं० एकोनाईट Aconight ।

महादाहकरः पूर्वैः कथितः स प्रदीपनः ॥ १९४ ॥
सौराष्ट्रिकः-सुराष्ट्रविषये यः स्यात्स सौराष्ट्रिक उच्यते ।

१ शृंगिकः ।

यस्मिन् गोशृङ्गके बद्धे दुग्धं भवति लोहितम् ॥ १९५ ॥
स शृंगिक इति प्रोक्तो द्रव्यतत्त्वविशारदैः ।

कालकूटः ।

देवासुररणे देवैर्हतस्य पृथुमालिनः ॥ १९६ ॥
दैत्यस्य रुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः ।
निर्यासः कालकूटोऽस्य मुनिभिः परिकीर्तितः ॥ १९७ ॥
सोऽहिक्षेत्रे शृंगवेरे कोंकणे मलये भवेत् ॥ १९८ ॥

हालाहलः ।

गोस्तनाभफलो गुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा ॥ १९९ ॥
तेजसा यस्य दह्यन्ते समीपस्था द्रुमादयः ।
असौ हालाहलो ज्ञेयः किष्किन्धायां हिमालये ॥ २०० ॥
दक्षिणाब्धितटे देशे कोंकणेऽपि च जायते ।

२ ब्रह्मपुत्रः ।

वर्णतः कपिलो यः स्यात्तथा भवति सारतः ॥ २०१ ॥
ब्रह्मपुत्रः स विज्ञेयो जायते मलयाचले ।
ब्राह्मणः पाण्डुरस्तेषु क्षत्रियो लोहितप्रभः ॥ २०२ ॥
वैश्यः पीतोऽसितः शूद्रो विष उक्तश्चतुर्विधः ।

---

१ दे० भा० सिंगियाविष । शुद्धिः-विषं तु खंडशः कृत्वा वस्त्रखंडेन बन्धयेत् । गोमूत्रमध्ये निक्षिप्य स्थापयेदातपे त्र्यहम् ॥ गोमूत्रं च प्रदातव्यं नूतनं प्रत्यहं बुधैः । त्र्यहेऽतीते समुद्धृत्य शोषयेन्मृदु पेषयेत् ॥ शुद्ध्यत्येवं विषं तच्च योग्यं भवति चार्तिजित् । एकाष्टकं भवेद्यावद्भ्यस्तं तिलमात्रया ॥ सर्वरोगहरं नृणां जायते शोधितं विषम् । अतिमात्रं यदा भुक्तं तदाज्यं टंकणं पिबेत् । विषं स वेगतो नाशमाशु प्रोप्नोति निश्चितम् ॥ २ दे० भा०-सिंमलखार । संखिया । फा० मिर्गवमूष । इं० ओफेसंड ऑफ आर्सेनिक Oeasiap of arsenik ।

रसायने विषं विप्रं क्षत्रियं देहपुष्टये ॥ २०३ ॥
वैश्यं कुष्ठविनाशाय शूद्रं दद्याद्वधाय हि ।
विषं प्राणहरं प्रोक्तं व्यवायि[1] च विकाशि[2] च ॥ २०४ ॥
आग्नेयं[3] वातकफहृद्योगवाहि[4] मदावहम्[5] ।
तदेव युक्तियुक्तं तु प्राणदायि रसायनम् ॥ २०५ ॥
योगवाहि त्रिदोषघ्नं बृंहणं वीर्यवर्द्धनम् ।
ये दुर्गुणा विषेऽशुद्धे ते स्युर्हीना विशोधनात् ॥ २०६ ॥
तस्माद्विषं प्रयोगेषु शोधयित्वा प्रयोजयेत् ।

६ उपविषाणि ।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लाङ्गलीकरवीरकौ ॥ २०७ ॥
गुञ्जाहिफेनो धत्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥ २०८ ॥

(एषां गुणास्तत्र तत्र द्रष्टव्याः ।)

इति धातुवर्गः ।

---

१ सकसकायव्यापनपूर्वकं गमनशीलम् । २ विकाशि ओजःशोषणपूर्वकं संधिबंधनशिथिलकरणम् । ३ आग्नेयम्-अधिकाग्न्यंशम् । ४ योगवाहि-संगिगुणग्राहकम् । ५ मदावहम्-तमोगुणाधिक्येन बुद्धिविध्वंसकम् ॥ ६ उपविषाणि-गौणविषाणि । दोलायन्त्रेण पयसि स्थापयित्वा पचेद्दिनम् । एतेनैव विशुध्यन्ति सर्वाण्युपविषाणि च ॥ चिञ्चापत्ररसे कर्षे वस्त्रपूते पलद्वयम् । स्नुहीक्षीरं रौद्रयन्त्रे भावयेद्यत्नतः सुधीः ॥ द्रवे शुष्के समुत्तार्य्य सर्वरोगेषु योजयेत् ॥ शेषाणामुपविषाणां शुद्धिस्तत्र तत्र द्रष्टव्या ॥

धान्यवर्गः।

शालिधान्यं व्रीहिधान्यं शूकधान्यं तृतीयकम्।
शिम्बीधान्यं क्षुद्रधान्यमित्युक्तं धान्यपञ्चकम् ॥ १ ॥
शालयो रक्तशाल्याद्या व्रीहयः षष्टिकादयः।
यवादिकं शूकधान्यं मुद्गाद्यं शिम्बिधान्यकम् ॥ २ ॥
कङ्ग्वादिकं क्षुद्रधान्यं तृणधान्यं च तत्स्मृतम्।
कण्डनेन विना शुक्ला हैमन्ताः शालयः स्मृताः ॥ ३ ॥

१ शालिः।

रक्तशालिः सकलमः पाण्डुकः शकुनाहृतः।
सुगन्धकः कर्दमको महाशालिश्च दूषकः ॥ ४ ॥
पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथा महिषमस्तकः।
दीर्घशूकः काञ्चनको हायनो लोध्रपुष्पकः ॥ ५ ॥
इत्याद्याः शालयस्सन्ति बहवो बहुदेशजाः।
ग्रन्थविस्तारभीतेस्ते समस्ता नात्र भाषिताः ॥ ६ ॥
शालयो मधुराः स्निग्धा बल्या बद्धाल्पवर्चसः।
कषाया लघवो रुच्याः स्वर्य्या वृष्याश्च बृंहणाः ॥ ७ ॥
अल्पानिलकफाः शीताः पित्तघ्ना मूत्रलास्तथा।
शालयो दग्धमृज्जाताः कषाया लघुपाकिनः ॥ ८ ॥
सृष्टमूत्रपुरीषाश्च रूक्षाः श्लेष्मापकर्षणाः।
कैदारा[1] वातपित्तघ्ना गुरवः कफशुक्रलाः ॥ ९ ॥
कषाया अल्पवर्चस्का मध्याश्चैव बलावहाः।
स्थलज[2]जाः स्वादवः पित्तकफघ्ना वातवर्द्धिदाः ॥ १० ॥
किंचित्तिक्ताः कषायाश्च विपाके कटुका अपि।
वापिता मधुरा वृष्या बल्याः पित्तप्रणाशनाः ॥ ११ ॥

---

१ दे०भा० चावल। बं०भा० शालिधान्य। फा० विरज। इं० Rice। २ कृष्टक्षेत्रजाः।
३ अकृष्टभूमिजाः स्वयंजाताः।

श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काः कषाया गुरवो हिमाः ।
वापितेभ्यो गुणैः किंचिद्धीनाः प्रोक्ता अवापिताः ॥ १२ ॥
रोपितास्तु नवा वृष्याः पुराणा लघवः स्मृताः ।
तेभ्यस्तु रोपिता भूयः शीघ्रपाका गुणाधिकाः ॥ १३ ॥
छिन्नरूढा हिमा रूक्षा बल्याः पित्तकफापहाः ।
बद्धविट्काः कषायाश्च लघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥ १४ ॥

१ रक्तशालिः ।

रक्तशालिर्वरस्तेषु बल्यो वर्ण्योऽस्रदोषजित् ।
चक्षुष्यो मूत्रलः स्वर्य्यः शुक्रलस्तृड्ज्वरापहः ॥ १५ ॥
विषव्रणश्वासकासदाहनुद्वह्निपुष्टिदः ।
तस्मादल्पान्तरगुणाः शालयो महदादयः ॥ १६ ॥

व्रीहिधान्यम् ।

वार्षिकाः कण्डिताः शुक्ला व्रीहयश्चिरपाकिनः ।
कृष्णव्रीहिः पाटलश्च कुक्कुटाण्डक इत्यपि ॥ १७ ॥
शालामुखो जन्तुमुख इत्याद्या व्रीहयः स्मृताः ।
कुक्कुटाण्डाकृतिर्व्रीहिः कुक्कुटाण्डक उच्यते ॥ १८ ॥
कृष्णव्रीहिः स विज्ञेयो यः कृष्णतुषतण्डुलः ।
पाटलः पाटलापुष्पवर्णको व्रीहिरुच्यते ॥ १९ ॥
शालामुखः कृष्णशूकः कृष्णतण्डुल उच्यते ।
लाक्षावर्णं मुखं यस्य ज्ञेयो जतुमुखस्तु सः ॥ २० ॥
व्रीहयः कथिताः पाके मधुरा वीर्य्यतो हिताः ।
अल्पाभिष्यन्दिनो बद्धवर्चस्काः षष्टिकैः समाः ॥ २१ ॥
कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे ।

२ षष्टिकम् ।

गर्भस्था एव ये पाकं यान्ति ते षष्टिका मताः ॥ २२ ॥

---

१ दे० भा० रतुआ मुंजी झोणा । मगध भाषा-दाऊदखानी । २ दे० भा०-धांई चावल साठी चावल ।

षाष्टिकः शतपुष्पश्च प्रमोदकमुकुन्दकौ ।
महाषाष्टिक इत्याद्याः षाष्टिकाः समुदाहृताः ॥ २३ ॥
एतेऽपि व्रीहयः प्रोक्ता व्रीहिलक्षणदर्शनात् ।
षाष्टिका मधुराः शीता लघवो बद्धवर्चसः ॥ २४ ॥
वातपित्तप्रशमनाः शालिभिः सदृशा गुणैः ।
षाष्टिका प्रवरा तेषां लघ्वी स्निग्धा त्रिदोषजित् ॥ २५ ॥
स्वाद्वी मृद्वी ग्राहिणी च बलदा ज्वरहारिणी ।
रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्ततः स्वल्पगुणाः परे ॥ २६ ॥

२ यवः ।

अतियवो निःशूकः स्यात्कृष्णारुणवर्णो यवः ।
निःशूकोऽपि यवः प्रोक्तो धवलाकृतिको महान् ॥ २७ ॥
यवस्तु शीतशूकः स्यान्निःशूकोऽनुयवः स्मृतः ।
तोक्मस्तद्वत्सहरितस्ततः स्वल्पश्च कीर्तितः ॥ २८ ॥
यवः कषायो मधुरः शीतलो लेखनो मृदुः ।
व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रूक्षो मेधाग्निवर्द्धनः ॥ २९ ॥
कटुपाकोऽनभिष्यन्दी स्वर्य्यो बलकरो गुरुः ।
बहुवातमलो वर्णस्थैर्य्यकारी च पिच्छिलः ॥ ३० ॥
कण्ठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदःप्रणाशनः ।
पीनसश्वासकासोरुस्तम्भलोहिततृट्प्रणुत् ॥ ३१ ॥
अस्मादनुयवो न्यूनस्तोक्मो न्यूनतरस्ततः ।

गोधूमः ।

गोधूमः सुमनोऽपि स्यात्त्रिविधः स च कीर्तितः ॥ ३२ ॥
महागोधूम इत्याख्यः पश्चादेशात्समागतः ।

---

१ यो व्रीहिः षष्टिरात्रेण पच्यते स तु षाष्टिकः । स्निग्धो ग्राही गुरुः स्वादुस्त्रिदोषघ्नः स्थिरो हिमः ॥ षष्टिको व्रीहिकः श्रेष्ठो गौरश्चासितगौरतः ॥ २ दे० भा० जौ । निशूक–मुण्डे । वं०–यव तोक्म–हरित शूक । फा० जव । इं० विटरवार्लि पेरलवार्लि ॥ ३ महागोधूमः वातल-गोधूमः । दे० भा० बडानक इति लोके ।

मधुली तु ततः किंचिदल्पा सा मध्यदेशजा ॥ ३३ ॥
निःशूको दीर्घगोधूमः क्वचिन्नन्दीमुखाभिधः ।
गोधूमो मधुरः शीतो वातपित्तहरो गुरुः ॥ ३४ ॥
कफशुक्रप्रदो बल्यः स्निग्धः सन्धानकृत्सरः ।
जीवनो बृंहणो वर्ण्यो व्रण्यो रुच्यः स्थिरत्वकृत् ॥ ३५ ॥
(कफप्रदो नवीनो न तु पुराणः पुराणयवगोधूमक्षौद्रजाङ्गल-
शूल्यभुगिति वाग्भटेन वसन्ते गृहीतत्वात् ।)
मधूली शीतला स्निग्धा पित्तघ्नी मधुरा लघुः ॥ ३६ ॥
शुक्रला बृंहिणी पथ्या तद्वन्नन्दीमुखः स्मृतः ।
शमीजाः शिम्बिजाः शिम्बिभवाः सूपाश्च वैदलाः ॥ ३७ ॥
वैदला मधुरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
वातलाः कफपित्तघ्ना बद्धमूत्रमला हिमाः ॥ ३८ ॥
ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्ये त्वाध्मानकारिणः ।

१ मुद्गः ।

मुद्गो रूक्षो लघुर्ग्राही कफपित्तहरो हिमः ॥ ३९ ॥
स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो ज्वरघ्नो वनजस्तथा ।
मुद्गो बहुविधः श्यामो हरितः पीतकस्तथा ॥ ४० ॥
श्वेतो रक्तश्च तेषां तु पूर्वः पूर्वो लघुः स्मृतः ।
सुश्रुतेन पुनः प्रोक्तो हरितः प्रवरो गुणैः ॥ ४१ ॥
चरकादिभिरप्युक्त एष ह्येव गुणाधिकः ।

२ माषः ।

माषो गुरुः स्वादुपाकः स्निग्धो रुच्योऽनिलापहः ॥ ४२ ॥
स्रंसनस्तर्पणो बल्यः शुक्रलो बृंहणः परः ।
गुदकीलार्दितश्वासपक्तिशूलानि नाशयेत् ।

---

१ दे० भा० मुङ्गी सब्ज । मुङ्गी काली । बं० भा० मुङ्ग । फा० बुनुमाष । इं० ग्रीन ग्रेन । Green Grani. हरित पश्चिमायां, श्वेत पुरैनिआग्रामादौ । रक्त पीत–पुरमण्डलप्रांत-देशे । श्याम उडदी । २ दे० भा० मांह । बं० भा०–माषकलाय । फा० माष । इं० किड-नीवीन kidni deən माषस्तु कुरुविंदः स्याद्धान्यबीरो वृषांकुरः । मांसलश्च बलाढ्यश्च पित्र्यश्च पितृभोजनः ॥

भिन्नमूत्रमलः स्तन्यो मेदःपित्तकफप्रदः ॥ ४३ ॥
कफपित्तकरो माषः कफपित्तकरं दधि ॥ ४४ ॥
कफपित्तकरा मत्स्या वृन्ताकं कफपित्तकृत् ।

१ राजमाषः ।

राजमाषो महामाषश्चपलश्च बलः स्मृतः ॥ ४५ ॥
राजमाषो गुरुः स्वादुस्तुवरस्तर्पणः सरः ।
रूक्षो वातकरो रुच्यः स्तन्यो भूरिमलप्रदः ॥ ४६ ॥
श्वेतो रक्तस्तथा कृष्णस्त्रिविधः स प्रकीर्तितः ।
यो महांस्तेषु भवति स एवोक्तो गुणाधिकः ॥ ४७ ॥

२ निष्पावः ।

निष्पावो राजशिम्बी स्याद्वेल्लकः श्वेतशिम्बकः ।
निष्पावो मधुरो रूक्षो विपाकेऽम्लो गुरुः सरः ॥ ४८ ॥
कषायः स्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबन्धकृत् ।
विदाह्युष्णो विषश्लेष्मशोथहच्छुक्रनाशनः ॥ ४९ ॥

३ मकुष्ठम् ।

मकुष्ठो वनमुद्गः स्यान्मकुष्ठकमुकुष्ठकौ ।
मकुष्ठो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥ ५० ॥
वान्तिजिन्मधुरः पाके कृमिकृज्ज्वरनाशनः ।

४ मसूरः ।

माङ्गल्यको मसूरः स्यान्माङ्गल्या च मसूरिका ॥ ५१ ॥
मसूरो मधुरः पाके संग्राही शीतलो लघुः ।
कफपित्तास्रजिद्रूक्षो वातलो ज्वरनाशनः ॥ ५२ ॥

---

१ दे० भा० रवांह चोला । बं० भा० बोरा । फा० लोमिया । इं० चाईनिझ डोलिकोस् Chingh dolikas । २ दे० भा० बडे मटर । राजशिम्बीबीज । बं० भा० मटेरासु । ३ दे० भा० मोठ । बं० भा० वनमूङ्ग । फा० माषहिन्दी । इं० एकलिनोडे बड किडनीबिन । ४ दे० भा० मसूर । बं० भा० मसूरिकलाय । फा० बुनोसुर्ख । इं० लेंटल Lantil तत्पर्णशाकं तुवरं लघु तिक्तं च कीर्तितम् ।

१ आढकी ।

आढकी तुवरी चापि सा प्रोक्ताशनपुष्पिका ।
आढकी तुवरा रूक्षा मधुरा शीतला लघुः ॥ ५३ ॥
ग्राहिणी वातजननी वर्ण्या पित्तकफास्रजित् ।

२ चणकः ।

चणको हरिमन्थः स्यात्सकलप्रिय इत्यपि ॥ ५४ ॥
चणकः शीतलो रूक्षः पित्तरक्तकफापहः ।
लघुः कषायो विभृम्भी वातलो ज्वरनाशनः ॥ ५५ ॥
स चाङ्गारेण संभृष्टस्तैलभृष्टश्च तद्गुणः ।
आर्द्रभृष्टो बलकरो रोचनश्च प्रकीर्तितः ॥ ५६ ॥
शुष्कभृष्टोऽतिरूक्षः स्याद्वातपित्तप्रकोपनः ।
स्विन्नः पित्तकफं हन्यात्सूपः क्षोभकरो मतः ॥ ५७ ॥
आर्द्रोऽतिकोमलो रुच्यः पित्तशुक्रहरो हितः ।
कषायो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥ ५८ ॥

३ कलायः ।

कलायो वर्तुलः प्रोक्तः सतीनश्च हरेणुकः ।
कलायो मधुरः स्वादुः पाके रूक्षश्च शीतलः ॥ ५९ ॥

४ त्रिपुटः ।

त्रिपुटः कण्टकोऽपि स्यात्कथ्यन्ते तद्गुणा अमी ।
त्रिपुटो मधुरस्तिक्तस्तुवरो रूक्षणो भृशम् ॥ ६० ॥
कफपित्तहरो रुच्यो ग्राहकः शीतलस्तथा ।
किन्तु खञ्जत्वपङ्गुत्वकारी वातातिकोपनः ॥ ६१ ॥

५ कुलत्थः ।

कुलत्थिका कुलत्थश्च कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।

---

१ दे० भा० अरहर । अडअड श्वेत रक्त कृष्ण । बं० भा० आइरि । फा० शाखुल । इं०-पीजीअनपी Pigianpi । २ दे० भा० छोले श्वेत कृष्ण । फा० नखूद । इं० ग्राम Gram पत्रशाकः-रुच्यं चणं कषायं स्याद् दुर्जरं कफवातकृत् । अम्लं विष्टम्भजनकं पित्त-नुद्दन्तशोथहृत् ॥ ३ दे० भा० मटर छोटा । बं० भा० बाटुला मटर । इं० फील्डपी iield pea । ४ दे० भा० दडौ । बं० भा० खेरसारिकलाय । फा० मांसंग जलटान । इं० चिकिलिंग बच Chikiling Wich ५ दे० भा० कुलथी । बं० भा कुलथीकलाय । फा० कल्बित मुखहिंदी इं० दुल्फावर्डडोलीकास ॥

कुलत्थः कटुकः पाके कषायः पित्तरक्तकृत् ॥ ६२ ॥
लघुर्विदाही वीर्योष्णः श्वासकासकफानिलान् ।
हन्ति हिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान् ॥ ६३ ॥
स्वेदसंग्राहको मेदोज्वरक्रिमिहरः परः ।

१ तिलः ।

तिलः कृष्णः सितो रक्तः स वन्योऽल्पतिलः स्मृतः ॥ ६४ ॥
तिलो रसे कटुस्तिक्तो मधुरस्तुवरो गुरुः ।
विपाके कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः कफपित्तनुत् ॥ ६५ ॥
बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः ।
दन्त्योऽल्पमूत्रकृद् ग्राही वातघ्नोऽग्निमतिप्रदः ॥ ६६ ॥
कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लो वै मध्यमः स्मृतः ।
अन्यो हीनतरः प्रोक्तस्तज्ज्ञै रक्तादिकास्तिलः ॥ ६७ ॥

२ अतसी ।

अतसी नीलपुष्पी च पार्वती स्यादुमा क्षुमा ।
अतसी मधुरा तिक्ता स्निग्धा पाके कटुर्गुरुः ॥ ६८ ॥
अतसी शुक्रवातघ्नी कफपित्तविनाशिनी ।

३ तुवरी ।

तुवरी ग्राहिणी प्रोक्ता लघ्वी कफविषास्रजित् ॥ ६९ ॥

४ गौरसर्षपः ।

तीक्ष्णोष्णा वह्निदा कंडूकुष्ठकोष्ठक्रिमिप्रणुत् ।
सर्षपः कटुकः स्नेहस्तन्तुभश्च कदम्बकः ॥ ७० ॥
गौरस्तु सर्षपः प्राज्ञैः सिद्धार्थ इति कथ्यते ।
सर्षपस्तु रसे पाके कटुः स्निग्धः सतिक्तकः ॥ ७१ ॥

---

१ दे० भा० तिली । बं० भा० तिलगाछ । फा० कुंजद । इं० सिसीमनजिरसीडस् Sisi! mangier seeds तिलस्तु होमधान्यं च जटिलस्तु वनोद्भवः ॥ २ दे० भा० अलसी । बं० भा० मसिनी तिसी । फा० तुखमे कतात । इं० कामन ल्फेक्षसीड । Common flacx seed ३ दे० भा० तारामीरा, तरावा । ४ दे० भा० सरों, रक्तसरों, पीली सरों । बं० भा० सरिषा, श्वेत सर्षे । फा० सर्षफ । इं० सिनापिस आल्वा Sinapisalwa

तीक्ष्णोष्णः कफवातघ्नो रक्तपित्ताग्निवर्द्धनः ।
रक्षोहरो जयेत्कंडूकुष्ठकोष्ठक्रिमिग्रहान् ॥ ७२ ॥
यथा रक्तस्तथा गौरः किंतु गौरो वरो मतः ।

१ राजिका ।

राजी तु राजिका तीक्ष्णगन्धा क्षुज्जनकासुरी ॥ ७३ ॥
क्षवः क्षुधाभिजनकः कृष्णिका कृष्णसर्षपः ।
राजिका कफपित्तघ्नी तीक्ष्णोष्णा रक्तपित्तकृत् ॥ ७४ ॥
किञ्चिद्वृक्षाग्निदा कण्डूकुष्ठकोष्ठक्रिमीन् हरेत् ।
अतितीक्ष्णा विशेषेण तद्वत्कृष्णापि राजिका ॥ ७५ ॥
सरा हिमा गुरुर्ग्राही तत्पुष्पं प्रदरास्रजित् ।

क्षुद्रधान्यम् ।

क्षुद्रधान्यं कुधान्यं च तृणधान्यामिति स्मृतम् ॥ ७६ ॥
क्षुद्रधान्यमनुष्णं स्यात्कषायं लघु लेखनम् ।
मधुरं कटुकं पाके रूक्षं च क्लेदशोषकम् ॥ ७७ ॥
वातकृद्वर्चविट्कं च पित्तरक्तकफापहम् ।

२ कंगुः ।

स्त्रियां कङ्गुप्रियंगू द्वे कृष्णा रक्ता सिता तथा ॥ ७८ ॥
पीता चतुर्विधा कङ्गुस्तासां पीता वरा स्मृता ।
कङ्गुस्तु भग्नसन्धानवातकृद् बृंहणी गुरुः ॥ ७९ ॥
रूक्षा श्लेष्महराऽतीव वाजिनां गुणकृद् भृशम् ।

३ चीनकः ।

चीनकः कङ्गुभेदोऽस्ति स ज्ञेयः कङ्गुवद् गुणैः ॥ ८० ॥

४ श्यामाकः ।

श्यामाकः शोषणो रूक्षो वातलः कफपित्तहृत् ।

---

१ दे० भा० राई । बं० भा० राई सर्षे । इं० मसटर्डसीडस् । mustard seeds
२ दे० भा० कंगनी । ब० भा० कांनिधान । फा० गल । ३ दे० भा० चीना । बं० भा० चिने । फा० उरजान । इं० मीलेट mitcat चीनकः काककंगुश्च श्लेष्णः श्लक्ष्णकः स्मृतः ।
४ दे० भा० सुवांक । फा० श्यामाख । वं० भा० शामाधान ।

१ कोद्रवः ।

कोद्रवः कोरदूषः स्यादुद्दालो वनकोद्रवः ॥ ८१ ॥
कोद्रवो वातलो ग्राही हिमः पित्तकफापहः ।
उद्दालस्तु भवेदुष्णो ग्राही वातकरो भृशम् ॥ ८२ ॥

शरबीजम् ।

चारुकः शरबीजं स्यात्कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।
चारुको मधुरो रूक्षो रक्तपित्तकफापहः ॥ ८३ ॥
शीतो लघुरवृष्यश्च कषायो वातकोपनः ।

वंशबीजम् ।

यवा वंशभवा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ॥ ८४ ॥
बद्धमूत्राः कफघ्नाश्च वातपित्तकराः सराः ।

२ कुसुम्भबीजम् ।

कुसुम्भबीजं वरटा सैव प्रोक्ता वराटिका ॥ ८५ ॥
वरटा मधुरा स्निग्धा रक्तपित्तकफापहा ।
कषाया शीतला गुर्वी स्यादवृष्याऽनिलापहा ॥ ८६ ॥

३ गवेधुः ।

गवेधुका तु विद्वद्भिर्गवेधुः कथिता स्त्रियाम् ।
गवेधुः कटुका स्वाद्वी काश्यैकृत्कफनाशिनी ॥ ८७ ॥

४ नीवारः ।

प्रसाधिका तु नीवारस्तृणान्नमिति च स्मृतम् ।
नीवारः शीतलो ग्राही पित्तघ्नः कफवातकृत् ॥ ८८ ॥

यवनालः ।

यवनालो हिमः स्वादुर्लोहितः श्लेष्मपित्तजित् ।
अवृष्यस्तुवरो रूक्षः क्लेदकृत्कथितो लघुः ॥ ८९ ॥

---

१ दे० भा० कोदों । । वं० भा० कोदों धान्यम् । इं० पकचर्डपासपेलें । श्यामाकः श्यामकः श्यामस्त्रिबीजः स्यादविप्रियः । सुकुमारो राजधान्यं तृणबीजोत्तमश्च सः ॥ २ दे० भा० कुसुम्भेके बीज । वं० भा० कुसुमफल । फा० तुखमकाशाय । ३ दे० भा० देधान । गरहेंडुआ । गड् गड् । ४ दे० भा० तिनी लंभ, रक्तकंगु । वं० भा० उडी धान्य ।

शणः ।

शणः प्रोक्तो मातुलानी जन्तुतन्तुर्महाशना ।
शणो हिमो लघुर्ग्राही तत्पुष्पं प्रदराऽजित् ॥ ९० ॥

नवधान्यादिः ।

धान्यं सर्वं नवं स्वादु गुरु श्लेष्मकरं स्मृतम् ।
तत्तु वर्षोषितं पथ्यं यतो लघुतरं हि तत् ॥ ९१ ॥
वर्षोषितं सर्वधान्यं गौरवं परिमुञ्चति ।
न तु त्यजति वीर्यं स्वं क्रमान्मुञ्चत्यतः परम् ॥ ९२ ॥
एतेषु यवगोधूमतिलमाषा नवा हिताः ।
पुराणा विरसा रूक्षा न तथा गुणकारिणः ॥ ९३ ॥

इति धान्यवर्गः ।

शाकवर्गः ।

पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा ।
शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ॥ १ ॥
प्रायः शाकानि सर्वाणि विष्टम्भीनि गुरूणि च ।
रूक्षाणि बहुवर्चांसि सृष्टविण्मारुतानि च ॥ २ ॥
शाकं भिनत्ति वपुरस्थि निहन्ति नेत्रं
वर्णं विनाशयति रक्तमथापि शुक्रम् ।
प्रज्ञाक्षयं च कुरुते पलितं च नूनं
हन्ति स्मृतिं गतिमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ ३ ॥
शाकेषु सर्वेषु वसन्ति रोगास्ते हेतवो देहविनाशनाय ।
तस्माद्बुधःशाकविवर्जनं तु कुर्यात्तथाम्लेषु स एव दोषः॥४॥

(एतानि शाकनिन्दकवचनानि सामान्यानि ।)

पत्रशाकं १ वास्तुकद्वयम् ।

वास्तूकं वास्तुकं च स्यात्क्षारपत्रं च शाकराट् ।
तदेव तु बृहत्पत्रं रक्तं स्याद्गौडवास्तुकम् ॥ ५ ॥
प्रायशो यवमध्ये स्याद्यवशाकमतः स्मृतम् ।
वास्तूकद्वितयं स्वादु क्षारं पाके कटूदितम् ॥ ६ ॥
दीपनं पाचनं रुच्यं लघु शुक्रबलप्रदम् ।
सरं प्लीहास्रपित्तार्शःकृमिदोषत्रयापहम् ॥ ७ ॥

२ पोतकी ।

पोतक्युपोदिका सा तु मालवे मृतवल्लरी ।
पोतकी शीतला स्निग्धा श्लेष्मला वातपित्तनुत् ॥ ८ ॥
अकण्ड्या पिच्छिला निद्रा शुक्रदा रक्तपित्तजित् ।

---

१ दे० भा० वाथू । बथुआ । भेद–चिल्ली रक्त बथुआ । बं० भा० बेतुवा । फा० मुसे-लेसा सरमक । इं० ह्वाइट गुजफूट । शाकं सर्वमचक्षुष्यं चक्षुष्यं शाकपंचकम् । जीवन्ती वास्तुमत्स्याक्षी मेघनादः पुनर्नवा ॥ २ दे० भा० पोईसाग । बं० भा० पोईशाक । इं० रेड-मल्वार नाइटशोड Rebmalarninight jhore ॥

बलदा रुचिकृत्पथ्या बृंहणी तृप्तिकारिणी ॥ ९ ॥

१ श्वेतरक्तमारिषः ।

मारिषो वाप्पिको मर्षः श्वेतो रक्तश्च स स्मृतः ।
मारिषो मधुरः शीतो विष्टम्भी पित्तनुद् गुरुः ॥ १० ॥
वातश्लेष्मकरो रक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित् ।
रक्तमर्षो गुरुर्नाति सक्षारो मधुरः सरः ॥ ११ ॥
श्लेष्मलः कटुकः पाके स्वल्पदोष उदीरितः ।

२ तण्डुलीयः ।

तण्डुलीयो मेघनादः काण्डेरस्तण्डुलेरकः १२ ॥
भण्डीरस्तण्डुलीबीजो विषघ्नश्चाल्पमारिषः ।
तण्डुलीयो लघुः शीतो रूक्षः पित्तकफास्रजित् ॥ १३ ॥
सृष्टमूत्रमलो रुच्यो दीपनो विषहारकः ।
पानीयतण्डुलीयो यस्तत्कच्चटमुदाहृतम् ॥ १४ ॥
कच्चटं तिक्तकं रक्तपित्तानिलहरं लघु ।

३ पालिक्या ।

पालिक्या वास्तुकाकारा-छर्दिका चीरितच्छदाः ॥ १५ ॥
पालिक्या वातला शीता श्लेष्मला भेदना गुरुः ।
विष्टम्भनी मदश्वासपित्तरक्तकफापहा ॥ १६ ॥

४ कालशाकम् ।

नाडीकं कालशाकं च श्राद्धशाकं च कालकम् ।
कालशाकं सरं रुच्यं वातकृत्कफशोथहृत् ॥ १७ ॥

---

१ दे० भा० सील । नवडा । बं० भा० श्वेतकाटनटेरशाक । रक्त कृष्ण श्वेत । रक्त कांटानटेरशाक । २ दे० भा० चौलाई । वं० भा० क्षुदेनटे । चापा नटे । गोपाजलचौलाई । लकांचडादाभ । फा० सुपे जमर्ज १ इं० हर्मेफ्रोडाईट, रामेरंथ Hearmifrodight Ramarunth तण्डुलीयकमूलं स्यादुष्णं श्लेष्मविनाशनम् । रजोरोधकरं रक्तपित्तप्रदरसंहरम् ।
३ दे० भा० पालक । बं० भा० पालं शाक । फा० इस्पनाख । इं० स्पाईनेज Sapienais
४ दे० भा० खाब । नारवां नलिका । नरच ।

बल्यं रुचिकरं मेध्यं रक्तपित्तहरं हिमम्।

१ पटुशाकः।

पटुशाकस्तु नाडीको नाडीशाकश्च स स्मृतः॥ १८॥
नाडीको रक्तपित्तघ्नो विष्टम्भी वातकोपनः।

२ कलम्बी।

कलम्बी शतपर्वा च कथ्यन्ते तद्गुणा अथ॥ १९॥
कलम्बी शुक्रदा प्रोक्ता मधुरा स्तन्यकारिणी।

३ लोनी (णी) बृहल्लोनी च।

लोणा लोणी च कथिता बृहल्लोणी तु घोटिका॥ २०॥
लोणी रूक्षा स्मृता गुर्वी वातश्लेष्महरी पटुः।
अर्शोघ्नी दीपनी चाम्ला मन्दाग्निविषनाशिनी॥ २१॥
घोटिकाऽम्ला सरा चोष्णा वातकृत्कफपित्तहृत्।
वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नी श्वासकासप्रमेहनुत्॥ २२॥
शोथे लोचनरोगे च हिता तज्ज्ञैरुदाहृता।

४ चांगेरी।

चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाऽम्बष्ठाऽम्ललोणिका॥ २३॥
अश्मन्तकस्तु शफरी कुशला चाम्लपत्रिका।
चाङ्गेरी दीपनी रुच्या रूक्षोष्णा कफवातनुत्॥ २४॥
पित्तलाऽम्ला ग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी।

५ चुक्रा।

चुक्रिका स्यात्तु पत्राम्ला रोचनी शतवेधनी॥ २५॥
चुक्रा त्वम्लतरा स्वाद्वी वातघ्नी कफपित्तकृत्।
रुच्या लघुतरा पाके वृन्ताकेनातिरोचनी॥ २६॥

---

१ दे० भा० पटुशाक। बं० भा० कोंसटार। लालते। २ दे० भा० कर्मशाक, बं० भा०—कल्मी। ३ दे० भा० कुलफा, लूनक। बं० भा० बडनुनी, क्षुदेणुनी। फा० खुरफा। इं० पर्सलन Paraslain। ४ दे० भा० खटकल, खट्टी मीठी अबिलोना। ५ दे०भा० चूक। बं० भा० चूकापालङ्। फा० तुरशक् बडा तुरेंख रासानी छोटी। इं० ब्लेड्डचूक Bladder dock.

१ चिंचुः ।

चिञ्चा चिञ्चुश्चुकी च दीर्घपत्रा सतिक्तका ।
चुञ्चूः शीता सरा रुच्या स्वाद्वी दोषत्रयापहा ॥ २७ ॥
धातुपुष्टिकरी बल्या मेध्या पिच्छिलिका स्मृता ।

२ हिलमोचिका ।

ब्रह्मी शङ्खदराचारी ब्राह्मी च हिलमोचिका ॥ २८ ॥
शोथं कुष्ठं कफं पित्तं हरते हिलमोचिका ।

३ शितिवारः ।

शितिवारः शितिवरः स्वास्तिकः सुनिषण्णकः ॥ २९ ॥
श्रीवारकः सूचिपत्रः पर्णकः कुक्कुटः शिखी ।
चाङ्गेरीसदृशः पत्रैश्चतुर्दल इतीरितः ॥ ३० ॥
शाको जलान्विते देशे चतुष्पत्रीति चोच्यते ।
सुनिषण्णो हिमो ग्राही मोहदोषत्रयापहा ॥ ३१ ॥
अविदाही लघुः स्वादुः कषायो रूक्षदीपनः ।
वृष्यो रुच्यो ज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ॥ ३२ ॥

मूलकम् ।

पाचनं लघु रुच्योष्णं पत्रं मूलकजं नवम् ।
स्नेहसिद्धं त्रिदोषघ्नमसिद्धं कफपित्तकृत् ॥ ३३ ॥

द्रोणपुष्पी ।

द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रूक्षं गुरु च पित्तकृत् ।
भेदनं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु ॥ ३४ ॥

यवानी ।

यवानीशाकमाग्नेयं रुच्यं वातकफप्रणुत् ।
उष्णं कटु च तिक्तं च पित्तलं लघु शूलहृत् ॥ ३५ ॥

---

१ दे० भा० चेबुना, लघु बृहत् । बं० भा० चेचको । २ दे० भा० हुलहुल । बं० भा०—हिंचेशाक । ३ दे० भा० चौपति । बं० भा० सुषनी शाक । शुशुनी शाक । फा० अंजरा तुखमे अंजरा । इसके बीजको उटंकन बीज कहते हैं ॥

दद्रुघ्नम् ।

दद्रुघ्नपत्रं दोषघ्नमम्लं वातकफापहम् ।
कण्डूकासकृमिश्वासदद्रुकुष्ठप्रणुल्लघु ॥ ३६ ॥

सेहुण्डम् ।

सेहुण्डस्य दलं तीक्ष्णं दीपनं रेचनं हरेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणि च ॥ ३७ ॥

पर्पटम् ।

पर्पटो हन्ति पित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ।
संग्राही शीतलस्तिक्तो दाहनुद्वातलो लघुः ॥ ३८ ॥

गोजिह्वा ।

गोजिह्वा कुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरी लघुः ।

पटोलम् ।

पटोलपत्रं पित्तघ्नं दीपनं पाचनं लघु ॥ ३९ ॥
स्निग्धं वृष्यं तथोष्णं च ज्वरकासकृमिप्रणुत् ।

गुडूची ।

गुडूचीपत्रमाग्नेयं सर्वज्वरहरं लघु ॥ ४० ॥
कषायं कटु तिक्तं च स्वादु पाके रसायनम् ।
बल्यमुष्णं च संग्राहि हन्यादोषत्रयं तृषाम् ॥ ४१ ॥
दाहप्रमेहवातास्रक्कामलाकुष्ठपाण्डुताः ।

१ कासमर्दम् ।

कासमर्दोऽरिमर्दश्च कासारिः कर्कशस्तथा ॥ ४२ ॥
कासमर्ददलं रुच्यं वृष्यं कासविषास्रनुत् ।
मधुरं कफवातघ्नं पाचनं कण्ठशोधनम् ॥ ४३ ॥
विशेषतः कासहरं पित्तघ्नं ग्राहकं लघु ।

चणकम् ।

रुच्यं चणकशाकं स्याद् दुर्जरं कफवातकृत् ॥ ४४ ॥
अम्लं विष्टंभजनकं पित्तनुदन्तशोथहृत् ।

---

१ दे० भा० कासमर्द । कसौंदी । बं० भा० कालकासुंदी । इं० एडण्ड पोडेकश्या ॥

कलायः ।

कलायशाकं भेदि स्याल्लघु तिक्तं त्रिदोषजित् ॥ ४५ ॥

सार्षपम् ।

कटुकं सार्षपं शाकं बहुमूत्रमलं गुरु ।
अम्लपाकं विदाहि स्यादुष्णं रूक्षं त्रिदोषकृत् ॥ ४६ ॥
सक्षारं लवणं तीक्ष्णं स्वादु शाकेषु निन्दितम् ।

पुष्पशाकम्, अगास्तिकम् ।

अगास्तिकुसुमं शीतं चातुर्थिकनिवारणम् ॥ ४७ ॥
नक्तान्ध्यनाशनं तिक्तं कषायं कटुपाकि च ।
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नं वातघ्नं मुनिभिर्मतम् ॥ ४८ ॥

कदली ।

कदल्याः कुसुमं स्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु ।
वातपित्तहरं शीतं रक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥ ४९ ॥

शिग्रुपुष्पम् ।

शिग्रुपुष्पं तु कटुकं तीक्ष्णोष्णं स्नायुशोथकृत् ।
कृमिहृत्कफवातघ्नं विद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥ ५० ॥
मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितं रक्तपित्तप्रसादनम् ।

१ शाल्मली ।

शाल्मली पुष्पशाकं तु घृतसैन्धवसाधितम् ॥ ५१ ॥
प्रदरं नाशयत्येव दुःसाध्यं च न संशयः ।
रसे पाके च मधुरं कषायं शीतलं गुरु ॥ ५२ ॥
कफपित्तास्रजिद् ग्राहि वातलं च प्रकीर्तितम् ।

२ फलशाकं कूष्माण्डकम् ।

कूष्माण्डं स्यात्पुष्पफलं पीतपुष्पं बृहत्फलम् ॥ ५३ ॥

---

१ वरुणपुष्पम्-पुष्पं वरुणसंग्राहि पित्तघ्नं चामवातजित् । कोविदारं कर्बदारशणशाल्मलि-पुष्पकम् । ग्राहिशाकं प्रशस्तं च रक्तपित्ते विशेषतः ॥ २ दे० भा० पेठा, कुम्हडा । बं० भा० कुमडा गाछ । फा० भूराकद्दू इं० पंपकीन । Pumpkeen

कूष्माण्डं बृंहणं वृष्यं गुरु पित्तास्रवातनुत् ।
बालं पित्तापहं शीतं मध्यमं कफकारकम् ॥ ५४ ॥
वृद्धं नातिहिमं स्वादु सक्षारं दीपनं लघु ।
वस्तिशुद्धिकरं चेतोरोगहृत्सर्वदोषजित् ॥ ५५ ॥

१ कूष्माण्डी ।

कूष्माण्डी तु भृशं लघ्वी कर्कारुरपि कीर्तिता ।
कर्कारुर्ग्राहिणी शीता रक्तपित्तहरी गुरुः ॥ ५६ ॥
पक्का तिक्ताऽग्निजननी सक्षारा कफवातनुत् ।

२ मिष्टतुम्बी ।

अलाबुः कथिता तुम्बी द्विधा दीर्घा च वर्तुला ॥ ५७ ॥
मिष्टतुम्बीफलं हृद्यं पित्तश्लेष्मापहं गुरु ।
पुष्पं रुचिकरं प्रोक्तं धातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ५८ ॥

३ कटुतुम्बी ।

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्सा तुम्बी च बृहत्फला ।
कटुतुम्बी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ॥ ५९ ॥
तिक्ता कटुर्विपाके च वातपित्तज्वरान्तकृत् ।

४ कर्कटी ।

एर्वारुः कर्कटी प्रोक्ता कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥ ६० ॥
कर्कटी शीतला रूक्षा ग्राहिणी मधुरा गुरुः ।
रुच्या पित्तहरा सामा पक्का तृष्णाग्निपित्तकृत् ॥ ६१ ॥

५ चिचिंडा ।

चिचिण्डा श्वेतराजिः स्यात्सुदीर्घा गृहकूलकः ।

---

१ दे० भा० काशीफल । सीताफल । गोलकद्दू । बं० भा० विलायती कुमडा । फा० वाद-रंग । इं० दि गोर्ड The gord । २ दे० भा० मीठी तोंवी । बं० भा० लाउद । फा०— कुदरादरोज । इं० व्हाइट् गुर्ड ॥ White gorb ३ दे० भा० कडवी तूम्बी । बं० भा०— तितलाऊ । फा० कुदुतलख । बोटलगुर्ड् Botal gord । ४ दे० भा० तर ककडी । बं०— भा० काकुड । फा० ख्याटजाब, दरंज । इं० ककम्बर Kakumber । ५ दे० भा०— चिचिंडा । बं० भा० चिचिंगा । इं० स्नेकगार्ड Sankegord ॥

चिचिण्डो वातपित्तघ्नो बल्यः पथ्यो रुचिप्रदः ॥ ६२ ॥
शोषणोऽतिहितः किञ्चिद्गुणैर्न्यूनः पटोलतः ।

१ कारवेल्लम् ।

कारवेल्लं कठिल्लं स्यात्कारवेल्ली ततो लघुः ॥ ६३ ॥
कालवेल्लं हिमं भेदि लघु तिक्तामवातलम् ।
ज्वरपित्तकफास्रघ्नं पाण्डुमेहकृमीन् हरेत् ॥ ६४ ॥
तद्गुणा कारवेल्ली स्याद्विशेषादीपनी लघुः ।

२ महाकोशातकी ।

महाकोशातकी ज्योत्स्ना हस्तिघोषा महाफला ॥ ६५ ॥
धामार्गवो घोषकश्च हस्तिपर्णश्च स स्मृतः ।
महाकोशातकी स्निग्धा रक्तपित्तानिलापहा ॥ ६६ ॥

३ राजकोशातकी ।

धामार्गवः पीतपुष्पो जालनी कृतवेधनः ।
राजकोशातकी चेति तथोक्ता राजिमत्फला ॥ ६७ ॥
कोशातकी शीता मधुरा कफवातला ।
पित्तघ्नी दीपनी श्वासज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ ६८ ॥

४ पटोलः ।

पटोलः कूलकस्तिक्तः पाण्डुकः कर्कशच्छदः ।
राजीफलः पांडुफलो राजेयश्चामृताफलः ॥ ६९ ॥
बीजगर्भः प्रतीकश्च कुष्ठहा कासभञ्जनः ।
पटोलं पाचनं हृद्यं वृष्यं लघ्वग्निदीपनम् ॥ ७० ॥
स्निग्धोष्णं हन्ति कासास्रज्वरदोषत्रयक्रिमीन् ।
पटोलस्य भवेन्मूलं विरेचनकरं सुखात् ॥ ७१ ॥

---

१ दे० भा०करेला, करेली । बं० भा० बर्डाकरेला, छोटी करेला । फा० करेलाह । इं० हेरीमोर्डिका Harimarbska २ दे० भा० घीया तोरी । बं० भा० धुन्दुल । फा० खियार । ३ दे० भा० कडवी तोरी । मुंगीतोरी । बं० भा० झिंगा । फा० तुरीयेतलख । इं० (witer liufa) ४ दे० भा० कडवे परवल । बं० भा० पनतालता । फा० मोरहडी ।

नालं श्लेष्महरं पत्रं पित्तहारि फलं पुनः ।
दोषत्रयहरं प्रोक्तं तद्वत्तिक्तपटोलकम् ॥ ७२ ॥

१ बिम्बी ।

बिम्बी रक्तफला तुण्डी तुण्डकेरी च बिम्बिका ।
ओष्ठोपमफला प्रोक्ता पीलुपर्णी च कथ्यते ॥ ७३ ॥
बिम्बीफलं स्वादु शीतं गुरु पित्तास्रवातजित् ।
स्तम्भनं लेखनं रुच्यं विबन्धाध्मानकारकम् ॥ ७४ ॥

२ शिम्बीद्वयम् ।

शिम्बी शिम्बिः पुस्तशिम्बी तथा पुस्तकशिम्बिका ।
शिम्बीद्वयं च मधुरं रसे पाके हिमं गुरु ॥ ७५ ॥
बल्यं दाहकरं प्रोक्तं श्लेष्मलं वातपित्तजित् ।
कोलशिम्बी कृष्णफला तथा पर्य्यङ्कपादिका ॥ ७६ ॥
कोलशिम्बी समीरघ्नी गुर्व्युष्णा कफपित्तकृत् ।
शुक्राग्निसादकृद् वृष्या रुचिकृद्वृद्धविड् गुरुः ॥ ७७ ॥

सौभाञ्जनम् ।

सौभाञ्जनं फलं स्वादु कषायं कफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपनं परम् ॥ ७८ ॥

३ वृन्ताकम् ।

वृन्ताकं स्त्री तु वार्ताकुः भण्टाकी भण्टकापि च ।
वृन्ताकं स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकमपित्तलम् ॥ ७९ ॥
वरवातबलासघ्नं दीपनं शुक्रलं लघु ।
तद्बालं कफपित्तघ्नं वृद्धं पित्तकरं लघु ॥ ८० ॥
वृन्ताकं पित्तलं किंचिदङ्गारपरिपाचितम् ।
कफमेदोऽनिलामघ्नमत्यर्थं लघु दीपनम् ॥ ८१ ॥

---

१ दे० भा० कन्दूरी । तिक्ता, मधुर । बं० भा० तेलाकुच । २ दे० भा० महाशिंबी । सुआरसेम, सेम । बं० भा० शोभगाछ । ३ दे० भा० वैंगन, बताऊं । बं० भा० वेगुनगाछ फा० बादंगान् । इं० ब्रिंजल् Brinjal

तदेव हि गुरु स्निग्धं सतैललवणान्वितम् ।
अपरं श्वेतवृन्ताकं कुक्कुटाण्डसमं भवेत् ॥ ८२ ॥
तदर्शस्सु विशेषेण हितं हीनं च पूर्वतः ।

१ तिण्डिशः ।

तिण्डिशो रोमशफलो मुनिनिर्मित इत्यपि ॥ ८३ ॥
तिण्डिशो रुचिकृद्भेदी पित्तश्लेष्मापहः स्मृतः ।
सशीतो वातलो रूक्षो मूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ ८४ ॥

२ पिण्डारम् ।

पिण्डारं शीतलं बल्यं पित्तघ्नं रुचिकारकम् ।
पाके लघु विशेषेण विषशान्तिकरं स्मृतम् ॥ ८५ ॥

३ कर्कोटकी ।

कर्कोटकी पीतपुष्पा महाजालीति चोच्यते ।
कर्कोटक्याः फलं कुष्ठहल्लासारुचिनाशनम् ॥ ८६ ॥
श्वासकासज्वरान् हन्ति कटुपाकं च दीपनम् ।

४ डोण्डिका ।

डोण्डिका विषमुष्टिश्च डोण्डीत्यपि सुमुष्टिका ॥ ८७ ॥
डोण्डिका पुष्टिदा वृष्या रुच्या वह्निप्रदा लघुः ।
वातपित्तकफार्शांसि कृमिगुल्मविषामयान् ॥ ८८ ॥

कण्टकारी ।

कण्टकारीफलं तिक्तं कटुकं दीपनं लघु ।
रूक्षोष्णं श्वासकासघ्नं ज्वरानिलकफापहम् ॥ ८९ ॥

नालशाकम् ।

तीक्ष्णोष्णं सार्षपं नालं वातश्लेष्मव्रणापहम् ।
कण्डूवमिहरं दद्रुकुष्ठघ्नं रुचिकारकम् ॥ ९० ॥

---

१ टेंडा । २ टेंडेका भेद । अग्निप्रदा मारुतनाशिनी च शुक्रप्रदा शोणितवर्द्धनी च । हल्लास-कासारुचिनाशिनी च वार्ताकुरेषा गुणसुप्रयुक्ता ॥ ३ दे० भा० ककौडा खेखसा । बं० भा०-काकरोल । ४ दे भा० जीवन्तीभेद । तिक्त जीवती ।

मूलकम् ।

भवेन्मूलकनालं तु विष्टम्भि कफकारकम् ।
वातपित्तहरं रुच्यं सुशुष्कं तद्गुणाधिकम् ॥ ९१ ॥

कन्दशाकम् । १ सूरणम् ।

सूरणः कन्द औलश्च कण्डूलोऽर्शोघ्न इत्यपि ।
सूरणो दीपनो रूक्षः कषायः कण्डुकृत्कटुः ॥ ९२ ॥
विष्टम्भी विशदो रुच्यः कफार्शःकृन्तनो लघुः ।
विशेषादर्शसां पथ्यः प्लीहगुल्मविनाशनः ॥ ९३ ॥
सर्वेषां कन्दशाकानां सूरणः श्रेष्ठ उच्यते ।
दद्रूणां रक्तपित्तानां कुष्ठिनां न हितो हि सः ॥ ९४ ॥
सन्धानयोगं संप्राप्तः सूरणो गुणकृत्परः ।

२ आलुकम् ।

आलुकं वीरसेनं च वीरं वीरालुकं तथा ॥ ९५ ॥
आलुकं शीतलं सर्वं विष्टम्भि मधुरं गुरु ।
सृष्टमूत्रमलं रूक्षं दुर्जरं रक्तपित्तनुत् ॥ ९६ ॥
कफानिलकरं बल्यं वृष्यं स्वल्पाग्निवर्धनम् ।

३ रक्तालुभेदः ।

रक्तालुभेदो या दीर्घा तन्वी च ग्रथितालुकी ॥ ९७ ॥
आलुकी बलकृत्स्निग्धा गुर्वी हृत्कफनाशिनी ।
विष्टंभकारिणी तेले तालतोऽतिरुचिप्रदा ॥ ९८ ॥

४ मूलकम् ।

मूलकं द्विविधं प्रोक्तं तत्रैकं लघुमूलकम् ।

---

१ दे० भा० जिमीकन्द । बं० भा० ओल, फा० ओल । २ दे० भा० आलु, काष्ठालु, काठिन्ययुक्तं शंखालु श्वेततायुक्तं हस्त्यालु, दीर्घतायुक्तं पिण्डालु । वर्तुल, सुथनी, मध्वालु, मधुरतायुक्तं, पिंडालु, कचालु । फा० जरसक् लहौरी । इं० स्वीटपोटाटो, Sweet Potatoe रक्तालु, रोमान्वित रतालु रतंडा । ३ दे० भा० अरवी । इं० ग्रेट लीव्ड केलेडिअन । Great leaved caladian ४ दे० भा० मूली, बडी मूली । बं० भा० मूली, चणक मूली । फा० तुखम तुख । इं० रेडीश Radeesh.

शालामर्कटकं विस्रशालेयं मरुसंभवम् ॥ ९९ ॥
चाणक्यमूलकं तीक्ष्णं तथा मूलिकपोतिका ।
नेपालमूलकं चान्यत्तद्भवेद्वजदन्तवत् ॥ १०० ॥
लघुमूलं कटूष्णं स्याद्रुच्यं लघु च पाचनम् ।
दोषत्रयहरं स्वर्य्यं ज्वरश्वासविनाशनम् ॥ १०१ ॥
नासिकाकण्ठरोगघ्नं नयनामयनाशनम् ।
महत्तदेव रूक्षोष्णं गुरु दोषत्रयप्रदम् ॥ १०२ ॥
स्नेहसिद्धं तदेव स्याद्दोषत्रयविनाशनम् ।

१ गाजरम् ।

गाजरं गर्जरी प्रोक्ता तथा नारङ्गवर्णकम् ॥ १०३ ॥
गाजरं मधुरं तीक्ष्णं तिक्तोष्णं दीपनं लघु ।
संग्राहि रक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ १०४ ॥

कदली ।

शीतलः कदलीकन्दो बल्यः केश्योऽम्लपित्तजित् ।
वह्निकृद्दाहहारी च मधुरो रुचिकारकः ॥ १०५ ॥

मानकः ।

मानकः स्यान्महापत्रः कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।
मानकः शोथहच्छीतः पित्तरक्तहरो लघुः ॥ १०६ ॥

२ वाराही ।

वाराही पित्तला बल्या कटुतिक्ता रसायना ।
आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥ १०७ ॥

हस्तिकर्णी ।

गजकर्णी तु तिक्तोष्णा तथा वातकफौ जयेत् ।
शीतज्वरहरी स्वादुः पाके तस्यास्तु कन्दकः ॥ १०८ ॥

---

१ दे० भा० गाजर । बं० भा० गाजर । फा० जर्दक । इं० कैरट Carrot.
२ दे० भा० गेठी । बं० भा० चामुल चुबिडआलु । प० भा० कित्था ।

पाण्डुशोथकृमिप्लीहगुल्मानाहोदरापहा ।
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नो वनसूरणकन्दवत् ॥ १०९ ॥

१ केम्बुकम् ।

केम्बुकं कटुकं पाके तिक्तं ग्राहि हिमं लघु ।
दीपनं पाचनं हृद्यं कफपित्तज्वरापहम् ॥ ११० ॥
कुष्ठकासप्रमेहास्रनाशनं वातलं कटु ।

२ कसेरुकम् ।

कसेरु द्विविधं तत्तु महद्राजकसेरुकम् ॥ १११ ॥
मुस्ताकृति लघु स्याद्यत्तच्चिचोडामिति स्मृतम् ।
कसेरुकद्वयं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ ११२ ॥
पित्तशोणितदाहघ्नं नयनामयनाशनम् ।
ग्राहि शुक्रानिलश्लेष्मरुचिस्तन्यकरं स्मृतम् ॥ ११३ ॥

३ शालूकम् ।

पद्मादिकन्दः शालूकः करहाटश्च कथ्यते ।
मृणालमूलं भिस्साडं लाजलूकं च कथ्यते ॥ ११४ ॥
शालूकं शीतलं वृष्यं पित्तास्रदाहनुद् गुरु ।
दुर्जरं स्वादुपाकं च स्तन्यानिलकफप्रदम् ॥ ११५ ॥
संग्राहि मधुरं रूक्षं भिस्साडमपि तद्गुणम् ।

वर्जनीयम् ।

बालं ह्यनार्त्तवं जीर्णं व्याधितं कृमिभक्षितम् ॥ ११६ ॥
कन्दं विवर्जयेत्सर्वं यद्वाग्न्यादिविदूषितम् ।
अतिजीर्णमकालोत्थं रूक्षसिद्धमदेशजम् ॥ ११७ ॥

---

१ दे० भा० केवेरे । केउआ । बं० भा० केउंगाछ । फा० कलाम । इं० केबेज । २ दे० भा० कसेरु । बं० भा० केशुर । केबुका केमुकः केबुः सुपत्रा दलमालिनी । केलूटः स्वल्पविटपः स्वादुकंदश्च पौलिनी ॥ ३ दे० भा० भसीड़ा । कमलकी डण्डी । बं० भा० पद्मेर डांटा ।

कर्कशं कोमलं चातिशीतं व्यालादिदूषितम् ।
संशुष्कं सकलं शाकं नाश्नीयान्मूलकं विना ॥ ११८ ॥

१ संस्वेदजम् ।

उक्तं संस्वेदजं शाकं भूमिच्छत्रं शिलीन्ध्रजम् ।
क्षितिगोमयकाष्ठेषु वृक्षादिषु च तद्भवेत् ॥ ११९ ॥
सर्वे संस्वेदजाः शीता दोषलाः पिच्छिलाश्च ते ।
गुरवश्छर्द्यतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥ १२० ॥
श्वेताः श्वभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रजसम्भवाः ।
नातिदोषकरास्ते स्युः शेषास्तेभ्यो विगर्हिताः ॥ १२१ ॥

संस्वेदजाः छाता इति लोके ।

इति शाकवर्गः ।

---

१ दे० भा० खुम्ब सांपकी छत्री । बं० भा० भूईछाती । इं० मशरूम । Mushroom.

वारिवर्गः ।

पानीयं सलिलं नीरं कीलालं जलमम्बु च ।
आपो वार्वारि कं तोयं पयः पाथस्तथोदकम् ॥ १ ॥
जीवनं वनमम्भोऽर्णोऽमृतं घनरसोऽपि च ॥ २ ॥
पानीयं श्रमनाशनं क्लमहरं मूर्च्छापिपासाहरं
तन्द्राच्छर्दिविबन्धहृद्भ्रमकरं निद्राहरं तर्पणम् ।
हृद्यं गुप्तरसं ह्यजीर्णशमकं नित्यं हितं शीतलं
लघ्वच्छं रसकारणं निगदितं पीयूषवज्जीवनम् ॥ ३ ॥
भेदः-पानीयं मुनिभिः प्रोक्तं दिव्यं भौममिति द्विधा ॥ ४ ॥
दिव्यं चतुर्विधं प्रोक्तं धाराजं करकाभवम् ।
तौषारं च तथा हैमं तेषु धारं गुणाधिकम् ॥ ५ ॥

धाराजलम् ।

धाराभिः पतितं तोयं गृहीतं स्फीतवाससा ।
शिलायां वसुधायां वा धौतायां पतितं च तत् ॥ ६ ॥
सौवर्णे राजते ताम्रे स्फाटिके काचनिर्मिते ।
भाजने मृन्मये वापि स्थापितं धारमुच्यते ॥ ७ ॥
धारानीरं त्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसं लघु ।
सौम्यं रसायनं बल्यं तर्पणं ह्लादि जीवनम् ॥ ८ ॥
पाचनं मतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान् ।

---

१ दे० भा० पानी । बं० भा० जल । फा० आब । इं० वाटर Water । २ तत्र दिव्यमुत्तमम् । दिव्यस्य कालापेक्षत्वात्, तथा हि दिव्यस्य पात्रकालयोरेवापेक्षा । तद्यथा हि सुपात्रस्थम्-आर्तवं हितमनार्तवमहितम् । भौमस्याष्टवस्त्वपेक्षा, तद्यथा-जांगले हितमहितमानूप ॥ तत्रापि शुच्यादौ । हितमहितमशुच्यादौ ॥ कूपादौ हितमहितं पल्वलादौ ॥ सुपात्रे हितमहितं दुष्पात्रे ॥ क्वचिद्देहे हितं क्वचिदहितम् ॥ शरद्ग्रीष्मयोर्हितमहितमन्यदा । दिवा हितमहितं रात्रौ । दिवाद्यन्तयोरेवम् ॥ दिव्यं तु सर्वत्र सर्वदा सर्वेषां हितम् ॥

तृष्णां हरति तत्पथ्यं विशेषात्प्रावृषि स्मृतम् ॥ ९ ॥

तद्भेदौ ।

धाराजलं च द्विविधं गाङ्गसामुद्रभेदतः ।
आकाशगङ्गासम्बन्धि जलमादाय दिग्गजाः ॥ १० ॥
मेघैरन्तरिता वृष्टिं कुर्वन्तीति वचः सताम् ।
गाङ्गमाश्वयुजे मासि प्रायो वर्षति वारिदः ॥ ११ ॥
सर्वथा तज्जलं देयं तथैव चरके वचः ।
स्थापितं हेमजे पात्रे राजते मृन्मयेऽपि वा ॥ १२ ॥
शाल्यन्नं येन संसिक्तं भवेदक्लेदि वर्णवत् ।
तद्गाङ्गं सर्वदोषघ्नं ज्ञेयं सामुद्रमन्यथा ॥ १३ ॥
तत्तु सक्षारलवणं शुक्रदृष्टिबलापहम् ।
विस्रं च दोषलं तीक्ष्णं सर्वकर्मसु गर्हितम् ॥ १४ ॥
सामुद्रं त्वाश्विने मासि गुणैर्गाङ्गवदादिशेत् ।
अगस्त्यस्य तु देवर्षेरुदयात्सकलं जलम् ॥ १५ ॥
निर्मलं निर्विषं स्वादु शुक्रलं स्याददोषलम् ।
अत एवाह--फूत्कारविषवातेन नागानां व्योमचारिणाम् ॥ १६ ॥
वर्षासु सविषं तोयं दिव्यमेवाश्विनं विना ।

१ अनार्त्तवम् ।

अनार्तवं प्रमुञ्चन्ति वारि वारिधरास्तु यत् ॥ १७ ॥
तत्त्रिदोषाय सर्वेषां देहिनां परिकीर्त्तितम् ।
करकाजलम्-दिव्यवाय्वग्निसंयोगात्संहताः खात्पतंति याः १८
पाषाणखण्डवच्चापस्ताः कारक्योऽमृतोपमाः ।
२करकाजं जलं रूक्षं विशदं गुरु चास्थिरम् ॥ १९ ॥
दारणं शीतलं सान्द्रं पित्तहृत्कफवातकृत् ।

---

१ अनार्तवं पौषादिमासचतुष्टयविषयम् । वर्षर्तुभिन्नकाले वृष्टमिति यावत् । ज्योतिःशास्त्रेऽपि अनुराधर्क्षमारभ्य षोडशर्क्षेषु भास्करः । यावत् प्रवर्त्तते तावत् कालश्च परिकीर्तितः ॥

२ दे० भा० ओले गले ।

तौयारम् ।

अपि[1] नद्याः समुद्रान्ते वह्निरापश्च तद्भवाः ॥ २० ॥
धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तु[2] ताः स्मृताः ।
अपथ्याः प्राणिनां प्रायो भूरुहाणां तु ता हिताः ॥ २१ ॥
तुषाराम्बु हिमं रूक्षं स्याद्वातलमपित्तलम् ।
कफोरुस्तम्भकण्ठाग्निमेदोगण्डादिरोगकृत् ॥ २२ ॥

३ हैमजलम् ।

हिमवच्छिखरादिभ्यो द्रवीभूयाभिवर्षति ।
यत्तदेव हिमं हैमं जलमाहुर्मनीषिणः ॥ २३ ॥
हिमाम्बु शीतं पित्तघ्नं गुरु वातविवर्द्धनम् ।
हिमं तु शीतलं रूक्षं दारणं सूक्ष्ममित्यपि ॥ २४ ॥
न तद् दूषयते वातं न च पित्तं न वा कफम् ।

भौमम् ।

भौममम्बु प्रगदितं प्रथमं त्रिविधं बुधैः ॥ २५ ॥
जाङ्गलं च तथाऽऽनूपं ततः साधारणं क्रमात् ।
अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्च पित्तरक्तामयान्वितः ॥ २६ ॥
ज्ञातव्यो जाङ्गलो देशस्तत्रत्यं जाङ्गलं जलम् ॥
बह्वम्बुर्बहुवृक्षश्च वातश्लेष्मामयान्वितः ॥ २७ ॥
देशोऽनूप इति ख्यात आनूपं तद्भवं जलम् ।
मिश्रचिह्नस्तु यो देशः स हि साधारणः स्मृतः ॥ २८ ॥
तस्मिन्देशे यदुदकं तत्तु साधारणं स्मृतम् ।
जाङ्गलं सलिलं रूक्षं लवणं लघु पित्तनुत् ॥ २९ ॥
वह्निहृत्कफकृत्पथ्यं विकारान् कुरुते बहून् ।
आनूपं वार्य्यभिष्यन्दि स्वादु स्निग्धं घनं गुरु ॥ ३० ॥

---

१ अपि नद्याः समुद्रांते वह्निरिति किं स्यादयम्भावः—नदीभारभ्य समुद्रपर्यन्तं वह्निरास्ते तद्भवा वह्निभवाः । २ धूमावयवनिर्मुक्ता धूमांशरहिता आपस्तुषाराख्याः ॥ तुष, ओस, तुस इस इति लोके । पंजाबीमें तरेल कहते हैं ॥ ३ और्वानलधूमोत्थितमम्बु समुद्रस्य यद्धनीभूतम् पवनानीतमुदीच्यां तद्धितमिति कथ्यते मुनिभिः ॥ कुहेस बर्फ इति लोके ॥

वह्निहृत्कफकृन्नित्यं विकारान्कुरुते बहून् ।
साधारणं तु मधुरं दीपनं शीतलं लघु ॥ ३१ ॥
तर्पणं रोचनं तृष्णादाहदोषत्रयप्रणुत् ।

भौमनादेयम् ।

नद्या नदस्य वा नीरं नादेयमिति कीर्तितम् ॥ ३२ ॥
नादेयमुदकं रूक्षं वातलं लघु दीपनम् ।
अनभिष्यन्दि विशदं कटुकं कफपित्तनुत् ॥ ३३ ॥
नद्यः शीघ्रवहा लघ्व्यः सर्वा याश्चामलोदकाः ।
गुर्व्यः शैवलसंछन्ना मन्दगाः कलुषाश्च याः ॥ ३४ ॥
हिमवत्प्रभवाः पथ्या नद्योऽश्माहतपाथसः ।
गङ्गाशतद्रुसरयूयमुनाद्या गुणोत्तमाः ॥ ३५ ॥
सह्यशैलभवा नद्यो वेणीगोदावरीमुखाः ।
कुर्वन्ति प्रायशः कुष्ठमीषद्वातकफावहाः ॥ ३६ ॥
नदीसरस्तडागस्थे कूपप्रस्रवणादिजे ।
उदके देशभेदेन गुणान्दोषांश्च लक्षयेत् ॥ ३७ ॥

औद्भिदम् ।

विदार्य भूमिं निम्नां यन्महत्या धारया स्रवेत् ।
तत्तोयमौद्भिदं नाम वदन्तीति महर्षयः ॥ ३८ ॥
औद्भिदं वारि पित्तघ्नमविदाह्यतिशीतलम् ।
प्रीणनं मधुरं बल्यमीषद्वातकरं लघु ॥ ३९ ॥

नैर्झरम् ।

शैलसानुस्रवद्वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ।
स तु प्रस्रवणश्चापि तत्रत्यं नैर्झरं जलम् ॥ ४० ॥
नैर्झरं रुचिकृन्नीरं कफघ्नं दीपनं लघु ।
मधुरं कटुपाकं च वातलं स्यादपित्तलम् ॥ ४१ ॥

सारसम् ।

नद्याः शैलादिरुद्धाया यत्र संस्तृत्य तिष्ठति ।
तत्सरोजदलच्छन्नं तदम्भः सारसं स्मृतम् ॥ ४२ ॥

सारसं सलिलं बल्यं तृष्णाघ्नं मधुरं लघु ।
रोचनं तुवरं रूक्षं बद्धमूत्रमलं स्मृतम् ॥ ४३ ॥

ताडागम् ।

प्रशस्तभूमिभागस्थो बहुसंवत्सरोषितः ।
जलाशयस्तडागः स्यात्ताडागं तज्जलं स्मृतम् ॥ ४४ ॥
ताडागमुदकं स्वादु कषायं कटुपाकि च ।
वातलं बद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् ॥ ४५ ॥

वाप्यम् ।

पाषाणैरिष्टकाभिर्वा बद्धः कूपो बृहत्तरः ।
ससोपाना भवेद्वापी तज्जलं वाप्यमुच्यते ॥ ४६ ॥
वाप्यं वारि यदि क्षारं पित्तकृत्कफवातहृत् ।
तदेव मिष्टं कफकृद्वातपित्तहरं भवेत् ॥ ४७ ॥

कौपम् ।

भूमौ खातोऽल्पविस्तारो गम्भीरो मण्डलाकृतिः ।
बद्धोऽबद्धः स कूपः स्यात्तदंभः कौपमुच्यते ॥ ४८ ॥
कौपं पयो यदि स्वादु त्रिदोषघ्नं हितं लघु ।
तत्क्षारं कफवातघ्नं दीपनं पित्तकृत्परम् ॥ ४९ ॥

चाण्डयम् ।

शिलाकीर्णं स्वयं श्वभ्रं नीलाञ्जनसमोदकम् ।
लतावितानसंछन्नं चौण्डचमित्यभिधीयते ॥ ५० ॥
अश्मादिभिरबद्धं यत्तच्चौण्डचमिति वापरे ।
तत्रत्यमुदकं चौण्डचं मुनिभिस्तदुदाहृतम् ॥ ५१ ॥
चौण्डचं वह्निकरं नीरं रूक्षं कफहरं लघु ।
मधुरं पित्तनुद्धुच्यं पाचनं विशदं स्मृतम् ॥ ५२ ॥

पाल्वलम् ।

अल्पं सरः पल्वलं स्याद्यत्र चन्द्रर्क्षगे रवौ ।

---

१ चन्द्रर्क्ष—मृगशिरोनक्षत्रम् ॥

तत्तिष्ठति जलं किञ्चित्तत्रत्यं वारि पाल्वलम् ॥ ५३ ॥
पाल्वलं वार्य्यभिष्यन्दि गुरु स्वादु त्रिदोषकृत् ।

विकरम् ।

नद्यादिनिकटे भूमिर्या भवेद्वालुकामयी ॥ ५४ ॥
उद्भाव्यते तु यत्तोयं तज्जलं विकरं विदुः ।
विकरं शीतलं स्वच्छं निर्दोषं लघु च स्मृतम् ॥ ५५ ॥
तुवरं स्वादु पितघ्नं क्षारं तत्पित्तलं मनाक् ।

कैदारम् ।

केदारं क्षेत्रमुद्दिष्टं कैदारं तज्जलं स्मृतम् ॥ ५६ ॥
कैदारं वार्य्यभिष्यन्दि मधुरं गुरु दोषकृत् ।

वृष्टिजलम् ।

वार्षिकं तदहर्वृष्टं भूमिस्थमहितं जलम् ॥ ५७ ॥
त्रिरात्रमुषितं तत्तु प्रसन्नममृतोपमम् ।

विहितजलम् ।

हेमन्ते सारसं तोयं ताडागं वा हितं स्मृतम् ॥ ५८ ॥
हेमन्ते विहितं तोयं शिशिरेऽपि प्रशस्यते ।
वसन्तग्रीष्मयोः कौपं वाप्यं वा नैर्झरं जलम् ॥ ५९ ॥
नादेयं वारि नादेयं वसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः ।
विषवद्वनवृक्षाणां पत्राद्यैर्दूषितं यतः ॥ ६० ॥
औद्भिदं चान्तरिक्षं वा कौपं वा प्रावृषि स्मृतम् ।
शस्तं शरादि नादेयं नीरमंशूदकं परम् ॥ ६१ ॥
दिवा रविकरैर्जुष्टं निशि शीतकरांशुभिः ।
ज्ञेयमंशूदकं नाम स्निग्धं दोषत्रयापहम् ॥ ६२ ॥

---

१ रविकरैर्जुष्टमित्युक्ते दिवापदं समस्तदिवसप्राप्त्यर्थम् । शीतकरांशुभिर्जुष्टमित्युक्ते निशीति पदमद्धरात्रप्राप्त्यर्थम् ॥ तण्डुलजलम्-तण्डुलानष्टगुणिते कण्डितान् क्षालयेज्जले । तत्तण्डुलजलं ग्राह्यं योज्यं निखिलकर्मसु ॥ नारिकेलजलम्-नारिकेलोद्भवं स्निग्धं स्वादु वृष्यं हिमं लघु । तृष्णापित्तानिलहरं दीपनं वस्तिशोधनम् ॥ उष्णोदकम्-अर्द्धावशिष्टं यत्तोयं-तदुष्णोदक-

अनभिष्यन्दि निर्दोषमान्तरिक्षजलोपमम्।
बल्यं रसायनं मेध्यं शीतं लघु सुधासमम् ॥ ६३ ॥

सुश्रुतः-

पौषे वारि सरोजातं माघे तत्तु तडागजम्।
फाल्गुने कूपसम्भूतं चैत्रे चौण्ड्या हिमं मतम् ॥ ६४ ॥
वैशाखे नैर्झरं नीरं ज्येष्ठे शस्तं तथौद्भिदम्।
आषाढे शस्यते कौपं श्रावणे दिव्यमेव च ॥ ६५ ॥
भाद्रे कौपं पयः शस्तमाश्विने चौण्ड्यमेव च।
कार्तिके मार्गशीर्षे च जलमात्रं प्रशस्यते ॥ ६६ ॥

जलग्रहणकालः।

भौमानामम्भसां प्रायो ग्रहणं प्रातरिष्यते।
शीतत्वं निर्मलत्वं च यतस्तेषां मता गुणाः ॥ ६७ ॥

जलपानम्।

अत्यम्बुपानान्न विपच्यतेऽन्नं निरम्बुपानाच्च स एव दोषः।
तस्मान्नरो वह्निविवर्धनाय मुहुर्मुहुर्वारि पिबेदभूरि ॥ ६८ ॥

शीतलजलम्।

मूर्च्छादिपित्तदाहेषु विषे रक्ते मदात्यये।
श्रमे भ्रमे विदग्धेऽन्ने तमके क्षवथौ तथा ॥ ६९ ॥
ऊर्ध्वगे रक्तपित्ते च शीतमम्बु प्रशस्यते।

तन्निषेधः।

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे ॥ ७० ॥
आध्मानस्तिमिते कोष्ठे सद्यःशुद्धौ नवज्वरे।
अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषु विद्रधौ ॥ ७१ ॥
हिक्कायां स्नेहपाने च शीताम्बु परिवर्जयेत्।
अरोचके प्रतिश्याये मन्देऽग्नौ श्वयथौ क्षये ॥ ७२ ॥

-मुच्यते। उष्णोदकं सदा पथ्यं श्वासकासज्वरार्तिजित् ॥ आरोग्यांबु-पादशेषं तु यत्तोयमा-रोग्यांबु तदुच्यते। आरोग्यांबु सदा पथ्यं श्वासकासकफापहम् ॥

मुखप्रसेके जठरे कुष्ठे नेत्रामये ज्वरे ।
व्रणे च मधुमेहे च पिबेत्पानीयमल्पकम् ॥ ७३ ॥

आवश्यकता ।

जीवनं जीविनां जीवो जगत्सर्वं तु तन्मयम् ।
अतोऽत्यन्तनिषेधेऽपि न क्वचिद्वारि वार्य्यते ॥ ७४ ॥

हारीतः-

तृष्णा गरीयसी घोरा सद्यः प्राणविनाशिनी ।
तस्माद्देयं तृषार्ताय पानीयं प्राणधारणम् ॥ ७५ ॥
तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुंचति ।
अतः सर्वास्ववस्थासु न क्वचिद्वारि वर्जयेत् ॥ ७६ ॥

प्रशस्तजलम् ।

अगन्धमव्यक्तरसं सुशीतं तर्षनाशनम् ।
स्वच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते ॥ ७७ ॥

१ निन्दितम् ।

पिच्छिलं कृमिलं क्लिन्नं पर्णशैवालकर्दमैः ।
विवर्णं विरसं सान्द्रं दुर्गन्धं न हितं जलम् ॥ ७८ ॥
कलुषं छन्नमम्भोजपर्णनीलीतृणादिभिः ।
दुःस्पर्शनमसंस्पृष्टं सौरचान्द्रमरीचिभिः ॥ ७९ ॥
अनार्तवं वार्षिकं तु प्रथमं तच्च भूमिगम् ।
व्यापन्नं परिहर्तव्यं सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ ८० ॥
तत्कुर्य्यात्स्नानपानाभ्यां तृष्णाऽऽध्मानाचिरज्वरान् ।
कासाग्निमांद्याभिष्यन्दकण्डुगण्डादिकं तथा ॥ ८१ ॥
निंदितं चापि पानीयं क्वथितं सूर्यतापितम् ।
सुवर्णं रजतं लोहं पाषाणं सिकतामपि ॥ ८२ ॥
भृशं सन्ताप्य निर्वाप्य सप्तधा साधितं तथा ।

---

१ दिवाश्रृतं पयो रात्रौ गुरुतामधिगच्छति । रात्रौ श्रृतं दिवा पीतं गुरुत्वमधिगच्छति श्रृतं शीतं पुनस्तप्तं तोयं विषसमं भवेत् ॥

कर्पूरजातिपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ॥ ८३ ॥
शुचि सांद्रपटस्रावि क्षुद्रजन्तुविवर्जितम् ।
स्वच्छं कनकमुक्ताद्यैः शुद्धं स्यादोषवर्जितम् ॥ ८४ ॥
पर्णमूलबिसग्रंथिमुक्ताकतकशैवलैः ।
गोमेदेन च वज्रेण कुर्य्यादंबुप्रसादनम् ॥ ८५ ॥
पीतं जलं जीर्य्यति यामयुग्मात्
यामैकमात्राच्छृतशीतलं च ।
तदर्द्धमात्रेण श्रृतं कदुष्णं
पयःप्रपाके त्रय एव कालाः ॥ ८६ ॥

इति वारिवर्गः ।

दुग्धवर्गः ।

१ दुग्धम् ।

दुग्धं क्षीरं पयः स्तन्यं बालजीवनमित्यपि ।
दुग्धं समधुरं स्निग्धं वातपित्तहरं परम् ॥ १ ॥
सद्यःशुक्रकरं पीतं सात्म्यं सर्वशरीरिणाम् ।
जीवनं बृंहणं बल्यं मेध्यं वाजीकरं परम् ॥ २ ॥
वयःस्थापनमायुष्यं संधिकारि रसायनम् ।
विरेकवान्तिवस्तीनां तुल्यमोजोविवर्द्धनम् ॥ ३ ॥
जीर्णज्वरे मनोरोगे शोषमूर्च्छाभ्रमेषु च ।
ग्रहण्यां पाण्डुरोगे च दाहे तृषि हृदामये ॥ ४ ॥
गर्भस्रावे च सततं हितं मुनिवरैः स्मृतम् ।
बालवृद्धक्षतक्षीणक्षुद्व्यवायकृशाश्च ये ॥ ५ ॥
तेभ्यः सदाऽतिशयितं हितमेतदुदाहृतम् ।

---

१ दे० भा० दूध । बं० भा० दूध । फा० शीरे । इं० मिल्क Milk क्षीरमष्टविधम्—गव्यं, माहिषम्, आजम्, कारभम्, स्त्रैणम्, आविकम्, ऐभम्, ऐकशफम् ॥

गोदुग्धम् ।

गव्यं दुग्धं विशेषेण मधुरं रसपाकयोः ॥ ६ ॥
शीतलं स्तन्यकृत् स्निग्धं वातपित्तास्रनाशनम् ।
दोषधातुमलस्रोतःकिंचित्क्लेदकरं गुरु ॥ ७ ॥
जरासमस्तरोगाणां शांतिकृत्सेविनां सदा ।
कृष्णाया गोर्भवं दुग्धं वातहारि गुणाधिकम् ॥ ८ ॥
पीताया हरते पित्तं तथा वातहरं भवेत् ।
श्लेष्मलं गुरु शुक्लाया रक्ताचित्रातिवातहृत् ॥ ९ ॥
बालवत्सविवत्सानां गवां दुग्धं त्रिदोषकृत् ।
बंध्ष्कयिण्यास्त्रिदोषघ्नं तर्पणं बलकृत्पयः ॥ १० ॥

देशविशेषेण श्रैष्ठ्यम् ।

जाङ्गलानूपशैलेषु चरन्तीनां यथोत्तरम् ।
पयो गुरुतरं स्नेहं यथाहारं प्रवर्तते ॥ ११ ॥

आहारविशेषम् ।

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातं क्षीरं गुरु कफप्रदम् ।
तत्तु बल्यं परं वृष्यं स्वस्थानां गुणदायकम् ॥ १२ ॥
पलालतृणकार्पासबीजजातं गुणाहतम् ।

माहिषम् ।

माहिषं मधुरं गव्यात्स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ॥ १३ ॥
निद्राकरमभिष्यन्दि क्षुधाधिक्करं हिमम् ।

छागम् ।

छागं कषायं मधुरं शीतं ग्राहि तथा लघु ॥ १४ ॥
रक्तपित्तातिसारघ्नं क्षयकासज्वरापहम् ।
अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ॥ १५ ॥
स्तोकांबुपानाद्व्यायामात्सर्वरोगापहं पयः ।

मृगीदुग्धम् ।

मृगीणां जाङ्गलोत्थानामजाक्षीरगुणं पयः ॥ १६ ॥

---

१ दे० भा० देरकी ब्याई हुई गौ । खांनड । वाखडी ।

मेषीणां दुग्धम्।

आविकं लवणं स्वादु स्निग्धोष्णं चाश्मरिप्रणुत्।
अहृद्यं तर्पणं वृष्यं शुक्रपित्तकफप्रदम्॥ १७॥
गुरु कासेऽनिलोद्भूते केवले चानिले वरम्।

अश्वीदुग्धम्।

रूक्षोष्णं वडवाक्षीरं बल्यं शोषानिलापहम्॥ १८॥
अम्लं पटु लघु स्वादु सर्वमैकशफं तथा।

उष्ट्रीदुग्धम्।

उष्ट्रीदुग्धं लघु स्वादु लवणं दीपनं तथा॥ १९॥
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरं सरम्।

हस्तिनीदुग्धम्।

बृंहणं हस्तिनीदुग्धं मधुरं तुवरं गुरु॥ २०॥
वृष्यं बल्यं हिमं स्निग्धं चक्षुष्यं स्थिरताकरम्।

१ नारीदुग्धम्।

नार्य्या लघु पयः शीतं दीपनं वातपित्तजित्॥ २१॥
चक्षुःशूलाभिघातघ्नं नस्याञ्च्योतनयोर्हितम्।

धारोष्णम्।

धारोष्णं गोः पयो बल्यं लघु शीतं सुधासमम्॥ २२॥
दीपनं च त्रिदोषघ्नं तद्धाराशिशिरं त्यजेत्।
धारोष्णं शस्यते गव्यं धाराशीतं तु माहिषम्॥ २३॥
श्रृतोष्णमाविकं पथ्यं श्रृतशीतमजापयः।
आमं क्षीरमभिष्यन्दि गुरु श्लेष्मामवर्द्धनम्॥ २४॥
ज्ञेयं सर्वमपथ्यं तु गव्यमाहिषवर्जितम्।
नारीक्षीरं त्वाममेव हितं न तु श्रृतं हितम्॥ २५॥
श्रृतोष्णं कफवातघ्नं श्रृतशीतं तु पित्तनुत्।
अर्द्धोदकं क्षीरशिष्टमामाल्लघुतरं पयः॥ २६॥

---

१ बृंहणं जीवनं सात्म्यं स्नेहनं मानुषं पयः।
नावनं रक्तपित्तस्य तर्पणं चाक्षिरोगिणाम्॥ इति चरकः॥

जलेन रहितं दुग्धमतिपक्वं यथायथा ।
तथातथा गुरु स्निग्धं वृष्यं बलविवर्द्धनम् ॥ २७ ॥

पीयूष-किलाट-क्षीरशाक-तक्रपिण्ड-मोरटाः ।

क्षीरं तत्कालसूताया घनं पीयूषमुच्यते ।
नष्टदुग्धस्य पक्वस्य पिण्डः प्रोक्तः किलाटकः ॥ २८ ॥
अपक्वमेव यन्नष्टं क्षीरशाकं हि तत् पयः ।
दध्ना तक्रेण वा नष्टं दुग्धं बद्धं सुवाससा ॥ २९ ॥
द्रवभागेन रहितस्तक्रपिण्डः स उच्यते ।
नष्टदुग्धभवं नीरं मोरटं जय्यटोऽब्रवीत् ॥ ३० ॥
पीयूषश्च किलाटं च क्षीरशाकं तथैव च ।
तक्रपिण्ड इमे वृष्या बृंहणा बलवर्द्धनाः ॥ ३१ ॥
गुरवः श्लेष्मला ह्यद्या वातपित्तविनाशनाः ।
दीप्ताग्नीनां विनिद्राणां विद्रधौ चाभिपूजिताः ॥ ३२ ॥
मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् ।
लघुर्बलकरो रुच्यो मोरटः स्यात्सितायुतः ॥ ३३ ॥
सन्तानिका गुरुः शीता वृष्या पित्तास्रवातनुत् ।
तर्पणी बृंहणी स्निग्धा बलासबलशुक्रला ॥ ३४ ॥
खण्डेन सहितं दुग्धं कफकृत्पवनापहम् ।
सितासितोपलायुक्तं शुक्रलं त्रिमलापहम् ॥ ३५ ॥
रात्रौ चन्द्रगुणाधिक्याद्छायामाकरणात्तथा ।
प्राभातिकं तदा प्रायः प्रादोषाद् गुरु शीतलम् ॥ ३६ ॥
दिवाकरकराघाताद्छायामानिलसेवनात् ।
प्राभातिकात्तु प्रादोषं लघु वातकफापहम् ॥ ३७ ॥
वृष्यं बृंहणमग्निदीपनकरं पूर्वाह्णपीतं पयो
मध्याह्ने बलदायकं कफहरं पित्तापहं दीपनम् ।
बाल्ये वह्निकरं ततो बलकरं वृद्धेषु रेतोनहं

---

१ फेनुस इति लोके । बहुली ।

रात्रौ पथ्यमनेकदोषशमनं क्षीरं सदा सेव्यते ॥ ३८ ॥

वदन्ति पेयं निशि केवलं पयो
भोज्यं न तेनेह सहौदनादिकम् ।
भवेदजीर्णं यदि न स्वपेन्निशि
क्षीरस्य पीतस्य न शेषमुत्सृजेत् ॥ ३९ ॥

विदाहीन्यन्नपानानि दिवा भुंक्ते हि यन्नरः ।
तद्विदाहप्रशान्त्यर्थं रात्रौ क्षीरं सदा पिबेत् ॥ ४० ॥

दीप्तानले कृशे पुंसि बाले वृद्धे पयःप्रिये ।
मतं हिततमं दुग्धं सद्यः शुक्रकरं यतः ॥ ४१ ॥

क्षीरं गव्यमथाजं वा कोष्णं दण्डाहतं पिबेत् ।
लघु वृष्यं ज्वरहरं वातपित्तकफापहम् ॥ ४२ ॥

गोदुग्धप्रभवं किं वा छागीदुग्धसमुद्भवम् ।
भवेदेतत्त्रिदोषघ्नं रोचनं बलवर्द्धनम् ॥ ४३ ॥

वह्निवृद्धिकरं वृष्यं सद्यस्तृप्तिकरं लघु ।
अतिसारेऽग्निमान्द्ये च ज्वरेऽजीर्णे प्रशस्यते ॥ ४४ ॥

निन्दितम् ।

विवर्णं विरसं चाम्लं दुर्गन्धं प्रथितं पयः ।
वर्जयेदम्ललवणयुक्तं बुद्ध्यादिहन्यतः ॥ ४५ ॥

इति दुग्धवर्गः ।

---

१ अम्लेष्वामलकं पथ्यं शर्करा मधुरेषु च । पटोलं तिक्तवर्गेषु कटुकेषु महौषधम् ॥ कषायेष्वभया प्रोक्ता लवणेषु च सैन्धवम् । वैदलानां तथा माषाः शाकेषु सुनिषण्णकम् ॥ तांबूलं नैव सेवेत क्षीरं पीत्वा तु मानवः । यावत्तत्स्वदते क्षीरं मुहूर्तार्द्धा प्रशस्यते ॥

दधिवर्गः ।

१ दधि ।

दध्युष्णं दीपनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु ।
पाकेऽम्लं श्वासपित्तास्रशोथमेदःकफप्रदम् ॥ १ ॥
मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतगे विषमज्वरे ।
अतिसारेऽरुचौ काश्र्ये शस्यते बलशुक्रकृत् ॥ २ ॥

तद्भेदः ।

आदौ मन्दं ततः स्वादु स्वाद्वम्लं च ततः परम् ।
आम्लं चतुर्थमत्यम्लं पञ्चमं दधि पञ्चधा ॥ ३ ॥
मन्दं दुग्धवदव्यक्तरसं किंचिद्घनं भवेत् ।
मन्दं स्यात्सृष्टविण्मूत्रदोषत्रयविदाहकृत् ॥ ४ ॥
यत्सम्यग्घनतां यातं व्यक्तस्वादुरसं भवेत् ।
अव्यक्ताम्लरसं तत्तु स्वादु विज्ञैरुदाहृतम् ॥ ५ ॥
स्वादु स्यादत्यभिष्यंदि वृष्यं मेदःकफावहम् ।
वातघ्नं मधुरं पाके रक्तपित्तप्रसादनम् ॥ ६ ॥
स्वाद्वम्लं मधुरं सान्द्रं कषायानुरसं भवेत् ।
स्वाद्वम्लस्य गुणा ज्ञेयाः सामान्यदधिवर्ज्जनैः ॥ ७ ॥
यत्तिरोहितमाधुर्य्यं व्यक्ताम्लत्वं तदम्लकम् ।
अम्लं तु दीपनं पित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ ८ ॥
तदत्यम्लं दंतरोमहर्षकण्ठादिदाहकृत् ।
अत्यम्लं दीपनं रक्तवातपित्तकरं परम् ॥ ९ ॥
गव्यं दधि विशेषेण स्वाद्वम्लं च रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं हृद्यं पुष्टिकृत्पवनापहम् ॥ १० ॥
उक्तं दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम् ।
माहिषं दधि सुस्निग्धं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ॥ ११ ॥
स्वादुपाकमभिष्यंदि वृष्यं गुर्वस्रदूषकम् ।
आज दध्युष्णकं ग्राहि लघु दोषत्रयापहम् ॥ १२ ॥

---

१ दे० भा० दही । बं० भा० दई । फा० दोगा । इं० करड्लडंमिल्क । Curdled milk ।

शस्यते श्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषु दीपनम् ।
पक्वदुग्धभवं रुच्यं दधि स्निग्धगुणोत्तमम् ॥ १३ ॥
पित्तानिलापहं सर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ।
असारं दधि संग्राहि शीतलं वातलं लघु ॥ १४ ॥
विष्टंभि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम् ।
गालितं दधि सुस्निग्धं वातघ्नं कफकृद् गुरु ॥ १५ ॥
बलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत् ।
सशर्करं दधि श्रेष्ठं तृष्णापित्तास्रजित् परम् ॥ १६ ॥
सगुडं वातनुद् वृष्यं बृंहणं तर्पणं गुरु ।
न[1] नक्तं दधि भुंजीत नचाप्यघृतशर्करम् ॥ १७ ॥
नामुद्गसूपं नाक्षौद्रं नोष्णैर्नामलकैर्विना ।
शस्यते दधि नो रात्रौ शस्तं चांबुघृतान्वितम् ॥ १८ ॥
रक्तपित्तकफोत्थेषु विकारेषु च नैव तत्[2] ।
हेमंते शिशिरे चापि वर्षासु दधि शस्यते ॥ १९ ॥
शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशस्ताद्विगर्हितम् ।
ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयभ्रमान् ॥ २० ॥
प्राप्नुयात्कामलां चोग्रां विधिं हित्वा दधिप्रियः ।
दध्नस्तूपरि यो भागो घनः स्नेहसमन्वितः ॥ २१ ॥
स लोके सर इत्युक्तो दध्नो मण्डस्तु मस्त्विति ।
सरः स्वादुर्गुरुर्वृष्यो वातवह्निप्रणाशनः ॥ २२ ॥
साम्लो बस्तिप्रशमनः पित्तश्लेष्मविवर्द्धनः ।
मस्तु क्लमहरं बल्यं लघुभक्ताभिलाषकृत् ॥ २३ ॥
स्रोतोविशोधनं ह्लादि कफतृष्णानिलापहम् ।
अवृष्यं प्रीणनं शीघ्रं भिनत्ति मलसञ्चयम् ॥ २४ ॥

इति दधिवर्गः ।

---

१ रात्रौ दधि न भुंजीत, भुंजीत चेत्तदा अघृतशर्करमसूपमक्षौद्रमुष्णं विनामलकं च दधि न भुंजीत । तेन घृतशर्करादियुक्तं रात्रावपि दधि भुंजीतेत्यर्थः । २ अम्बुघृतान्वितमपि ॥

तक्रवर्गः ।

घोलं तु मथितं तक्रमुदश्वित्छच्छिकापि च ।
ससरं निर्जलं घोलं मथितं त्वसरोदकम् ॥ १ ॥
तक्रं पादजलं प्रोक्तमुदश्वित्त्वर्द्धवारिकम् ।
छच्छिका सारहीना स्यात्स्वच्छा प्रचुरवारिका ॥ २ ॥
घोलं तु शर्करायुक्तं गुणैर्ज्ञेयं रसालवत् ।
वातपित्तहरं ह्लादि मथितं कफपित्तनुत् ॥ ३ ॥
तक्रं ग्राहि कषायाम्लं स्वादुपाकरसं लघु ।
वीर्योष्णं दीपनं वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् ॥ ४ ॥
ग्रहण्यादिमतां पथ्यं भवेत्संग्राहि लाघवात् ।
किंचित्स्वादुविपाकित्वान्न च पित्तप्रकोपनम् ॥ ५ ॥
अम्लोष्णं दीपनं वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् ।
कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापि कफापहम् ॥ ६ ॥
न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाः प्रभवंति रोगाः ।
यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः ॥
अम्लेन वातं मधुरेण पित्तं कफं कषायेण निहन्ति सद्यः ॥ ७ ॥
उदश्वित्कफकृद्बल्यमामघ्नं परमं मतम् ॥ ८ ॥
छच्छिका शीतला लघ्वी पित्तश्रमतृषाहरी ।
वातनुत्कफकृत्सा तु दीपनी लवणान्विता ॥ ९ ॥

उद्धृतघृतस्तोकोद्धृतघृतानुद्धृतघृतानि ।

समुद्धृतघृतं तक्रं पथ्यं लघु विशेषतः ।
स्तोकोद्धृतघृतं तस्माद् गुरु वृष्यं कफापहम् ॥ १० ॥
अनुद्धृतघृतं सान्द्रं गुरु पुष्टिकफप्रदम् ।
वातेऽम्लं शस्यते तक्रं शुण्ठीसैन्धवसंयुतम् ॥ ११ ॥

---

१ दे० भा० छाछ, मट्ठा, लस्सी । बं० भा० घोल । फा० मस्त, मठा । इं०बटरमिल्क, Butter milk । २ कषायोष्णम् इति च पाठः ।

पित्ते स्वादु सितायुक्तं सव्योषमधिकं कफे ।
हिङ्गुजीरयुतं घोलं सैन्धवेन च संयुतम् ॥ १२ ॥
भवेदतीव वातघ्नमर्शोतीसार हृत्परम् ।
सुरुच्यं पुष्टिदं बल्यं वस्तिशूलविनाशनम् ॥ १३ ॥
मूत्रकृच्छ्रे तु सगुडं पाण्डुरोगे सचित्रकम् ।
तक्रमामं कफं कोष्ठे हन्ति कण्ठे करोति च ॥ १४ ॥
पीनसश्वासकासादौ पक्वमेव प्रयुज्यते ।
शीतकालेऽग्निमान्द्ये च तथा वातामयेषु च ॥ १५ ॥
अरुचौ स्रोतसां रोधे तक्रं स्यादमृतोपमम् ।
तत्तु हंति गरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् ॥ १६ ॥
पांडुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ।
मेहं गुल्ममतीसारं शूलप्लीहोदरारुचीः ॥ १७ ॥
श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन् कुष्ठशोथतृषाकृमीन् ।
नैव तक्रं क्षते दद्यान्नोष्णकाले न दुर्बले ॥ १८ ॥
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगे रक्तपित्तजे ।
यान्युक्तानि दधीन्यष्टौ तद्गुणं तक्रमादिशेत् ॥ १९ ॥

इति तक्रवर्गः ।

नवनीतवर्गः ।

१ म्रक्षणं सर्जे हैयङ्गवीनं नवनीतकम् ।
नवनीतं हितं गव्यं वृष्यं वर्णबलाग्निकृत् ।
सङ्ग्राहि वातपित्तासृक्क्षयार्शोऽर्दितकासहृत् ॥ १ ॥
ताद्धितं बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः ।
नवनीतं महिष्यास्तु वातश्लेष्मकरं गुरु ॥ २ ॥
दाहपित्तश्रमहरं मेदःशुक्राविवर्द्धनम् ।

---

१ दे० भा० मक्खन । बं० भा० माखन नुनी । फा० मस्का । इं० बटर Butter आजं त्रिदोषशमनं नवनीतं तयोर्वरम् ॥

दुग्धोत्थं नवनीतं तु चक्षुष्यं रक्तपित्तनुत् ॥ ३ ॥
वृष्यं बल्यमतिस्निग्धं मधुरं ग्राहि शीतलम् ।
नवनीतं तु सद्यस्कं स्वादु ग्राहि हिमं लघु ॥ ४ ॥
मेध्यं किंचित्कषायाम्लमीषत्तक्रांशसंक्रमात् ।
सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्द्यर्शःकुष्ठकारकम् ॥ ५ ॥
श्लेष्मलं गुरु मेदस्यं नवनीतं चिरन्तनम् ॥ ६ ॥

इति नवनीतवर्गः ।

घृतवर्गः ।

घृतमाज्यं हविः सर्पिः कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।
घृतं रसायनं स्वादु चक्षुष्यं वह्निदीपनम् ॥ १ ॥
शीतवीर्य्यं विषालक्ष्मीपापपित्तानिलापहम् ।
अल्पाभिष्यन्दि कान्त्योजस्तेजोलावण्यबुद्धिकृत् ॥ २ ॥
स्वरस्मृतिकरं मेध्यमायुष्यं बलकृद् गुरु ।
उदावर्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान् हरेत् ॥ ३ ॥
स्निग्धं कफकरं वृष्यं क्षयवीसर्परक्तनुत् ।
गव्यं घृतं विशेषेण चक्षुष्यं वृष्यमग्निकृत् ॥ ४ ॥
स्वादुपाकरसं शीतं वातपित्तकफापहम् ।
मेधालावण्यकान्त्योजस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥ ५ ॥
अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नं वयसः स्थापनं गुरु ।
बल्यं पवित्रमायुष्यं सुमङ्गल्यं रसायनम् ॥ ६ ॥
सुगन्धं रोचकं चारु सर्वाज्येषु गुणाधिकम् ।
माहिषं तु घृतं स्वादु पित्तरक्तानिलापहम् ॥ ७ ॥
शीतलं श्लेष्मलं वृष्यं गुरु स्वादु विपच्यते ।
आजमाज्यं करोत्यग्निं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ॥ ८ ॥

दे० भा० घी, घिं। बं० भा० घृत, घी। फा० रोगनजरद। इं० क्लेरी फाइड बटर। Clarified Butter.

कासे श्वासे क्षये चापि हितं पाके भवेत्कटु ।
औष्ट्रं कटु घृतं पाके शोषक्रिमिविषापहम् ॥ ९ ॥
दीपनं कफवातघ्नं कुष्ठगुल्मोदरापहम् ।
पाके लघ्वाविकं सर्पिः सर्वरोगविनाशनम् ॥ १० ॥
वृद्धिं करोति चास्थीनामश्मरीशर्करापहम् ।
चक्षुष्यमग्निसंधुक्ष्यं वातदोषनिवारणम् ॥ ११ ॥
कफेऽनिले योनिदोषे पित्ते रक्ते च तद्धितम् ।
चक्षुष्यमाज्यं स्त्रीणां वा सर्पिः स्यादमृतोपमम् ॥ १२ ॥
वृद्धिं करोति देहाग्नेर्लघु पाके विषापहम् ।
तर्पणं नेत्ररोगघ्नं दाहनुद्गडवाघृतम् ॥ १३ ॥
घृतं दुग्धभवं ग्राहि शीतलं नेत्ररोगहृत् ।
निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ॥ १४ ॥
हाविर्ह्यस्तनदुग्धोत्थं तत्स्याद्धैयङ्गवीनकम् ।
हैयङ्गवीनं चक्षुष्यं दीपनं रुचिकृत्परम् ॥ १५ ॥
बलकृद्बृंहणं वृष्यं विशेषाज्ज्वरनाशनम् ।
वर्षादूर्द्धं भवेदाज्यं पुराणं तत्त्रिदोषनुत् ॥ १६ ॥
मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम् ।
यथायथाखिलं सर्पिः पुराणमधिकं भवेत् ॥ १७ ॥
तथातथा गुणैः स्वैः स्वैरधिकं तदुदाहृतम् ।
योजयेन्नवमेवाज्यं भोजने तर्पणे श्रमे ॥ १८ ॥
बलक्षये पाण्डुरोगे कामलानेत्ररोगयोः ।
राजयक्ष्मणि बाले च वृद्धे श्लेष्मकृते गदे ॥ १९ ॥
रोगे सामे विषूच्यां च विबन्धे च मदात्यये ।
ज्वरे च दहने मन्दे न सर्पिर्बहु मन्यते ॥ २० ॥

इति घृतवर्गः ।

मूत्रवर्गः ।

१ गोमूत्रम् ।

गोमूत्रं कटु तीक्ष्णोष्णं क्षारं तिक्तकफापहम् ।
लघ्वग्निदीपनं मेध्यं पित्तकृत्कफवातहृत् ॥ १ ॥
शूलगुल्मोदरानाहकण्ड्वक्षिमुखरोगजित् ।
किलासगदवातामवस्तिरुक्कुष्ठनाशनम् ॥ २ ॥
कासश्वासापहं शोथकामलापाण्डुरोगहृत् ॥ ३ ॥
कण्डूकिलासगुदशूलमुखाक्षिरोगान्
गुल्मातिसारमरुदामयमूत्ररोधान् ।
कासं सकुष्ठजठरक्रिमिपाण्डुरोगान्
गोमूत्रमेकमपि पीतमपाकरोति ॥ ४ ॥
सर्वेष्वपि च मूत्रेषु गोमूत्रं गुणतोऽधिकम् ॥ ५ ॥
अतो विशेषात्कथितं मूत्रं गोमूत्रमुच्यते ।
प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् ॥ ६ ॥
शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत् ।
कषायं तिक्ततीक्ष्णं च पूरणात्कर्णशूलनुत् ॥ ७ ॥
नरमूत्रं गरं हन्ति सेवितं तद्रसायनम् ।
रक्तपामाहरं तीक्ष्णं सक्षारं लवणं स्मृतम् ॥ ८ ॥
गोजाविमाहिषीणां तु स्त्रीणां मूत्रं प्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानां पुंसां मूत्रं हितं स्मृतम् ॥ ९ ॥

इति मूत्रवर्गः ।

---

१ दे० भा० मूत्र, पेशाब । बं० भा० मुत, चोना, प्रस्राव । फा० बौल । इ० युरिन् Urine.

तैलवर्गः।

तिलादिस्निग्धवस्तूनां स्नेहस्तैलमुदाहृतम्।
तत्तु वातहरं सर्वं विशेषात्तिलसम्भवम् ॥ १ ॥
तिलतैलं गुरु स्थैर्य्यबलवर्णकरं सरम्।
वृष्यं विकाशि विशदं मधुरं रसपाकयोः ॥ २ ॥
सूक्ष्मं कषायानुरसं तिक्तं वातकफापहम्।
वीर्य्येणोष्णं हिमं स्पर्शे बृंहणं[2] रक्तपित्तकृत् ॥ ३ ॥
लेखनं बद्धविण्मूत्रं गर्भाशयविशोधनम्।
दीपनं बुद्धिदं मेध्यं व्यवायि व्रणमेहनुत् ॥ ४ ॥
श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनं लघुताकरम्।
त्वच्यं केश्यं च चक्षुष्यमभ्यङ्गे भोजनेऽन्यथा ॥ ५ ॥
छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते।
भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धविश्लिष्टदारिते ॥ ६ ॥
तथाऽभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते।
वस्तौ पानेऽन्नसंस्कारे नस्ये कर्णाक्षिपूरणे ॥ ७ ॥
सेकाभ्यङ्गावगाहेषु तिलतैलं प्रशस्यते।
घृतमब्दात्परं पक्वं हीनवीर्य्यं प्रजायते ॥ ८ ॥
तैलं पक्वमपक्वं वा चिरस्थायि गुणाधिकम्।
दीपनं सार्षपं[3] तैलं कटुपाकरसं लघु ॥ ९ ॥
लेखनं स्पर्शवीर्य्योष्णं तीक्ष्णं पित्तास्रदूषकम्।
कफमेदोनिलार्शोघ्नं शिरःकर्णामयापहम् ॥ १० ॥

---

१ दे० भा० तेल। बं० भा० तैल, तेल। फा० रोगन कुंजद। इं० आइल Oil।
२ ननु बृंहणलेखनयोः कथं सामानाधिकरण्यमित्याह-रूक्षादिदुष्टपवनः स्रोतः संकोचयेद्यतः। रसोऽसम्यग्वहन् कार्श्यं कुर्याद्रक्तादयवर्द्धयन् ॥ तेषु प्रवेष्टुं सरतासौक्ष्म्यस्निग्धत्वमार्दवैः। तैलं क्षमं रसं नेतुं कृशानां तेन बृंहणम् ॥ व्यवायसूक्ष्मतीक्ष्णोष्णसरत्वैर्मेदसः क्षयम्। शनैः प्रकुरुते तैलं तेन लेखनमीरितम्। द्रुतं पुरीषं बध्नाति स्खलितं तत्प्रवर्तयेत्। ग्राहकं सारकं चापि तेन तैलमुदीरितम् ॥ ३ दे० भा० राई कृष्णराई, रक्तराई।

कण्डुकुष्ठक्रिमिश्वित्रकोठदुष्टक्रिमिप्रणुत् ।
तद्वद्राजिकयोस्तैलं विशेषान्मूत्रकृच्छ्रकृत् ॥ ११ ॥
तीक्ष्णोष्णं तुवरीतैलं लघु ग्राहि कफास्रजित् ।
वह्निकृद्विषहत्कंडुकुष्ठकोठक्रिमिप्रणुत् ॥ १२ ॥
मेदोदोषापहं चापि व्रणशोथहरं परम् ।
अतसीतैलमाग्नेयं स्निग्धोष्णं कफपित्तकृत् ॥ १३ ॥
कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गुरु ।
मलकृद्रसतः स्वादु ग्राहि त्वग्दोषहृद् घनम् ॥ १४ ॥
वस्तौ पाने तथाऽभ्यङ्गे नस्ये कर्णास्यपूरणे ।
अनुपानविधौ चापि प्रयोज्यं वातशान्तये ॥ १५ ॥
कुसुंभतैलमम्लं स्यादुष्णं गुरु विदाहि च ।
चक्षुभ्र्यामहितं वृष्यं रक्तपित्तकफप्रदम् ॥ १६ ॥
तैलं तु खसबीजानां बल्यं वृष्यं गुरु स्मृतम् ।
वातहृत्कफहच्छीतं स्वादुपाकरसं च तत् ॥ १७ ॥
एरण्डतैलं तीक्ष्णोष्णं दीपनं पिच्छिलं गुरु ।
वृष्यं त्वच्यं वयःस्थापि मेदःकान्तिबलप्रदम् ॥ १८ ॥
कषायानुरसं सूक्ष्मं योनिशुक्रविशोधनम् ।
विस्रं स्वादु रसे पाके सातिक्तं कटुकं सरम् ॥ १९ ॥
विषमज्वरहद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् ।
हन्ति वातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥ २० ॥
वातशोणितविड्बन्धबद्धशोथामविद्रधीन् ।
आमवातगजेन्द्रस्य शरीरवनचारिणः ॥ २१ ॥
एक एव निहन्ताऽयमेरण्डस्नेहकेसरी ।
तैलं सर्जरसोद्भूतं विस्फोटव्रणनाशनम् ॥ २२ ॥
कुष्ठपामाक्रिमिहरं वातश्लेष्मामयापहम् ।
तैलं स्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलं स्मृतम् ।
अतः शेषस्य तैलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिवत् ॥ २३ ॥

इति तैलवर्गः ।

मधुवर्गः।

१ मधु।

मधु माक्षिकमाध्वीकक्षौद्रसारघमीरितम्।
माक्षिकावरटीभृङ्गवान्तं पुष्परसोद्भवम्॥ १॥
मधु शीतं लघु स्वादु रूक्षं ग्राहि विलेखनम्।
चक्षुष्यं दीपनं स्वर्य्यं व्रणशोधनरोपणम्॥ २॥
सौकुमार्य्यकरं सूक्ष्मं परं स्रोतोविशोधनम्।
कषायानुरसं ह्लादि प्रसादजनकं परम्॥ ३॥
वर्ण्यं मेधाकरं वृष्यं विशदं रोचनं हरेत्।
कुष्ठार्शःकासपित्तास्रकफमेहकृमिक्रिमीन्॥ ४॥
मेदस्तृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारविड्ग्रहान्।
दाहक्षतक्षयास्रं तु योगवाह्यल्पवातलम्॥ ५॥
माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पौत्तिकं छात्रमित्यपि।
आर्घ्यमौद्दालकन्दालमित्यष्टौ मधुजातयः॥ ६॥
मक्षिकाः पिङ्गवर्णास्तु महत्यो मधुमक्षिकाः।
ताभिः कृतं तैलवर्णं माक्षिकं परिकीर्तितम्॥ ७॥
माक्षिकं मधुषु श्रेष्ठं नेत्रामयहरं लघु।
कामलार्शःक्षतश्वासकासक्षयविनाशनम्॥ ८॥
किंचित्सूक्ष्मैः प्रसिद्धेभ्यः षट्पदेभ्योऽलिभिश्चितम्।
निर्मलं स्फटिकाभं यत्तन्मधु भ्रामरं स्मृतम्॥ ९॥
भ्रामरं रक्तपित्तघ्नं मूत्रजाड्यकरं गुरु।
स्वादुपाकमभिष्यन्दि विशेषात्पित्तलं हिमम्॥ १०॥
मक्षिकाः कपिलाः सूक्ष्माः क्षुद्राख्यास्तत्कृतं मधु।
मुनिभिः क्षौद्रमित्युक्तं तद्वर्णात्कपिलं भवेत्॥ ११॥

---

१ दे० भा० शहत; मधु। बं० भा० मधु, मौ। फा० शहद, अगवीन। इं०-हनी Honey॥

गुणैर्माक्षिकवत् क्षौद्रं विशेषान्मेहनाशनम् ॥ १२ ॥
कृष्णा या मशकोपमा लघुतराः प्रायो महापिण्डका
बध्नानास्तरुकोटरान्तरगताः पुष्पासवं कुर्वते ।
तास्तज्ज्ञैरिह पुत्तिका निगदितास्ताभिः कृतं सर्पिषा
तुल्यं यन्मधु तद्वनेचरजनैः संकीर्तितं पौत्तिकम् ॥ १३ ॥
पौत्तिकं मधु रूक्षोष्णं पित्तदाहास्रवातकृत् ॥ १४ ॥
विदाहि मेहहृच्छस्तं ग्रन्थ्यादिक्षतशोथिषु ।
वरटाः कपिलाः पीताः प्रायो हिमवतो वने ॥ १५ ॥
कुर्वन्ति छत्रकाकारं तज्जं छात्रं मधु स्मृतम् ।
छात्रं कपिलपीतं स्यात् पिच्छिलं शीतलं गुरु ॥ १६ ॥
स्वादुपाकं कृमिश्वित्ररक्तपित्तप्रमेहजित् ।
भ्रमतृण्मोहविषहृत्तर्पणं च गुणाधिकम् ॥ १७ ॥
मधूकवृक्षान्निर्यासं जरत्कार्वाश्रमोद्भवाः ।
स्रवन्त्यार्द्र्यं तदाख्यातं श्वेतकं मालवे पुनः ॥ १८ ॥
तीक्ष्णतुण्डास्तु याः पीता मक्षिकाः षट्पदोपमाः ।
अर्घास्तास्तत्कृतं यत्तु तदार्द्र्यमितरे जगुः ॥ १९ ॥
आर्द्र्यं मध्वतिचक्षुष्यं कफपित्तहरं परम् ।
कषायं कटुकं पाके तिक्तं च बलपुष्टिकृत् ॥ २० ॥
प्रायो वल्मीकमध्यस्थाः कपिलाः स्वल्पकीटकाः ।
कुर्वन्ति कपिलं स्वल्पं तत्स्यादौद्दालकं मधु ॥ २१ ॥
औद्दालकं रुचिकरं स्वर्य्यं कुष्ठविषापहम् ।
कषायमुष्णमम्लं च कटुपाकं च पित्तकृत् ॥ २२ ॥
संस्रुत्य पतितं पुष्पाद्यत्तु पत्रोपरि स्थितम् ।
मधुराम्लकषायं च तद्दालं मधु कीर्तितम् ॥ २३ ॥
दालं मधु लघु प्रोक्तं दीपनीयं कफापहम् ।
कषायानुरसं रूक्षं रुच्यं प्रच्छर्दि मेहजित् ॥ २४ ॥

अधिकं मधुरं स्निग्धं बृंहणं गुरु[1] भारिकम् ।
नवं मधु भवेत्पुष्टयै नातिश्लेष्महरं सरम् ॥ २५ ॥
पुराणं ग्राहकं रूक्षं मेदोघ्नमतिलेखनम् ।
मधुनः शर्करायाश्च गुडस्यापि विशेषता ॥ २६ ॥
एकसंवत्सरेऽतीते पुराणत्वं स्मृतं बुधैः ।
विषपुष्पादपि रसं साविषा भ्रमरादयः ॥ २७ ॥
गृहीत्वा मधु कुर्वन्ति तच्छीते गुणवन्मधु ।
विषान्वयात्तदुष्णं तु द्रव्येणोष्णेन वा सह ॥ २८ ॥
उष्णार्तस्योष्णकाले च स्मृतं विषसमं मधु ।
मर्यं[2]नं तु मधूच्छिष्टं मधुशेषं च सिक्थकम् ॥ २९ ॥
मध्वाधारो मदनकं मधूषितमपि स्मृतम् ।
मदनं तु मृदु स्निग्धं भूतघ्नं व्रणरोपणम् ।
भग्नसंधानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥ ३० ॥

इति मधुवर्गः ।

इक्षुवर्गः ।

३ इक्षुः ।

इक्षुर्दीर्घच्छदः प्रोक्तस्तथा भूमिरसोऽपि च ।
गुडमूलोऽसिपत्रश्च तथा मधुतृणः स्मृतः ॥ १ ॥
इक्षवो रक्तपित्तघ्ना बल्या वृष्याः कफप्रदाः ।
स्वादुपाकरसाः स्निग्धा गुरवो मूत्रला हिमाः ॥ २ ॥
पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः ।
कान्तारस्तापसेक्षुश्च काष्ठेक्षुः सूचिपत्रकः ॥ ३ ॥
नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽप्यकोशकृत् ।

---

१ लघु पाके, गुरु भारिकं तुलितम् । २ दे० भा० मोम । बं० भा० मोम । फा० मोमे जर्द । इं० वॉक्स Wax । ३ दे० भा० गन्ना । गण्डा । बं० भा० आक । कुशिर । फा०—नेशकर । इं० शूगरकेन Sugar cane

इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि ॥ ४ ॥
वातपित्तप्रशमनो मधुरो रसपाकयोः ।
सुशीतो बृंहणो बल्यः पौण्ड्रको भीरुकस्तथा ॥ ५ ॥
कोशकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ।
कान्तारेक्षुर्गुरुर्वृष्यः श्लेष्मलो बृंहणः सरः ॥ ६ ॥
दीर्घपोरः सुकठिनः सक्षारो वंशकः स्मृतः ।
शतपोरो भवेत्किञ्चित्कोशकारगुणान्वितः ॥ ७ ॥
विशेषात्किञ्चिदुष्णश्च सक्षारः पवनापहः ।
तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वी मधुरा श्लेष्मकारिणी ॥ ८ ॥

१ काष्ठेक्षुः ।

एवंगुणैस्तु काष्ठेक्षुः स तु वातप्रकोपनः ॥ ९ ॥
सूचीपत्रो नीलपोरो नैपालो दीर्घपत्रकः ।
वातलाः कफपित्तघ्नाः सकषाया विदाहिनः ॥ १० ॥
मनोगुप्ता[3] वातहरी तृष्णामयविनाशिनी ।
सुशीता मधुराऽतीव रक्तपित्तप्रणाशिनी ॥ ११ ॥
बाल इक्षुः कफं कुर्य्यान्मेदोमेहकरश्च सः ।
युवा तु वातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्च पित्तनुत् ॥ १२ ॥
रक्तपित्तहरो वृद्धः क्षयहृद्बलवीर्य्यकृत् ।
मूले तु मधुरोऽत्यर्थं मध्येऽपि मधुरः स्मृतः ॥ १३ ॥
अग्रे ग्रंथिषु विज्ञेय इक्षुः पटुरसो जनैः ।
दन्तनिष्पीडितस्येक्षो रसः पित्तास्रनाशनः ॥ १४ ॥
शर्करासमवीर्य्यः स्यादविदाही कफप्रदः ।
मूलाग्रजंतु ग्रन्थ्यादिपीडनान्मलसंकरात् ॥ १५ ॥
किंचित्कालविधृत्या च विकृतिं याति यांत्रिकः ।
तस्माद्विदाही विष्टंभी गुरुः स्याद्यान्त्रिको रसः ॥ १६ ॥

---

१ दे० भा० काठा गन्ना । २ बं० भा० कालापोंडा । ३ दे० भा० मुसारी, मुछारी ।

रसः पर्य्युषितो नेष्टो ह्यम्लो वातापहो गुरुः ।
कफपित्तकरः शोषी भेदनश्चातिमूत्रलः ॥ १७ ॥
पक्को रसो गुरुः स्निग्धः सतीक्ष्णः कफवातनुत् ।
गुल्मानाहप्रशमनः किञ्चित्पित्तकरः स्मृतः ॥ १८ ॥
इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशनाः ।
गुरवो मधुरा बल्याः स्निग्धा वातहराः सराः ॥ १९ ॥
वृष्या मोहहराः शीता बृंहणा विषहारिणः ।

२ फाणितम् ।

इक्षो रसस्तु यः पक्वः किञ्चिद्गाढो बहुद्रवः ॥ २० ॥
स एवेक्षुविकारेषु ख्यातः फाणितसंज्ञया ।
फाणितं गुर्वभिष्यन्दि बृंहणं कफशुक्रकृत् ॥ २१ ॥
वातपित्तश्रमान्हन्ति मूत्रवस्तिविशोधनम् ।
इक्षो रसो यः सम्पक्को घनः किञ्चिद्द्रवान्वितः ॥ २२ ॥
मन्दं यत्स्यन्दते तस्मान्मत्स्यण्डीति निगद्यते ।
मत्स्यण्डी भेदनी बल्या लघ्वी पित्तानिलापहा ॥ २३ ॥
मधुरा बृंहणी वृष्या रक्तदोषापहा स्मृता ।

३ गुडम् ।

इक्षो रसो यः सम्पक्को जायते लोष्ठवद् दृढम् ॥ २४ ॥
स गुडो गौडदेशे तु मत्स्यण्डचेव गुडो मतः ।
गुडो वृष्यो गुरुः स्निग्धो वातघ्नो मूत्रशोधनः ॥ २५ ॥
नातिपित्तहरो मेदःकफकृमिबलप्रदः ।
गुडो जीर्णो लघुः पथ्योऽनभिष्यन्द्यग्निपुष्टिकृत् ॥ २६ ॥

---

१ इक्षुविकाराः--इक्षो रसस्य समलं त्र्यंशद्वयांघ्रिमलामलाः । विकाराः फाणितगुडमत्स्यंडी-खंडशर्कराः ॥ २ दे० भा० राव । ढरका । छोवा ॥ ३ दे० भा० गुड । व० गुंड । फा० कन्देस्याह । इं० ट्रीकल Treacle नामानि–गुडः स्यादिक्षुसारस्तु मधुरो रसपाकजः । शिशुप्रियः सितादिः स्यादरुणो रसजः स्मृतः ॥

पित्तघ्नो मधुरो वृष्यो वातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ।
गुडो नवः कफश्वासकासक्रिमिकरोऽग्निकृत् ॥ २७ ॥
श्लेष्माणमाशु विनिहन्ति सदार्द्रकेण
पित्तं निहन्ति च तदेव हरीतकीभिः ।
शुण्ठ्या समं हरति वातमशेषमित्थं
दोषत्रयक्षयकराय नमो गुडाय ॥ २८ ॥

१ खण्डम् ।

खण्डं तु मधुरं वृष्यं चक्षुष्यं बृंहणं हिमम् ।
वातपित्तहरं स्निग्धं बल्यं वान्तिहरं परम् ॥ २९ ॥

२ सिता ।

खण्डं तु सिकतारूपं सुश्वेता शर्करा सिता ।
सिता सुमधुरा रुच्या वातपित्तास्रदाहनुत् ॥ ३० ॥
मूर्च्छाछर्दिज्वरान् हन्ति सुशीता शुक्रकारिणी ॥ ३१ ॥

३ पुष्पसिता ।

शीता पुष्पसिता वृष्या रक्तपित्तहरी लघुः ॥ ३२ ॥

४ सितोपला ।

सितोपला सरा लघ्वी वातपित्तहरी हिमा ।
मैधुजा शर्करा रूक्षा कफपित्तहरी गुरुः ॥ ३३ ॥
छर्द्यतीसारतृड्दाहरक्तहृत्तुवरा हिमा ।
यथायथं स्यान्नैर्मल्यं मधुरत्वं यथायथा ॥ ३४ ॥
स्नेहलाघवशैत्यानि सरत्वं च तथातथा ।

इति इक्षुवर्गः ।

---

१ दे० भा० खांड । बं० भा० खाण्ड । फा० सक्कर । इं० श्युगर Sugar तुरंजबीनः- यवासशर्करा शीता रसे स्वाद्वी कषायका । वृष्या तिक्ता च मधुरा भ्रमं पित्तं तृषां जयेत् ॥ २ दे० भा० बूरा मिश्री । बं० भा० चिनी । मिशरी ॥ फा० खरी सक्कर नवात । इं० प्युरिफाईड श्युगरकेंडी । ३ फूलकी मिलाई हुई गुलखण्ड, गुलकन्द । ४ कूजेकी मिसरी । ५ मधुकी बनाई हुई । शर्करा मीनिडी शुक्ला सिता सा वालुकात्मजा । अहिच्छत्रा तु सिकता शुद्धा शुभ्रा सितोपला ॥

सन्धानवर्गः ।

सन्धितं धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः ।
काञ्जिकं भेदि तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु ॥ १ ॥
दाहज्वरहरं स्पर्शात्पानाद्घातकफापहम् ।
माषादिवटकैर्युक्तं क्रियते तद्गुणाधिकम् ॥ २ ॥
लघु वातहरं तत्तु रोचनं पाचनं परम् ।
शूलाजीर्णविबन्धामनाशनं वस्तिशोधनम् ॥ ३ ॥
शोषमूर्च्छाभ्रमार्तानां मदकण्डुविशोषिणाम् ।
कुष्ठिनां रक्तपित्तानां काञ्जिकं न प्रशस्यते ॥ ४ ॥
पाण्डुरोगे यक्ष्मरोगे तथा शोषातुरेषु च ।
क्षतक्षीणे तथा श्रान्ते मन्दज्वरनिपीडिते ॥ ५ ॥
एतेषां त्वहितं प्रोक्तं काञ्जिकं दोषकारकम् ।
तुषोदकं यवैरामैः[1] सतुषैः शकलीकृतैः ॥ ६ ॥
तुषाम्बु दीपनं हृद्यं पाण्डुक्रिमिगदापहम् ।
तीक्ष्णोष्णं पाचनं पित्तरक्तकृद्वस्तिशूलनुत् ॥ ७ ॥
सौवीरं तु यवैरामैः पक्वैर्वा निस्तुषैः कृतम् ।
गोधूमैरपि सौवीरमाचार्य्याः केचिदूचिरे ॥ ८ ॥
सौवीरं तु ग्रहण्यर्शःकफघ्नं भेदि दीपनम् ।
उदावर्ताङ्गमर्दास्थिशूलानाहेषु शस्यते ॥ ९ ॥
आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः ।
पक्वैर्वा सन्धितैस्तत्तु सौवीरसदृशं गुणैः ॥ १० ॥
धान्याम्लं शालिचूर्णाच्च कोद्रवादिकृतं भवेत् ।
धान्याम्लं धान्ययोनित्वात्प्रीणनं लघु दीपनम् ॥ ११ ॥
अरुचौ वातरोगेषु सर्वेष्वास्थापने हितम् ।
शिण्डाकी राजिकायुक्तैः स्यान्मूलकदलद्रवैः ॥ १२ ॥

---

१ यवैः उदकसंहितैः सन्धानजवर्गोक्तत्वात् ।

सर्षपस्वरसैर्वापि शालिपिष्टकसंयुतैः ।
शिण्डाकी रोचनी गुर्वी पित्तश्लेष्मकरी स्मृता ॥ १३ ॥
कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च ।
यत्र द्रवेऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते ॥ १४ ॥
शुक्तं कफघ्नं तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु ।
पाण्डुक्रिमिहरं रूक्षं भेदनं रक्तपित्तकृत् ॥ १५ ॥
कन्दमूलफलाढ्यं यत्तत्तु विज्ञेयमासुतम् ।
तद्रुच्यं पाचनं वातहरं लघु विशेषतः ॥ १६ ॥
मद्यं तु सीधुमैरेयमिरा च मदिरा सुरा ।
कादम्बरी वारुणी च हालापि बलवल्लभा ॥ १७ ॥
पेयं यन्मादकं लोके तन्मद्यमभिधीयते ।
यथाऽरिष्टं सुरा सीधुरासवाद्यमनेकधा ॥ १८ ॥
मद्यं सर्वं भवेदुष्णं पित्तकृद्वातनाशनम् ।
भेदनं शीघ्रपाकं च रूक्षं कफहरं परम् ॥ १९ ॥
अम्लं च दीपनं रुच्यं पाचनं चाशुकारि च ।
तीक्ष्णं सूक्ष्मं च विशदं व्यवायि च विकाशि च ॥ २० ॥

अरिष्टम् ।

पक्वौषधाम्बुसिद्धं यन्मद्यं तत्स्यादरिष्टकम् ।
अरिष्टं लघु पाकेन सर्वतश्च गुणाधिकम् ॥ २१ ॥
अरिष्टस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः ।
शालिषष्टिकपिष्टाद्यैः कृतं मद्यं सुरा स्मृता ॥ २२ ॥
सुरा गुर्वी बलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ।
ग्राहिणी शोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ २३ ॥
पुनर्नवाशालिपिष्टिविहिता वारुणी स्मृता ।
संहितैस्तालखर्जूररसैर्या सापि वारुणी ॥ २४ ॥

---

१ अरिष्टं मद्यमिति लोके । अथा द्राक्षारिष्टं, दशमूलारिष्टं, बबूलारिष्टम् ।

सुरावद्वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ।
इक्षोः पक्वै रसैः सिद्धः सीधुः पक्वरसश्च सः ॥ २५ ॥
आमैस्तैरेव यः सीधुः स च शीतरसः स्मृतः ।
सीधुः पक्वरसः श्रेष्ठः स्वराग्निबलवर्णकृत् ॥ २६ ॥
वातपित्तकरः सद्यः स्नेहनो रोचनो हरेत् ।
विबन्धमेदःशोफार्शःशोषोदरकफामयान् ॥ २७ ॥
तस्मादल्पगुणः शीतरसः संलेखनः स्मृतः ।
यदपक्वौषधांबुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ॥ २८ ॥
मद्यं नवमभिष्यन्दि त्रिदोषजनकं सरम् ।
अहृद्यं बृंहणं दाहि दुर्गन्धं विशदं गुरु ॥ २९ ॥
जीर्णं तदेव रोचिष्णु कृमिश्लेष्मानिलापहम् ।
हृद्यं सुगंधि गुणवल्लघु स्रोतोविशोधनम् ॥ ३० ॥
सात्त्विके गीतहास्यादि राजसे साहसादिकम् ।
तामसे निन्द्यकर्माणि निद्रां च मदिरी चरेत् ॥ ३१ ॥
विधिना मात्रया काले हितैरन्नैर्यथाबलम् ।
प्रहृष्टो यः पिबेन्मद्यं तस्य स्यादमृतोपमम् ॥ ३२ ॥

गन्धनाशः ।

मुस्तैलवालगुंडजीरकधान्यकैला
यश्चर्वयन् सदसि वाचमभिव्यनक्ति ।
स्वाभाविकं मुखजमुज्झति पूतिगन्धं
गन्धं च मद्यलशुनादिभवं च नूनम् ॥ ३३ ॥

इति सन्धानवर्गः ।

---

१ सुरातो भेदाय लघ्वीति । २ यथा लोहासवादिः । आसवस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः । ३ गुडत्वची मोथा वा गुडत्वक् । दालचीनी ।

द्रव्यपरीक्षा ।

सूक्ष्मास्थिमांसला पथ्या सर्वकर्मणि पूजिता ।
क्षिप्ताऽम्भसि निमज्जेद्या भल्लातक्यस्तथोत्तमाः ॥ १ ॥
वाराहमूर्द्धवत्कन्दो वाराहीकन्दसंज्ञकः ।
सौवर्चलं तु काचाभं सैन्धवं स्फाटिकप्रभम् ॥ २ ॥
सुवर्णच्छविकं ज्ञेयं स्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् ।
इन्द्रगोपप्रतीकाशं मनोह्वा चोत्तमा मता ॥ ३ ॥
श्रेष्ठं शिलाजतु ज्ञेयं प्रक्षिप्तं न विशीर्य्यते ।
तोयपूर्णे कांस्यपात्रे प्रतानेन विवर्द्धते ॥ ४ ॥
कर्पूरस्तुवरः स्निग्धः एला सूक्ष्मफला वरा ।
श्वेतचन्दनमत्यन्तं सुगन्धि गुरु पूजितम् ॥ ५ ॥
रक्तचन्दनमत्यन्तं लोहितं प्रवरं मतम् ।
काकतुण्डनिभः स्निग्धो गुरुः श्रेष्ठोऽगुरुर्मतः ॥ ६ ॥
सुगन्धि लघु रूक्षं च सुरदारु वरं मतम् ।
सरलं स्निग्धमत्यर्थं सुगन्धि च गुणावहम् ॥ ७ ॥
अतिपीता प्रशस्ता तु ज्ञेया दारुनिशा बुधैः ।
जातीफलं गुरु स्निग्धं समं शुभ्रान्तरं वरम् ॥ ८ ॥
मृद्वीका सोत्तमा ज्ञेया या स्याद्गोस्तनसन्निभा ।
कैरमर्दफलाकारा मध्यमा सा प्रकीर्तिता ॥ ९ ॥
खण्डं तु विमलं श्रेष्ठं चन्द्रकान्तिसमप्रभम् ।
गव्याज्यसदृशं गन्धं रुच्यं मधु वरं स्मृतम् ॥ १० ॥

स्वभावतो हितानि ।

शालीनां लोहिता शाली षष्टिकेषु च षष्टिका ।
शूकधान्येष्वपि यवो गोधूमः प्रवरो मतः ॥ ११ ॥
शिम्बिधान्ये वरो मुद्गो मसूरश्चाढकी तथा ।
रसेषु मधुरः श्रेष्ठो लवणेषु च सैन्धवम् ॥ १२ ॥

---

१ दे० भा० मुनक्का । २ दे० भा० करौंदी । दाख । किसमिस ।

दाडिमामलकं द्राक्षा खर्जूरं च परूषकम् ।
राजादनं मातुलुङ्गं फलवर्गे प्रशस्यते ॥ १३ ॥
पत्रशाकेषु वास्तूकं जीवन्ती पोत्तिका वरा ।
पटोलं फलशाकेषु कन्दशाकेषु सूरणम् ॥ १४ ॥
एणः कुरङ्गो हरिणी जाङ्गलेषु प्रशस्यते ।
पक्षिणां तित्तिरी लावो वरो मत्स्येषु रोहितः ॥ १५ ॥
जलेषु दिव्यं दुग्धेषु गव्यमाज्येषु गोभवम् ।
तैलेषु तिलजं तैलमैक्षवेषु सिता हिता ॥ १६ ॥

स्वभावादहितानि ।

शिम्बीषु माषान् ग्रीष्मतौ लवणेष्वौषरं त्यजेत् ।
फलेषु लकुचं शाकं सार्षपं न हितं मतम् ॥ १७ ॥
गोमांसं ग्राम्यमांसेषु न हिता महिषीव सा ।
मेषीपयः कुसुम्भस्य तैलं त्याज्यं च फाणितम् ॥ १८ ॥

संयोगाविरुद्धानि ।

मत्स्यमानूपमांसं च दुग्धयुक्तं विवर्जयेत् ।
कपोतं सर्षपस्नेहभर्जितं परिवर्जयेत् ॥ १९ ॥
मत्स्यानिक्षुविकारेण तथा क्षौद्रेण वर्जयेत् ।
सक्तून्मांसपयोयुक्तानुष्णैर्दधि विवर्जयेत् ॥ २० ॥
उष्णैर्नभोऽम्बुना क्षौद्रं पायसं कृशरान्वितम् ॥ २१ ॥
दशाहमुषितं सर्पिः कांस्ये मधु घृतं समम् ।
कृच्छ्रान्नं च कषायं च पुनरुष्णीकृतं त्यजेत् ॥ २२ ॥
एकत्र बहुमांसानि विरुध्यन्ते परस्परम् ।
मधु सर्पिर्वसा तैलं पानीयं वा पयस्तथा ॥ २३ ॥

भेषजसङ्केतः ।

लवणं सैन्धवं प्रोक्तं चन्दनं रक्तचन्दनम् ।

---

१ दे० भा० फालसा, खिरणी । २ दे० भा० बिजौरा । ३ हरिणस्ताम्रवर्णः स्यात् एणः कृष्णतया मतः । कुरङ्गस्ताम्र उद्दिष्टो हरिणाकृतिको महान् ॥ ४ फाणितं छोया, राब ।

चूर्णलेहासवस्नेहाः साध्या धवलचन्दने ॥ २४ ॥
कषायलेपयोः प्रायो युज्यते रक्तचन्दनम् ।
अन्तःसम्मार्जने ज्ञेया ह्यजमोदा यवानिका ॥ २५ ॥
बहिः संमार्जने सैव विज्ञातव्याऽजमोदिका ।
पयःसर्पिःप्रयोगेषु गव्यमेव हि गृह्यते ॥ २६ ॥
शकृद्रसो गोमयकं मूत्रं गोमूत्रमुच्यते ।

प्रतिनिधिः ।

चित्रकाभावतो दन्ती क्षारः शिखरिजोऽथवा ॥ २७ ॥
अभावे धन्वयासस्य प्रक्षेप्या तु दुरालभा ।
तगरस्याप्यभावे तु कुष्ठं दद्याद् भिषग्वरः ॥ २८ ॥
मूर्वाऽभावे त्वचो ग्राह्या जिङ्गनीप्रभवा बुधैः ।
अहिंस्राया अभावे तु मानकन्दः प्रकीर्तितः ॥ २९ ॥
लक्ष्मणाया अभावे तु नीलकण्ठशिखा मता ।
बकुलाभावतो देयं कह्लारोत्पलपङ्कजम् ॥ ३० ॥
नीलोत्पलस्याभावे तु कुमुदं देयमिष्यते ।
जातीपुष्पं न यत्रास्ति लवङ्गं तत्र दीयते ॥ ३१ ॥
अर्कपर्णादिपयसो ह्यभावे तद्रसो मतः ।
पौष्कराभावतः कुष्ठं तथा लाङ्गल्यभावतः ॥ ३२ ॥
स्थैणेयकस्याभावे तु भिषग्भिर्दीयते गदः ।
चविकागजपिप्पल्यौ पिप्पलीमूलवत् स्मृतौ ॥ ३३ ॥
अभावे सोमराज्यास्तु प्रपुन्नाटफलं मतम् ।
यदि न स्याद्दारुनिशा तदा देया निशा बुधैः ॥ ३४ ॥
रसाञ्जनस्याभावे तु सम्यग् दार्वी प्रयुज्यते ।
सौराष्ट्र्यभावतो देया स्फुटिका तद्गुणा जनैः ॥ ३५ ॥

---

१ शिखरि-अपामार्गः । २ सोमराजी, वाकुची । ३ चक्रमर्दफलम् ॥ ४ दारुहलदी । ५ हरिद्रा । ६ सोरटा माटी । ७ स्फुटिका फटकरी॥

तालीसपत्रकाभावे स्वर्णताली प्रशस्यते ।
भार्ङ्ग्यभावे तु तालीसं कण्टकारी जटाऽथवा ॥ ३६ ॥
[1]रुचकाभावतो दद्यात् लवणं पांसुपूर्वकम् ।
अभावे मधुयष्ट्यास्तु धातकीं च प्रयोजयेत् ॥ ३७ ॥
अम्लवेतसकाभावे चुक्रं दातव्यमिष्यते ।
द्राक्षा यदि न लभ्येत प्रदेयं काश्मरीफलम् ॥ ३८ ॥
तयोरभावे कुसुमं बन्धूकस्य मतं बुधैः ।
लवङ्गकुसुमं देयं नखस्याभावतः पुनः ॥ ३९ ॥
कस्तूर्य्यभावे कक्कोलं क्षेपणीयं विदुर्बुधाः ।
कक्कोलस्याप्यभावे तु जातीपुष्पं प्रदीयते ॥ ४० ॥
सुगन्धिमुस्तकं देयं कर्पूराभावतो बुधैः ।
कर्पूराभावतो देयं ग्रन्थिपर्णं विशेषतः ॥ ४१ ॥
कुंकुमाभावतो दद्यात्कुसुंभकुसुमं नवम् ।
श्रीखंडचन्दनाभावे कर्पूरं देयमिष्यते ॥ ४२ ॥
अभावे त्वेतयोर्वैद्यः प्रक्षिपेद्रक्तचन्दनम् ।
रक्तचन्दनकाभावे नवोशीरं विदुर्बुधाः ॥ ४३ ॥
मुस्ता चातिविषाभावे शिवाभावे शिवा मता ।
अभावे नागपुष्पस्य पद्मकेसरमिष्यते ॥ ४४ ॥
मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वंद्वेऽपि चासति ।
[2]वरीविदार्य्यश्वगन्धावाराहीश्च क्रमात् क्षिपेत् ॥ ४५ ॥
वाराह्याश्च तथाऽभावे चर्मकारालुको मतः ।
वाराहीकन्दसंज्ञस्तु पश्चिमे गृष्टिसंज्ञकः ॥ ४६ ॥
वाराहीकंद एवान्यश्चर्मकारालुको मतः ।
अनूपे स भवेद्देशे वाराह इव लोमवान् ॥ ४७ ॥
भल्लातकासहत्वे तु रक्तचंदनमिष्यते ।

---

१ रुचकम्, चौहार । २ दे० भा० शितावरी ॥

भल्लातामावतश्चित्रं नलश्चेक्षोरभावतः ॥ ४८ ॥
सुवर्णाभावतः स्वर्णमाक्षिकं प्रक्षिपेद् बुधः ।
श्वेतं तु माक्षिकं ज्ञेयं बुधै रजतवद्ध्रुवम् ॥ ४९ ॥
माक्षिकस्याप्यभावे तु प्रदद्यात् स्वर्णगैरिकम् ।
सुवर्णमथवा[1]रौप्यं मृतं यत्र न लभ्यते ॥ ५० ॥
तत्र कान्तेन कर्माणि भिषक्कुर्याद्विचक्षणः ।
कान्ताभावे तीक्ष्णलोहं योजयेद्वैद्यसत्तमः ॥ ५१ ॥
अभावे मौक्तिकस्यापि मुक्ताशुक्तिं प्रयोजयेत् ।
मधु यत्र न लभ्येत तत्र जीर्णगुडो मतः ॥ ५२ ॥
मत्स्यण्डचभावतो दद्युर्भिषजः सितशर्कराम् ।
असंभवे सितायास्तु बुधः खण्डं प्रयोजयेत ॥ ५३ ॥
क्षीराभावे रसो मौद्गो मासूरो वा प्रदीयते ।
अत्र प्रोक्तानि वस्तूनि यानि तेषु च तेषु च ॥ ५४ ॥
योज्यमेकतराभावे परं वैद्येन जानता ।
रसवीर्य्यविपाकाद्यैः समं द्रव्यं विचिंत्य च ॥ ५५ ॥
युंज्याद्विविधमन्यद्वा द्रव्याणां तु रसादिवित् ।
योगे यदप्रधानं स्यात्तस्य प्रतिनिधिर्मतः ॥
यत्तु प्रधानं तस्यापि सदृशं नैव गृह्यते ॥ ५६ ॥

इति द्रव्यपरीक्षादिवर्गः ।

अनेकार्थवर्गः ।

अम्लमंतकः-अम्लोणिका । कोविदारश्च ॥ कुलकः-पटोलः । कुपीलुश्च ॥ कोशातकी-महाकोशातकी । राजकोशातकी च ॥ चुक्रिका-अम्लिका । चांगेरी च ॥ तिंतिडीकम्-वृक्षाम्लः । अम्लिका च । दीप्यका-यवान्यजमोदा च ॥ मरुबकः-फणिज्जकः[2] । पिंडीतकश्च[3] ॥ रुचकम्-

---

१ कुचला । २ मरुआ । ३ मैनफल ।

सौवर्चलम् । बीजपूरकं च ॥ लोणिका-लोणीशाकम् चांगेरीशाकं च ॥ बाह्लीकम्-कुंकुमम् । हिंगु च ॥ स्वादुकण्टकः-गोक्षुरो विकंकतश्च ॥ अग्निमुखी-भल्लातकी । लांगली च ॥ अग्निशिखम्-कुंकुमम् । कुसुंभश्च ॥ अजशृङ्गी-मेषशृंगी । कर्कटशृंगी च ॥ प्रियङ्गुः-फलिनी । कंगुश्च ॥ भृंगः-भृंगराजस्त्वक् च ॥ समंगा-मंजिष्ठा । लज्जालुश्च ॥ अमोघा-विडंगम् । पाटला च ॥ मोचा-कदली । शाल्मलिश्च ॥ कुटन्नटः-स्योनाकः कैवर्तीमुस्तं च ॥ कनटी-धनिका । मनःशिला च ॥ घोंटा-पूगः । बदरी च ॥ त्रिपुटा-त्रिवृत । सूक्ष्मैला च ॥ शटी-कर्चूरः । गंधपलाशी च ॥ दंतशठः-जंबीरः । कपित्थश्च ॥ दंतशठा-अम्लिका । चांगेरी च ॥ अरुणा-मंजिष्ठा । अतिविषा च ॥ कणा-पिप्पली । जीरकं च ॥ तालपर्णी-मुसली । मुरा च ॥ पीलुपर्णी-मूर्वा । बिम्बी च ॥ ब्राह्मी-ब्राह्मणी-भार्ङ्गी । स्पृक्का च ॥ अपराजिता-विष्णुक्रांता । शालिपर्णी च ॥ आस्फोता-अपराजिता । शारिवा च ॥ पारावतपदी-ज्योतिष्मती । काकजंघा च । शारदी-शारिवा । जलपिप्पली च ॥ उग्रगंधा-वचा । यवानी च ॥ परिव्याधः-कर्णिकारः । जलवेतसश्च ॥ अञ्जनम्-स्रोतोञ्जनम् । सौवीरं च ॥ अग्निः-चित्रकः । भल्लातश्च ॥ क्रिमिघ्नः-विडंगः । हरिद्रा च ॥ तेजनः-शरः । वेणुश्च । तेजनी-तेजोवती । मूर्वा च ॥ रोचना-गोरोचना । रक्तोत्पलं च ॥ राजादनम्-क्षीरिका । प्रियालश्च ॥ शकुलादनी-कटुका । जलपिप्पली च ॥ गोलोमी-श्वेतदूर्वा । वचा च ॥ पद्मा-पद्मचारिणी । भार्ङ्गी च ॥ श्यामा-सारिवा । प्रियंगुश्च ॥ उत्तमा-त्रिफला । सर्वतोभद्रा च ॥ धान्यं-धान्याकम् । शाल्यादि च ॥ सहस्रवीर्य्या-नीलदूर्वा । महाशतावरी च ॥ सेव्यम्-उशीरम् । लामज्जकं च ॥ उदुंबरः-जंतुफलः ।

ताम्रं च॥ऐन्द्री--इंद्रवारुणी। इंद्राणी च ॥ कटंभरा-कटुका। स्योनाकं च ॥ क्षारः-यवक्षारः। स्वर्णिका च ॥ गांधारी-दुरालभा। गन्धपलाशी च ॥ चित्रा-इंद्रवारुणी। बृहद्वंती च ॥ तुण्डिकेरी-कर्पासी। बिंबी च ॥ धारा-गुडूची । क्षीरका-कोली च ॥ बालपत्रः-खादिरः। यवासश्च ॥ वारि-बालकम्। उदकं च॥ अङ्गारवल्ली-भार्ङ्गी। गुंजा च॥ अमृणालम्-उशीरम्। लामज्जकं च ॥ कुण्डली-गुडूची। कोविदारश्च ॥ गन्धफली-प्रियंगुः। चंपककलिका च॥ दीर्घमूलः-यवासः। शालपर्णी च ॥ पुष्पफलः-कपित्थः। कूष्मांडश्च ॥ पोटगलः-नलः। कासश्च ॥यवफलः-कुटजो वंशश्च ॥ विश्वा-शुंठ्यतिविषा च॥ शीतशिवम्- सैन्धवम् । मिश्रेया च ॥ कर्कशः-कंपिल्लः। कासमर्दश्च ॥चर्मकषा-शातला। मांसरोहिणी च॥ नंदिवृक्षः-अश्वत्थभेदः। तुणिश्च ॥ पयः-क्षीरमुदकं च ॥ रुहा-दूर्वा। मांसरोहिणी च। सिंही-बृहती। वासा च॥ कतकम्-विडलवणम्। निर्मलीफलं च ॥ कंटकाढ्यः-कुब्जकः । शालमली च॥ यक्षधूपः-सरलनिर्यासः। रालश्च॥द्राविडी-शटी। सूक्ष्मैला च॥ हट्टविलासिनी--हरिद्रा। नखी च॥तिलपर्णम्--रक्तचंदनम्। ग्रंथिपर्ण च ॥ मधुरः-जीवकः। जीवनीयगणश्च ॥ लोहद्रावणी-गंडदूर्वा । अम्लवेतसश्च ॥ नागिनी--तांबूली। नागपुष्पी च ॥ मृदुरेचनी-त्रिवृत्-मार्कंडिका च ॥ नटः-स्योनाकः। अशोकश्च ॥ वनस्पतिः-वटः । नंदिवृक्षश्च ॥ मंदारः-श्वेतार्कः। महानिंबश्च ॥ अंबुजः--कमलम्। इज्जलश्च ॥ कवरी--वर्वरी। हिंगुपत्री च ॥ कुमारी--घृतकुमारिका। शतपत्री च ॥ वरतिक्तकः--पाठा। पर्पटश्च ॥ चित्रकः--पाठा। अनलनामा च ॥ यज्ञियः-खदिरः। पलाशश्च ॥ रक्तबीज-

---

१ गोमुखपत्रशाखः। बेलिया पीपर ॥

अरिष्टकः। कंदूरी च ॥ क्षारश्रेष्ठः-पलाशः। मोक्षकश्च ॥ श्वेतपुष्पः-श्वेतार्कः। इंद्रवारुणी च ॥ तुवरी-सौराष्ट्री। आढकी च ॥ कुंभिका-पूगफला। वारिपर्णी च ॥ राजपुत्रिका-रेणुका। जाती च ॥ रक्तपुष्पः-रक्तार्कः। कंदूरी च ॥ सप्तला-शातला। वासंती च ॥ विषमुष्टिकः-महानिंबः। विषतिंदुकश्च ॥ रक्तफला-स्वर्णवल्ली। वचश्च ॥ चंद्रहासा-गुडूची। लक्ष्मणा च ॥

व्यर्थानि।

क्रमुकः-पूगः। तूदः। पट्टिकालोध्रश्च ॥ क्षुरकः-कोकिलाक्षः। गोक्षुरः। तिलकपुष्पं च ॥ प्रियकः-प्रियंगुः। कदंबोऽसनश्च ॥ पृथ्वीका-कालाजाजी। बृहदेला। हिंगुपत्री च ॥ भूतीकम्-भूनिंबः। कत्तृणम्। भूस्तृणं च ॥ सोमवल्कः-कट्फलः। श्वेतखदिरः। घृतपूर्णकरंजश्च ॥ सौगंधिकम्-कह्लारम्। कत्तृणम्। गंधकं च ॥ भृंगः-भृंगराजः। त्वक्। भ्रमरश्च ॥ अरिष्टः-निंबः। रसोनम्। मद्यं च ॥ मर्कटी-कपिकच्छूः। अपामार्गः। करंजी च ॥ कृष्णा-पिप्पली। कालाजाजी। नीली च ॥ क्षीरिणी-दुग्धिका। क्षीरकाकोली। श्वेतसारिवा च ॥ मधुपर्णी-गुडूची। गंभारी। नीली च ॥ मंडूकपर्णः-स्योनाकः। मंजिष्ठा। ब्रह्ममंडूकी च ॥ श्रीपर्णी-गंभारी। गणिकारिका। कट्फलश्च ॥ अमृता-गुडूची। हरीतकी। धात्री च ॥ अनंता-दुरालभा। नीलदूर्वा। लांगली च ॥ ऋष्यप्रोक्ता-अतिबला। महाशतावरी। कपिकच्छूश्च ॥ कृष्णवृंता-पाटला। गंभारी। माषपर्णी च ॥ जीवंती-गुडूची। शाकभेदः। वंदा च ॥ लता-सारिवा। प्रियंगुः। ज्योतिष्मती च ॥ समुद्रान्ता-दुरालभा। कर्पासी। स्पृक्का च ॥ हैमवती-हरीतकी। श्वेतवचा। पीतदुग्धसेहुंडश्च ॥ अव्यथा-हरीतकी। महाश्रावणी। पद्मचारिणी च ॥ षड्ग्रंथा-गंधपलाशी। वचा। करंजी च ॥

(ताम्रपुष्पी-धातकी । पाटला । वरदा च ॥) वरदा[4] अश्वगंधा । सुवर्चला[1] । वाराही[2] च ॥ इक्षुगंधा-काशः । कोकिलाक्षः । क्षीरविदारी च ॥ कालस्कंधः-तमालः । तिंदुकः । कालखदिरश्च ॥ महौषधम्-शुंठी । रसोनो विषं च ॥ मधु-क्षौद्रम् । पुष्परसः । मद्यं च ॥ कपीतनः-आम्रातकः । शिरीषः । गर्दभांडश्च[3] ॥ मदनः-पिंडीतकः । धत्तूरः । सिक्थकं च ॥ शतपर्वा-वंशः । दूर्वा । वचा च ॥ सहस्रवेधी-अम्लवेतसः । मृगमदः । हिंगु च ॥ ताम्रपुष्पी-धातकी । पाटला । श्यामात्रिवृच्च ॥ सदापुष्पः-श्वेतार्कः । रक्तार्कः । कुंदश्च ॥ सुराभिः-शल्लकी । मुरैलावालुकं च ॥ लक्ष्मीः-ऋद्धिर्वृद्धिः शमी च ॥ कालानुसार्य्यम्-कालीयकम् । तगरम् । शैलेयं च ॥ चांपेयः-चंपकः । नागकेसरः । पद्मकेसरश्च ॥ नादेयी-गणिकारिका । जलजंबूः । जलवेतसश्च ॥ पाक्यम्-विडम् । सौवर्चलम् । यवक्षारश्च । विशल्या-लांगली । गुडूची । लघुदंती च ॥ इंद्रद्रुः-ककुभः । देवदारुः । कुटजश्च ॥ काश्मीरम्-कुंकुमम् । पुष्करमूलम् । (स्त्री) गंभारी च ॥ गुंद्रः-पटेरकः । मुंजः । शरश्च ॥ गुंद्रा-प्रियंगुः । फलिनी । भद्रमुस्तकश्च ॥ चुक्रम्-शुक्तकम् । अम्लवेतसम् । वृक्षाम्लश्च ॥ पारिभद्रः-निंबः । पारिजातः । देवदारु च ॥ पीतदारु-हरिद्रा । देवदारु । सरलश्च ॥ वीरः-ककुभः । वीरणम् । काकोली च ॥ वीरतरुः-ककुभः । वीरणम् । शरश्च ॥ मयूरः-अपामार्गः । अजमोदा । तुत्थं च ॥ रक्तसारः-रक्तचंदनम् । पतंगः । खदिरश्च ॥ बर्दरा[5]-सुवर्चला । अश्वगंधा । वाराही च ॥ वशिरः-रक्तापामार्गः । गजपिप्पली । समुद्रलवणं च ॥ सौवी-

---

१ हुरहुल । २ गेठी । ३ निडोडी पीलणवृक्षे । अयं पत्रकांडफलादिभिरश्वत्थाकारः ।
४ वरदा इत्यापे पाठः ॥

रम्–अंजनभेदः । बदरम् । संधानभेदश्च ॥ वंजुलः–अशोकः । वेतसः । तिनिशश्च ॥ शिला–मनःशिला । शिलाजतु । गैरिकं च ॥ सोमवल्ली–बाकुची । गुडूची । ब्राह्मी च ॥ अक्षीबः–शोभाञ्जनः । महानिम्बः । समुद्रलवणं च ॥ धामार्गवः- रक्तापामार्गः । राजकोशातकी । महाकोशातकी च ॥ दुःस्पर्शः–यवासः । कण्टकारी । कपिकच्छुश्च ॥ पलाशः–किंशुकः । गन्धपलाशी । पत्रं च ॥ कालमेषी–मञ्जिष्ठा । वाकुची । श्यामात्रिवृच्च ॥ पलङ्कषा–गुग्गुलुर्गोक्षुरः । लाक्षा च ॥ मधुरसा–द्राक्षा । मूर्वा । गम्भारी च ॥ रसा–रास्ना । शल्लकी । पाठा च ॥ श्रेयसी–हरीतकी । रास्ना । गजपिप्पली च ॥ लोहम्–अयः । कांस्यमगुरु च ॥ सहा–मुद्गपर्णी । बलाभेदः । शतपत्री च ॥ सुवहा–रास्ना । नाकुली । सिन्दुवारः ॥ कठिल्लकः–कारवेल्लम् । रक्तपुनर्नवा । कृष्णवर्वरी च ॥ मधूलिका–मूर्वा । यष्टी । मधूकश्च ॥ वितुन्नकम्–धान्यकम् । तुत्थकम् । गोनर्दश्च ॥ देवी–स्पृक्का । मूर्वा । कर्कोटी च ॥ वसुकः–शिवमल्ली । श्वेतार्कः । रोमकं च ॥ गण्डीरः–शाकविशेषः । मञ्जिष्ठा । गण्डदूर्वा च ॥ लाङ्गली–कलिहारी । जलपिप्पली । नारिकेलश्च ॥ पिच्छिला–शिंशिपा । शाल्मलिः । भूतवृक्षश्च ॥ महासहा–माषपर्णी । अम्लातकः । कुब्जकश्च ॥ चन्द्रिका–मेथी । चन्द्रशूरः । श्वेतकण्टकारी च ॥

चतुरर्थकम् ।

श्वेतपुष्पा–इन्द्रवारुणी । सिन्दुवारः । श्वेतार्कः । सैरेयकश्च ॥ कारवी–पृथ्वीका । शतपुष्पा । कालाजाजी । अजमोदा च ॥ अम्बष्ठा–पाठा । चाङ्गेरी । मोचिका । यूथिका च ॥

---

१ ककही, कंगी । २ सेवतीगुलाब । ३ गडिनी ।

बह्वर्थम् ।

अक्षशब्दः स्मृतोऽष्टासु सौवर्चलविभीतके ।
कर्षपद्माक्षरुद्राक्षशकटेन्द्रियपाशके ॥ १ ॥
काकाख्यः काकमाची च काकोली काकणन्तिका ।
काकजङ्घा काकनासा काकोदुम्बरिकापि च ॥ २ ॥
सप्तस्वर्थेषु कथितः काकशब्दो विचक्षणैः ।
सर्पद्विरदमेषेषु सीसके नागकेसरे ।
नागवल्यां नागदन्त्यां नागशब्दश्च युज्यते ॥ ३ ॥
मांसे द्रवे चेक्षुरसे पारदे मधुरादिषु ।
बोले रागे विषे नीरे रसो नवसु वर्तते ॥ ४ ॥

वैद्यानामुपकाराय स्यान्निघण्टोः कृतोपरि ।
टिप्पणी वैद्यराजेन गङ्गापूर्वकविष्णुना ।
संवत् १९६० माघशुक्ल ५ ।

इति भावप्रकाशनिघण्टुः समाप्तः ॥

भा० प्र० नि० परिशिष्टसंस्कृतनामानि ।

संस्कृत.	भाषा.	संस्कृत.	भाषा.
अलूकम्–आलू बुखारा		कपोतवंका–हुलहुल	
अप्फलम्–बीहफल		कंदपालिका–आकन्द सूरण	
अवरोहकम्–असगन्ध		कटंभरा–भद्राणिका	
अंगभेदनम्–कुलत्थी		कंचुकी–क्षीरिवृक्ष	
अर्द्धचन्द्रिका–कालीनिसोथ		ककुंदरमेचकम्–गोरक्षाचाकुल्या	
अग्निः–कलहारी अजमोद		कांतपाषाणः–चुंबक	
अहिपुष्पम्–नागकेशर		काछी–सौराष्ट्रिका	
अमृतफलम्–नासपाती		कालपर्णी–कालीनिसोत	
अवाक्पुष्पी–मीठी सौंफ		काकांडीला–(सेम) कोलशिंबी	
अश्वकर्णः–ईसबगोल		कालमारिषः–कालीसील	
अजगंधा–छोटीअजवाइन		कालावकरकः–कालाबाडा	
आजम्–थूहरदूध		कीलालः–सल्लकी रस	
आरुकम्–आडू		कुलिंजरम्–चिरपोटी	
आल्ला–धनिआं		कुची–कुचाई बीज	
आखुपाषाणम्–संखिया		कुलिशम्–काउज बं० भा०	
इत्कटा–सूक्ष्मपत्रिका दीर्घलोहित-यष्टिका धान्यविशेष वा ओकण्ड ।		कुरंगनी–मुद्गपर्णी	
		कुम्भी–यवासका फल	
ईश्वरम्–पित्तल		कुन्दरुः–खोटी मस्तकी	
ईषद्गोलम्–ईसबगोल		कुंदरुः–तीक्ष्णगन्ध	
उपोदिका–पुदीना		कूटरवाहिनी–सफेदत्रिवी	
उरगः–सीसा		कृष्णबीजम्–कालादाना	
उत्कटः–ऊठकटारा		कृमिघ्नी–तमाकू	
उष्णपत्रिका–चाह		कोटिवल्कलम्–गुडत्वक्	
ऋषिका–ऋसई		खगः–सोनामक्खी	
ऐशमूलम्–ईसरमूल		खंडितकर्णम्–खारकोल कनफोडा	
कर्णपूरः–सिरस अशोक नीलोत्पल			

संस्कृत.	भाषा.
गरुत्वान्[1]—सोनामाखी	
गजचिर्भटम्—कचरीचिब्भड	
गंधपर्णी—भडंगी	
गङ्गापुत्रः—गङ्गाराईल बं० भा०	
गंडीरः—शमटशाक	
गंगावती—बटगंधारी	
गारुडी—गरुडचूडामणि	
गांगेयी—मुस्ता, मुथरां	
गिलोडयम्—गल्होट	
ग्रीष्मसुंदरम्—गीमाशाक	
गुण्ठः—वृंततृण	
गुप्तस्नेहः—अंकोल	
गोधावती—गोहालिया शोणाल	
चतुरंगुलम्—अमलतासकी जड	
चर्मचटा—अजिनपत्रा	
चक्राकः—शलगम	
चण्डालिनी—लसुन, उल	
चण्डी—महिषी, भैंस	
चण्डाली—उमा औषधिभेद	
चंद्रलेखा—बाकुची	
चावटी—कुंभाडु वा ब्रह्मी	
चांवषा—चौंपकला मूल	
चेलकम्—गुवाकत्वक्	
जतुका—चामचिरैया	
जलजा—मधुयष्टी	
जामातृ—सूर्य्यावर्त	
जीवन्ती—दौडीति गुर्जरदेशे	
जुगः—वृद्धदारुक	
जूर्णः—ज्वारधान्य	
ज्वालामरीचम्—लालमिर्च	
जोङ्गकम्—अगुर	
टंगः—राजआम्र	
ढिंढिणिका—डिढैन	
तरुणम्—एरण्ड	
तरङ्गः—मैनफल	
ताम्रवल्ली—चित्रकूट	
ताम्रकूटम्—तमाखू	
तिक्तम्—चिरायता	
तिक्ता—कौड	
तिक्तका—हिंगोट	
दंडोत्पलम्—श्वेतबला	
दारमूषा—दारूमूसी वा अतीस	
द्विवृंतः—मेंहदी	
दीर्घमूला—श्यामलता	
दीर्घविटपी—लांगली	
दूरमूलम्—जुवाह	
देवदत्तः—निंब	
देवपुष्पी—देवहुली	
देवदानी—घीयातोरी	
धन्वजम्—जांगलमांसरस	
धवला—श्वेतापराजिता	
धन्वंतरीबीजम्—ढांगढहेला	
धावनी—चाकुल्या	

१ गरुडो माक्षिका पक्षी बृहद्वर्ण स्मृता इति नाममंजरीकारः ।

संस्कृत.	भाषा.	संस्कृत.	भाषा.
ध्यामकम्—गन्धतृण		पुरुषः—गुग्गुल	
धनकः—लोबान		पेरुकम्—अमरूद	
धूम्रपत्रिका—तमाकू		प्रोष्ठिका—मच्छी	
नदीजम्—सैंधानमक		फणी—सुफेद चंदन	
नखरंजकः—मेंहदी		फणिज्जकः—पन्हास	
नवनीतम्—लाडयागंधक बं० भा०		वटपत्री—पाषाणभेद	
नक्तम्—करंजबीज		बहुपुत्रा—(जवांह) यवासा	
नागविन्ना—नागदन्ती		बालपत्रम्—पठानीलोध	
नागार्जुनी—दूधी		बालांघ्रिः—झाणा	
नांगा—वल्मीकमृत्तिका		बृहत्पत्रम्—हस्तिकंद	
निकुंभः—क्षुद्रदंती		वृश्चीकम्—सुफैद इटसिट	
निर्विघ्नी—ब्रह्मचारिणी		वृश्चकाली—बिछुआबूटी	
पयस्या—क्षीरकाकोली		बोटा—अलंबुषा	
प्रत्यक्पुष्पी—अपामार्ग अपुठकंडा		बोलम्—फुलसत्त्व	
पंचतृण—कुशा, काश, शालि, शर, इक्षु		भद्रः—देवदारु	
प्रग्रहः—शोणालुफल		भव्यम्—जीवंती कर्मरंग	
पाषाणजित्—कुलत्थी		भद्रोत्कटा—भादांवतक	
पातालनृपतिः—सीसा		भारवाहिनी—(वसमा) नीलिनी	
पार्वती[1]—बेंगामृत्तिका		भूचणका—मूँगफली	
पाशी—वरणा		भूनागः—गंडोआ	
पिंडारकम्—पेढरी		भूषणम्—हरताल	
पुलहः—मुरदासंग		भूलता—चुंचत्वक्	
पुष्पकम्[2]—रसौंत		मयूरजंघा—अरलु	
		महावृक्षम्—थोहर	
		महाराष्ट्री—मरहठी	
		महापुरुषदेवता—शतावर	

१ सौराष्ट्री पार्वती मृत्स्ना तथा कांबोजपर्पटी इति शब्दप्रकाशः ।

२ शोभांजनं च सौवीरं तांतिकं पुष्पकं तथा

संस्कृत.	भाषा.	संस्कृत.	भाषा.

मायाफलम्–माजू
मारिषः–माठा
मालुकापत्रम्–अश्मंतक
माद्री–अतीस
मूलवीरम्–पोहकरमूल
मोरटः–अङ्कोट
यज्ञनेता–सोमलता
यमचिंचा–कचीइंबली
रक्तबीजा–मूंगफली
रात्रिहासकः–हारशिंगार
राजावर्तः–गोविंदमणि
राजा–राजपलांडु
राक्षसी–राई, मुरा
रुद्रजटा–लटूपरि
रुधिरम्[1]–गेरी, तांबा
रेणुका–नेगबीज
रोहिणी–बडीअरणी
लक्ष्मी–लोहा
वसुः[2]–गंधक
वराहक्रांता–लज्जालु
वल्कलम्–सूखामांस
वण्डांगतानः–शांता
वसिवः–श्वेतबला
वराहः–मथुराँ
वसुकः–सांभरनमक
वज्रवल्ली–हाडजोड
वज्रकर्णम् } शकरकन्दी
वज्रिकंदः }
वाप्पिका–हिंगुपत्री, चौलाई
वेत्राग्रम्–वंशसदृशाग्रम्
शकारिः–कचनार
शनकंदः–चर्मकषाकंद
शतसुता–शतावरी
शाकम्–पटोल
शालिंचः–शमठशाक
शार्ङ्गेष्टा–करंजी
श्यामा–नीलिनी
शावरकंदः–लसुन
श्यामलम्–रोहिष
शिखंडिनी–जूही रतियां
शीतपाकी–अतिबला
श्याह्वः–सरलस्राव
शुक्तिः–झिनाजि
श्रीवासः–देवदारु
शुकमाता–भडंगी
शुंठकम्–सूखीमूली
शूराह्वा–क्षीरकाकोली
शृगालविन्ना–क्रोष्टुविन्ना
शूकरी–वृद्धदारक

---

१ रक्तं रविस्तु म्लेच्छाख्यमिति विश्वः। २ दोलाथ गंधपाषाणः पामारिर्गन्धको वसुरिति ॥

संस्कृत.	भाषा.	संस्कृत.	भाषा.
षडङ्गः	—भखडा	हरिः	—गुग्गुलु
सप्तला	—सातला	हंसपादी	—थानकुनी
सर्जकः	—लोबान	ह्रस्वांगः	—जीवक
समनृपतिः	—सुहांजना	हिंस्रा	—गुडकांयि हींस
सीताफलम्	—सरीफा	हिंगुपत्रा	—काकादनी
सुदर्शना	—तानीवेल	हिंगुपुत्री	—हिंगुवती वावांफली
सुरंगी	—लालसुहांजना	त्र्यष्टिका	—राई
सुरभिः	—कुंदरु	त्रायमाणा	—बालोयालता वा देवबला
स्पृक्	—पृक्का	त्रिकत्रयम्	—त्रिकटु, त्रिफला, त्रिमद
स्नेहवृक्षम्	—देवमा	त्रिपादी	—कीटमारिका
स्थविरः	—शैलेय	त्रुटिः	—छोटी इलायची
स्वरसः	—पन्हास		
सौगंधिकम्	—अनन्तमूल		

१ हरिर्गुग्गुलुर्हरिरिन्द्रः ।

इति परिशिष्टसंस्कृतनामानि ।

भा० प्र० नि० परिशिष्टभाषानामानि ।

भाषा.	संस्कृत.	भाषा.	संस्कृत.
अम्लवेद[1]–अम्लवेतसम्		कठवर–कपित्थम्	
अग्निझाड–दीर्घजीरकम्		कणगूगली–गुग्गलकणा	
अरहड–आढकी		कटुवर कठोडी–कपित्थमज्जा	
असाल्यूं–चन्द्रशूरम्		कबीटफल–कपित्थफलम्	
अतारकीदवा–अजरूद गोस्तखोरा		कपूरचीनिया–पक्वकर्पूरम्	
अरण्डोली–एरण्डबीजम्		कटैली–कंटकारी	
अन्धाहुली–अवाक्पुष्पी		कचूर–कर्चूरम्	
अगेथु–गणकारिका		कच्छकप–कपिकच्छु	
अंरुष–भिषङ्माता		कवैया–काकमाची	
अंकोट–दीर्घकालः		कनगच–करंजम्	
अंजरूत–निर्यासविशेषः		कल्हारी–लांगली	
अन्तर[2]–पुष्पसत्वम्		कडाका–लंघनम्	
आरणे–वन्यकरीषम्		करेले–कारवल्लीलता	
आमी हल्दी–आम्रगन्धी हरिद्रा		कपास्या–कर्पासीबीजम्	
आदों–आर्द्रिका		कवारपाठा–कुमारी	
आककनपान–अर्कपत्रम् । मूलम्		कचलून–काचलवणम्	
आसी–आसवम्		कह्लवावक्कल–धववल्कलम्	
आमलीकाचिया–अम्लिकाबीजम्		कसेरू–वीरणमूलम्	
आंधीझाड–अपामार्गः		कसौंदी–कासमर्दम्	
इंद्राणी–इंद्रवारुणी		कपेलो–रक्तमृत्तिका	
उदपर्णी–माषपर्णी		कागण–ज्योतिष्मती	
उमजिनी–ज्योतिष्मती		कालाअभ्रक–कृष्णाभ्रम्	
ऊंदर–मूषिकम्		कांचली–सर्पत्वक्	
कलूंजी–उपकुंची		किरमाल–आरग्वधः	
		किसोह्या–पक्षिविशेषः	

१ गलगल । २ अतर ।

भाषा.	संस्कृत.	भाषा.	संस्कृत.
किरायता	करौतः	चन्दलेई	तण्डुलीयः
कीस	पीयुषम्	चारोली	उपकुंची
कुमरेपाठ	पाटली	चिंचरीविहना	अपामार्गः
कुलंजन	तांबूलीजटा	चिरपोटन	काकमाची
कुचिला	विषतिन्दुक	चिरमटी	गुंजा
कुंदरू	मुकुंद	चलिवो	वास्तुकम्
कूठ	कुष्ठम्	चूक	चांगेरी
कूट	शाल्मली	छड	शिलापुष्पम्
कूचकी फली	कपिकच्छुः	छीला	चित्रकं, पलाशम्
केली माहिली	कलदीसार	जलकुंभी	वारिपर्णी
केसूलोंका चून	पलाशपुष्पम्	जाल	पीलुः
कोअल	विष्णुक्रांता	जीयापोता	पुत्रजीवः
कंडीर	करवीरः	झाऊ	झावुकः
खस	उशीरम्	ठेरा	अंकोलम्
खपरिया	खपरम्	डासरया (डासरा)	तिंतिडीकम्
खींप	प्रसारिणी	डाभ	दर्भम्
गवार	कुमारी	डोडां	खसफलम्
गजपिप्पली	बृहत्पिप्पली	तस्तुंबा	इन्द्रवारुणी
गडूंबा	इन्द्रवारुणी	ताल	हरितालम्
गिलवे	निंबोऽमृता च	तिलकण्ठी	विष्णुक्रांता
गुडहुल-(गुलतुर्रा)	जपाकुसुमम्	तिलवाणी	सूर्यभक्ता
गोलकाकडी	कुलकम्	तिंदुकी	तिंदुवृक्षः
गंगेरणा, गुलशकरी	नागबला	तूण	तुणिः
चव	चव्यम्	तेवरसी	त्रिवृत्
चकवड	चक्रमर्दः	तोरुं	कोशातकी

भाषा.	संस्कृत.	भाषा.	संस्कृत.
त्रायमाणा सोमलता बहुला	} —देवबला	पाडल—पाटला	
दडगल—द्रोणपुष्पी		फटकडी—स्फुटिका	
दात्युणी—लघुदंती		फूलफिरंग—प्रियंगूः	
धमासा—धन्वयासकः		फरहिंद—पारिभद्रः	
धव—धवः		बाधापरो—वृद्धदारुकम्	
धनबहेर—राजवृक्षः		बंदा—त्रपु	
धोली गूंद—धातकीनिर्यासः		बडहल—लिकुचः	
नरसल—पोगलः		बभनेटी—भार्ङ्गी	
नरकचूर—वैधमुख्यः		बावची—अवल्गुजा	
नखल्या—नखी		बांझककोंटी—बंध्याकर्कोटी	
नागकेशर—नागपुष्पम्		बिजयसार—बीजकः	
नागदौण—नागदमनी		विसखपरा—रक्तपुनर्नवा	
नादबाण—कर्पासी		बिजौरा (तुरंज)—अम्लवेतसम	
नागरबेल—तांबूलवल्ली		बैद—वेतसम्	
निसोत—त्रिवृत्		बोल—गंधरसम्	
निर्मली—कतकम्		बौली—बंभूलः	
नीलटाच—गरुडः		बौलसिरी—बकुलः	
नेगडँ—निर्गुंडी		भरहंडा—कण्टकारी	
पद्माक—पद्मकाष्ठम्		मसूर—मसूरिका	
पत्रज—तमालपत्रम्		महलोठी—मधुयष्टी	
पतंग—कुचन्दनम्		मटर—कलायः	
पचांगुल—एरंडः		महँदी—नखरंजकम्	
पठानीलोध—श्वेतलोध्रम्		मगरेला—उपकुंची	
पत्थरफोडी—पाषाणभेदः		मंडुआ—निर्गुण्डी	
		मंडूर—लोहकिट्टम्	
		मालकंगुनी—ज्योतिष्मती	

भाषा.	संस्कृत.	भाषा.	संस्कृत.
मुनक्का	द्राक्षा	सहदेई	महाबला
माजू	माषफलम्	सतोन्दू	सप्तपर्णी
मूर्वा	मधूलिका	सरकंडा	मुंजः
मुर्दासंग	कंकुष्ठम्	सरपुंखा	प्लीहशत्रुः
मुचकुंद	क्षत्रवृक्षः	सारिवा	शालपर्णी
मेवड	निर्गुंडी	संखाहुली	शंखपुष्पी
मेडलं	मदनफलम्	सामर	शाकंभरीयम्
मोरचूत	तुत्थकम्	सामरा	न्यंकुः मृगः
मोठ	मकुष्ठकम्	सांठा	इक्षुः
मोचरस	शाल्मलीनिर्यासः	साखोट	शाखोटम्
मोरसिखा	मयूरशिखा	सिरस	शिरीषम्
राना	एलापर्णी	सिखरणी	दधिशर्करा
राल	शालनिर्यासः	सिंवाडा	जलफलम्
रांग	त्रपु	सरीफा	सीताफलम्
रुंदंती	रुद्रवंती	सिण	धणः
रेवदचीनी	पीतकाष्ठम्	सिंगी मोहरा	शृंगकम्
रोहीस	गंधतृणम्	सींधा	सैंधवम्
लख	तित्तिरिः	सस्या	शशः
लटजीरा	अपामार्गः	सुफेददूब	श्वेतदूर्वा
लाजेरी	लज्जालुः	श्वेतसर्ज	धुनकः
वरी	शतावरी	सुफेदबादची	श्वेतवेंवरी
सर्पाक्षी	नाकुली	सुफेदकंडी	श्वेतकरवीरः

भाषा.	संस्कृत.	भाषा.	संस्कृत.
सुफेद खैरसार	शुद्धखदिरसारः	हुलहुल	सुवर्चला सूर्यभक्तः
सोमल	आखुपाषाणः	हिंगोरा	इंगुदी
संभालू	निर्गुंडी	हिंगुल	हिंगुलूः
सांटी	पुनर्नवा	हिंगोटा	इंगुदी
सोंचरलून	सौवर्चलम्	निउजे	निकोचकम्
हरफारेवडी	लवली	सरदा	सरदाफलम्
हारशृंगार	रात्रिहासकः	गंगेरुआ	गांगेरुकीफलम्

इति परिशिष्टभाषानामानि समाप्तानि ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
" श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,
खेतवाड़ी-बम्बई.